बेगम का तकिया

पंडित आनंद कुमार

बेगम का तकिया

पंडित आनंदकुमार

बेगम
का
तकिया

पीरअली ने तकिए का नामकरण बेगम के नाम पर कर दिया और दरियाशाह ने मंजूर कर लिया तो मुझे क्या उज्र हो सकता है ! मैं अपनी ओर से समर्पण पीरअली को करूं चाहे दरियाशाह को, एक ही बात है ।

अपनी ओर से

बहुत दिन से इच्छा थी कि छोटे मुंह से कोई बड़ी बात कहूं। यह धृष्टता न समझी जाय इसलिए मुहावरे में थोड़ा-सा अंतर करके छोटों के मुंह से बड़ी बातें कहला दीं—बुंदू मियां, अमीरअली, अल्लाबंदा, सबरंग, यहां तक कि ऐशबेगम और रौनक़, सभी से। पीरअली और अमीना की बात नहीं कहता। वे इतने छोटे हैं कि विराट लगते हैं। विराट की तो आंख मींचकर पूजा ही की जा सकती है। पर जो वास्तव में विराट हैं—दरियाशाह—यह सब छोटे-बड़े, बुरे-भले, उन्हीं के विराट से जन्मे हैं। सुख-दुख, लोभ-मोह, धन-दौलत, दारा और दाश्ता की उलझन लेकर 'नर' की तरह क़तराशाह उन्हीं की इच्छा से उद्भूत होकर पृच्छा करने न आता तो 'नारायण' की तरह दरियाशाह की लीला देखने को न मिलती। क़तराशाह की पृच्छा के माध्यम से इस कथानक की रचना का मैंने उद्यम किया है।

दरियाशाह का प्रत्यक्ष निवास है एक बहुत ऊंचे टीले पर, समर्थ की भांति सर्वोच्च। यह टीला ही उनका तकिया (ठिकाना) है। इसी तकिये के मंच से पर्दा हटाकर दरियाशाह ने क़तराशाह को दुनिया दिखा दी। जिस वृक्ष की छाया का वो सेवन करते हैं वह भी न पीपल है, न नीम—दोनों एक-दूसरे से अद्वैत के प्रतीक की तरह लिपटे हुए हैं। घटना-प्रधान होते हुए भी उपन्यास के पात्र प्रतीक हैं—सद्गुरु 'दरिया'! सच्छिश्य 'क़तरा'! अल्लाह से अनजान पीरअली 'पीर', हवस का भूखा मीरा 'अमीर'! इसी तरह ऐशबेगम, इसी तरह रौनक़। पृष्ठिभूमि है—किसी ऊजड़ धरती के किनारे बसा हुआ राज-मिस्त्रियों का ऐतिहासिक-सा एक गांव। उन्हीं की बोलचाल है, उन्हीं की कहानी है। यह कहानी क्या है, लोभ-मोह, वासना-तृष्णा, कर्म और अकर्म के दरमियान एक खींचतान है। तथ्य यह है कि यह

अदृश्य के नियोजित निर्णयों और मनुष्य की महत्त्वाकांक्षाओं की प्रतीकात्मक व्याख्या है।

भाई शिवकुमार चाहते थे कि प्रस्तुत विषय के चित्रपट को मैं ही दिग्दर्शित करूं और मैं ही उपन्यास रूप में लिखूं। उनके जीवनकाल में मैं दोनों में से कोई काम न कर सका। उनके अचानक अवसान से मैं शिथिल हो गया। अंततः प्रियवर सत्येन्द्र शरत् ने मुझे झंझोड़कर जगाया और लेखनी हाथ में थमा दी। उसी उन्निद्रावस्था में देखा हुआ ये स्वप्न आपके सामने है। सद्गत की आत्मा को इससे शांति पहुंचेगी या नहीं, यह तो नहीं जानता, पर सहृदय पाठकों को यह स्वप्न सुखकर लगा तो स्वप्नद्रष्टा कहलाने का श्रेय मेरा; न लगे तो पाप के भागी शरत्जी हैं ही।

चित्रपट की तरह ही किसी विषय को पुस्तकाकार लाना अकेले आदमी का काम नहीं। श्री महफ़ूज़हसन ने जिस लगन से उपन्यास की पांडुलिपि टाइप-रि-टाइप करके प्रेस के योग्य बनाई उसके लिए मैं उनका अहसानमंद हूं। लोनावला (महाराष्ट्र) के घोर एकांत और घनघोर बरसात के दिनों में यह उपन्यास लिखते हुए मेरी चर्या के साथ, मेरी धर्मपत्नी गायत्री ने जो मूक निर्वाह किया उसकी सराहना न करना मेरी अशिष्टता होगी।

2 ए, नवरंग
कांदीवली (पश्चिम)
बम्बई-400 067

आनंदकुमार

दूसरे संस्करण की भूमिका

प्रसन्नता स्वाभाविक है कि 'बेगम का तकिया' के दूसरे संस्करण पर दो शब्द कहने का अवसर आया। दोनों संस्करणों के मध्यकाल में इस उपन्यास का मंचन भी हुआ और रेडियो प्रसारण भी। उच्चकोटि के विद्वानों से लेकर सर्वसाधारण सहृदय पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों द्वारा इस रचना की चहुंमुखी सराहना से प्रोत्साहन पाकर मैं मालामाल हो गया हूं।

नाटक और उपन्यास दो अलग विधायें हैं। समय-सीमा के साथ ही रंगमंच की अनेक ऐसी कठिनाइयां हैं जिनके कारण एक बड़े उपन्यास की अनेक घटनाओं का मोह मंच पर छोड़े बिना निस्तार नहीं, यह ठीक है, पर नाटक में कुछ अत्यंत महत्व की घटनाएं इस मजबूरी का शिकार हो गईं। यद्यपि उपन्यास की इन छोड़ी हुई घटनाओं पर सुधी पाठकों ने असंतोष व्यक्त किया फिर भी श्री रनजीत कपूर द्वारा दिग्दर्शित 'बेगम का तकिया' राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, रेपर्टरी कंपनी, दिल्ली ने जिस चतुराई से प्रदर्शित करके दर्शकों का मन मोहा, उसके लिए विद्यालय का और नाटक से सम्बन्धित सभी कलाविदों और तंत्रज्ञों का मैं आभारी हूं।

यही बात इसके रेडियो रूपांतर के साथ हुई। आकाशवाणी के कुशल नाट्य निर्माता श्री सत्येन्द्र शरत् इसकी रेडियो-प्रस्तुति में मंच से अधिक घटनाओं का समावेश करके मंच नाट्य से कुछ अधिक श्राव्य प्रभाव देने में सफल हुए।

पुस्तक का कलेवर बढ़ने के भय से पहिले संस्करण में बहुत कुछ काट-छांट की गई थी। इस संस्करण में उस काट-छांट का सर्वांश तो नहीं पर अत्यंत महत्वपूर्ण अंश जहां-तहां बढ़ा दिये हैं। हां, अंत में थोड़ा-सा परिवर्तन किया है। मंच-नाटक के अंत में भी कुछ परिवर्तन किया था।

सिद्ध, समर्थ साधु होते हुए भी दरियाशाह को मैं स्वयं चमत्कारी नहीं दिखाना

चाहता था। अमीना का बच्चा दरियाशाह ने यद्यपि किसी जादू के जोर से पहिले संस्करण में भी प्रकट नहीं किया, फिर भी कुछ धीमान पाठकों को वह चमत्कृति-सी लगी। सद्गत श्रद्धेय आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी ने रचना को आशीर्वाद देकर अन्त की नाटकीयता का संकेत मुझे दिया था। यद्यपि अधिकांश पाठक उपन्यास के उस नाटकीय अन्त को स्वीकार कर चुके हैं, फिर भी इस संस्करण के अन्त में उस नाटकीयता में एक और नाटकीय परिवर्तन किया है। आशा है कि सतर्क पाठकों को अच्छा लगेगा।

अन्त में उपन्यास के प्रकाशक श्री हरीराम द्विवेदी और कमल प्रिंटर्स के सुयोग्य सहयोगियों का आभार प्रकट करके सहृदय पाठकों से तीसरे संस्करण का अवसर पाने की इच्छा करके आज्ञा चाहता हूं।

आनंदकुमार

तीसरा संस्करण

पुस्तक प्रकाशन की अनेक कठिनाइयों के बावजूद उत्साही प्रकाशक के प्रयास और सहृदय पाठकों के सहयोग से 'बेगम का तकिया' का तीसरा संस्करण डिमाई आकार में प्रस्तुत है ।

इस उपन्यास पर अग्रणी विद्वज्जनों की अनेक समीक्षायें और उत्साहवर्धक प्रतिक्रियायें मुझे प्राप्त हुईं । स्वर्गीय आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा था कि 'उपन्यास बहुत ही रोचक है । इसमें आपने दो अपूर्व चरित्र दिये हैं, एक पीरा का और दूसरा अमीना का ।···संत दरियाशाह का अद्भुत चरित्र देकर तो आपने सचमुच ही हिन्दी साहित्य को नई समृद्धि दी है ।'—डॉ० हरिवंश राय बच्चन के उद्‌गार हैं कि 'बेगम का तकिया पढ़ने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये पत्र लिख रहा हूं । उपन्यास ने शुरू करते ही पकड़ लिया, फिर बिना समाप्त किये इसे छोड़ न सका । यह किसी पुस्तक की बहुत बड़ी उपलब्धि है ।' डॉ० चंद्रकांत बांदिवडेकर की लम्बी समीक्षा के कुछ शब्द हैं 'बेगम का तकिया हमें एक ऐसी दुनिया में ले जाता है जिसमें यथार्थ और आदर्श, भौतिक और आध्यात्मिक, पुराचीन और नवीन, ऐंद्रिक व अतीन्द्रिय, वासना और प्रेम, प्रतिहिंसा और करुणा की सरहदें एक दूसरे से कोसों दूर जाकर भी अनुभूति के जीवन्त क्षणों में पता नहीं कैसे एक दूसरे को छू लेती हैं ।'—डॉ० श्रीहरि ने कहा, 'इस पर रिसर्च करके डाक्टरेट ली जा सकती है ।'—डॉ० ब्रह्मशंकर व्यास ने लिखा, 'अभिव्यक्ति, जीवन के यथार्थ, उसका बहिर्मुख, अंतर्मुख कितनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा है कि देखते ही बनता है । अश्वत्थनिंब की छाया में अलखअल्लाह की जो सूफ़ी-वेदांती ज्योति-जगाई है, स्तुत्य है ।'—प्रसिद्ध लेखक श्री वेद राही ने लिखा कि 'ज़ुबानो बयान के कमाल ने मुग्ध कर दिया । लगा कि आला पाये की कोई लम्बी कविता पढ़ी है जिसमें जीवन के बाह्य और आंतरिक दोनों पक्षों की अनोखी और मार्मिक अनुभूतियां हैं ।'—डॉ० ज़किया अंजुम ने कहा, 'ज़ज़्बात, निगारी, बुनियादी तख़य्युल पर दिल वज्द करने लगा था । अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़ियादा ।' डॉ० माजिदा असद ने अपना मत इन शब्दों में व्यक्त किया कि 'लेखक ने किसी दिव्य

अलौकिक प्रेरणा से ही बेगम के इस तकिये की रचना की है, अन्यथा ऐसी रचना संभव नहीं है।'

ढेर की ढेर सुसम्मतियों, सराहनाओं, प्रोत्साहनों और आशीर्वादों का यहां प्रकाशित करना संभव नहीं है, और आत्मश्लाघा उद्देश्य भी नहीं है। डॉ० माजिदा असद की 'अलौकिक प्रेरणा से रचना' की बात विचारणीय अवश्य है। अलौकिकता के संबंध में तो क्या कहूं, लिखते समय आत्म विस्मृति में किसी संस्कार सूत्र ने मुझे लोक मानस से जोड़ दिया हो ! ऐसा न होता तो शायद मैं पाठकों के अंतर्मन को इतनी निकटता से न छू पाता। पाठकों ने पत्रों द्वारा और प्रत्यक्ष मिलकर मुझ से कहा कि बेगम का तकिया पढ़कर उनका जीवन दर्शन परिवर्तित हो गया। रचना से वे इतने अभिभूत हो गये कि व्यक्तिगत रूप से मुझे देखकर वे उपन्यास का कोई न कोई वाक्य अनायास कह उठते हैं—'परेशानी पीरशाह मानें तो परेशानी है' या 'मस्लेहत से ही छीना जाता है और मस्लेहत से ही दिया जाता है' या 'जो छिन गया उसका रंज न कर, जो दिया गया है उसका शुक्र कर।' किसी लेखक को उसके लेखन पर इससे अधिक मूल्यवान पुरस्कार और कुछ नहीं हो सकता। इस भूमिका द्वारा गुणज्ञ विद्वान और रसज्ञ पाठक मेरी कृतज्ञता स्वीकार करें।

एक विशेष बात की चर्चा करनी असंगत न होगी। उपन्यास के अंत के संबंध में कुछ मतान्तर ज़रूर रहे। पहिले संस्करण में प्रकाशित मूल कल्पना के अनुसार अमीना का बच्चा बच जाने की घटना पर सर्वसाधारण पाठकों ने तो मुझ से कोई शिकायत नहीं की पर कुछ सतर्क विद्वानों को उपन्यास सुखान्त करने की इच्छा में यह कल्पना यथार्थ से हटी हुई अतिरंजिता-सी लगी। धरती फोड़कर रमज़ानी निकला भी नहीं था और समर्थ सक्षम पात्रों की सुरक्षा में उसका जीवित मिल जाना मेरे मतानुसार अतिरंजना भी नहीं थी। प्रबुद्ध और भावुक वर्ग की विचार-धारा का यह अन्तर मेरे लिए माननीय है। इस संबंध में अधिक पाठकों के दृष्टिकोण जानकर अनुग्रहीत हूंगा। दूसरे और तीसरे संस्करण में बच्चा जीवित नहीं है पर सुखान्त यह तब भी था, अब भी है।

हिंदी न जानने वाले कई मित्रों ने उपन्यास उर्दू में पढ़ना चाहा पर चाहते हुए भी अनेक व्यस्तताओं के कारण मैं इसका उर्दू भाषान्तर न स्वयं कर सका न किसी समानधर्मा से करा सका। उर्दूदां दोस्तों की ख़्वाहिश पूरी करने की कोशिश करूंगा।

कमल प्रिंटर्स के सहयोगियों का आभारी हूं।

आनंदकुमार

□□

पौ फटते ही अलीजान पंसारी ने दूकान खोली। दादेलाही कपड़े तन पर चढ़ाये हुए थले पर बिसमिल्लाह करके बैठा। दादेलाही का मतलब यह है कि यह पाजामा उसकी दादी अम्मां ने नज़अ (मृत्यु) के पहले दिन अपनी ऊदी गबरून की दुलाई में से सी-फाड़कर उसे पहिनाया था और कुरता को दादाजान अपना सिला-सिलाया ही दे मरे थे। अब्बामियां की तो सिर्फ़ टोपी उसके पास है। चंदोवा बीच में से उड़ गया है। सोते-जागते अलीजान इसे कभी सर से नहीं उतारता। टोपी भागवान है। तावीज़ की तरह हर वक़्त, हर बला से ढाल की तरह उसकी हिफ़ाज़त करती है। थले पर बैठकर टोपी उसने कसकर जमाई ही थी कि गांव के सारे राज-मज़दूर हमेशा की तरह औज़ारों के थैले और रोटी-चटनी की पुटलियां बग़ल में दबाकर एक-एक करके अलीजान की दूकान के सामने आ-आकर बैठने लगे।

चुनाई, सफ़ेदी, मरम्मत का काम इस कंगालों के गांव में कभी किसी को नहीं मिलता, पर यह विश्वकर्मा के वंशज अपनी कन्नी-थापी लिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी से रोज़ इसी तरह अलीजान की दूकान के सामने बैठते आये हैं। काम की मंदी-तेज़ी, चूना, मिट्टी, रेती, बजरी के भाव-ताव और अच्छाई-बुराई की चर्चा होती है। रात की चोरी-जारी, सेंध, नक़ब और भेड़-बकरियों के दूध-चारे, मुर्ग़े-चूज़े, चिलम-तमाखू, गांजे-सुलफ़े, गाली-गुफ़्तार और हँसी-दिल्लगी के बाद एक-एक दो-दो उठकर आन-गांवों और क़स्बों की तरफ़ रोज़ी कमाने के लिए चल पड़ते हैं।

अलीजान को दूकान के आगे भीड़ अच्छी नहीं लगती, पर क्या करे? बिकरी भी तो भीड़ से ही होती है! ज़रूरत की कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो अलीजान के यहां न मिले। पंसारी तो कहते हैं उसे, कबाड़ी कहना ज़्यादा मुनासिब है। दिया-सलाई चाहिए, मिलेगी। सुई चाहिए, मिलेगी। कफ़न चाहिए, मिलेगा, और शादी का लाल जोड़ा भी। संखिया भी बेचता हो तो पता नहीं, पर गांजा-सुलफ़ा लेने तो लोग दूर-दूर से आते हैं। अल्लाह के फ़ज़ल से सब-के-सब ख़रीदार अलीजान के मक़रूज़ (ऋणी) हैं। सूद-ब्याज अलीजान बेचारा किसी से नहीं लेता।

सिर्फ़ मुनाफ़ा लेता है। किससे कितना लेता है यह तो जिस-तिसकी आबरू की बात है, इसलिए ज़ाहिर करने की नहीं है।

सरफ़ू आया, गबरू आया, सरवर आया, ईदू आया, और भी कई आये। अलीजान न सलाम ले, न दे। अख़ीर में पीरअली यानी पीरा भी आया और आकर चुपचाप बैठ गया। चिलम भी चक्कर पूरा कर चुकी। बात-बे-बात हँस पड़ने वाले पीरा ने भी जब दम मारकर चिलम ख़ामोशी से आगे बढ़ा दी तब तो माहौल में असल में ही तनाव आ गया। उकड़ूं बैठे-बैठे मिस्त्री लोग इस पांव से उस पांव, और उससे इस पर डग-मग से होने लगे तभी गली के मुहाने से बुंदू चचा आते हुए नज़र आये।

बुंदू मियां इस गांव में सबसे बड़ी उम्र के बुज़ुर्ग हैं। वे अपनी उम्र बतलाते हैं नौ कम सौ। जिस इमारत की दरार में एक कन्नी भर मसाला बुंदू चचा ने अपने हाथ से लगा दिया वह इमारत ज़लज़ले से भले ही ढह पड़ी पर मजाल है कि दरार खुल गई हो! सो बुंदू चचा को देखकर बैठे-बैठों ने हिल-हिलाकर उनके लिए जगह कर दी।

छः-सात हाथ लांबा क़द, दुबले-पतले, सतर कमर, पोपला मुंह, काला भुच्च रंग, दो अंगुली बिल्कुल सफ़ेद शरई (धार्मिक) दाढ़ी, छोटा-सा सर, उस पर बड़ा-सा साफ़ा और हाथ में बेंत से ज़रा मोटी कान तक की ऊंची लाठी। सब मिलाकर यही मुरब्बी बुंदू चचा हैं। अफ़ीम का गोला चढ़ाकर जब बुंदू मियां चलते हैं तो राजों वाली सीध नापने वाली पूरी डोरी के बराबर एक कुलांच भरते हैं। ऐसी ही दो-चार कुलाचें मारते हुए जब वह अलीजान पंसारी की दूकान पर पहुंचे तो अलेक-सलेक (सलाम-बंदगी) तो हुई पर और कुछ नहीं।

बुंदू मियां ने सब कारीगरों पर अपनी मिचमिची नज़र डालकर पीरा से कहा, 'क्यों बे, चलता क्यों नईं तकिये पै काम लगवाने? ठेकेदार तो तूई है— और वो कां है तेरा भाई मीरा नसेबाज ?'

अब पीरा की चुप्पी का भेद खुला। बोला, 'चचा, इसी गम के मारे चुपका बैठा हूं। मीरा गैप हो गया।'

मीरा गैप? यानी मीरा ग़ायब हो गया? सबने चौकन्ना होकर पीरा की तरफ़ देखा।

ताज्जुब से बुंदू ने कहा, 'गैप हो गया? अबे कल रात तो छप्पर में निहालदे गा ई रया था वो, गैप कद में को हो गया?'

'अब मैं क्या जानूं? गैप जरूर हो गया।'

'अबे कैसे गैप हो गया? धरती लील गई?'

'लील गई होगी, गैप तो है ई।'

झुंझलाकर बुंदू ने कहा, 'गैप के बच्चे, औंधा पड़ा होगा कईं गांजा पिये हुए।'

तभी अलीजान माथा-सा कूटकर बोला, 'मड़ गया अलीजान ! लुट गया अलीजान ! माड़ी गई साड़ी ड़कम ! अब नहीं पायेगा अमीड़अली ।'

अलीजान 'र' को 'ड़' बोलता है । यों वह कम ही बोलता है, पर बोलता है तो अपने आप को 'अलीजान' कहता है, 'मैं' नहीं कहता ।

झुंझलाकर बुंदू ने कहा, 'अबे कैसे मर गया, कैसे लुट गया, कैसे मारी गई रक़म, क्यों नहीं पायेगा अमीरअली, कहां गया, कुछ हमको भी तो बता ।'

हाय-हाय-सी करके अलीजान बोला, 'अलीजान को क्या मालूम कि कहां गया । पड़ आयेगा नई ये बात पक्की है । भाग गया गांव छोड़ के ।'

बुंदू मियां झल्ला पड़े 'अबे, सीधी बात क्यों नईं करता ? क्या साबूत है। तेरे पास मीरा के भाग जाने का ?'

अलीजान ने उकड़ूं होते हुए वहां का वहीं इधर-उधर होकर 'ताबूत-ताबूत' यानी साबूत-साबूत कहते हुए थले के नीचे से एक जाकट-सी निकालकर झंडे की तरह हवा में हिलाई और बोला, 'ये ड़हा साबूत ।'

पीरा चिल्लाया, 'ये सदरी तो मेरे भाई की है मियां, ये तुमारे पास कां से आ गई ?'

अलीजान के जवाब देने से पहले ही बुंदू बोला, 'इस साले पसरट्टे ने गांजा पिला के उधारी में उतार ली होगी । चल पीरा तू काम लगवा। पा जायेगा मीरा ।'

भाई के ग़म में बुझा हुआ-सा पीरा बोला, 'पा कहां जायेगा, गली-कूचे तो मैं खखोड़ता हुआ ई आया हूं ।'

'अबे गलीकूचे खखोड़ लिए पर तकिये पै भी तो देखा होता ।'

जैसे सुराग़ लग गया हो, पीरा के मुंह से निकला, 'तकिये पै ?'

□□

असली बात तो तकिये की ही है, पर तकिये से पहिले इस गांव की बात बतानी पड़ेगी ।

गांव का नाम है बगदार पर सुनने वाले सुनते हैं 'बग़दाद'। बग़दाद हो गया तो न जाने क्यों 'शरीफ़' अपने-आप आ लगा । हरियाली को ही वनश्री कहते हों तो शरीफ़ होते हुए भी बगदार श्रीहीन गांव है । कहीं-कहीं कीकर-करील के पेड़-झाड़ संकटग्रस्त के एकाकी मित्र की तरह 'मैं हूं, मैं हूं' कहकर सिर हिलाते हुए नज़र आते हैं। नहीं तो बस रेत और पत्थर ! पत्थर भी लाल । कड़कड़ाती धूप में यह लाल पत्थर गर्म होकर लाल सुर्ख़ हो जाता है तो बगदार ऐसा लगता है जैसे लुहार की भट्ठी में पड़ा हुआ लोहा ।

गांव के बीचोंबीच एक ख़ूब बड़ा चौक । चौक से पश्चिम की ओर दीनता से दात निपोरते हुए लाल पत्थर के ऐतिहासिक से खंडहर जैसे कुछ मकान । उत्तर की ओर हातिम की तरह नज़र आती हुई अलीजान पंसारी की दूकान । पूरब की ओर अलग-थलग अकेला खड़ा हुआ अलीजान का ही एक दुमंज़िला मकान है । अलीजान इसमें रहता नहीं, मकान हमेशा बंद रहता है । इस मकान के ऊपर वाले बालाख़ाने में चौक की ओर छज्जे में खुलने वाला एक दरवाज़ा है । इस छज्जे में खड़े होकर चौक वालों की तरफ़ ख़ूब नीची नज़र से देखा जा सकता है । चौक के उत्तर-पूरब वाले कोने में बगदार का एकमात्र कुआं है जिसे बगदारी कहते हैं 'बाश्शापसंद'। सारे गांव की औरतें सुबह-शाम इसी बादशाहपसंद पर पानी भरने आती हैं । दुमंज़िले के छज्जे में कोई खड़ा हो तो पर्दा किये बिना न चौक से गुज़र सकती हैं न कुएं में चमड़े का डोल फांस सकती हैं ।

कुल मिलाकर मिट्टी की सपाट छतों के कोई पचास-साठ घर बगदार में होंगे पर कोई साबुत नहीं है । किलों जैसे खंडहर हैं । टूटी-फूटी मेहराबें खड़ी हुई हैं । कटावदार लाल पत्थर की जालियों की खिड़कियां जहां-तहां अटकी-उलझी हुई हैं । हो सकता है कि बगदारियों के पूर्वज कभी किन्हीं आक्रामकों के साथ यहां आये हों और उनकी तोड़ी हुई इमारतों के धड़ जोड़कर अपने सर छुपाने के लिए टूटी-फूटी छतें उन्होंने चिकनी भुरभुरी मिट्टी से थोप-थाप ली हों ।—जो भी हो, यह तभी से भूखे हैं । गांव के निवासी राज-मज़दूर कन्नी-थापी झोले में डालकर दूर-दूर तक जाते हैं और सफ़ेदी, मरम्मत, चुनाई, मज़दूरी करके पेट पालते हैं । जिनके पेट नहीं भर पाते वे भी अपने औज़ार-हथियार बिस्तरों में बांधकर महानगरी की ओर नहीं भागते । आधे पेट रहना पसंद करते हैं ।

ऐसा है ये बग़दाद शरीफ़ । यानी बग़दार । इसी बगदार से कोस भर पश्चिम की ओर यह तकिया है, जहां बुंदू मियां पीरा से अपने गुमशुदा भाई मीरा को तलाश करने के लिए कहते हैं ।

□□

रेतीले, पथरीले मार्ग के बगदार की ओर मोड़ खाते ही बायें हाथ को एक ऊंचा-सा टीबा या टीला है । ऊपर जाने के लिए बहुत चौड़ी और बहुत सारी सीढ़ियां हैं । सीढ़ियों के दोनों ओर बहुत घने और हरे-भरे नीम, शीशम और करौंदे के पेड़, झाड़ और झाड़ियां हैं । आश्चर्य है कि सारे इलाक़े में एक वही स्थान ऐसा है जिसे श्री-युक्त और सुरम्य कहा जा सकता है । पथिक की दृष्टि को बरबस अपनी ओर खींचकर आश्रय देने के लिए पुकारता-सा लगता है ।

ऊपर अंदाज़न एक एकड़ भर सीधी-सपाट धरती है । चारों ओर कहीं तीन

हाथ और कहीं चार हाथ ऊंचा मलबे का ढेर-सा है, कभी दीवार होगी। एक ओर लाल पत्थर की नाजुक नक़्क़ाशीदार एक बारहदरी-सी है। इसे पूरी तरह ध्वंसावशेष नहीं कहा जा सकता। इसके बिल्कुल सामने एक बहुत बड़ा और घना पीपल का वृक्ष है। इसे पीपल कहने में भी एक कठिनाई है—क्योंकि नीम से आलिंगन किये खड़ा है। जड़, धड़, तने और शाखाएं एक-दूसरे से अमरबेल की तरह लिपटी हुई हैं। इस अश्वत्थनिंब को बगदारी कहते हैं पिपलिया नीम।

सांध्यवेला में इस ऊजड़, ऊसर प्रदेश में जाने कहां-कहां से नाना भांति और जाति के पक्षियों के झुंड-के-झुंड निमंत्रितों की तरह उड़े चले आते हैं। खेलते हैं, क्रीड़ा कलरव करते हैं, पीपलियों और निबोलियों से तृप्त होकर, सामगान से स्थान को मुखर करके पिपलिया नीम के कोटरों में बसेरा लेने के लिए घुस जाते हैं और फिर शांति और स्तब्धता का साम्राज्य हो जाता है। इसी वृक्ष के नीचे कोई दस हाथ लंबा-चौड़ा एक मिट्टी का चौतरा है। चौतरे के दाईं ओर एक कुंड है। कुंड शीतल निर्मल जल से, और चौतरा धधकती हुई धूनी और एक चटाई के टुकड़े से संपन्न है। कहते हैं कि न तो इस कुंड का जल कभी सूखता है, न चौतरे की धूनी कभी बुझती है।

जो भी हो, आज यह दरियाशाह का तकिया कहलाता है।

इस आलिंगित प्रेमीयुगल अश्वत्थनिंब की छाया में, इसी चटाई के टुकड़े पर कुहनी का ढासना लगाकर दरियाशाह कहने को सोते हैं, कहने को जागते हैं, कहने को बैठते हैं और कहने को ही भूले-भटके, थके-हारे, आये-गये के साथ हँसते-बोलते हैं।

यह दरियाशाह का तकिया है।

□□

नदी का मूल और साधु का कुल खोजने से क्या लाभ? फिर भी बगदारी कहते हैं कि फ़क़ीर दरियाशाह असल में बगदारी ही हैं। किसी ज़माने में उन्हीं की तरह वो राज-मेमार ही थे। कोई कहता है कि अपने बचपन में वो कभी यहां होने वाले उर्स में आये थे, फिर जगह पसंद आ गई, लौटकर नहीं गये। कोई कहता है, जहां रहते हैं वहां किसी बुज़ुर्ग का मज़ार था, बुज़ुर्ग ने क़ुबूल फ़रमा लिया।

खूब ऊंचा शरीर, जैसे मसजिद की मीनार; सिर ब्रह्मांड का गोला, नेत्र जैसे देदीप्यमान नक्षत्र; चित्रित यक्ष की-सी घुंघराली केश-राशि, मूंछ-दाढ़ी विरहित वरदानी देवता का-सा मुखमंडल। रंग-रूप जैसे गो-दुग्ध में सूर्योदय में घोल दिया हो। खड़े हुए दरियाशाह ऐसे लगते हैं जैसे किसी जीर्ण-शीर्ण इबादतगाह का

नक़्क़ाशीदार सतून (स्तम्भ)।

हुआ करे रंग-रूप ! दरियाशाह गोबर-मिट्टी से चौतरा लीपते हैं, 'अस्सलाम' का जवाब 'वालेकुम' से नहीं देते, 'अल्लाह' से पहिले 'अलख' लगाते हैं। आज के प्रसिद्ध 'करामाती फ़क़ीर' सही, पर कहने वाले 'कहीं का शोबदेबाज़ काफ़िर' भी कहते हैं। कुछ यह भी कहते हैं—'पेट भरने को पड़ा है। अड्डा बना लिया है। लावारिस जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया है।'

जितने मुंह उतनी बातें।

पर दरियाशाह का एक ही मुंह है और जिसके कान नहीं हैं उससे वह उस मुंह से कभी कुछ नहीं कहते। जो आ जाता है उससे हँस-हँसकर मीठी-मीठी बातें करते हैं। इतनी मीठी कि आगंतुक उस मिठास में घुलकर भूल जाता है कि वह शकर था या पानी। कोई हतभागी ही होगा जो तकिये पर आया हो और सांत्वना की थैली अंटी में बांधकर न ले गया हो।

सब मिलाकर व्यक्तित्व ऐसा कि बेईमान भी सामने पड़कर निष्कारण नत-शीश होने को लाचार हो जाये।

तो यह दरियाशाह हैं और यह इनका तकिया है।

उस दिन इसी तकिये पर बात की जड़ जम गई। संध्या कुछ सुस्ती से होने को आ रही थी, सूरज तकिये के पीछे नीचे को सरक गया था। दूर-दूर तक मटियाली धूल की मलगजी मलमल का शामियाना-सा तना हुआ था। दरियाशाह उसी पिपलिया नीम के नीचे बैठे थे। चिलम में दम लगाते हुए वह बार-बार रास्ते की तरफ़ देख रहे थे जैसे किसी की प्रतीक्षा में हों।

तभी धूल में धुत, बेहाल परेशान-सा एक अवधूत वहां आया। अवस्था तरुण, गोरा-गोरा चेहरा, तीखा-तीखा अड़ियल नाक-नक़्शा, छोटी-सी दाढ़ी, शरई मूंछें, गले में फ़ीरोज़ी रंग की कई लड़ की बड़ी-सी माला, तन पर टख़नों तक का काला चोग़ा, पांव नंगे। कांधे पर थैला और थैले में बंधा हुआ तामचीनी का तामलोट। आते ही अदब से बोला, 'अस्सलाम-अलेक !'

दरियाशाह शायद इसी की प्रतीक्षा में थे। मुस्कुराकर बोले, 'अलख अल्लाह ! आओ शहज़ादे बैठो। बहुत थके हुए मालूम होते हो, हाथ-पांव धो लो।'

इस फ़क़ीर की यह मुस्कान बड़ी मोहक, बड़ी भेदक और बड़ी भोली है। इतनी भोली है कि बड़ी भेदभरी मालूम होती है। पर हर हालत में यह थके हुए की थकान तो मिटाती ही है। सो मुस्कान से फ़र्बा और हौज़ के पानी से हरा होकर जब शहज़ादा दोज़ानूं होकर दरियाशाह के सामने आकर बैठा तो उन्होंने पूछा, 'कहां-कहां हो आये क़तराशाह ?'

'बहुत-बहुत दूर हो आया बंदानवाज़। जब से आपने भेजा तब से सफ़र में ही रहा।'

'क्या-क्या देखा ?'

'बहुत कुछ देखा मोहतरिम । कुछ बातें ऐसी देखीं जिनसे ताज्जुब हुआ, कुछ बातें ऐसी सुनीं जो समझ में न आईं ।'

मुस्कुराकर दरियाशाह बोले, 'अल्लाह की शान है शहज़ादे, दुनिया दिलचस्पियों से भरी पड़ी है ।'

यह कोई जवाब हुआ ? यह तो नपी-तुली उतनी ही बात है, जितनी सफ़र से पहिले उससे कही गई थी । गर्दन झुकाये हुए ही बोला, 'हुजूर, उन दिलचस्पियों ने मेरे दिल में गुमराही का अंदेशा पैदा कर दिया है । किर्दगार (परमात्मा) को याद करता हूँ तो किर्दार (व्यवहार) में उलझकर रह जाता हूं ।'

कोई जवाब नहीं मिला ।

क़तराशाह ने तकरार की, 'जो देखा वह नजर से नहीं उतरता । जो सुना वह ज़हन से नहीं जाता ।'

कई बार समझाये हुए सवाल को बार-बार भूल जाने की सज़ा में बच्चा पिटता है । बहुत पिटने के बाद दयालु उस्ताद उसे हमदर्दी से समझाने की कोशिश करता है । बोली में रस घोलकर दरियाशाह बोले, 'शहज़ादे, मैंने तुम्हें फ़क़ीरी और दुनियादारी का फ़र्क़ समझाया था, वह शायद तुम्हें याद नहीं रहा ।'

'वह मुझे हर वक़्त याद रहा हुज़ूर, मगर दुनिया की दिलचस्पियों के असर से मैं अपने ज़हन और फ़हम (बुद्धि और विवेक) को बचा नहीं सका ।'

'इसका मतलब यह कि फ़क़ीरी की शर्त नहीं निभा सके ।'

क़तरा क्या कहे ? बदी हुई शर्तें उसने अपनी समझ से तो निभाई ही हैं । क्या कहकर भूल गया, इस सोच में वह चुप बैठा रह गया ।

उसे निरुत्तर देखकर दरियाशाह ने कहा, 'क़तराशाह, इबादत (आराधना) की दुनियावी मंज़िल है कमाल (पूर्णता-सिद्धि) । उनके रास्ते में मिलती है आबरू । वह बांटती है आरज़ू । आरज़ू को यह लिबास पसंद नहीं जिससे तुमने यह चोला ढक रखा है ।'

और फिर 'इनमें से जो चाहिए सो ले ले', की पुचकार से दरियाशाह ने कहा, 'लिबास उतारना चाहते हो ।'

लिबास उतारने के मानी हैं—मैदान से भाग जाना, ईमान से डिग जाना, कहकर मुकर जाना, यानी मर जाना । पुचकार की क़मची की मार से गिड़गिड़ाकर बोला, 'नहीं पीरोमुर्शिद ! सिर्फ़ जो उलझनें मेरे दिल में पैदा हुई हैं उन्हें सुलझाना चाहता हूं ।'

रहनुमा ने राहगीर की उंगली पकड़ी, 'ऐसी वह क्या उलझनें हैं जिन्होंने तुम्हें सबीले-अल्लाह से गुमराह कर दिया ?'

'हज़रत, मैंने दुनिया में हर शख़्स को फ़िक्रमंद पाया । मेरे दिल में पहिला

सवाल यह पैदा हुआ कि आख़िर इंसान फ़िक्र क्यों करता है ?'

'यह क्या मुश्किल सवाल था शहज़ादे ? इंसान अपनी फ़िक्र मिटाने वाला खुद अपने आपको समझता है और इसीलिए फ़िक्रमंद रहता है ।'

दिल नहीं माना। बड़बड़ाता-सा बोला, 'फ़िक्र मिटाने के लिए फ़िक्रमंदी ! यह कैसे ?'

दरियाशाह हँस पड़े, 'ऐसे ही जैसे तुम अपनी फ़िक्र मिटाने के लिए फ़िक्र-मंद हो !'

यों पकड़ा जायगा, यह ख़याल नहीं था । सर झुका लिया ।

तो दरियाशाह ने पूछा, 'अब किस फ़िक्र में हो ? कोई दूसरा सवाल तो नहीं है ?'

'जी ! दूसरा सवाल यह है कि दुनिया में अमीर कौन है ?'

'जिसे आरज़ू न हो ।'

'तो फिर कंगाल कौन है ?'

'जिसे सब्र न हो ।'

'हज़रत, दुनिया कंगाल उसे कहती है जिसके पास दौलत न हो ।'

'वह तो बेबाक़ होता है क़तराशाह । दौलत का कंगाली से कोई ताल्लुक नहीं है ।'

क़तरा सोच में पड़कर खामोश हो गया । दिमाग़ के तराज़ू का कांटा सतर करने के लिए उसने होठ भींच लिये । दुनिया के कांटे पर कंगाली दौलत के बाटों से तुलती है । दुनिया के बाट ग़लत हैं क्या ? या कंगाली तुलने लायक़ जिन्स ही नहीं है ? या फिर दुनिया के पैमाने झूठे हैं ? नहीं, जिसके पास दौलत नहीं है वह सरासर कंगाल है । यह कैसे माना जाय कि दौलत का कंगाली से कोई वास्ता नहीं है ?

क़तराशाह की ख़ामोशी तोड़कर दरियाशाह ने पूछा, 'अब किस फ़िक्र में हो ? कोई तीसरा सवाल है ?'

'तीसरा सवाल तो फिर यही पैदा होता है कि दौलत क्या है ?'

'दौलत ? दौलत को दरिया का पानी समझो !'

असमंजस में पड़कर क़तराशाह के मुंह से निकला, 'वह कैसे बंदापरवर ?'

'भाई, जैसे दरिया का पानी घूम-फिरकर दरिया में ही वापिस आ जाता है, उसी तरह दौलत भी जहां से चलती है वहीं लौट आती है ।'

क़तरा आश्वस्त नहीं हो सका । हुज्जत-सी करता हुआ बोला, 'अगर ऐसा है तो दौलत के चले जाने से आदमी रंजीदा क्यों होता है ?'

दो टूक जवाब मिला, 'इसलिए कि यह कंगाल दौलत के लौटने तक सब्र नहीं करता ।'

बेशक जवाब दो टूक मिल रहे थे लेकिन हर जवाब के साथ क़तराशाह की उलझन बढ़ती जा रही थी। नहीं, वह नहीं मानेगा। तर्कवादी है। जब तक समझ न लेगा, परख न लेगा, स्वीकार नहीं करेगा। पर कैसे समझे, कैसे परखे, कैसे उज़्र करे ? आपत्ति करने के लिए उचित शब्दों के अभाव में क़तरा बेचैन हो गया।

दरियाशाह उसकी बेचैनी समझते हैं। क़तराशाह को सोच में पड़ा देखकर बोले, 'अब क्या फ़िक्र है क़तराशाह ? कोई चौथा सवाल भी है क्या ?'

हौसला बांधकर क़तराशाह ने कहा, 'जी, है ! मेरी समझ में यह नहीं आया कि आदमी औरत से इतना वाबस्ता (संलग्न) क्यों है और फिर उसी से इतना परेशान क्यों है ? आख़िर औरत शै क्या है ?'

दरियाशाह इतने ज़ोर से हँसे कि सैकड़ों पक्षी उस पिपलिया नीम की कोटरों में से निकलकर फड़फड़ा उठे। दरियाशाह ने चिलम धूनी में उलट दी और दोबारा भरते हुए आप-ही-आप बोले, 'आदमी उन्हीं चीज़ों से वाबस्ता रहता है जिनसे उसे परेशानी होती है।'

क़तरा चुपचाप उन्हें देखता रहा। आहिस्ता-आहिस्ता उन्होंने चिलम भरी और पलटकर क़तराशाह से पूछा, 'समझे ?'

'जी नहीं।'

एक-एक भारी-भारी पत्थर की शिला एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखने की तरह एक-एक शब्द दरियाशाह बोले, 'यह हस्ती जिसे औरत कहते हैं, ऐसी है कि जिसे समझे और पहिचाने बिना न ज़िंदगी मुमकिन है, न मौत मुमकिन है। फ़क़ीरी और इबादत तो बहुत दूर की बातें हैं शहज़ादे !'

दबी ज़ुबान से क़तराशाह ने कहा, 'इसीलिए मैं इसे समझना और पहिचानना चाहता हूँ मुकर्रम (पूज्य) !'

जो पृच्छा लेकर यह नवीन संन्यासी जहां-तहां की धूल फांकता और घाट-घाट का पानी पीता हुआ आज यहां आ पहुंचा है उसका उत्तर देना क्या इतना सहज सरल काम है ? जिसने नारी के सौंदर्य और आकर्षण से घबराकर भरी जवानी में ही गले में कफ़नी और बग़ल में झोला लटका लिया, उसके मन में नारी के प्रति परेशानी और वाबस्तगी का प्रश्न आश्रय ही क्यों ले ? जननी और जाया, दोनों के आलिंगन-सुख से वंचित प्राणी तो रागी न अनुरागी, फिर वैरागी कैसे हो ? मूर्तिमान आकर्षण होते हुए भी जो मात्र समर्पण है और जिसके समर्पण की प्रतिक्रिया केवल ग्रहण है, उस आकर्षण, समर्पण और ग्रहण के चक्र में पड़ा हुआ प्राणी इस गोरखधंधे के केन्द्र में कैसे पहुंचे ?

पर क़तराशाह की उलझन सच्ची है। उसकी ज्ञान-लालसा पर संदेह नहीं किया जा सकता। ऐसा होता तो दरियाशाह उसका झोला-झंझट छीन-छानकर

निश्चय ही धूनी में झोंक देते।

दोनों समय पूरी तरह गले मिल चुके थे। मलगजी मलमल का मटियाला शामियाना सुरमई हो गया था। प्रश्नकर्ता उत्तर सुनने के लिए चुप था और उत्तरदाता शायद उत्तर देने के लिए उचित माध्यम की प्रतीक्षा में चुप था। पिपलिया नीम के झुटपुटे में दोनों फ़क़ीर मुग़लकालीन चित्राकृतियों की तरह स्थिर थे। वायु, वृक्ष, शाखा, पत्ते सभी कुछ स्तंभित, सभी आत्मचिंतन में लीन।

तभी कुछ आहट हुई। देखा तो दो आदमी थे। अमीरअली यानी मीरा मिस्त्री और उसका छोटा भाई पीरअली यानी पीरा। दोनों भाइयों में काफ़ी छोट-बड़ाई है। मीरा है कोई चालीस का और पीरा होगा पचीस-तीस का। इन दोनों भाइयों की न मां है, न बाप है, न बीवियां। मरी नहीं हैं, इनका ब्याह ही नहीं हुआ। दोनों मिलकर अकेले हैं। और-और बगदारियों की तरह यह दोनों भी ख़ानदानी राज हैं। उन्हीं की तरह ग़रीब, उन्हीं की तरह गुणी। इन दोनों की सूरतें इनके चरित्र और चाल-चलन के बहुत ही साफ़ आईने हैं। मीरा को देखते ही कोई कह देगा कि यह जीवन से असंतुष्ट, चिड़चिड़ा, तकरारी, बेसबरा, नाशुकरा, लालची और चरसी-गंजेड़ी आदमी है। हां, जब तक रात को छप्पर में बायें कान पर बायां और हवा में दायां हाथ उठाकर आंखें मूंदे इसे कोई गुलबकावली, ढोलामारू, निहालदे और हीर गाते हुए देख-सुन नहीं लेगा तब तक यह ज़रूर नहीं कह सकता कि यह रसिया सुरीला और बैठकबाज भी है।

इसे नसीब कहिये, संयोग कहिये, कर्मों का फल कहिये या गर्भस्थिति-काल की इनके जनकों की मन:स्थिति कहिये कि मीरा और पीरा के रंग-रूप, स्वभाव और मनोवृत्ति में तालमेल का नितांत अभाव है। गत जन्म का प्रभाव तो कह नहीं सकते, मुसलमान हैं। जो भी हो, मीरा है कुछ काला-सा और पीरा है गोरा-गोरा। मीरा देखने में यों ही कुछ भुच्च-सा, ऊबड़-खाबड़-सा है और पीरा है मोहक। गठा हुआ, जवान, हँसमुख। बात-बात पर हँसता है। जाने क्यों हँसता है, पर हद है कि मुर्दा देखकर भी हँसकर ही पूछता है कि 'मर गया ?'—ऐसा भी नहीं है कि सूफ़ी हो, या हर वक़्त अल्ला-अल्ला करने वाला मुल्ला-कठमुल्ला हो। अल्ला का नाम तो कभी किसी ने ज़िंदगी में इसके मुंह से सुना ही नहीं। बस एक ही बात जानता है, हँसना। शायद यह हँसी इसे किसी नेकी के बदले में अता की गई है। पर नेक की दुनिया कहां है ? लोग ऐसे को बावला कहते हैं। पीरा बगदार में 'पगला पीरा' मशहूर है। टेढ़ी-से-टेढ़ी बात में इसे टेढ़ नज़र नहीं आती। हां, चुनाई-बंधाई की टेढ़ नजर से नहीं चूकती। ख़ानदानी कारीगर है। भूख इसे लगती है या नहीं, कुछ मालूम नहीं। जितना मिलता है, जब मिलता है, खा लेता है। नहीं मिलता तो शायद नहीं खाता। अलीजान पंसारी के पास इसका प्रमाण है। उसके ऋणियों में अकेले पीरअली का ही नाम नहीं है। अलीजान कहता है,

'सुसड़ा धूल फांक कड़ जीता है, कड़महीन है ।'

धूल-धक्कड़ में सर से पांव तक अंटे हुए, थके-हारे दोनों भाई बीस-बीस सेर के औज़ारों के थैले कंधे पर लादे दिन छिपे दरियाशाह के तकिये पर पहुंचे । मीरा झल्लाया हुआ-सा चौतरे की सीढ़ी पर दरियाशाह की ओर पीठ करके बैठ गया जैसे उनसे इसका पीढ़ी-दर-पीढ़ी का तनाज़ा हो और घर जाते-जाते सिर्फ़ पीरा के कहने से इस गुनाहगाह में आ गया हो । पीरा औज़ारों का थैला पटककर हमेशा की तरह हँसता हुआ 'सलाम बाबा' कहकर दरियाशाह की तरफ़ बढ़ा । दरियाशाह पीरा को देखकर ऐसे ललक उठे जैसे चरकर आये हुए बछड़े को देखकर थान पर बंधी हुई गैया ललक उठती है । खुश होकर बोले, 'आओ पीरशाह, आओ ।'

दरियाशाह के पीछे बैठकर ज़ोर-ज़ोर से उनकी कमर दबाते हुए हँसकर पीरा ने कहा, 'तू भी बाबा ऐसा है कि बस···मैं तो खाली पीरा हूं, 'साह' क्यों लगाता है ? साह तो तू है !'

पीरा दरियाशाह से तू-तड़ाक करता है । उसके झटकों से झोटे खाते हुए दरियाशाह ने पीरा की बात का जवाब दिया, 'नहीं, शाह तुम हो ।'

'साह तो देख ले तूई है ।'

'मैं शाह हूं तो तुम शहंशाह हो ।'

इन बोलों में तो आवाज़ है, पर कहते हैं कि दो औलिया जब मिलते हैं तब इशारों से ही कहते हैं और इशारों से ही सुनते हैं । अनुभूति को वाणी व्यक्त भी कैसे करे ? मालूम नहीं कि पीरा इस बात को इस तरह से जानता है या नहीं । शायद नहीं जानता । पर यह दोनों जब मिलते हैं तब ऐसी ही बातें करते हैं । पीरा हुज्जत नहीं करता, ज़ोर से हँस पड़ता है । अब भी हँस पड़ा, दरियाशाह ने कहा, 'लो पीरशाह, चिलम पियो ।'

अभी-अभी चिलम भरी थी । सीढ़िया चढ़ते हुए पीरा ने उन्हें चिलम भर-कर बैठते हुए देखा था । बोला, 'पैले तू पी ।'

'नहीं, पहिले तुम पियो ।'

चिलम उन्होंने उसकी तरफ़ बढ़ाई तो बच्चे की नादानी पर हँसने की तरह हँसकर पीरा ने उनसे कहा, 'बाबा, मैं पैले कैसे पी लूं तेरी भरी हुई चिलम !'

'पहिले बुज़ुर्ग को पिलाया करते हैं न पगले !'

अपनी बुज़ुर्गी पर पगलेपन का सेहरा बंधवाकर पीरा ने मुस्कुराकर उनका हाथ पीछे को मोड़ा और बोला, 'बुजरग तो तू है, आप ई पी पैले !'

'भई बुज़ुर्ग तुम हो पीरशाह, इसीलिए दे रहा हूं ।'

पीरा ने ज़िद की, 'मैं तो नईं पीता तुस्से पैले !'

दरियाशाह भी हठ कर गये, 'तो हम भी नहीं पीते तुमसे पहिले !'

पीरा हार गया, 'ला तो मुजे क्या है !'

और पीरा ने चिलम में दम लगाया।

पीरा से चिलम लेकर मीरा की ओर देखते हुए दरियाशाह ने पीरा से पूछा, 'कहां-कहां हो आये दोनों भाई?'

पीरा ने कहा, 'बाबा, काम ढूंढने गये थे। बारह कोस का फेरा मार दिया पर कईं मरम्मत का भी काम नईं मिला।'

कारोबारी आदमी की तरह दरियाशाह ने कहा, 'हां भई काम का तो मद्दा ही है आजकल।'

चौतरे की सीढ़ियों पर बैठा हुआ मीरा ललकार की तरह बोला, 'हम तो तुमें करामती जब समजें दरिया बाबा, जब तुम हमारे हात की तंगी दूर कर दो!'

दीनता से हँसकर दरियाशाह ने कहा, 'मेरे पास क्या करामात रक्खी है अमीरअली, मैं तो खुद ही तुम लोगों से भीख मांगकर गुज़ारा करता हूँ!'

मीरा बुलबुले की तरह फट पड़ा, 'गांव वाले फकीर-फुकरे को भीक डालें तो उसे उनके कुछ काम भी आना चैये!...लोग रोजीना दो-दो घंटे तुमारी चाकरी बजाते हैं—काय के लिए?'

पीरा ने कहा, 'अरे कैसी बात करता है तू मीरा। बाबा क्या किसी को बुलाने जाता है चाकरी बजवाने के लिए? फिर भीक तो वो डालेगा जिसके पास कुछ होगा—तू क्या भीक डालेगा बाबा को?'

अमीर अमीर कहने से नहीं चिढ़ता पर कंगाल कंगाल कहने से चिढ़ता है। मीरा चिढ़ गया। चिढ़ने वाले के पास तर्क नहीं होता, सिर्फ़ हुज्जत होती है। मीरा ने कहा, 'तेरे उप्पर बहुत मैरबानी है तो मांग ले काम।'

पीरा पागल ने हँसकर कहा, 'तू पागल है, मैं तो पागल नईं हूं।'

मीरा झुंझलाया, 'क्यों? हम कैसे पागल ठैरे?'

'अरे काम की जगै काम मिलेगा कि यां पै मिलेगा? और जब मिलना होगा जब मिल जायगा।'

फिर पीछे से बाबा के कान की तरफ़ मुंह करके बोला, 'क्यों जी बाबा, ठीक कई कि नईं?'

इतना ठीक तो बहुत कम लोग जानते हैं जितना यह पागल जानता है। पर ठीक को ठीक कह देना भी कभी-कभी पागलपन कहलाता है। सो इस पागलपन को टालकर दरियाशाह ने पागलपन की दूसरी बात कह दी, 'पीरशाह काम तो हम तुम्हें दे दें मगर तुम तो पैसे भी मांगोगे।'

पीरा हँस पड़ा, 'काम करूंगा, तो पैसे मांगूंगा ई, यह क्या बात कई तैंने?'

ऐसा लिहाज़ पीरा किसी का नहीं करता। काम करके मुआवज़ा न लेना भी पाप है, और करवा के न देना भी पाप है। काम ही जीवन का आश्रय है। जीवन अगर खुदा का दिया हुआ है तो उसे टिकाने के लिए काम भी खुदा का दिया हुआ

है। पीरा काम के पैसे तो खुदा से भी लेगा ही। पर यह काम देने वाला तो बिल्कुल ही फ़क़ीर आदमी है, इसके पास पैसे कहां से आये ? सोचकर पीरा ने कहा, 'पर खैर तुस्से आधे ई ले लूंगा, तू काम बता क्या है ?'

आधे पैसों पर राज़ी होकर दरियाशाह ने काम बतलाया, 'इस मेरे तकिये की दीवारें खड़ी कर दो। तुम अपनी समझ से यहां ऐसी कोई तीमार कर दो कि मुसाफ़िरों को आराम पहुँचे, मेंह-पानी से पनाह मिले, बड़ा सवाब होगा।'

एकदम से पीरा, पगला पीरा न रहकर पीरा मिस्त्री हो गया। धूनी की रोशनी में उसने चारों तरफ़ कारीगर की नपी-तुली नज़र दौड़ाई, फिर कुछ सुस्त-सा पड़कर बोला, 'अजी ये तो मुज इकेले का काम नईं है। मैं आधी मजूरी ले लूंगा, समजो कि जातवालों को भी आधी पे मना लूं, पर माल-पानी के लिए भी तो जमा उठेगी, बड़ा काम है !'

फ़क़ीर ने कमर सीधी की। चिलम धूनी में उलट दी। घुटना ऊंचा करके फटी हुई चटाई का कोना उठाया और नक़द रुपयों की एक पोटली निकालकर हाथ में उछाली। झमझम आवाज़ हुई। फिर उछाली। फिर झमझमाहट हुई।

क़तराशाह ने दरियाशाह की इस हरकत को ग़ौर से देखा।

फ़क़ीर के पास रुपयों की पोटली देखकर मीरा की आंखों से हसरत और मुंह से राल टपक पड़ी।

दरियाशाह ने पीरा से कहा, 'लो तो पीरशाह, इसमें से माल-पानी भी ले आना और मज़दूरी भी ले-दे लेना, फिर देखा जायगा। कल सुबह से ही काम शुरू कर दो। जाओ, अल्ला वाली ! रात हो गई।'

पीरा ने पोटली टेंट में बांधी और सलाम करके खड़ा हो गया। औज़ारों का झोला कंधे पर डाला, भौंचक होकर देखते हुए मीरा को आवाज़ देकर उठाया और चल दिया। मीरा इस तरह उसके पीछे-पीछे चला जैसे ढलान पर किसी ने पीछे से धक्का मार दिया हो।

और फिर दरियाशाह ने पूरक प्राणायाम की तरह 'अलख अल्लाह' की पुकार से वातावरण को गुंजायमान करके चिलम भरी और उतना ही लंबा दम लगाकर आंखें मूंद लीं।

फिर सन्नाटा छा गया।

जब सन्नाटा गूंजता है तब इड़ा पिंगला सब झनझना उठती हैं। रक्त में अंधड़ उठ खड़ा होता है और धमनियों में तूफ़ान आ जाता है। आदमी अपनी ही आवाज़ सुनने के लिए नाभी से पुकार उठता है। सन्नाटा सहन करना बड़ा औघड़ काम है। घबराकर क़तराशाह ने कहा, 'हुज़ूर किसी सोच में हैं ?'

आंखें मूंदे-मूंदे ही दरियाशाह की आवाज़ निकली जैसे किसी गहरे कुएं से निकली हो, 'हां, हूं ! मैं इस सोच में हूं कि मैंने जो तुम्हें बातें बतलाईं वह तुम

समझे या नहीं ।'

'हक़ीक़त यह है कि मैं नहीं समझा !'

'समझना चाहते हो ?'

'हुज़ूर !'

वर्षारंभ के पूर्व की घन गर्जना की तरह गुरु-गंभीर वाणी से दरियाशाह बोले, 'अच्छा तो शहज़ादे, ख़बरदार ! वादा करो नफ़े और नुक़सान में तुम्हारी शिरकत न हो !'

'करता हूं !'

'मुरव्वत और अदावत से तुम्हारा ज़मीर पाक रहे !'

'जी ।'

'नज़्ज़ारे का रंग तुम्हारी नज़र पर न चढ़ने पाये ।'

'इन्शाअल्लाह !'

इसके बाद दरियाशाह फिर कुछ नहीं बोले ।

□□

मीरा और पीरा का घर मौरूसी है । पास-पड़ोस के घरों से ड्यौढ़ी ऊंची है, लेकिन है काफ़ी बुरी हालत में । टूटी-गली-सड़ी-सी किवाड़ें हैं । घर में धरा ही क्या था जो मज़बूत किवाड़ों की ज़रूरत होती । शादियां तक नहीं कीं, नहीं तो टाट का पर्दा तो होता ही । दुआरी छोड़कर भीतर जाने के बाद एक चौक है, ख़ासा बड़ा है । चौक के बाद जो कुछ है उसे घर कहना हो तो कहा जा सकता है । कहीं कच्चा, कहीं पक्का । टूटा-फूटा, उधड़ा हुआ-सा । उधड़ा हुआ होते हुए भी कहीं-कहीं जो दो-चार खिड़कियां या रोशनदान काल का ग्रास होने से शेष रह गये हैं वह शाहजहांनी शान के हैं । दाईं ओर के भाग में पीरअली रहते हैं और बाईं ओर के में अमीरअली । सामान के नाम पर दो-चार मिट्टी के मटके, बदनों, तसलों और दो-चार काठ के संदूकों के अलावा दो खटिया-सी और हैं, बाक़ी सब अलख अल्लाह है ।

मनुष्य के स्वभाव की भी थाह नहीं पाती । कौन कब किस बात से प्रसन्न होगा, किससे अप्रसन्न, क्या होने से संतुष्ट होगा, क्या होने से असंतुष्ट, इसका भेद अंतर्यामी के भी हाथ नहीं आया । क्या होने में संतोष करना चाहिए और क्या होने में चिंता, यह तो खैर दूर की ही बात है । तिल की ओट हटा सकने वाले ही यह जानते हों तो जानते हों ।

रसोई चूल्हे की ज्वाला से ही प्रकाशमान थी । पीरा मुस्कुराता हुआ टिक्कड़ सेंक रहा था । मीरा माथे पर चिंता की सरवटें डाले भीत से टिका हुआ हुक़्क़ा

पी रहा था। बेझड़ की सिकाई की सौंधी-सौंधी सुगंध से जब मीरा के गले में कुछ तरी पहुंची तो बोला, 'क्यों भई, इस फकीर की चटाई के नीचे रकम कां से आई ?'

बेकार बोलने से पीरा मुस्कुराना ज्यादा पसंद करता है। भेद की गांठ खोलने के लिए मीरा और आगे उलझा, 'हम इत्ते दिन से तकिये पे आते-जाते हैं, हमने तो कभी एक कानी कौड़ी भी इसके पास नईं देखी। ना कोई ऐसा मुरीद ई देखा जो इत्ती बड़ी पोटली पकड़ा देता !'

इस बार पीरा हँस पड़ा, 'पर तुजे इन बातों से क्या पड़ी है दिमाने ? उसने अपने काम के लिए दिये हैं, तू काम कर और मजूरी ले।'

जो मन से हँसना नहीं जानता वह इतनी सीधी बात शायद सोचना भी नहीं जानता।

मीरा दोनों में से कुछ भी नहीं जानता। एक सांस-सी भरकर बोला, 'वो तो है ई। हम सोच रये हैं कि इसने किसी गांव वाले के साथ कौड़ी का सलूक नईं करा, ये इमारत चिनवाने को पोटली कां से निकल आई ? पान सेर पक्के की तो होगी !'

पीरा ने हाथ झाड़कर लुंगी कसी। पोटली अंटी में होगी शायद ! फिर बुझती हुई आग सुलगाने के लिए चूल्हे में फूंक मारी ही थी कि बाहर से आवाज़ आई, 'अड़े भई मीड़ा ! मियां अमीड़अली !'

और अमीरअली ने माथा ठोका कि 'आ गया बक्काल का !'

अलीजान ने अन्दर आकर सलामालेकुम की और मीरा ने ग़मज़दा की तरह जवाब दिया, 'वालेकम अलीजान भाई, आओ बैठो।'

बैठने के लिए तो आया नहीं था। खड़े-खड़े ही बोला, 'आज तो कमाई कड़के लाये होंगे मिस्त्ड़ीजी। लाओ कुछ उताड़ दो अलीजान का भी।'

झुंझलाकर मीरा ने कहा, 'कां से उतार दें, कईं काम ई नईं मिला। बारै कोस का चक्कर पड़ गया—जूतियों की जोड़ी घिस गई सुसरी।'

'अब तुम जूतियों-टोपियों की अलीजान को मत सुनाओ। साढ़े बाड़ह के साढ़े बाड़ह तो अलीजान भी नहीं मांग ड़हा है। पड़ कुछ तो उताड़ो इत्ती बड़ी ड़कम में से।'

देनदार का ईमान बड़ा हल्का होता है। मीरा ने कहा, 'इमान उठवा लो अलीजान भाई, एक दमड़ी की मजूरी नईं हुई।'

लेनदार के गल्ले में ईमान के लिए जगह कहां से आई ? तुनककर बोला, 'बस याड़ इमान उठा जाते हो खटाक से। मजूड़ी तो क्या खबड़ तुम्हें कत्तक नहीं मिलेगी !'

मीरा को आधी मजूरी का आसरा याद आया। भरोसा दिलाकर बोला, 'मिल रई है मियां, अभी खबर आई है।'

'मिल ड़ही हो, चाय ना मिल ड़ही हो। इससे आगे अठन्नी ड़ुपिये महीने का मुनाफा जोड़ेगा अलीजान।'

रुपिये पर रुपिया महीने पर भी अमीरअली अलीजान से बिगाड़ नहीं कर सकता। गिड़गिड़ाकर कहने लगा, 'जोड़ लेना, मियां जोड़ लेना, तुमसे उजर करे सो बद।'

पर मीरा की छाती में नेज़ा भोंके बिना अलीजान नहीं माना। बोला, 'सुन लो कान खोलकड़। जब तक साढ़े बाड़ह के खाते में उताड़ना शुड़ू नहीं कड़ोगे तब तक न तो अलीजान तुम्हें नशा पिलायेगा न जलेबी खिलायेगा।'

चला गया ? हां, चला गया। जलेबी गई भाड़ में। अब यह गांजा भी नहीं देगा !

मीरा के पांव तले की धरती हिलने लगी। उसे लगा वह जितनी जगह पर बैठा है उतनी धरती नीचे को सरकती जा रही है और सुरंग का अंधेरा घुप होता जा रहा है। इसमें घुटकर वह थोड़ी ही देर में दमबहक़ हो जायगा।

रंग पर आई हुई चिलम में धसका लगा, यह तम्बाकू भी अलीजान के यहां का ही है। 'साला गधे की लीद मिलाता है तमाखू में।' मीरा ने हुक़्क़ा दोनों हाथों से उठाकर भींत से टिका दिया, जैसे मन भर का हो।

पीरा रोटियां सेंक चुका था और तसले में से पलोथन हांडी में झाड़ रहा था कि मीरा ने कहा, 'पीरा !'

'हूं।'

'उस पोटली में से पंद्रै रुपिये दे दे तो हम इस अलीजान की नाक पे साढ़े बारैं मार दें।'

'उसमें से नईं दूंगा।'

'अरे पेसगी दे दे, मजूरी में काट लीजो।'

'नईं।'

'दे दे पीरअली दे दे, पंद्रै ई तो मांग रये हैं।'

'तू चाय कित्ते ई मांग ले।'

मीरा ने ख़ुशामद की, 'अरे मान जा ठेकेदार, सलाम करवा ले।'

पीरा हँस पड़ा, 'ठेकेदार ? यह बात तो खूब कई।'

मीरा ने दूध की दुहाई दी, 'भाई नईं है तू हमारा ?'

पीरा ने मंज़ूर किया, 'भाई तो हूं ई।'

'तो ला पंद्रै रुपिये दे दे।'

'उसमें से तौ नईं दूंगा अपने अब्बा को भी।'

मीरा को ताव आ गया। दूध, दुहाई, ख़ुशामद और भाईबंदी सब गांजे के धुएं में उड़ गईं। बोला, 'देख मैं सीधी तरै से मांग रया हूं। मुजे गुस्सा आ

जायगा तो अच्छा नई होगा, कहे देता हूं।'

पीरा ने बड़े भाई के गुस्से पर प्यार की थपकी दी, 'तू कोई पागल तो है नई जो गुस्सा आ जायगा। दूसरे की रकम है, मैं तुजे कैसे दे दूंगा उसमें से ? कल से काम लगने वाला है, उस पे मजूरी कर और रोजीना ले। फिर चाये जिलेबी खा, चाये नसा-पत्ता कर।'

थपकी खाकर दुलत्ती झाड़ने वाले भी तो हैं ही। तमतमाकर मीरा उठकर खड़ा हो गया, 'बस चुप हो जा हमारे सामने ! गरूर दिखाता है रकम का ? हमारी तेरी बोलचाल बंद।'

फ़क़ीर की पोटली ने साही के काँटे की तरह घर में आते ही भाइयों में झगड़ा कराके पहिला करिश्मा दिखाया। लंबे-लंबे डग भरता हुआ मीरा दरवाज़े की तरफ़ चला तो पीरा ने पुकारा, 'मीरा !'

पर वह नहीं रुका। पीरा को इस पर भी हँसी आ गई। खुदाई दौलत की तरह कभी ख़त्म न होने वाली बेवक़ूफ की-सी हँसी। पीरा ने पुकारकर कहा, 'रोटियां छोड़ के मज्जा मियां, ये गरम हैं, रूखी ही स्वाद लगेंगी।'

पर रोटियों के लिए तो नसीब चाहिए।

□□

टुकड़ा-टिक्कड़ खाकर चिलम-तमाखू पीने, दिन-भर के हालात का जायज़ा लेने और रोटियों की कमी हँसी-दिल्लगी और गाने-बजाने से पूरी करने के लिए कमेरों की बैठक जमती है छप्पर में। मीरा गाता है, सरफ़ू अलगोजा बजाता है और नौ कम सौ की उम्र में अफ़ीम का गोला चढ़ाकर ढोलक बजाते हैं बुंदू चचा। ढोलक सुननी हो तो बुंदू की ! तनी हुई ढोलक पर बूढ़ी उंगलियों की चोट ऐसी पड़ती है कि कोसों तक के पत्थर जलतरंग की तरह खनखना उठते हैं। छः कोस दूर बसी हुई किकरौली तक के सोये हुए लोग-लुगाई जान जाते हैं कि बुंदू बगदारी अभी जाग रहा है।

रसिया मीरा जब चिलम की चांदी करके कान पर हाथ धरकर खड़े सुर में टीप जमाता है कि 'अगनी लग जाय अभी दहन में, जो नहीं आवे मजा कहन में' या 'हये-हये मेरा गुल ले गया कौन, हये-हये मुझे जुल दे गया कौन' तो सुनने वाले कपास की तरह सर धुनने लगते हैं, मीरा से लिपट-लिपट जाते हैं। आधी ढले तक छप्पर में रस की बरखा होती रहती है। जाड़ा हो या गर्मी, आंधी हो या पानी, यह नियम कभी नहीं चूकता।

पर आज चूक गया। सब हैं, पर मीरा नहीं है। सब उचक-उचककर अंधेरे रास्ते को ताक रहे हैं, पर कुछ दीखता नहीं। बहुत देर बाद कुछ दीखा तो सही

धब्बा-सा आता हुआ; पर सामने आया तो पगला पीरा निकला। सबने सवालों की बौछार कर दी, पर पीरा खुद ही मीरा को ढूंढता हुआ आया था, बताता क्या? रस बेरस हो गया।

पर जब पीरा ने तकिये पर काम लगाने की बात सब भाइयों के सामने रक्खी तो मीरा की बात टल गई। खाने के आगे गाने की क्या चलती है?

काम तो ठीक है, बड़ी खुशी की बात है, पर मजूरी आधी! यह क्या बात हुई भला? आधी मजूरी पर काम करने में क्या तुक है? बुंदू मियां के सिवा सबने नाक मारी। सबसे ज़्यादा सरफ़ू ने। आधी मजूरी यानी आधा पेट। आधा ख़ाली हो तो चौथाई काम भी कैसे होगा? आधा पेट ख़ाली हो तो पूरी आंख बंद रहती है। माल भी कमती-बत्ती मिलता-रिलता है। रेती ज़्यादा मिल जाती है, सिमिट कम। ईंट टेढ़ी लगती है, सीधी नहीं बैठती। कोने गुनिये में नहीं आते, फिर बदनामी ऊपर से कारीगर की!

पीरा ने थाली-सी ठनठनाकर साफ़ कह दिया कि पेट आधा ही रहेगा और आधो मजूरी पे ही पूरी आंख खोलनी पड़ेगी। जो भाई खोल सकता हो वह हामी भरे जो न खोल सकता हो उस पर कोई ज़ोर ज़ुल्म नहीं है। उसने काम की साई ली है, कोई साथ नहीं देगा तो अकेला ही काम करेगा।

अकेला? हां, अकेला! जो अकेला चलने की हिम्मत रखता है उसी के पीछे दुनिया चलती है। अकेले की क्षमता असीम है। एक में ही अनेक हैं। अनेक अकेले की ओर ताकने लगे। पागल की ओर सभी ताकते हैं।

बुंदू ने सबको मिलाकर एक पोपली-सी गाली देकर पागल की हिमायत की, 'फ़क़ीर का काम है, पीरा का ठेका है। सब ठाली पड़े ऐंड रये हैं, पूरी नईं तो आधी सई।'

आधी को इंकार करने वाला भूखा, चटोरा होता है। चटख़ारे चाहे जितने भर लें पर हैं यहां सब भूखे। अकेले को साथी मिल गये। आधी मजूरी पर ही अगली सुबह से तकिये पर काम लगाने का फ़ैसला हो गया।

लेकिन मीरा कहां गया? उससे भी तो क़रार करवाना है।

□□

भूखा-प्यासा मीरा मिस्त्री घर से तो निकल आया पर बहुत दूर नहीं गया। गली के अंधेरे में दुबककर वह पीरा के बाहर आने की बाट देखने लगा। पीरा जब रोटी-पानी खा-पीकर बाहर निकला तो वह चुपचाप घर में घुस गया।

छप्पर में जब साज़, साज़िंदे और सुनने वाले, गवैये का बेचैनी से रास्ता देख रहे थे तब गवैया मिट्टी के तेल की ढिबरी हाथ में लिये पीरा के कोठे में

चोर की तरह घुसा हुआ मटके, हांडी, तसले और काठ के संदूक़ खखोड़कर वह पान सेर पक्के की पोटली ढूंढने में लगा हुआ था।

दौलत ऐसी होती है क्या?

आले-दिवाले, कोने-बिचाले, सब ढूंढ मारे पर पोटली नहीं मिली। दम फूल गया, पसीना चुच्चा पड़ा, छाती और कमर के बालों में से परनाला छूट पड़ा पर पोटली नहीं मिली। पीरा की जनती को मोटी-सी गाली देकर मीरा माथा ठोंककर बैठ गया।

तभी आधी मजूरी के ठराव से खुश, और भाई के न मिलने से नाखुश होकर पीरा घर लौटा।

आहट सुनते ही मीरा ने ढिबरी में फूंक मारी और उछलकर खाट पर पड़े हुए गूदड़ों में घुसकर ख़र्राटे भरने लगा। चलो है तो घर में ही—पीरा ने सुनकर सब्र की सांस ली। अब आधी के क़रार की बात सवेरे ही देखी जायेगी। लुंगी की अंटी मज़बूत करके उसने पुकारकर पूछा, 'रोटी खा ली भाई जान? कूंडे तले धर गया था।' बोलचाल तो थी ही नहीं, जवाब में ज़ोर के ख़र्राटे सुनकर पीरा ने अंदाज़ा लगाया खा ली होगी। ऐसे ख़र्राटे तो पेट भरने पर ही आते हैं।

पीरा आप-ही-आप हँसा और सोते-सोते हँसने के लिए लंबी तानकर सो गया।

□□

अगले दिन गजरदम दरियाशाह के तकिये पर तामीर का ख़ाका ठहराने और मालताल का अंदाज़ा लगाने के लिए बुंदू मियां के साथ पीरा जब सारे राज-मिस्त्रियों की मदद लेकर पहुंचा तो पहिला हादिसा सामने आया।

दरियाशाह वहां नहीं थे।

सब हैरान। नौ कम सौ बरस में कभी ऐसा नहीं हुआ कि तकिया हो और फ़क़ीर वहां न हो।

सब झाड़-झंखाड़ ढूंढ मारे। कहीं पता नहीं। अलख अल्लाह के बदले 'बाबा हो', 'दरिया बाबा', 'अजी दरिया साब', 'साहजी हो' की पुकारों से सारा टीला गूंज उठा। पिपलिया नीम के बचे-खुचे पंछी भी इस हो-हल्ले से फड़फड़ाकर उड़ गये पर दरियाशाह नहीं मिले।

'धूनी तो गरम है!' पीरा ने कहा, 'कईं इधर-उधर चला गया होगा। आ जायगा थोड़ी देर में!'

ठीक बात है। सब-के सब धूनी के चारों ओर चिलम सुलगाकर बैठ गये।

पीरा सोचने लगा—वह दूसरा फ़क़ीर तो नहीं उड़ा ले गया कहीं? पर बाबा कोई बच्चा थोड़ा ही है, उड़ा कौन ले जायेगा उसे?···पर ऐसा हुआ कभी

नहीं ! फिर रक़म देकर इतना लापरवाह कोई होता है ?

दोपहर हो गया पर दरियाशाह नहीं आये । उलझन में पड़कर पीरा ने कहा, 'चचा कुछ अंदाज तो लगाओ ।'

'अब ऐसे का क्या अंदाज लगे भई ।' कहकर फ़ौरन ही बुंदू ने पीरा से पूछा, 'और जो बाबा नहीं आया तो बे ?'

यह बात तो पीरा के ख्याल में भी नहीं आई थी, जवाब क्या दे ? चुप बैठा रह गया तो सरफ़ू, सरवर, गबरू, सब उसके पीछे पड़ गये । 'क्या काम लिया बुद्धू ने'; 'किसका काम लेके आधी मजूरी ठराई है'····'आधी का भी क्या भरोसा इस तरै'····'फकीट्टे की इमारत चिनने चला है पगला'····'खामखा इस भोंदू के फेर में पड़ गये'····'दिन गारत हो गया !'

पर पीरा शायद यह ताने-तिश्ने सुन ही नहीं रहा था । सुन भी रहा हो पर उसने किसी की बात का कोई जवाब नहीं दिया । जाने क्या सोचकर अचानक हँस पड़ा । लोग मुंह ताकने लगे । इसमें हँसने की क्या बात है ? हँसकर पीरा ने बुंदू से कहा, 'नई आया तो नई सई, हमें क्या है । उसने काम सौंपा है, रकम दी है, हम करेंगे । तुम मूं मीठा कल्लो और बिसमिल्ला करवाओ ।'

मसले का यह हल सबको जंच गया और बुंदू मियां ने गुड़ की भेली फोड़ दी ।

मीरा आया तो था, पर सब से अलग-थलग, हुक़्क़ा-पानी बंद करके ज़ात से छेके हुए की तरह एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ नीची निगाहों से चुपचाप सारी कार्रवाई देख रहा था । आज गांजे में दम नहीं लगा है । जंभाइयां आ रही हैं । सारा तन दुख रहा है । वह यों ही पड़ा रहेगा, दिन भर, रात भर । पीरा का ठेका है, पंद्रह रुपिये भी नहीं देगा ? सब कहने-सुनने की भाई-बंदी है इस दुनिया में, बखत पड़े पर कोई किसी के काम नहीं आता । देना चाहता तो क्या मजूरी के हिसाब में दे नहीं सकता था पेशगी ? घमंड करता है हमारे सामने ! वह काम में हाथ नहीं लगायेगा, चाहे कुछ हो जाय ।

गुड़ बांटता हुआ पीरा मीरा के पहुंचा पर न मीरा ने इंकार किया, न लेने को हाथ बढ़ाया । ऊपर को देखने लगा जैसे पेड़ के पत्ते गिन रहा हो । पीरा ने हँसकर कहा, 'अरे ये क्यों नई लेता ? ये तो तबर्रक (प्रसाद) है ।'

मीरा ने नहीं लिया तो पीरा ने पुकारकर बुंदू से शिकायत की, 'देखो चचा, गुड़ नई लेता है ।'

बुंदू ने चिल्लाकर पूछा, 'तबर्रक क्यों नहीं लेता कमनसीब के जने ?'

गंजेड़ी को गाली और मीठा दोनों चीज़ें खाने का चस्का होता है शायद ! गाली खाकर रूठे बच्चे की तरह झल्लाकर मीरा ने पीरा के हाथ से गुड़ की डली छीन ली और बुंदू की तरफ़ मुंह करके कहा, 'गुड़ हम लिये लेते हैं, पर काम नई करेंगे ।'

बुंदू ने पूछा, 'क्यों बे काम क्यों नईं करेगा ?'

पंद्रह रुपये की दादनी (पेशगी) न मिलने की बात तो कहता कैसे, मीरा ने यों गुस्सा उतारा, 'आधी मजूरी किससे पूछ के ठराई ? आधी में से क्या तो हम खा लेंगे और क्या कर्जे में दे देंगे ?'

दो-चारों ने हां में हां मिलाई, 'रास्त बात कहता है' लेकिन बस इतना ही। सभी से पूछकर ठहराई है सभी ने मंजूरी दी है। किसी ने कहा, 'भई कर्जा तो सभी के ऊपर है मीरा खां, और सभी आधे पे आये हैं।'

मीरा ने साफ़ इंकार कर दिया, 'हम नईं करेंगे आधी पे।'

पीरा ने उसके हठ को हँसी में उड़ाकर बुंदू से कहा, 'देखो जी बिसमिल्ला के दिन काम पे हुज्जत कर रया है।'

बिस्मिल्ला पे नाक मारता है करमफोड़ आदमी। बहुत बुरी बात है। पेशे के ख़िलाफ़, कारीगर की ख़ानदानियत के ख़िलाफ़। बुंदू मियां ने आवाज़ चढ़ाई, 'सुकर कर खुदा के बंदे, घर बैठ आधी मिल रई है। चल खुदाई लगा।'

मीरा ने दूसरी पख़ निकाली। मुनमुनाकर कहा, 'हम कोई बेलदार नईं है जो खुदाई करें।'

इस बात पर बुंदू के जो ताव आया तो उसने मीरा की बख़िया उधेड़ दी, 'साले गंजड़ी, हम बेलदार हैं जो काम कर रये हैं ? ये इत्ते सारे बेलदार हैं हरामी के पिल्ले ! उठ, नईं तो मार-मार के सूअर बना दूंगा। बेलदार का लगता !'

गालियों के बोझ से दबकर टट्टू उचककर खड़ा हो गया और उसके साथ ही साथ सब के सब कुदाल-फावड़े लेकर खड़े हो गये।

क्या बनेगा यहां ? कहां लगेगी खुदाई ? फ़क़ीर ने पीरा से कहा था कि अहाते की दीवार खड़ी कर दो। अपनी समझ से कुछ ऐसी तामीर कर दो कि मुसाफ़िरों को मेंह-पानी से पनाह मिले। सो पहिले सब बोसीदा बारहदरी और बची-खुची अहाते की दीवार की खुदाई होगी।

बुंदू मिया ने पोपले मुंह से हांक लगाई, 'मदद !'

'किर्दगार!'—एक सतर में खड़े होकर कमेरों की एक होकर आवाज़ उठी।

मीरा काम करने खड़ा तो हो गया पर सतर में खड़ा नहीं हुआ। तमाचा खाए हुए जिद्दी बालक की तरह झूंझल में भरकर, सतर से हटकर वह और कुछ नहीं तो दरियाशाह के चौतरे को ही धड़ाधड़ खोदने लगा। जैसे दरियाशाह की छाती पर ही वार कर रहा हो। फ़क़ीर को जान से मारकर छोड़ेगा आज !—पोटली पागल के हाथ में पकड़ा दी, हम नहीं थे वहां ? जुरूरत भी तो देखनी चाहिए थी किसकी ज़्यादा है।'

पीरा उसकी यह हरकत देखकर हँसा, 'खोदने दो, चौतरा भी तो खोदना ही है।'

गोबर-मिट्टी की लिपाई-लिसाई चौतरे के ऊपर ही ऊपर थी। नीचे से पत्थर ही पत्थर निकल पड़ा। दस-दस कोसनों के साथ कस-कसकर मीरा चोट पर चोट मारने लगा—पहाड़ी के ऊपर तो है ही यह तकिया सुसरा। पता नहीं नीचे मुरम है, कंकड़ है, मरमर है, मूसा है या लोहा भरा पड़ा है धरती में। सुरंग लगानी चाहिए ऐसी जगह बारूद की। पर ठीक है, जब ज़बरदस्ती ही मजूरी करानी है इनको, तो ठीक है। रक्खो अपनी आधी भी अपने ही पास। आज मर ही जाऊंगा खोदते-खोदते।—घामाघूम होकर मीरा फांय-फांय करने लगा, पर रुका नहीं।

अचानक उसकी कुदाल किसी चीज़ से टकराकर ठनठनाई। कंधों तक दोनों बांहें झनझना पड़ीं। क्या है ये ? फिर कस के हाथ मारा 'ठन !'

'सिल है क्या मकरानी ?'

फिर मारा।

ठन्न !

'कंकड़ है क्या ?'

फिर मारा।

ठन्न !

'चट्टान है क्या ?'

फिर मारा।

कोई चीज़ उखड़ी। मीरा नीचे झुका। ना, न मुरम, न मरमर, न मूसा न मकराना, यह कुछ और ही है।

बिजली का करंट-सा एड़ी से खोपड़ी तक एक कौंधा-सा मारकर निकल गया, खैर हुई कि पट से मर नहीं गया।

किसी तरह सांसों की तरतीब ठीक करके हाथों की मिट्टी झाड़कर खड्डे से ऊपर को उचका।—ना, कोई नहीं देख रहा—सब अपने काम में हैं।

फिर नीचे को झुका, खोदा हुआ मलबा फिर खुदाई में भरकर उखड़ी हुई चीज को ढंका और चौतरे के दूसरी तरफ़ जाकर आहिस्ता-आहिस्ता खुदाई करने लगा।

पीरा ने देखा। यह कोई क़ायदा है खुदाई का ? हँसा ! चलो ख़ैर खोदना तो है ही।

और फिर दिन ढल गया।

पक्षी पिपलिया नीम पर बसेरा लेने के लिए सदा की तरह आये, पर किसी हवाई हमले से उजड़ी हुई नगरी की तरह उध्वस्त तकिये की दशा देखकर पिपलिया नीम के ऊपर आकाश में फैलकर व्याकुलता से किलबिल करने लगे। नभचरों की पीपली-निबौली पेड़ पर लटकी रह गईं और थलचरों को दाना बंटने लगा।

मलबे के ढेर पर ठेकेदार पीरा पोटली खोलकर बैठा। आधी-आधी मजूरी

बांटी। सबने माथे से लगाई। मीरा नहीं आया तो पीरा ने आवाज दी, 'मां अमीरअली !'

हौज़ पर बैठे हुए मीरा ने मुंह फेर लिया।

पीरा ने बुंदू से कहा, 'देखो चचा, मजूरी लेने नईं आता।'

बंदू ने कहा, 'कमबखत है ! ··आजा बे मजूरी क्यों नईं लेता ?'

वहीं बैठे-बैठे मीरा ने तुनककर जवाब दिया, 'ये खूब है। काम करवाने की भी सीनाजोरी, आधी मजूरी लेने की भी सीनाजोरी !···हमें नईं चैये मजूरी-अजूरी !' कहते-कहते कपड़े झाड़ कर उठा और तकिए की सीढ़ियां फलांगता हुआ भाग गया।

हँसकर पीरा ने पोटली बांधी, 'सारी के लालच में आधी भी छोड़ गया मेरा भाई !'

□□

यही वह रात है।

बुंदू मियां झूठ थोड़े ही कहते हैं। यह वह रात है जब बिना आधी मजदूरी और बिना नशे-पत्ते के ही मीरा ने छप्पर में निहालदे ऐसी धुन बांधकर गाई कि सुनने वालों को लहलोट कर दिया। आधी ढले मीरा जब घर पहुंचा तो पीरा अचेत सोया हुआ था। थोड़ी देर तक सोने का बहाना करके पीरा के नींद में बेख़बर होने की दिलजमई करने के बाद मीरा खटिया से उठा। सदरी जिस्म पर डाली, कुदाल कांधे पर रक्खी और बिल्ली के पांव घर से निकल कर सीधा अलीजान की दूकान पर पहुंचा। साढ़े बारह रुपये पिछले बक़ाया होने के बावजूद न जाने किस हिकमत से उसने अलीजान से तोला-भर गांजा पटीला और वहीं बैठकर उसकी चांदी कर दी। खोपड़ी की नसों में झाला-सा बजा तो उठकर बोला, 'अच्छा अलीजान भाई, इंशाल्ला जिनगानी रही तो फिर मिलेंगे।'

घर की तरफ़ दो-चार क़दम चलकर अंधेरे में जो पलटा लिया तो गुंडल-मुंडल होकर पड़े हुए एक मरियल-से कुत्ते पर अचानक पांव पड़ गया। कुत्ता क्यांव-क्यांव करके चिल्लाया तो तोला-भर माल के चढ़ाव में कांटे की तरकीब सूझ गई। बदन से सदरी उतार कर लपककर कुत्ते के थूथने पर लपेट दी और कस कर बटन बंद करके यह जा और वह जा।

भों-भों के बजाय बूः-बूः की आवाज़ सुनकर कल्ला चौकीदार कहीं से निकल आया। सदरी उसने कुत्ते के मुंह से उतार ली और चोरी के माल के कौड़े मारने के लिए चौकीदार अलीजान के पास पहुंचा। अलीजान ने सदरी पहिचान ली और न जाने क्या सोचकर छः माशे गांजे के बदले में गिरवीं रख ली।

दूर-अंदेश अलीजान भी शायद ठीक ही कहता है कि मीरा गांव छोड़कर भाग गया।

□□

दो मिनट में कोस-भर का फ़ासला तय करके मीरा तकिये पर पहुंचा। चौतरे पर पहुंचकर झपाझप खुदाई में से मलबा निकाला और दनादन खुदाई शुरू कर दी। इस असमय के उत्पात से पिपलिया नीम की खखोड़लों में सोये हुए पक्षी खड़बड़ाकर खांव-खांव, कांव-कांव कीं-कीं, चीं-चीं करने लगे। तकिये पर रौला मच गया पर मीरा ने खड़का नहीं सुना। वह दम थामकर चौतरा खोदता ही चला गया। बदन का बूंद-बूंद पसीना निचुड़ गया। मिट्टी का गारा हो गया। रुका हुआ दम बिसियर की तरह फुंकार उठा पर मीरा पस्त नहीं हुआ।

आख़िर नसीबा छप्पर नहीं, धरती फाड़ कर जागा। मटके-मटके बराबर की दो तांबे की देग मीरा के हाथ आई। ठोक-पीटकर रांगे से झले हुए देग़ों के मुंह उसने तोड़े और झांककर देखा—

अशर्फ़ी ही अशर्फ़ी! मोहरें ही मोहरें!! दौलत ही दौलत!!!

लंबी-लंबी दोनों बांहें फैला कर दोनों देग़ों की गर्दनों में डाल दीं और औंधा होकर उनके ऊपर गिर पड़ा।

पर बेहोश नहीं हुआ!

ऊपर को देखा। पिपलिया नीम की शाखाओं पर परिंदे अंधेरे में चमकती हुई आंखों से टकटकी बांधे उसकी तरफ़ देख रहे थे। मीरा के ऊपर देखते ही फिर एक साथ किलबिला उठे। चौकन्ना होकर मीरा तड़ाक से खड़ा हो गया।

सुबह तो नहीं हो गई।

ख़ुदा न करे कि सुबह हो।

और दुआयें क़बूल करने वाले की शान देखिये कि परिंदों की किलबिलाहट के साथ-ही-साथ तकिये के पीछे की तरफ़ चलता हुआ सुबह होने से पहिले ही एक गधा कहीं रेंक पड़ा। मीरा कुलांच मारकर गया और कान पकड़कर पिल्ले की तरह गधे को खींच-खांचकर चौतरे के पास लाया। टूटी-फूटी बारहदरी के खंभों में उलझी हुई कपड़े सुखाने की रस्सी झटका मारकर तोड़ी और दोनों देग़ गधे के दोनों तरफ़ कसकर बांध दिये। दरियाशाह की फटी हुई चटाई डाल कर ऊपर से अपनी लुंगी खोलकर ढक दी और सिर्फ़ लंगोट बांधे हुए संड-मुश्टंड मीरा मेमार दौलत को गधे पर लादकर, वतन को ख़ैरबाद कहकर किसी अनदेखी-अनजानी राह पर चल पड़ा।

□□

और अलीजान पंसारी के दुकान खोलते ही बगदार में शोर मच गया कि मीरा ग़ायब हो गया।

सोच में पड़े हुए पीरा से बुंदू मियां ने पूछा, 'क्या सोच रया है ?'

'ये सोच रया हूं चाचा कि ये तो बड़े अजगुद की बात है कि एक दिन फकीर गैप, और एक दिन मीरा गैप !'

थले पर से अलीजान बोला, 'म्यां अलीजान की सुनो। साड़ी दुनिया में मह-सूड़ है कि पिपलिया नीम पड़ जिन्नातों की बस्ती है। आधी ड़ात में नीचे उतड़कड़ दड़ियाशाह के लिए खोपड़ियों में सीड़-कोड़मा पकाते हैं वो। फकीड़ तो मिला हुआ है उनसे। किसी औड़ की खैड़ थोड़े ई है वां।'

'अबे तुस्से पूछता कौन है कमीने ? तू तो वैसे ई टंगड़ी फंसा रया है बीच में !···तू बता बे पीरा, क्या कहता है—मदद लगवानी है या नईं तकिये पे आज ?—तैंने इरादा तो तरक नईं कर दिया ?'

पीरा और इरादा—ये दो चीजें नहीं हैं। पीरा और सच्चाई—ये एक ही बात के दो मतलब हैं। लेकिन पीरा इस तरह इस बात को कहना नहीं जानता। उसने कहा, 'ऐसे कैसे इरादा तरक होता है ? मैंने वायदा करा है बाबा से। उसने साई दी है। काम तो होगा ई।'

बुंदू मियां उठकर खड़े गये, 'तो चल फिर। मदद लगा। मालताल का जुगाड़ कर। बैठा क्यों है ?'

पीरा फ़िक्र झाड़कर खड़ा हो गया। राज-मेमारों ने भी कपड़े झाड़े और तकिये की ओर बढ़ गये।

दूकान के आगे झाड़ फेरता हुआ अलीजान भुनभुनाया, 'साढ़े बाड़ै ड़ुपिये का पुड़ाना कड़जा···तोला भड़ माल उप्पड़ से···छः मासे कल्ला चौकीदाड़ को खैड़ात हो गया···सुसड़ी सदड़ी क्या मीना बजाड़ में बिकेगी।'

कहां से दिन निकलते ही इस मरदूद मक्खीचूस पंसारी की बात चल पड़ी। पर खैर छोड़िये इसे, यह तो झाड़ू फेरता ही रहेगा। साहूकार है। इसके दादा-मियां भी वापिसी पर देनदारी चुकाने के लिए 'इंशाअल्लाह' कहकर ही काँबा-रू हुए थे (मक्का गये थे)। हाजी बनकर आये तो लिहाजा-लिहूजी में ही सब देन-दारी चुक गई। उनकी औलाद झाड़ू समेत सुई के नक्के से निकलने का अरमान रक्खे न रखे, हक़ तो रखती ही है।

बात तो तकिये की और तकिये से ग़ायब होने वालों की है।

□□

है तो क़ब्रिस्तान, लेकिन लोग इसे कहते हैं गुलिस्तान !

जिस महाभाग ने इस क़ब्रिस्तान का ये गुलिस्तान नामकरण संस्कार किया होगा वह या तो वेदांती होगा या विदूषक ! नहीं तो कब्रिस्तान को कोई गुलिस्तान कहता है ?

क़ब्रें ही क़ब्रें हैं। सैंकड़ों, हजारों। टूटी-फूटी। काल-चक्र में पिसी हुई। न जाने कब से और कितनी-ठठरियां इन कुब्र से ढेरों के नीचे वीराने सन्नाटे और घोर अंधकार में शून्य की ओर अपने विद्रूप जबड़े फैलाये हुए दिन में धूल फांकती रहती हैं और रात में तारे खाती रहती हैं।

कहते हैं कि भूत-प्रेत, जिन-ख़बीस चौबीसों घंटे यहां धुधुकार किया करते हैं। पहले इस गुलिस्तान की बग़ल से ही बैलगाड़ियों और शिकरमों में बैठकर यहां से गुजरती हुई स्त्रियां भयभीत होकर बच्चों को बुर्क़ों में छुपाकर ऊपर से दुलाइयां ओढ़ लेती थीं। कइयों को अक्सर आसेब की झपेट हो जाती थी। रास्ता बदल गया तब जान बची।

अब भूतों के अलावा चोरों के सिवा यहां से कोई आता-जाता नहीं। फिर भी कमाल है कि क़ब्रों के बीच में पगडंडियां हैं। हजारों टूटी-फूटी क़ब्रों का ये सिलसिला जहां समाप्त होता है वहां निर्मल शीतल जल का एक नाला है। इस नाले के ऊपर इधर से उधर जाने के लिए मानव की सांप्रदायिक आस्था की तरह संकीर्ण एक पुलिया है और उस ओर है श्मशान। जल-बलकर चिताएं झंझाओं से उड़ गई हैं पर धरती से जकड़े हुए श्वेत धब्बों के कारण पहिचाना जा सकता है कि यह श्मशान है। क़ब्रिस्तान और श्मशान को बीच में से काटता हुआ इस नाले का जल-प्रवाह मात्र निरंतर गतिमान रहता है। देखने में क़ब्रिस्तान का यह भाग इतना रमणीय है कि मरे हुओं का डर न होता तो यह जीवित लोगों की क्रीड़ा-स्थली होती।

इसी परलोकवासियों के संगम-स्थल पर एक गुंजान वृक्ष की छाया में पत्थर की एक बड़ी-सी शिला पर वृक्ष के तने का ढासना लगाये इहलोकवासी दरिया-शाह अर्धोन्मीलित बैठे हुए आप ही आप मुस्करा रहे थे।

ठीक भरी दोपहरी का समय था।

किसी राहगीर की नजर न पड़ जाय इस डर का मारा मीरा मेमार गधे पर दौलत की देगें लादे हुए, नंगे बदन, लंगोटा कसे हुए, आम रास्ता छोड़कर इसी गुलिस्तान की पगडंडी से गुज़रा। दिन-दहाड़े डर से कांपता हुआ, कनखियों से टूटी-फूटी क़ब्रों को झांकता हुआ, कोई मुर्दा निकलकर गधे पर हमला न कर बैठे इस ख़ौफ़ से थरथराता हुआ, औघड़ की तरह तन में धूल लपेटे, थकान से चूर, गांजे

की तलब से बेक़रार, मीरा मेमार इस तरह नाले के किनारे पर आकर रुका जैसे खुद ही किसी क़ब्र से उठकर प्यास बुझाने आया हो।

झुककर दोनों हाथों की अंजुली से पानी पीते हुए क़तराशाह ने एक झाड़ी की ओट से उसे और उसके गधे को देखा।

मीरा ने हाथ-पांव धोये, मुंह पर छींटे मारे, खुद पानी पिया और गधे को पिलाया। फिर झूल की तरह पड़ी हुई लुंगी गधे के ऊपर से उतार कर कमर में बांधी। हवा से दरियाशाह वाली चटाई उड़कर जमीन पर गिर पड़ी।

क़तराशाह को दोनों तरफ़ दो देग़चियां बंधी हुई नजर आईं।

मीरा ने झाड़-झंखाड़ों की पत्तियां और पेड़ों की शाखें तोड़-तोड़कर जल्दी-जल्दी देग़चियां ढकीं और ऊपर से चटाई डाल दी।

क़तराशाह को शुबहा हुआ। चाहा कि आगे बढ़ें, रोकें और पूछताछ करें।

मीरा ने पत्तों की खड़खड़ाहट जो सुनी तो घिघियाकर फिसल पड़ा। बादशाहे-वक़्त को यों चारों ख़ाने चित गिरता देखकर ईमानदार गधे ने हमदर्दी में दुलत्ती जो झाड़ी तो तांबे की देगों में लगकर ठन-ठक से आवाज़ हुई। मीरा पलक झपकते में उठा और सड़-सड़ गधे पर क़मचियां बरसाता हुआ बगटुट गुलिस्तान से भागा।

क़तराशाह ने मुनासिब समझा कि गधे का पीछा करने से पहले दरियाशाह को आगाह करें। छलांग मारता हुआ नौजवान फ़क़ीर, दरियाशाह के पास पहुंचा और बेताबी से पुकारा, 'हुज़ूर, हुज़ूर! हुज़ूर वह शख़्स चला जा रहा है।'

कोशिश से आंखें खोलकर दरियाशाह ने आहिस्ता से पूछा, 'कौन ?'

'वही जो उस रोज़ शाम को आपके पास आकर बेअदबी से पीठ फेरकर बैठ गया था।'

दरियाशाह को शायद याद नहीं आया। याद करते हुए-से बोले, 'कौन ?'

क़तराशाह ने याद दिलाई, 'वही जो आपकी करामात से अपने हाथ की तंगी दूर करना चाहता था। आपके पीरशाह का भाई।'

'हां, हां, अमीरअली! जाने दो तो हमें क्या है ?'

बेचैनी से क़तराशाह ने कहा, 'उसके साथ एक गधा है और गधे पर दोनों तरफ़ दो देग़ बंधी हुई हैं।'

'तो भी क्या हुआ ?'

इस लापरवाही से तंग होकर क़तरा ने कहा, 'उसकी हरकत मशकूक (संदिग्ध) है ज़नाब, वह उन्हें पत्तों में छुपा रहा था।'

उसी आहिस्तगी से दरियाशाह बोले, 'छुपाये बग़ैर कैसे ले जा सकता है ? उनमें दौलत होगी।'

क़तराशाह के मुंह से निकला, 'दौलत ?'

'और क्या!'

'आपको कैसे मालूम ?'

दरियाशाह हँसे, 'हमें क्या मालूम । हमने तो अंदाज़ा लगाया !'

'उसके पास दौलत कहां से आई ?'

'चोरी की होगी ! वर्ना छुपाता क्यों ?'

'चोरी की ? किसकी ?'

हँसकर दरियाशाह ने कहा, 'तुम्हारी भी हो सकती है ।'

क़तराशाह ने महसूस किया कि हज़रत मज़ाक कर रहे हैं । खिसियाकर सफ़ाई-सी देने लगा, 'मेरे पास दौलत कहां से आई बंदापरवर !'

'तो हमारी होगी ।'

'आपकी ?'

'अरे मियां, हमारी तुम्हारी क्या ? तकिये पर पीरशाह ने काम दिया होगा इसे । वहीं कुछ करिश्मा हो गया शायद !'

'करिश्मा ! यानी दौलत दरियाशाह की है ?'

'हो सकती है ।'

गुस्से में भरकर क़तराशाह ने कहा, 'यानी वह उठाईगीरा हमारा माल उड़ाये लिए जा रहा है ?'

दरियाशाह ने कहा, 'तुम्हारा ?'

'सरीहन हमारा ! यानी आपका —तकिये से चुराकर लाया है न ?'

यह क्या ताक़त है कि जो झोली-चिमटे तक को चुम्बक की तरह खींचकर अपने आप में चिमटा लेती है ? आदमी कितने अनजाने में दौलत और दौलतमंद से अपनापा जोड़ता है !

दरियाशाह ने पूछा, 'तो क्या करना चाहते हो ?'

क़तरा झटके से उठकर खड़ा हो गया, 'तो ले कैसे जायेगा ! मैं अभी वापिस छीनकर लाता हूं उससे । उसे चोरी की सज़ा दूंगा । यह कोई बात हुई !'

क़तरा दौड़ा तो दरियाशाह ने आवाज़ दी, 'कतराशाह !'

रुककर बौखलाहट में क़तराशाह ने कहा, 'हुज़ूर वह निकल जायेगा इतनी देर में ।'

वह फिर तेज़ी से भागा तो दरियाशाह ने ज़ोर से पुकारा, 'मियां फ़क़ीर !'

मर्यादा का भंडाफोड़ कर डालने वाले इस संबोधन ने भागते हुए बैरागी के पांवों में सांप की तरह लिपटकर उसकी गति रोक दी । क़तरा ठिठककर खड़ा हो गया । दरियाशाह ने कहा, 'ज़रा बात तो सुनो शहज़ादे !'

दुचित्ते मन से आगे-पीछे देखता हुआ क़तरा लौटा ।

दरियाशाह ने कहा, 'बैठो !'

क़तरा बेदिली से बैठ गया ।

किताब लेकर न बैठने वाले ज़हीन बच्चे को समझाने की तरह कुछ नर्मी और कुछ सख़्ती से दरियाशाह ने कहा, 'तुम वह बात समझे नहीं जो मैंने दौलत के बारे में कही थी !'

सही याददाश्त के सबूत में क़तराशाह ने जवाब दिया, 'आपने फ़र्माया था कि दौलत दरिया का पानी है।'

'दरिया का पानी तो कभी किसी एक की मिल्कियत होता ही नहीं। यह दौलत हमारी या तुम्हारी कैसे हो गई ?'

बात सुनने में वज़्नदार लगी लेकिन क़तरा बोझ को झेल नहीं सका। बोला, 'न सही, लेकिन यह इस मेमार की भी कैसे हो गई ?'

दरियाशाह ने बोझ उठवाने में सहारा दिया, 'जैसे दरिया का पानी कभी-कभी बहाव बदलकर नई-नई राहों से गुज़रकर जाने लगता है उसी तरह दौलत भी मुख़्तलिफ़ लोगों की तरफ़ बह जाया करती है शहज़ादे !'

बड़ी भोली बेचैनी से क़तराशाह ने, कहा 'यानी देखता रहूं चुपचाप ?'

दरियाशाह ने कहा, 'दिलचस्पी से देखो शहज़ादे, कि यह पानी कितनों की प्यास बुझाता है, कितनों को डुबोता है, कितनों को उबारता है और कितने गुल खिलाता है। तुम जानना चाहते हो न कि दौलत क्या है ?'

क़तराशाह ने फिर भी कुछ कहना चाहा, 'लेकिन हुज़ूर वह शख़्स...'

दरियाशाह ने यह कहकर आंखें मूंद लीं कि, 'वह शख़्स अपने ऐमाल के लिए खुद ज़िम्मेदार है और तुम्हारी शिरकत की शर्त नहीं है।'

क़तराशाह ने मजबूर होकर ही गर्दन झुकाई, 'इरशाद !'

और मीरा मेमार भूत-प्रेत, चोर-बटमारों की चपेट से बचकर अपनी दौलत के साथ राज़ी-खुशी गुलिस्तान से गुज़र गया।

□□

दफ़ीने की दौलत को लावारिस गधे पर लादकर मीरा जो तकिये से चला तो रास्ते में न चोर मिला न बटमार, मंगता न भिखारी, भूत न प्रेत, आंधी न पानी। बस, सिकंदर की तरह मंजिलें सर करता ही चला गया और चलाचल आख़िर एक छोटी-सी बस्ती में राज़ी-खुशी पहुंच गया।

वहां उसने बड़ी मुश्किल से दो-एक सोने की मोहरें भुनवाकर कुछ गांजा पिया, कुछ गांठ में बांधा। कुछ टुकड़ा-टिक्कड़ पेट में डाला, कुछ तन ढकने को कपड़े लिये। गधा बेचकर एक मरियल-सा टट्टू ख़रीदा और उस पर अलिफ़-लैलाई तेल के कुप्पों की तरह दोनों देग़ बांधकर ऊपर से खुद बैठ गया और फिर सफ़र।

फिर उससे भी बड़ी बस्ती में पहुंचा। वहां और गांजा ख़रीदा। पिछली बस्ती के कपड़े नंगों में बांटकर अपने लिये नये ख़रीदे। मरियल टट्टू बेचकर एक शिकरम भाड़े पर जुतवाई और दोनों देगें लादकर फिर आगे बढ़ा।

फिर उससे भी बड़ी बस्ती में पहुंचकर फिर पुरानी केंचुली उतारी, ओढ़ने-बिछाने-पहिनने के बढ़िया-बढ़िया बहुत सारे कपड़े खरीदे। दो बड़े-बड़े लोहे के मज़बूत ट्रंक लेकर एक में कपड़े भर दिये और दूसरे में दोनों देग खाली करके बस्ती के बाहर एक जोहड़ में सिला दीं, जैसे पूजा-पत्री के बाद मिट्टी का देवता पानी में सिला दिया जाता है। फिक एक टमटम में बैठकर फिर सफ़र जारी कर दिया। चलते रहने का नाम ही ज़िंदगी है।

इतने के बाद जिस बस्ती में अमीरअली पहुंचा उसे भी जयपुर नहीं कह सकते; लखनऊ भी नहीं, आगरा भी नहीं, मेरठ भी नहीं। क़स्बे से बड़ा और बहुत बड़े शहर से छोटा, एक गजबजाता हुआ शहर। कुल मिलाकर चार-पांच बाज़ार, फिर भी 'हटोजी, बचोजी' का शोर-शराबा। गली-कूचे रोशन, बिजली-बत्ती से लैस। बज़ाज़ा अलग, किराना अलग, अनाज की मंडी अलग। दो-एक दुकानें सर्राफ़ों की, दो-एक चोरी के माल का लेन-देन करने वाले साहों की। कूंजड़े, तमोली, बिसायती, हलवाई, क़साई, नानबाई, सराय, धर्मशाला, डाकख़ाना और रेलवे का स्टेशन—हर चीज़ मौजूद।

नौचंदी के मेले को उल्लू की तरह फटी-फटी आंखों से देखने वाले लट्ठ देहाती की तरह मीरा जब एक कुम्मेत जुते हुए नख़रैल तांगे पर सवार होकर चला तब वह ऐसा नजर आ रहा था :

नक़ली रेशम का बंधाई की रंगाई का बड़ा-सा साफ़ा, ढीली-ढाली फूलदार डिमास की सब्ज़काही अचकन, दूर से मुर्शिदाबादी नज़र आने वाली गहरे सुर्ख़ रंग की लुंगी, पांव में कामदार सलीमशाही जूती और हाथ में मुरादाबादी क़लई की मूंठ वाली आबनूसी रंग की एक छोटी-सी छड़ी। बहुत बड़ी पान की गिलौरी कल्ले में दबी हुई होने की वजह से एक गाल गूमड़े की तरह फूला हुआ, कुछ गुनगुनाने की धुन में होठों के दोनों परनालों से लाल सुर्ख़ पीक की धारियां बहती हुईं।

एक लोहे का संदूक, और ग़रीबी की नाक पर मारे हुए घूंसे की तरह उससे भी बड़ा मूंज की डोरी से बंधा हुआ बिस्तर आगे और आगे वाले से आकार में किसी क़दर कम, बहुत मज़बूत-सा दूसरा संदूक पीछे, मा-बदौलत की टांगों के नीचे मुक़द्दर की जकड़ की तरह जकड़ा हुआ।

दायें से बायें और बायें से दायें, तांगे को शहर में चक्कर काटते हुए दोपहर से शाम होने को आई और मुसाफ़िर को मंजिल नहीं मिली।

आवारा लौंडे हर नुक्कड़ पर 'वो आया वो आया' कहकर गुल मचाने लगे

हर बार हर मोड़ पर दूकानदारों व चलते-फिरतों की नज़रें तांगे की तरफ़ उठने लगीं। मुसाफ़िर ने इन नज़रों को अपनी आन-बान-शान का करिश्मा तो समझा पर इन नज़रों में से कोई बदनज़र उसके ख़जाने के संदूक़ पर न लग जाय, इस खटके से वह संदूक़ को टंगड़ियों में जकड़कर और अकड़कर बैठ गया।

आख़िर इस अकड़ाहट को ज़रा ढील देने के लिये एक चौक में आकर तांगे वाले ने तांगा रोक दिया। उतरकर घोड़े को पंचायती खेल में पानी दिखाया, खुद एक चलते-फिरते चाय वाले से चाय पी, नुक्कड़ के तंबोली से एक पान लेकर खाया। इस तरह खुद ताज़ा-दम होकर और जानवर को ताज़ा-दम करके वह मुसाफ़िर से बोला, 'तांगा ज़रा उल्हाड़ू हो रहा है सरकार, आप आगे तशरीफ़ रखिये।'

आगे? मीरा घबराया। कुछ जान तो नहीं गया। संदूक पीछे छोड़कर वह आगे बैठे? नहीं, हरगिज़ नहीं, यह हो ही नहीं सकता। क्या भरोसा इन शहरी लफ़ंगों का? फिर देश-परदेश का मामला! छड़ी की मूठ को दोनों पंजों में ज़ोर से भींचकर बोला, 'नईं, हम नईं उठेंगे।'

तांगे वाले ने तिरछी नज़र से हज़रते दाग़ की तरफ़ देखा और फिर उछल-कर बम के ऊपर टिककर थोड़ा-बहुत उलार ठीक करने की कोशिश करके उसने पूछा, 'अब किधर को नवाब साहब?'

नवाब साब?···इसका मतलब यह है कि वह नवाब साब दिखाई दे रहा है! मीरा फूलकर कुप्पा हो गया। तो ऐसे होते हैं नवाब? बेशक वह है ही नवाब! पर नवाबों को शायद दिशाओं की जानकारी नहीं होती। इस ना-जानकारी पर रोब का तुर्रा लगाकर नवाब ने कहा, 'किधर-किधर क्या जी? चलो चाय जिधर!'

'कुछ फ़रमाइये तो सही हुज़ूर, कौन-से मोहल्ले में जायेंगे, किसके हां जायेंगे?'

'तुम को इससे क्या मतलब? हम कईं भी जायें!'

तांगे वाले ने पूरा का पूरा पलटकर सवारी की तरफ़ देखा। यह आदमी दीवाना तो नहीं है? हो भी! छेड़कर बोला, 'मुझे न सही मेरे जानवर को ही बतला दीजिए, वह समझ लेगा जनाब की बोली!'

मीरा ने कहा, 'भई हम सौदागर आदमी हैं। कईं···कईं, अरब से आ रये हैं। हमें इस सहर का हाल मालूम नईं है।'

तांगे वाले ने गावदी भांप लिया तो चने के पेड़ पर उछाल दिया—'ज़ुबान और लिबास तो माशाअल्ला से साफ़ ही अरबस्तानी है लेकिन फिर भी आख़िर जाइयेगा कहां?'

मीरा ने कहा, 'कईं बढ़िया सी जगा ले चल के टिका दो।'

तांगे वाले ने टिटकारी दी, 'चलो बेटा दरियाई!' और फिर सवारी से

बोला, 'चलिये आप भी क्या याद रक्खेंगे कि टिकाया था किसी ने कहीं !··· हटना जी··· बचना जी ···अरबी सवार है और कुम्मैत घोड़ी है...दायें-बायें चलो जी···नजर बांध के चलो जी···जान बचा के चलो जी···' पुकारता हुआ वह तांगे को उड़ाकर ले गया।

□□

जिस महल्ले में तांगे वाला मीरा को लेकर पहुंचा वह कहलाता है 'ऐशबेगम की सराय'। इस महल्ले का यह नाम दस-पांच बरस से ज्यादा पुराना नहीं है। इससे पहले, कहते हैं कि यहां दिन-दहाड़े भेड़िया लगते थे। बिलकुल उजाड़ जगह थी। आज तो माशाअल्ला, रौनक़ है।

इस रौनक़ की वजह है 'ऐशमंज़िल'। ऐशमंजिल यानी ऐशबेगम का मकान। इसी की वजह से यह महल्ला ऐशबेगम की सराय कहलाता है।

मुग़लिया दबदबे की शानदार ड्योढ़ी है। मेहराब के ऊपर संगेमरमर का चौकोर पत्थर जड़ा हुआ है जिस पर लिखा है 'ऐशमंज़िल'। मेहराब के ठीक बीच में रोशनी के लिए एक जालीदार लटकन लटका हुआ है, जैसी बिजली लगने से पहले कमेटी की लालटेनें होती थीं। बाहर की तरफ़, गली में ऐशमंज़िल की दुमंज़िली छज्जेदार इमारत में ही कई दूकानें हैं। इनमें एक हलवाई है जयपुर का, हिन्दू। एक पान वाला है लखनऊ का, कायस्थ। एक क़साई है; यहीं का। एक पंजाबी का तनूर है—इसका कबाब भी दुनिया जहान में मशहूर है।

शराब की दूकान यहां कोई नहीं है, पर तनूर वाले के यहां जब चाहें तब मिल सकती है। इन दूकानों के बिलकुल ऊपर ही ऐशबेगम का दीवानख़ाना है। इसके गली की तरफ़ के तीनों दरवाज़ों में हमेशा चिकें पड़ी रहती हैं।

कंठे वाले, हार वाले, चलते-फिरते चाट-पकौड़ी वाले, हुक़्क़े वाले फ़क़ीर और नजूमियों से, दिन ढलते ही ऐशबेगम की सराय गजबजा उठती है। गांजा, चरस, अफ़ीम और कोकीन, कंठे वालों से और फ़क़ीरों से आप दिन और रात में किसी भी वक़्त ले सकते हैं, किसी चीज़ की दिक़्क़त अब नहीं है।

इसी ऐशबेगम की सराय में, ठीक ऐशमंज़िल की ड्योढ़ी के सामने आकर अमीरअली का तांगा रुका। रुकते ही एक कोने में तिपतिया खेलते हुए तीन-चार आदमियों ने लपककर उसे घेर लिया और 'सलाम हुज़ूर', 'बंदगी हुज़ूर' की बौछारों से मीरा संभल भी नहीं पाया था कि तांगे वाले ने बम के ऊपर से कूद-कर कहा, 'लीजिये सरकार, यह आ गई टिकने की जगह। आप भी क्या याद करेंगें वतन लौटकर कि बतलाई थी किसी ने आरामगाह ! उतरिये···'

कहकर उसने पीछे वाला संदूक उतारने के लिये जो हाथ बढ़ाया तो हड़बड़ा

कर दोनों हाथों से संदूक़ की कौली भरकर मीरा चिल्ला पड़ा, 'ये क्या सपाई है म्यां, कहां ले चले बक्सा ?'

चिढ़कर तांगे वाले ने कहा, 'तो उतर के अब खुद ही दिखाइये सफ़ाई जल्दी से, ले जाइये अपने सिर पे धरके इस बंगाल बंक साले को !'

खिसियाकर मीरा ने कहा, 'यार हम समझे कोई इनमें का ई उठाईगीरा है और तुम निकले ये !'

उठाईगीरा सुनकर तिपतिया वालों ने मीरा को घेरकर जो हड़बोंग मचाया कि 'हम ले चलेंगे सरकार—हट जा बे परे को—उठाईगीरे हैं साले, सवारी नहीं पहिचानते—' वग़ैरा-वग़ैरा, तो मीरा कभी इससे अपना हाथ छुड़ाये, कभी उससे अपना दामन बचाये। तांगे वाला बड़ी देर से तंग हो रहा था। इस मुसीबत से जान छुड़ाने के लिए ज़ोर से एक ललकार लगाकर उसने इन गहन के कंगलों को पीछे खदेड़ा और ऐशमंज़िल की तरफ़ मुंह उठाकर आवाज़ दी, 'मियां ख़ां साब ! सबरंग साहब !!'

और इस आवाज़ के साथ जो हस्ती कच्चे धागे में बंधी हुई खिचकर बाहर आई उसी का इस्म-शरीफ़ था सबरंगख़ां, सबरंग बेग, सबरंग भाई !

एक दुबला-पतला, मुनहनी-सा (कृशकाय) आदमी का बच्चा, गोया मजनूं का हक़ीक़ी भाई। पतली-पतली छड़ी-सी टांगों में आड़ा घुटन्ना चढ़ाये, घुटनों से नीचे ही नीचे की टांगों को आगे-पीछे करके, कलकतिया सलीपरों से पटपट करके जल्दी-जल्दी छोटे-छोटे क़दम रखती हुई जो ज़नख़ामुमा शबाहत नमूदार हुई उसने बारीक तनज़ेब का चुना हुआ कुरता खपच्चियों के बने हुए कांधों पर लटका रक्खा था और ऊपर से काले इटालियन की कामदार बास्कट पहिन रक्खी थी। इन दोनों चीज़ों के सही दरमियान से एक सारस की-सी गर्दन ऊपर को निकली हुई थी जिसके ऊपर एक अनगढ़-सा सर था, सर पर काकुलें (ज़ुल्फ़ें) और काकुलों पर सब्ज़ मख़मल की रामपुरी टोपी।

चाल के मुताबिक़ ही चलती हुई ज़बान से, आते ही सबरंगख़ां ने तांगे वाले से कहा, 'बड़े बत्तमीज़ हो जी इमान से !'

तांगे वाला इस ज़ुबान का पुराना वाक़िफ़ था। बदतमीज़ी के इल्ज़ाम का बुरा न मानकर बोला, 'जी हां बेशक ! यह देखिये सवारी लाया हूं सराय में टिकाने के लिए।'

तांगे वाले ने तो बुरा नहीं माना, पर सबरंगख़ां बुरा मानकर बोले, 'लाहौल-वला, सराय में टिकानी थी तो अल्लारक्खी की सराय नहीं थी ? यहां क्यों लाये हो, इमान से यह सराय है ?'

तांगे वाले ने कहा, 'जाने दीजिये, जां बख्शी हो, सराय नहीं, महलसरा सही। मैं भी सवारी कोई मामूली, यानी कि अरबस्तानी न होती तो यहां लाने

का गुनाह न करता सरकार।'

अरबस्तानी सवारी सुनकर सबरंगख़ां ने तांगे में बैठे हुए उस चिम्पांज़ी-छाप इंसान की तरफ़ ग़ौर से देखा और देखकर उसका मुंह खुला का खुला ही रह गया। जैसे कि इस रक़म (प्रकार) का जानदार आज से पहिले कभी उसके देखने में ही न आया हो। कुछ लमहे यों ही गुज़र जाने पर, दो बार पलक मिचमिचाने के बाद उसके मुंह से निकला, 'सुव्हान अल्लाह! जनाब अरबस्तान से तशरीफ़ ला रहे हैं?—सीधे?—खुशामदीद। सर आंखों पर!'

और यों कहकर उसने हाथ फैला दिये कि क़दम ज़मीन पर न रखकर इन पर रख दीजिये। मीरा कुछ नहीं समझा। आख़िर कुछ अंदाज़ा लगाकर जेब में हाथ डालता हुआ जरा परेशानी से नीचे उतरकर बोला, 'वो तो देखी जायेगी, पर हमारे पास तो दुपइये वाले को देने के लिए पैसे बी नईं हैं।'

'पैसे भी नहीं हैं?' सबरंगख़ां के ताज्जुब करने और तांगे वाले के ताव पेच खाने से पहिले ही मीरा ने जेब से एक मोहर निकालकर तांगे वाले से कहा, 'ये ई लेजा यार तू, तेरी मजूरी भी कुछ कम नईं हुई है।'

तांगे वाले को रिवाजन हुज्जत करके किराया चुकाने के बदले, सवारी सोने की साबुत मोहर दिये डाल रही है, यह देखते ही सबरंगख़ां ने मोहर सवारी के हाथ से झपट ली और कहा, 'कोई मुजायक़ा नहीं इमान से हुज़ूर अंदर तशरीफ़ ले चलें। इस दुपहिये वाले को उजरत फ़िदवी सबरंग दे देगा, इस वक़्त यहां रेज़गारी नहीं मिलेगी।'

सवारी की दी हुई सोने की मोहर तांगे वाले के नसीब से छीनकर सबरंगख़ां ने एक मुट्ठी रेज़गारी अपनी बास्कट की जेब से निकालकर बग़ैर गिने ही बड़ी फ़राख़दिली से उसे ले जाने के लिए कहा। तांगे वाला दोपहर से सवारी की ख़िद-मत में था। मोहर के बदले नये पैसों की मुट्ठी, वह भी सबरंगख़ां की, आख़िर होगी कितनी? जलकर तांगे वाले ने कहा, 'जनाब के मोहल्ले में रहते हैं, यह भी रहने दीजिये। सवारी जैसी ऐशमंज़िल की, वैसी हमारे अस्तबल की!'

किराया चुकाने में देर लगती देखकर मीरा ने अपना पीछे वाला संदूक़ खुद ही उठाना शुरू किया। सबरंगख़ां ने देखा तो तांगे वाले को छोड़कर वह उसकी तरफ़ लपकता हुआ बोला, 'यह क्या ग़ज़ब कर रहे हैं हुज़ूर। यह आपकी तो शराफ़त है इमान से, लेकिन हमारी तो रज़ालत होगी कि आप असबाब खुद उठाकर ग़रीबख़ाने में ले चलें। आप छोड़ दीजिये टिरंच।'

लेकिन टिरंच मीरा कैसे छोड़ दे? इस जादू के पिटारे में तो इस हरियल की जान बन्द है। बंधाई के साफ़े में और डिमास की अचकन में तो सिर्फ़ चोला ही चोला है। कोई हज़ार कहे, कहने से क्या होता है? मीरा दोनों हाथ संदूक़ पर जमाये हुए ज्यों का त्यों खड़ा रहा।

कुछ और रेज़गारी के साथ तांगे वाले की ज़ात की ज़ात को गालियां देकर सबरंगख़ां ने किसी तरह तिपतिये वालों से सामान उतरवाया और हुक्म दिया कि असबाब निहायत एहतियात के साथ अन्दर पहुंचाया जाय।

तीनों अदद तीन जुआरियों के सर पर रखवाकर तीनों को आगे-आगे करके सबरंगख़ां के साथ मीरा, दफ़ीने की दौलत को लेकर दीये जले ऐशबेगम के दौलतकदे में दाख़िल हुआ।

□□

दिन तो ख़ैर अपनी भलाई-बुराइयों के लिए बदनाम है ही, पर रातें भी कुछ कम शरीर नहीं होतीं। रातों की शोख़ियां माशूक़ों की शोख़ियों से किसी तरह कम नहीं। मनचली ऐसी कि अपनी दिलबस्तगी के लिए यह किसकी अटारियों में नहूसत लेकर उतर पड़ेंगी और कब किसकी झोंपड़ियों में गुल खिला देंगी, इसका कोई भरोसा नहीं। किससे यह अपने अंधेरे में तारे गिनवा देंगी और किसको अपनी चांदनी में नहला देंगी, यह कोई नहीं जानता। मछली की तरह छटपटाती हुई विरहनों के यहां ये पहाड़-सी होकर टूट पड़ेंगी, और अनगिन प्रेमियों से घिरी हुई नवेलियों के यहां आई न आई-सी आयेंगी। जिन्हें इनकी हँसी पसंद है उनके घर रोती-बिलखती हुई जायेंगी, और जिन्हें ये रोने के लिए चाहियें, उनकी छाती पर खड़ी मुस्कुराती रहेंगी। ईमानदारों के घरों में काला मुंह करके, तन पर काली चादर लपेटकर जायेंगी, और सियाहकारों के महल्लों में सिंगार करके, घुंघरू बांधकर अठखेलियां करती फिरेंगी। जिन त्यागी वीतरागियों ने पक्की पाथली के नीचे दबाकर इनका दम घोट दिया है, उनको भी मौक़ा पाते ही अपनी चंचल चित-वनों की चमक-दमक के चकाबू में उलझाकर भटकाये बिना इन्होंने बख़्शा नहीं।

रात हो गई थी और ऐशबेगम की सराय रोशनी से जगमगा उठी थी। ऐशमंज़िल की मेहराब के लटकन से, जाली के रुपट्टे से चमकते हुए जवान जोबन की तरह जालीदार रोशनी छनकर बिखर रही थी। सामने के कोठों पर रोशनी हो गयी थी, चिकें उठ गई थीं। दूकानों में ख़रीदार भरे हुए थे और महल्ला भीड़-भम्भड़ और शोर-गुल से मश्क की तरह फूल गया था। मोतिये के कंठों पर बहार आ गई थी। गोश्त, कबाब, तनूर, इत्र, चरस और पसीने की मिली-जुली बू-बास से सारी गली महक रही थी।

अचानक इस मीना बाज़ार की मनचली भीड़ में से रास्ता काटकर अल्ला-मियां के जासूसों की तरह नमूदार-से होकर, दो अनोखे मुसाफ़िर आते हुए नज़र आये—दरियाशाह और क़तराशाह। धूल-धक्कड़ से लथ-पथ, थकान से चूर-चूर। देखने से लगता था कि न जाने कब से इन्हें न ग़ुस्ल का मौका मिला है न आराम

का। न दाना मिला है, न पानी। दरियाशाह के साफ़-शफ्फ़ाक़ नूरानी चेहरे पर अंगुलों दाढ़ी बढ़ गई थी। सच तो यह है कि ये दोनों, दायें हाथ में कोहनी तक पड़ी हुई लोहे की चूड़ियों को डंडे से बजा-बजाकर किसी दरगाह के बाहर 'मौला ही देगा माल मलीदा, मौला ही देगा माल मलीदा' पुकारने वाले लफ़ंगे भिखारियों की तरह नज़र आ रहे थे।

ऐशमंज़िल के सामने आकर दरियाशाह ने क़तरा से कहा, 'क्यों शहज़ादे, क्या बहुत थक गये?'

क़तराशाह ने कहा, 'इसके सिवा शाम भी हो गई है।'

दरियाशाह ने चलते हुए कहा, 'आओ तो यहां ठहर जाते हैं।'

रोककर क़तराशाह ने पूछा, 'कहां?'

ऐशमंज़िल की तरफ़ इशारा करके दरियाशाह ने कहा, 'यहां।'

ताज्जुब से क़तराशाह ने पूछा, 'यहां बंदानवाज?'

'हां, क्यों?'

'यह तो कोई सराय मालूम होती है।'

'सराय में नहीं ठहरोगे तो कहां ठहरोगे?'

उस जगह और जगह के माहौल पर नाक मारते हुए दरियाशाह के सुझाव से उलझाव में पड़कर हिचकते हुए क़तराशाह बोले, 'जहां हुक्म होगा वहां ठहरूंगा, लेकिन हम लोगों का इस बस्ती में, और ख़ास तौर पर इस सराय में ठहरना कुछ मुनासिब नहीं मालूम होता।'

दरियाशाह ज़ोर से हँस पड़े।

मेहराब के नीचे खड़े हुए फ़क़ीरों को भीड़ ताकने लगी।

बहुत मुश्किल है हद और मक़सद को पहचानना।

दरियाशाह ने कहा, 'मियां ये सराय है। दुनिया का नमूना है। फिर हम-तुम तो सैर करने निकले हैं, इससे अच्छी सैरगाह जीते जी और कहां मिलेगी?··· चलो!'

दोनों फटेहाल फ़क़ीरों को ऐशमंज़िल में घुसते हुए देखकर भीड़ में एक ठहाका पड़ा। पीठ पर वार खाता हुआ क़तराशाह सर झुकाये दरियाशाह के पीछे-पीछे अन्दर चला गया।

□□

है तो यह सराय ही, पर ऐशबेगम को इसका यह नाम क़ुबूल नहीं है। यह कौन नहीं जानता कि इसमें मुसाफ़िरों के ठहरने का इंतिज़ाम है? पर बेगम कहती है कि यह तो उन्होंने अल्लावास्ते किया है—आक़बत सुधारने के लिये। मनचले

और दिलजले, दोनों छेड़ते हैं कि मुआविज़ा क्यों लेती हैं ? बेगम कहती हैं कि नासपीटी गवरमिंट ने हमारी नवाबी न छीनी होती तो न लेते ! इतना भी न करें तो इसकी देखभाल कैसे हो ? लोग फिर भी उल्टी-सीधी कहते हैं, सामने तो हियाव नहीं पड़ता, पीछे नहीं चूकते। तो बेगम कहती हैं—'ऐ छोड़ो भी, बदगोइयों से तो पैग़म्बर भी नहीं बचे।'

हसीनों का सिन (आयु) बतलाना शर्त नहीं है, ताहम ऐशबेगम इस वक्त पचास की तो क़तई नहीं हैं। एक-दो लटें जो कनपटियों पर गंगाजमनी हो गई हैं, उन्होंने तो यह सुतवां मुखड़ा और निखारा ही है। तनी हुई अबरुओं के नीचे दुबालादार (नुकीली) पंखड़ियों में से मौसम की आख़िरी बिजलियां जब-तब अब भी चमक-चमक उठती हैं। दांत जरूर मिस्सी-छालियों ने खा डाले हैं, लेकिन इस गौहरे-संदूक के जो पल्ले, यानी होंठ हैं, वह अभी तक ताज़ा नरंगी की सूत निकाली हुई फांकें ही हैं। गद्दर-सा आपे से बाहर सीना, गोरी-गोरी, भारी-भारी लेकिन नाजुक-सी कलाइयां। कमर के ख़ले और साड़ी की अंटी या पाजामे के कमरबंद के दरमियान से मुमकिन है कि गेंद लुढ़ककर नीचे को निकल जाय, लेकिन बाक़ी सब ज्यों का त्यों है। नीचे बेशक माशाअल्ला भागवानी आ गई है। कूल्हे दलदार हो गये हैं, वर्ना ऊपर से नीचे तक तमाम गोलाइयां गुदगुदी, गदेली, गुम्बदी, सांचों की ढली।

लेकिन नज़र है अपनी-अपनी। बहुत-सी नज़रों में अब यह समाती नहीं। कजबीनों (दोषदर्शियों) को अब ऐशबेगम मोटी-झोटी और लहीम-शहीम दिखाई देने लगी हैं। तवारीख़ी दिलचस्पी रखने वाले क़दो-क़ामत देखकर नुक्ता लगाते हैं कि यह औरत अगर औरत न होती तो नीचे से बीजापुर का गोल-गुम्बद और ऊपर महरौली की कुतुबमीनार होती !

बदन की तरह गला भी बेगम का भारी पड़ गया है, वर्ना कनरसिया कहते हैं कि अपने दिनों में वे सुर की बड़ी सच्ची थीं। दादरों, ठुमरियों, चैती और कजरियों में तो खैर रसूलन और सिद्धेसरी का नाम क्यों लें, इनके मुक़ाबिले का मैदान अक्सर ख़ाली ही रहा। संगीत के अच्छे-अच्छे जानकारों की संगत भी अल्ला के फ़ज़ल से ख़ूब मिली मगर न जाने क्या होता था कि जानकार इनके पास कभी टिके नहीं। या यों कहिये कि यह जानकारों के पास नहीं टिक पाईं। जो भी हो, आख़िर न सुर रहा, न गला रहा, कुछ फटफटा-सा होकर रह गया। संगीत से ना-आशनाई हो गई। भीड़ छंटने लगी तो तनहाई से ज़रा कोफ़्त हुई।

ऐशमंज़िल इसी कोफ़्त का नतीजा है।

ऐशमंज़िल के सामने वाली छोटी-सी इमारत में, कोठों के नीचे, छोटी-सी दुकनियां में फेरीवाले की तरह दस-पांच डोरिये के थान लिये यह जो बज़ाज़ देवकीनंदन आज किराये पर बैठते हैं, कहते हैं कि ऐशमंज़िल के गारे-चूने में

इनका ख़ून निचोड़ा गया है । यही वजह है कि उन्हें पीलिया हो गया और इमारत पर सुर्ख़ी आ गई । देवकीनंदन अब ज़ोर से नहीं बोलते । कभी-कभी किसी जिगरी से आहिस्ता-आहिस्ता दबी ज़ुबान में कहते हैं, 'इस औरत के काटे का इलाज नहीं है ।' लोगों ने टोका भी था कि 'भई यहां दूकान क्यों खोलते हो ?' तब एक नम-सी आह भरकर उन्होंने जवाब दिया था कि 'भई दीदार हो जाता है, दूर से ही सही ।' और तब दोस्तों ने यकीन कर लिया कि बेशक देवकीनंदन सच्चा आदमी है, इस औरत के काटे का इलाज नहीं है ।'

यह सच है कि रूप और गुन के ज़ख़ीरे होते हुए भी सब मिलाकर यह औरत शक्ल-सूरत से बड़ी चाक-चौबंद, चालाक, छाकटेबाज़ और हर्राफ़ा नज़र आती है । शुहाराआफ़ाक, शोहदेपुश्त ! मजाल है कि महल्ले में इसकी बिना मर्ज़ी के कोई तिपतिया खेल ले ? कंठे वाले और भीख मांगने वाले गांजा और कोकीन बेच लें ? तनूर वाला पंजाबी ख़मीरी रोटियों में लपेटकर शराब की बोतल किसी कोठे पर भेज दे ? तौबा ! कितने ही तुर्रेबाज़ों की पीठें और ऐशमंज़िल की अंधेरी कोठरियां ऐशबेगम के पोसे हुए गुंडों के भीगे हुए कोड़ों से सिसकियां भर रही हैं ।

ऐशबेगम का दरारा है ।

नसीब के जिस धकेले से मीरा मेमार जिस चकाबू में आ पहुंचा है, उसके बीचोंबीच एक लंबोतरा चौक है । चौक के तीन तरफ़ मुग़लिया मेहराबें हैं । मेहराबों के पीछे तीनों तरफ़ ख़ूब कुशादा दालान हैं और इन दालानों के पीछे आराम और आराइश के सामान से लैस, हालत और हैसियत के मुताबिक़ मुसाफ़िरों को ठहराने के लिए कई बड़े-छोटे कमरे हैं । चौथी तरफ़ दूरंदेश ऐशबेगम ने मामूली मुसाफ़िरों के लिए कुछ सड़ी-बुसी, बोसीदा-सी कोठड़ियां निकलवा दी हैं जिनके दरवाज़े इस चौक में नहीं हैं । सदर दरवाज़े की मेहराब से लगे हुए दाईं तरफ़ के रास्ते से जाकर कहीं पीछे की तरफ़ खुलते हैं । चौथी तरफ़ ही ऊपर की मंज़िल में जाने के लिए चौक में से ही ज़ीना है ।

ऊपर की मंज़िल में बिलकुल इसी वज़ा-क़ता की मेहराबें हैं जिनमें हर वक़्त बड़ी-बड़ी चिकें पड़ी रहती हैं । इनके पीछे वैसे ही दालान हैं जैसे नीचे के हैं । इन दालानों के पीछे बड़ी शान-बान के बड़े-बड़े कमरे हैं । बाज़ार की तरफ़ वाले तमाम हिस्से में खुद ऐशबेगम की रहाइश है । बाक़ी हिस्से कुछ ख़ासुलख़ास मेहमानों के लिए हर वक़्त महफ़ूज़ रक्खे जाते हैं । चौथी तरफ़, यानी सड़ी-बुसी कोठड़ियों के ऊपर, सिर्फ़ बावर्चीख़ाना, गुस्लख़ाना और नीचे जाने, या ऊपर आने का ज़ीना है ।

ऐशबेगम अपनी दुख़्तर-नेक-अख़्तर (भाग्यवान कन्या) रौनक़ बानो, इकलौते लख़्ते-जिगर सबरंगख़ां और उस्ताद अल्लाबंदे उर्फ़ बंदेमियां सारंगिये के साथ इसी ऐशमंज़िल में रहती हैं । बस, यहां यही उनका कुनबा है ।

ऊपर की, ठीक अम्मीजान की यानी अपनी बाज़ू के ऐन सामने वाले नीचे की मंज़िल के एक कमरे में सबरंगख़ां ने अरबी मुसाफ़िर को लाकर ठहराया। मज़दूरों के सामान रखते ही लोहे के उस ख़ास संदूक पर मीरा हुश करके पालथी मारकर बैठ गया। चच्चच्-चच्चच् करते हुए सबरंगख़ां ने कहा, 'अपना घर समझकर मसनद पर तशरीफ़ रक्खें हुज़ूर, यह इस तरह बेआरामी से बैठने की वजह ? कोठा तो इमान से मैंने वह खोल दिया है जिसमें नवाब से कम कभी कोई ठहरा ही नहीं।'

मूंछों पर ताव देकर वह दहक़ानी बोला, 'तो हम क्या किसी से कम हैं ?'

अपने दोनों गालों पर जल्दी-जल्दी टिचकियां मारते हुए सबरंगख़ां ने कहा, 'तौबा है इमान से !···ख़ुदा न ख़ास्ता···मैं अभी हुज़ूर की तमाम आसाइशों का इंतिज़ाम करता हूं। तब तक जनाब ज़रा ठंडे हो लें, मैं अभी हाज़िर होता हूं।'

सलामें झुकाते हुए सबरंगख़ां, मुंह मीरा की तरफ़ और कदम दरवाज़े की तरफ़ बढ़ाते हुए तेज़ी से बाहर चले गये।

□□

दीवानख़ाने में मद्धम-सी रोशनी थी। कभी-कभी की तेज़ रोशनी ऐशबेगम को बहुत नागवार है। वे कहती हैं कि रोशनी अगर हो तो तेज़ हो, और ऐसी हो कि फिर बुझाई न जाय तब तो रोशनी मुआफ़िक आती है वर्ना आंखों को तक-लीफ़ पहुंचाती है। सो जा-बजा झाड़-झूमर, फ़ानूस-कंवल, हांडियां, सफ़ेद चांदनी के नीचे छत में अलसाये हुए से लटक रहे थे। पिंजरों में तोता और मैना गर्दन सिकोड़े हुए सिमटे हुए थे। क़द्देआदम आईने कुछ इस वज़ा से दीवारों में लगे हुए थे कि गावतकिये से टिककर फ़ारसी क़ालीन पर बारह मन की धोबन की तरह अध-लेटी अध-बैठी-सी ऐशबेगम, बंदेमियां के साथ शतरंज खेलती हुई ख़ुद को ही एक की चार-चार नज़र आ रही थीं। बड़े-बड़े पानदान, उगालदान सामने रक्खे थे और पेचवान की चांदी की मुनाल होठों में लगी हुई थी कि तभी अरबस्तानी मुसाफ़िर की दरियादिली और तांगे वाले से झपटी हुई अशर्फ़ी की चकाचौंध से चुंधियाये हुए, 'अम्मीजान अम्मीजान' पुकारते हुए अपनी ही टंगड़ियों में उलझ-कर गिरते-पड़ते सबरंगख़ां अंदर को कुछ इस तरह दाख़िल हुए जैसे फट पड़े हों।

चौंककर ऐशबेगम ने कहा, 'ऐ क्या हुआ आख़िर, मरीलिया तूफ़ान आ गया क्या ?'

घुटनों के बल बैठकर और मुंह को उनके कान के पास ले जाकर सबरंग ने कहा, 'अम्मीजान एक बड़ा रईस मुसाफ़िर उतरा है इमान से !'

लापरवाही से सबरंग को पीछे धकेलकर, एक प्यादा आगे बढ़ाते हुए बेगम

ने कहा, 'जाओ बे, बहुत देखे हैं रईस मुसाफ़िर !'

कलाइयां चकफेरकर सबरंग ने पूछा, 'ऐ कोई ऐसा भी देखा है जो टमटम वाले को रेलवाई से हां तक की अशर्फ़ी दे दे ?'

ऐशबेगम ने शतरंज से नज़र हटाकर पहिले तो सबरंग की तरफ़ देखा, फिर अल्लाबंदे की तरफ़, और फिर गर्दन झुकाकर अपनी चाल पर ग़ौर करने लगीं। इस बेइतमीनानी की नज़र से पेच खाकर सबरंग बोला, 'इमान से यक़ीन नहीं आया आपको हमारा !'

फिर जेब से फ़ौरन ही अशर्फ़ी निकालकर दिखाते हुए उसने कहा, 'यह देखिये···वो तो मैंने चालाकी से डेढ़-पौने दो की रेज़गारी साईस को देके ये अपने हाथ में कर ली वर्ना वो तो ले ही मरा था !'

ऐशबेगम ने देखा, 'ऐ है तो सही !'

मुनाल बाज़ू करके व्हेल की तरह पलटीं, फिर सीधी हुईं, फिर अशर्फ़ी को परखा, फिर बंदेमियां की तरफ़ कुछ निशाना साधने की तरह देखा और फिर प्यार से सबरंग से बोलीं, 'जाओ ज़रा तकल्लुफ़ से ठराओ !'

वाहवाही-सी महसूस करके सबरंग अकड़ता-उलझता हुआ जिस तेज़ी से आया था उसी तेज़ी से चला गया।

□□

यह जो उस्ताद अल्लाबंदे उर्फ़ बंदेमियां हैं, इनका शजरा (वंशवृक्ष) तलाश करना न तो ज़रूरी है, न मुमकिन ही है। यह सच है कि ऐशबेगम का और इनका सिलसिला पुराना है। यों ये सारंगिये हैं, मीरासी ! ऐशबेगम से पहिले-पहल उनकी अम्मां ने, या न जाने किसने जब सुर लगवाया था— उससे भी पांच-छ: ईद-बक़रीद पहिले अल्लाबंदे का हाथ सारंगी पर रवां हो चुका था। उस वक़्त भी तारों पर गज़ यों चलता था जैसे बहते पानी में चप्पू। उंगलियों को वो कमाल हासिल था कि हारमोनियम की आख़िरी पट्टी पर पहुंचने के बाद बजाने वाला धौंकनी पर हाथ रखकर ताकने लगता था और आगे न अल्लाबंदे ख़ुद रहते थे न सारंगी। बस उंगलियां ही उंगलियां चलती नज़र आती थीं। इन्हीं उंगलियों की गुदगुदाहट पर बेगम रीझ गईं। रीझीं तो ऐसी रीझीं कि इस गुट्ठल से आदमी को छाती पर ही चढ़ा लिया। चढ़ा लिया, पर रीझने के इल्ज़ाम से वो क़तई इंकार करती हैं। यह हरकत उनके मज़हब के ख़िलाफ़ है। फिर मान भी लें कि रीझ गईं तो भी कमज़कम वो यह वजह तो थी नहीं। ख़ुद ही सुनाती हैं कि 'वह तो यह हुआ कि एक बार हम इन मियां को साथ लेकर किसी रईस की तक़रीब (शादी) में गई थीं। एक लंबोतरे से कमरे में दोनों के रात गुज़ारने का इंतिज़ाम था। एक

कोने में हमारा पलंग था, दूसरे कोने में ज़मीन पर ही जाजिम बिछाकर यह अल्लाबंदे सोये हुए थे। काफ़ी फ़ासिला था। कोई आधी रात के बाद कुछ बुदबुदाने की-सी आवाज़ सुनकर हम चौंककर उट्ठीं तो देखती क्या हैं कि अंधेरे में यह बंदे, खड़े-खड़े घुटनों से मुड़ते हुए, सीधे-सीधे नीचे को झुके और झुकते ही चले गये। ज्यों ही जाजिम पर टिकने को हुए कि, यकबयक 'या अल्ला माफ़ कर ख़ता, मैं तेरा गुनाहगार बंदा हूं' कहकर झट से फिर तनकर खड़े हो गये और लगे झूमने। हम कहें या ख़्वाजा यह क्या बला है? तभी फिर वही हरकत, और फिर वही हरकत! एक बार हमने हौसला बांधकर इन्हें जा धरा। घबरा के ये जो लिपटे तो फिर लिपटे ही रह गये। हमने भी कहा कि चलो कोई बात नहीं, इंदर सभा में एक मसख़रा तो चाहिए ही। यह तो बाद में मालूम हुआ कि मियां रात में अमल करते हैं। अब अमल की तो यह है कि वो है कौन-सा, जो अल्लाबंदे नहीं करते, पर पीठ पीछा है उनका कि उसी रात से यह हरकत उन्होंने छोड़ दी तो ढचरा ढीला हो गया। हमने पूछा, 'मियां यह तने-तनाये साज़ पर उंगलियां सुस्त क्यों पड़ने लगीं?' तो जवाब दिया, 'ये हिकमत का मसला है अमल से ताल्लुक़ है!' लाहौल वला!···हमने ताकीद की कि कनसुरे सुस्त साज़िंदे की ज़रूरत हमें नहीं है। मान गये फ़ौरन, फिर अमल जारी कर दिया लेकिन ताकीद के मुताबिक़ दिन को नहीं सिर्फ़ रात को। हमें फ़र्माबरदारी पसंद आई। अब इसे ख़लक़त कहती है कि रीझ गईं, तो रीझ गईं।

यह शख्स क़द में बुट्टा, बदन में गठा हुआ, कुछ अजीब से ऊबड़-खाबड़ चेहरे का है। छोटी-छोटी आंखें हैं, नज़र मिलाकर बात नहीं करता। बोलता हुआ ऐसा लगता है कि ख़ुद अपनी भंवों की तरफ़ देख रहा है। कम रफ़्तार से बोलता है, कम रफ़्तार से चलता है। ऐशमंज़िल में ख़ुदा न करे आग लग जाय और देवकीनंदन बज़ाज़ की दूकान पर बैठे हुए अल्लाबंदे को इत्तिला देने के लिए सबरंग सर पे पांव रखकर दौड़ा हुआ आये तो भी अपनी पेशानी की तरफ़ देखता हुआ निहायत इतमीनान से आहिस्ता-आहिस्ता ये कहेगा कि 'तुम बा-वर्ची ख़ा-ने से बा-ल्टि-यां व-ग़ै-रा नि-क-ल-वा-ओ तब तक ह-म भी आ-ते हैं।' फिर कहीं ख़रामा-ख़रामा चलकर (धीरे-धीरे) ऐशमंज़िल जायेगा। जैसा बोलता है वैसा ही चलता है। ऐसे आजकल कहां मिलते हैं? अलीगढ़िया काट का पाजामा, कुरता, वास्कट, कंधे पर झाड़न और सर पर लीचड़-सी तुर्की टोपी इसका पैदा-यशी लिबास है। जबड़े में हर वक़्त बड़ी-सी गिलौरी दबाये रहता है, शायद इसी वजह से कम-सुख़न (मितभाषी) है। कभी बोलता है तो पहिले कहता है 'क़सम से!' क़सम से इसका तकियाकलाम है। क़स्में उठाकर बोलने वाले की तरह ही यह निहायत फ़ितरती और हिकमती इन्सान है।

यही वह शख़्स है जिसने अच्छे-अच्छे उस्तादों का ऐशबेगम के यहां टिकाव

नहीं होने दिया। यही वह हस्ती है जिसकी मेहरबानियों से ऐशबेगम आज संगीत से ना-आशना होकर फटे बांस का-सा गला लिये बैठी हैं। यही वह शख़्सियत है जिसे जानकार लोग सबरंग और रौनक़ का असली बाप बतलाते हैं। पर ख़ुदा लगती कहेंगे, रौनक़ इसकी बेटी हो तो हो, सबरंग तो इसकी औलाद क़तई नहीं है। आख़िर शबाहत (सादृश्य) भी तो कोई चीज़ है।

अशर्फ़ी वाले मुसाफ़िर की ख़बर देकर सबरंग के जाने के बाद मुंह में भरी हुई पान की पीक को गिरने से बचाने के लिए मुंह ऊपर उठाकर और ऊंट की तरह बलबलाकर बंदेमियां ने कहा, 'कसम से, देखो तो सही कौन मेहमान उतरा है !-

शतरंज की बिसात पर जाली का ढकना रखकर और 'या ख़्वाजा !' कह कर ऐशबेगम उट्ठीं।

□□

मसल मशहूर है कि 'कभी न देखा बोरिया, सुपने आई खाट !' फिर कंगाल मीरा मिस्त्री को तो मिल गई मसनद। आराइश और ज़ेबाइश के (सुसज्जा) ऐसे-ऐसे सामान जो अच्छे-अच्छों को नसीब नहीं। सलामें ऐसी कि रईसों और नवाबों तक से छिन गईं। दौलत इस तरह कि लाखों में एक को भी नहीं मिलती। दिल की धड़कन बंद होने से रह गई यह ताज्जुब है। छाती फूलकर गुब्बारे की तरह फट् से फट नहीं गई यह हैरानी है। इन्सान की कैसी मजबूरी है कि उसे ज़मीन पर पांव रखना पड़ता है।

छत के झाड़फ़ानूस, बिजली की रोशनी, दीवारों की नंगी-अधनंगी तसवीरें और ज़मीन के गुदगुदे फ़र्श को अजायबघर में घुसे हुए जांगलू की तरह फटी-फटी आंखों से घूरता हुआ, आख़िर वह अपना ताबा खो बैठा और कमरे में इधर से उधर तक इस तरह लोटने लगा जैसे शिद्दत की गर्मी में तपती धूल में गधा लोटता है। इसी हालत में गुल ने खिलना शुरू किया।

अल्लाबंदे की आमद हुई। झुक-झुककर आदाब बजाते हुए बंदेमियां ने मीरा से पूछा, 'मिज़ाज शरीफ़ जनाब के ?'

ख़तरा कुछ क़रीब आया-सा जान पड़ा। मीरा उछलकर घुटनों के बल हो गया, जैसे नमाज़ के वक़्त बैठते हैं। जवाब न पाकर भी ताज्जुब का रंग चेहरे पर ज़ाहिर न होने देने की ख़बरगीरी से बंदेमियां नीयत बांधकर विक्टूरियाई कुर्सी के पीछे खड़े हो गये। तभी तेज़ हवा के झोंके से उड़कर आये हुए पत्ते की मानिंद यकबयक सबरंग अन्दर आया और हांफता हुआ मीरा से बोला, 'अम्मीजान ख़ुद मिज़ाज-पुर्सी के लिए तशरीफ़ ला रही हैं जनाब।'

आते ही ऐशबेगम ने गर्दन को ज़रा ख़म देकर 'अस्सलाम अलेक' किया और

आहिस्ता-आहिस्ता चलकर मलका विक्टूरिया की कुर्सी पर बैठ गईं।

मीरा को दरदराकर पसीना छूट पड़ा। एक बार उठने की कोशिश की, एक बार बैठने की। इस उठ-बैठ की कोशिश में वह मसनद पर फिसल ही पड़ा। उस्ताद की कमचियों के डर के मारे बदतमीज़ लड़का ज़मीन पर गिरकर और हाथ-पांव ऊपर उछालकर जैसे 'अब करूंगा, अब करूंगा' पुकारता है वैसे ही मीरा के मुंह से निकला, 'सलाम सलाम !'

बेगम ने पूछा, 'हुज़ूर के मिज़ाज तो अच्छे हैं ?'

मीरा ख़ामोश !

बेगम ने उकसाया, 'जी !'

कुछ न कुछ बोलना पड़ेगा ! किसी तरह हिम्मत बांधकर मीरा ने कहा, 'अजी हो जायेंगे आस्ते-आस्ते।'

ख़तरे की बू पाकर जैसे असील घोड़ी कनौती फटकारती है वैसे ही यह बोली सुनकर ऐशबेगम ने चौकन्नी होकर कहा, 'ऐ शायद सफ़र में तकलीफ़ हुई जनाब को। मैंने सुना है कि अरब से तशरीफ़ ला रहे हैं ?'

मीरा ने खुलना शुरू किया, 'हम बगदार से आये हैं।'

'सुभान अल्लाह ! बड़े मुक़द्दस मुक़ाम से तशरीफ़ ला रहे हैं।'

ऐशबेगम उठीं और किसी तरह से दोज़ानूं होकर उन्होंने मीरा की अचकन का दामन चूम लिया।

फिर सबरंगख़ां ने भी, और अल्लाबंदे ने भी।

मीरा हैरान कि ये ऐसे-ऐसे लोग इस तरह क्यों कर रहे हैं !

सबरंग बोले, 'अम्मीजान, कहां बग़दाद शरीफ़ और कहां ये इमान से।'

अल्लाबंदे ने बलबलाकर कहा, 'कसम से काले कोसों के रास्ते हैं। कहीं गधे पर, कहीं पैदल, कहीं ऊंट पर !'

मीरा सकपकाया कि इन्हें कैसे मालूम हुआ कि हमने कहीं गधे पर और कहीं ऊंट पर सफ़र किया है ? इतना मालूम है तो और भी कुछ मालूम हो ही सकता है। घबराकर बोला, 'एकाध दिन टिकेंगे फिर चले जायेंगे।'

ऐशबेगम ने कहा, 'ऐसा न फ़र्माइये हुज़ूर, कुछ दिन हमारे मुल्क की भी सैर कर लीजिये।—क्या कार फ़र्माते हैं जनाब ?'

हूं ! तो भेद लेना चाहते हैं ये लोग। होशियार बनकर बोला, 'कार-भार क्या जी—बस ऐसे ई—सौदागरी ?'

'ऐ तो यहां तो बड़े-बड़े सौदागर आते हैं और बरसों क़याम करते हैं।'

सबरंग ने कहा, 'ग़रीबख़ाने को कहीं सराय न समझ लीजियेगा इमान से !'

अल्लाबंदे बोले, 'कसम से ये तो बिगड़े वक़्तों की बातें हैं कि हमने इसे सराय बना रक्खा है।'

मीरा ने सोचा किसी ग़लत जगह पर तो नहीं ला पटका तांगे वाले ने ? था भी सुसरा फितूरिया-सा ही । पूछा, 'तो सराय नईं है ये ? हम तो सराय समज के ई आये थे !'

ऐशबेगम ने थपकी दी, 'मगर घर समझ के रहिये सौदागर साहब । हम लोग भी कल तक रईस थे, नवाब कहलाते थे ।'

गहने-पाते से लदी हुई उस औरत की तरफ़ मीरा ने घूरकर देखा । हियाव भी कुछ खुल गया था । बोला, 'कल्ल तक ? हमारे अंदाज में तो तुम आज भी कम नईं हो ।'

बेगम ने कहा, 'आपकी ज़र्रानवाज़ी है ।·· जनाब का इस्मशरीफ़ मालूम नहीं हुआ ?'

न जाने क्या नहीं मालूम हुआ ? और जाने क्या मालूम करना चाहती है ? मीरा समझा नहीं, बग़लें-सी झांकता रह गया । ऐशबेगम ने मुश्किल ताड़ ली । बोलीं, 'मैंने कहा, नाम मुबारिक मालूम नहीं हुआ—नाम तो बतलाइये अपना !'

'हां-हां नाऽऽम ! हमारा नाम मीर···'

और झट से ज़ुबान दांतों में आ गई । तुतलाता-सा बोला, 'हमारा नाम अमीरअली है ।'

अमीरअली को भला कौन नहीं जानता । अमीरअली ठग का क़िस्सा तो ऐशबेगम ने सुना भी है, पढ़ा भी है । कहते ही याद आ गया तो बोला, 'ऐ ये तो बड़ा मशहूर नाम है, जन-जन बच्चा जानता है ! किस चीज़ के सौदागर हैं आप ?'

असलियत फूटकर मीरा के मुंह से निकल पड़ी, 'अजी येई ईंट, पत्थर, चूना, मिट्टी और क्या ?'

हैरान होकर ऐशबेगम ने कहा, 'जी ? क्या फ़र्माया ?'

इस जिरहबाज़ी में सच बात मुंह से निकल जाने की ग़लती का मीरा को फ़ौरन अहसास हुआ । अब क्या करे ? इस बात को कैसे बदले ? उसके कुछ और उल्टी-सीधी सफ़ाई देने से पहिले ही सबरंग ने कहा, 'अम्मीजान, आपका मतलब उन पत्थरों से है जो हीरे, लाल, पुखराज वग़ैरा कहलाते हैं । क्यों हुज़ूर, ठीक है न मेरा अन्दाज़ा ?'

इसी बात पर सबरंग मीरा के मन चढ़ गया । बात बन गई, यह देखकर ख़ुद ही 'हहह हहह' करके हँस पड़ा । सबरंग ने आगे कहा, 'परदेस में हैं न, इसीलिए तफ़सील में एहतियात बरत रहे हैं इमान से !'

सौदागर को हँसते हुए देखकर ऐशबेगम अदबी फ़र्ज़ से मुस्कुराकर बोलीं, 'ऐ ख़ुदा जानता है, मज़ाक़ आपने लाजवाब पाया है ! अब तकल्लुफ़ न फ़र्माइयेगा ! जिस चीज़ की ज़ुरूरत हो फ़ौरन हुक्म दीजियेगा ।'

फिर उठते-उठते सबरंग से कहा, 'सबरंग साहब, ख़याल रहे, सौदागर को कोई

तकलीफ़ हुई तो हम सूली चढ़ा देंगे, चाहे कोई हो !...आदाब अर्ज़ है।'

ऐशबेगम की आला शान, आला ख़ातिरदारी और सबरंग पर लगाये हुए सूली के फ़र्मान से रौब में आया हुआ मीरा, नज़रों से ओझल होते हुए गोल-गुम्बद और कुतुबमीनार को टिकटिकी लगाये देख रहा था कि सकरंग ने इल्तिजा की, 'हुज़ूर कहीं सूली न चढ़वा दीजियेगा इमान से !'

अल्लाबंदे ने अर्ज़ गुज़ारी, 'कसम से कोई ज़रूरत हो तो आप अभी फ़र्मा दीजिये।'

इन दोनों की जां-बख़्शी के लिये, दायें हाथ की पांचों उंगलियां जोड़कर, बायें हाथ की मुट्ठी में भींचकर और ऊपर को उठाकर मीरा ने चिलम का इशारा किया। बंदेमियां ने इशारा हाथों-हाथ लपक लिया, 'अभी लीजिये, दो मिलट में हाज़िर हुई जाती है। जान का ख़दशा तो मिटा।'

चलने लगे तो मीरा ने जेब से एक अशर्फ़ी निकालकर उनकी तरफ़ फेंकी और बोला, 'ये लो !'

बंदेमियां ने पलटकर देखा लेकिन उनके झुकने से पहिले ही सबरंग ने अशर्फ़ी उठाकर जेब के हवाले करते हुए कहा, 'इसकी क्या ज़रूरत थी सौदागर साहब, इमान से आप हमारे मेहमान हैं। मैं अभी भिजवाता हूं। और कोई ज़रूरत हो तो मेरा नाम सबरंग है—सबरंग बेग कहकर बुलवा लीजियेगा।'

अल्लाबंदा और सबरंगखां के चले जाने के बाद दोनों बांहें और दोनों टांगें पूरी लम्बाई-चौड़ाई में फैलाकर, गर्दन तकिये पर टिकाकर, मुंह से हाः हाः करके मीरा मसनद पर फैल गया।

□□

पीरा ने भी आज तकिये पर दामन-झटक दिया। आज का काम ख़त्म होने के बाद शाम को जब पीरा आधी-आधी मज़दूरी बांटने के लिये बैठा तो मज़दूरी तो पूरी हो गई लेकिन दरियाशाह की दी हुई पोटली ख़ाली हो गई। शायद उसका ख़याल यह हो कि यह कभी ख़ाली होगी ही नहीं। पांच सेर पक्के की पोटली थी आख़िर ! लेकिन ख़ाली हो गई। कमाल है। पीरा देखता रह गया।

अहाते की पुरानी दीवार ढह चुकी थी। फ़क़ीर की मर्ज़ी के मुताबिक़ मुसाफ़िरों को मेंह-पानी से बचाने के लिये चारों तरफ़ एक दालान और चंद कोठड़ियां बनाने का जो ख़ाका पीरा और उसके साथियों ने खुद-ब-खुद ही डाला था उसकी बुनियाद पड़ गई थी और दीवारें दो-दो ढाई-ढाई हाथ ऊपर को उठ आई थीं। थोड़ा-बहुत ईंट-चूना, मिट्टी-मलबा इधर-उधर पड़ा हुआ था।

ख़ाली पोटली का कपड़ा हाथ में उमेठता हुआ हड्डियों की तरह जहां-तहां

बिखरे हुए ईंट-पत्थरों की ओर पीरा चुपचाप बैठा देख रहा था, कि बुंदू मियां ने कहा, 'क्या है बे, उठता क्यों नईं ?'

कपड़ा फटकारकर पीरा बोला, 'पोटली खाली हो गई ।'

'फिर ?'

पोटली के कपड़े की रस्सी-सी बटते हुए पीरा ने कहा, 'फिर तो बस ऐसा मामला है कि रकम तो देख लो सारी उठ गई और दरिया बाबा लौट के आया नईं । माल तो थोड़ा-सा पड़ा है पर मजूरी के लिए मेरे पास कुछ नईं है । अब बिना मजूरी काम करने को राजी हो तो सब भाई हां कर दो, नईं तो वैसे कै दो ।'

मुट्ठी भर पूंजी पर फ़कीर की इमारत का ठेका ले लेने की बेवकूफ़ी पर सरफ़ू की अगुआई में पीरा के ऊपर चारों तरफ़ से बे-भाव की पड़ने लगीं । कभी इसकी और कभी उसकी सुनता हुआ पीरा बुद्धू की तरह सबका मुंह ताकने लगा । बुंदू मियां ने भी जब यह कह दिया कि 'आधी में तो गुजारा कर लिया पर बिना मजूरी कैसे करेंगे,' तब तो यह फ़ैसला ही हो गया कि यह आदमी पूरी तरह पागल हो गया है और तब इस फ़ैसले पर पीरा को हँसी आ गई । हँसकर चिनाई की तरफ़ देखता हुआ बोला, 'काम अधबिच में रह गया ।···रह गया, मुजे क्या है ! मैंने तो पाई-पाई हिसाब से लगा दी—कह दूंगा फकीर से ।'

उसे यों ही बड़बड़ाता हुआ छोड़कर कुछ लोगों ने अपना रास्ता पकड़ा । पीरा नहीं उठा तो बुंदू मियां ने पूछा, 'अब क्यों बैठा है ?'

पीरा ने कहा, 'सोच कर रया हूँ !'

'क्या ?'

'ये ई कि दरिया बाबा कईं जाता तो है नईं इस तरै !'

बुंदू ने कहा, 'फकीर का क्या भरोसा भई, मस्त-अलस्त आदमी, जोरू न जाता, जब जिधर को मौज आ गई चल दिया । चल तू ।'

पीरा फिर भी नहीं उठा तो बुंदू ने उसे हिलाकर कहा, 'अबे उठता क्यों नईं तू, रात हो रई है ।'

भारी-सा होकर पीरा बोला, 'चचा, मीरा नईं आया !'

इस बार बुंदू भी बैठ गया––तो और भी बैठ गये । बुंदू ने कहा, 'है तो बात सोचने की जरूर-बेजरूर ! पर हम कैते हैं कि मीरा नामुराद कोई बच्चा तो है नईं जो कोई उठा के ले जायगा उसे, या खो जायगा कईं मेले उरूस में ।'

मीरा के खोने-उठा ले जाने की बात पर पीरा फिर हँस पड़ा, 'अजी खैर खो कैसे जायगा इत्ता बड़ा आदमी ? और उठा कैसे लेगा कोई इत्ते भारी को ? मुज से तो बड़ा ई है !'

'तो ये ई बात तो कई हमने ?'

इतनी के बाद भी पीरा ने वही बात कही, 'पर हां आया नईं ।

किसी ने कहा, 'मजूरी-अजूरी ढूंढने कहीं दूर निकल गया है, और क्या ?'

मीरा की नादानी की खिल्ली-सी उड़ाकर पीरा हँसते हुए बोला, 'मजूरी भी कैसे करेगा कई, औजारों का थैला तो घर में ई पड़ा है। औजार बिन कारीगर क्या ? क्यों चचा ?'

पोपले मुंह से चचा ने कहा, 'राज हो तो हज्जाम !'

'और हज्जाम हो तो ?'

'हज्जाम हो तो राज !'

सब ठहाका मार कर हँस पड़े। हँसते-हँसते ही तकिये की सीढ़ियों से चंद आदमियों को ऊपर आते हुए देखा।

दरियाशाह के तकिये से कोई छः कोस के फ़ासले पर बगदार से भी एक छोटा गांव है, किकरौली। नूर मुहम्मद का घर है किकरौली में ! नूर मुहम्मद थे तो मेमार ही, पर मेमारी में पेट नहीं भरा तो पेशा छोड़ दिया। घर में एक करघा लगा लिया और गजी-गाढ़ा बुनकर गुजारा करने लगे। तब से लोग कहने लगे, नूरू जुलाहा। जुलाहा तो जुलाहा—जुलाहा कोई शर्म की बात है ? कबीर नहीं था जुलाहा ?

साठी उलट चुकी है। भरी जवानी में जुलाहन अकेला छोड़ कर अल्ला को प्यारी हो गई। तब वह जुलाहन थी भी कहां, मेमारन थी। जो कुछ भी थी, नूरू मियां ने फिर शादी नहीं की। मुज़क्कर (पुल्लिग) औलाद कोई हुई ही नहीं, एक लौंडिया है जवान जहान—अमीना। बस बाक़ी सब अल्ला ही अल्ला है। नूरू जुलाहा रोज़े-नमाज़ का पाबंद, जरा साफ़गो, यानी अक्खड़ क़िस्म का आदमी है। मशहूर है कि नूरू जुलाहा ज़ुबान देकर न कभी खुद फिरता है न लेकर किसी को फिरने देता है। अब कसबल ज़रा झड़ने लगे हैं। नौ कम सौ की उम्र में भी बुंदू मेमार के जो दमखम हैं वह साठी में नूरू जुलाहे के नहीं हैं। फिर भी छः कोस की मंजल क्या मंजल है ? और फिर ऐसा तन-मन से लगा हुआ मामला ! दो अपनों को साथ लिया और लठिया टेकते हुए बगदार को दौड़े चले आये। वहां पता लगा कि तकिये पर मदद लगी हुई है सौ लौटकर दिन-छुपे यहां पहुंचे हैं।

सबसे अलेक-सलेक करके नूरू मियां बिल्कुल गुम-सुम होकर पिपलिया नीम से टिककर बैठ गये। रंग-ढंग कुछ बिगड़े हुए देखकर बुंदू मियां ने पूछा, 'खैरसल्ला ?'

झुंझलाकर नूरू ने कहा, 'खैरसल्ला होती तो इस बखत क्यों आते दिन ढले ?'

बुंदू ने पीरा से कहा, 'जा बे चिलम भर ला !'

पीरा जब तक चिलम भरता रहा और भरकर वापिस लौटकर चिलम उसने बुंदू को पकड़ाई और बुंदू ने नूरू के हाथ में दे दी तब तक न किसी से कोई बोला, न कोई बात चली। नूरू के चिलम में एक दम मार लेने के बाद बुंदू ने पूछा,

'कैसे-कैसे आना हुआ ?'

नूरू शायद इसी सवाल के इंतिज़ार में था। ऐसी जगह से और ऐसी आवाज़ में उसने जवाब दिया कि यों लगा जैसे बात कहीं बीच में से ही शुरू हो गई। एक-एक बोल पर जोर देकर नूरू ने कहा, 'ऐसे आना हुआ कि ये लौंडा जो बैठा है पीरअली, इसे हमारे सामने कायल माकूल करो।'

तुरत-फुरत बुंदू ने कहा, 'जरूर करेंगे, बोलो, किस बात पे करें ?'

नूरू ने कहा, 'अमीना के साथ इसे मंगनी ठराये हुए आज पांच बरस हो गये, इससे पूछो कि अब ये शादी क्यों नहीं करता ?'

बुंदू ने पीरा से कहा, 'जवाब दे भई !'

लेकिन पीरा ने जवाब नहीं दिया।

नूरू ने फिर कहा, 'मैं पहिले आया था तो इसने रमजानों के पीछे शादी करने को कहा था, आज इन बातों को महीनों हो गये।'

नूरू के साथी ने गवाही दी, 'हमारे सामने की बात है साब ! पीरअली ने हमारे सामने कई थी ये बात इनसे।'

उचककर नूरू ने बुंदू से कहा, 'ये गभाई मौजूद है। मैं बुड्ढा आदमी हूं, आज से कल का भरोसा नहीं। तुम अक्कल-बंद हो, बताओ इत्ती बड़ी लौंडिया को कत्तक घेरे बैठा रहूं ? इससे जवाब दिलवाओ।'

बुंदू ने कड़ककर कहा, 'क्यों जी पीरअली, साफ जवाब क्यों नहीं देते ?'

पीरअली तो खुद जवाब नहीं दे रहा था। शायद कुछ बोलता भी, पर उसके बोलने से पहले ही नूरू बोला, 'अब हम साफ जवाब नहीं लेंगे। लौंडिया पांच बरस से इसके इंतजार में बैठी है, अब साफ जवाब कैसे ले लेगी ? चार भाइयों ने मेरे दरवज्जे पर बैठ के मंगनी ठराई है, कोई कुल्हिया का गुड़ थोड़े ई है !'

पीरा इस पर भी जब मुंह में दही जमायें बैठा रहा तो दांत मिसमिसाकर नूरू ने कहा, 'इससे कुछ बुलवाओ तो सही।'

बुंदू ने समझाकर कहा, 'बोल दे पीरा, बोल दे। नूरू मियां झूंट कह रहे हैं क्या ?'

आहिस्ता से पीरा ने कहा, 'नई, झूंट क्यों कैते !'

बुंदू ने नाराज़ होकर कहा, 'तो फिर कौल पूरा क्यों नहीं करता बेईमान ?'

बड़ी देर के बाद बेईमान ने एक ईमानदारी की बात मुंह से निकाली। बुंदू की तरफ़ मुंह करके बोला, 'चचा, इनसे ये कहो कि तुमें जल्दी हो तो तुम और किसी से कर दो सादी।'

इस बात के पीरा के मुंह से निकलते ही तकिये पर हंगामा खड़ा हो गया। नूरू जुलाहा एकदम से गला फाड़कर चीख़ पड़ा, 'सुनो जी बेकूप के बच्चे का कलाम। मैं अभी लठिया मार के खोपड़ा फोड़ दूंगा इसका।'

और नूरू ने खड़े होकर असल में ही बुंदू मियां की लाठी छीनकर पीरा के खोपड़े पर तान दी। बुंदू मियां ने ऊपर ही ऊपर लाठी को झेल कर नूरू को समझाया, 'नूरमोहम्मद अभी रोके रहो बदकिलामी, हम जिबानी ले रहे हैं इसकी ।'

बुज़ुर्ग लोग हैं, बद-कलामी का इन्हें अख्तियार है, पर खोपड़ा फोड़ने की वजह पीरा की समझ में नहीं आई। खोपड़े पर लाठी तनी हुई होने के बावजूद पीरा के खोपड़े में जुम्बिश नहीं हुई। वह सर नीचे को झुकाये ज्यों का त्यों बिना हिले-डुले बैठा रहा। बड़ी मुश्किल से सबने दाब-दूबकर नूरू जुलाहे को धरती पर बिठा दिया। लाठी की जगह चिलम नूरू के हाथ में पकड़ाकर बुंदू ने पीरा से कहा, 'अबे ये जो कुछ तूने कहा ये ई तेरा मतलब है कि मूं से लिकल गया है ?'

पीरा की कहनी-करनी में अन्तर नहीं है। पागल कहते हैं, पर पागल है थोड़ा ही। हँसकर बोला, 'वाह ऐसे कैसे लिकल जाता ?'

अब तो हद हो गई। अकेले नूरमोहम्मद के ही नहीं, मेमारों और जुलाहों की ज़ात की ज़ात के मुंह पर इस लौंडे ने फटे हुए से लीतड़े फटकार दिये। पर ऐसा कभी होता है? किकरौली और बगदार की रोटी-बेटी के व्यवहार में आज तक ऐसा कभी हुआ है? या होने दिया जा सकता है? बेटों और बेटोंवालों की आबरू हो या न हो, पर बेटीवाले अपनी सांडनियों-सी बेटियों का मुंह काला करके धकेलने के लिए इस पथरीले इलाक़े में कहां कुए-झेरे खोदते फिरेंगे? दुनिया जानती है कि नूरू जुलाहे ने आज तक ज़ुबान न कभी बदली, न किसी को बदलने दी! इस लौंडे की यह मजाल कि करार-मदार करके इस तरह साफ़-सपाट मुकर जाय? नूरू जुलाहे का खून खौल गया और नतीजे में दोनों वक़्त मिले पिपलिया नीम के ऊपर और नीचे चोंचों-चखचख से ग़ुल मच गया।

आख़िर बुंदू ने नूरू की तरफ़दारी करके पीरा से कहा, 'पीरा, हम खुदा लगती कैंगे—तुमने कौल भरा है, तुमको पूरा करना पड़ेगा।'

पुटपुटाकर पीरा ने कहा, 'हमारी तो कोई सुनता ई नईं।'

समझ में नहीं आया तो चिल्लाकर बुंदू ने कहा, 'जोर से बोल !'

ज़ोर से तो नहीं, पर बोला, 'कोई सुने जभी तो बोलें।'

'ख़ामोश-ख़ामोश' के अंदाज़ में दोनों हाथ ऊपर को उठाकर बुंदू मियां ने कहा, 'सुनोजी सुनो, पीरअली का बयान सुनो।'

सब पीरअली की तरफ़ चुप होकर देखने लगे।

कन्नी की नोक से धरती पर लकीर खींचता हुआ पीरा बोला, 'दूसरी बात तो ये है कि सादी-ब्या के लिए जो रकम चैये वो हमपे नईं है।'

झल्लाकर बुंदू ने पीरा से कहा, 'उल्लू के बच्चे, पैले पैली बात कैनी चैये कि दूसरी? पर खैर…'

बात बीच में छोड़कर किकरौली वालों की तरफ़ मुंह करके बुंदू ने कहा, 'दो

जी, पैले दूसरी बात का ई जवाब दो, इसपे तुम्हारा क्या कैना है ?'

नूरू ने फ़ौरन ही जवाब दिया, 'इसपे हमारा कहना ये है कि रकम तो बंदे के पास कभी है कभी नहीं है। रकम के वास्ते दी हुई बात उलटायेगा ये ? रकम भारी कि जबान भारी ?'

बुंदू ने पीरा से कहा, 'सुन लिया बे ? ये बात नूरू मियां ने कायदे की कही है, अब पैली बात बोल !'

पीरा बोला नहीं। बाईं तरफ़ को आड़ा होकर दायें पैर की जूती निकालकर चुपचाप उसने बुंदू मियां के आगे सरका दी।

बुंदू ने पूछा, 'ये क्यों ?'

पीरा ने कहा, 'इसे उठाके मेरे मूं पै मारो।'

'पीछे मारेंगे पैले बात बोल।'

दुनिया भर में दानिशमंदों और अहसासदारों की संजीदगी चेहरे पर लाकर पीरा ने कहा, 'देखो चचा, सबको खबर है कि हमारा भाई लैपता हुआ पड़ा है, और हम उसका कितना गम मान रये हैं। मान लो कि हम सादी रचा लें और मीरा को खबर नई पड़े तो वो हमारा बड़ा भाई कैसा और हम छोटे कैसे ?'

तकिये के हौज़ के हौज़ का ठंडा पानी सब के सर से उतर गया। उबलते-खौलते हुए खून में उतार आ गया। बुंदू मियां का सर यों ऊंचा हो गया कि वे उस गांव के बड़े हैं जिसका पीरा बच्चा है, और नूरू जुलाहे का सर यों ऊंचा उठ गया कि पीरा उसका दामाद होने वाला है।

पीरा की हिमायत में बुंदू ने कहा, 'ये पीछे जो पीरअली ने पैली बात कही है नूरू मियां, ये इसको पैले कैनी चैये थी, बस इत्ती ही गलती है इसकी। सोच के देखो, मीरा के सिवाय इस लौंडे का कोई भी नई है जहान में।'

हाथ जोड़कर नूरू ने कहा, 'तो खुदा के वास्ते सब भाई मिल के उस गुम- को ढुंढ़वाओ कहीं गांजे-सुलफे के ठेकों में। राजोंका जुलाहों पै ये ऐसान ही सई।'

नूरू के जुड़े हुए हाथ पकड़कर बुंदू बोले, 'चलो तो गांव को चलो, रात हो रई है। वहां सब मिलके मसल्लत करेंगे, ऐसान की क्या बात है इसमें।'

सब उठकर खड़े हो गये। पीरा ने एक अजीब-सी नजर तकिये के अधूरे काम पर डाली—ख़्वामख़ाह हाथ, हिलाया, हँसा और फिर सबके पीछे-पीछे चला गया।

लेकिन वह गुमशुदा सुनहरी घोड़े पर सवार होकर जिन आदमख़ोरों की खोह में जा घुसा है उस तक पहुँचने की किसी बेचारे बगदारी या किकरौली वाले, बुंदू ईदू, नूरू, खैरू की औक़ात ही क्या ? पीरा का सर फोड़ना आसान है, सांडनी-सी अमीना को धकेलने के लिये चट्टानों में कुआं खोदना उससे भी ज्यादा मुमकिन है लेकिन मीरा मिस्त्री को सात समंदर पार के जज़ीरे में रहने वाली जादूगरनी के

क़ब्ज़े से निकालकर लाने के लिये तो बकावली का ही हीरो चाहिये।

□□

रात का वक़्त था। अमीर अली सौदागर का दरबार लगा हुआ था। नौ रतन दस्त-बस्ता हाज़िर थे। अल्लाबंदे खुद अपनी सारंगी लिये बैठे थे और सबरंग के सामने तबले की जोड़ी कसी हुई रक्खी थी। सौदागर मसनद पर गांजे की चिलम मुट्ठी में भींचे उकड़ूं बैठा था। उसकी इस ज़रूरत को पूरी तरह भांप लिया गया था और मेहमांनवाज़ी का फ़र्ज़ दिलोजान से पूरा कर दिया गया था।

एक दमदार-सा कश लगाकर चिलम बंदेमियां की तरफ़ बढ़ाते हुए सौदागर ने कहा, 'ले बे सरंगची !'

अजीब बात है कि काना, काना कहने से चिढ़ता है। औक़ात पर सीधा हमला होते ही बंदा उछल पड़ा, 'कसम से लाहौल...'

सौदागर ने रोका, 'ले-ले, बड़ा सच्चा माल जमाया है तैंने चिमल में, दम लगा !'

बंदे ने चिलम ले ली। दम लगाया और ख़िदमतगार को पकड़ाते हुए बोला, 'या अल्ला माफ़ कर खता...'

कलमा पूरा ही पढ़ता, लेकिन सौदागर ने पढ़ने नहीं दिया। जेब से एक अशर्फ़ी निकालकर बंदे को देते हुए बोला, 'इसकी क्या ज़रूरत है कसम से '

मेहरबान होकर सौदागर बोला, 'ले ले, मजा आ गया हमें।'

अल्लाबंदे ने मजबूर होकर अशर्फ़ी ले ली। जेब में रखते-रखते वापिस निकालकर बड़ी मजबूरी से सारंगी के सूराख़ में डाल दी। सफ़ेद हिसाब की रक़म सारंगी में डाली जाती है, काले की जेब में। काली हो या जाली, सबरंग को ऐसा लगा कि उसकी जेब कट गई। हाय-हाय की तरह बोला, 'वाह वा, वाह वा !'

सौदागर ने पूछा, 'क्या वाव्वा ?'

सबरंग ने घिस्सा दिया, 'ऐ हुज़ूर हम बराबर कह रहे हैं और अब फिर कहते हैं कि ऐसा हो ही नहीं सकता की आपको गाना न आता हो! इमान से हम आदमी की शक्ल से भांप लेते हैं। गाना जाने बग़ैर न इन्सान फ़ैयाज़ हो सकता है न उसकी सूरत पर यह नूर बरस सकता है !'

फिर बंदेमियां के घुटने में कोहनी मारकर बोला, 'ज़रा देखना मियां, सौदागर की सूरत देखना !'

सबरंग के कहने से अपने माथे में आंखें चढ़ाकर अल्लाबंदे ने सौदागर के

चेहरे की तरफ़ देखा और बलबलाकर कहा, 'सुब्हान तेरी क़ुदरत ! क़सम से यह बग़दार शरीफ़ का नूर है सबरंग साहब !'

दोज़ख़ में भी बहार आती है। देखनी हो तो खुशामदी के सामने बैठे हुए किसी छिछोरे का चेहरा देखें। फिर बंदे की जमाई हुई और सबरंग की सुलगाई हुई चिलम का ख़ुमार ! मीरा चढ़ गये, 'भई अब क्या है, पर हां हमें सौक तो भौत है।'

सबरंग ले उड़ा, 'यः बात है। क्या कहा था हमने ? हुई न हक़ बात इमान से !'

बंदे ने ताईद की, 'सुरीले का चेहरा कसम से छुपता ही नहीं।'

तभी सबरंग ने तबले पर रपटता हुआ एक टुकड़ा बजाया। सुनते ही मीरा के मुंह से निकला, 'साबस ऐ।'

गिड़गिड़ाकर सबरंग ने कहा, 'हो जाय मेरी सरकार, कुछ हो जाय। इमान से बड़ी गरमाई हुई है जोड़ी।'

सरकार ने अहसान लुटा दिया, 'अच्छा तो सुन लो, तुम भी क्या याद करोगे कि आया था कोई गाने वाला रईस।'

घुटने मोड़कर, बायां हाथ कान पर रखकर मीरा ने आंखें मूंद लीं और टीप जमा दी। अल्लाबंदे की सारंगी, सबरंग का तबला। गुलेबकावली की मसनवी और खड़ी बगदारी आवाज़। 'हये-हये मेरा गुल ले गया कौन, हये-हये मुझे जुल दे गया कौन' का विलाप जब मीरा के गले से निकलकर ऐशमंज़िल के दरो-दीवार से टकराया तो बावर्चीखाने के बावर्चियों तक की आंखों में ढलका हो गया। गाना ख़त्म होने पर जो वाहवाही इन पेशेवर ख़ुशामदियों से मीरा को मिली उसकी आंधी में बगदार का छप्पर खम्भों समेत उखड़ कर जा पड़ा। फिर भी नौ कम सौ के बुंदू चचा की ढोलक का ख़याल उसे आये बिना न रहा। नाक-सी मारकर बोला, 'तबला नई ढोलक चैये थी !'

अपने हुनर की तारीफ़ में इस गंवार सांगिये को इस तरह नाक मारते हुए देखकर सबरंग ने दिल ही दिल में उस पर लानत भेजकर ज़ाहिरा एक लम्बी सांस भरकर कहा, 'इमान से सरकार हमें बेख़ुद कर दिया आपने !'

अल्लाबंदा ही क्यों कम रहता ! सारंगी छोड़कर उट्ठा, गज़ आड़ा करके सौदागर के क़दमों में रख दिया और आजिज़ी से बोला, 'कसम से आप मुझ कमतर को अपना शागिर्द कर लीजिये।'

हुनर तभी हुनर कहलाता है जब कमाल को पहुंच जाय। वह हुनर खुशामद का हो तो भी। ख़ुशामद का हो तो कमाल हासिल करने के लिए और सब हुनरों से ज़्यादा क़ुरबानी देनी होती है। यहां तक कि ज़मीर की भी। उस्ताद की तो गिनती क्या है, गधे को बाप भी बनाना पड़ता है। होड़ में अल्लाबंदा जीत गया।

दरख़ास्त की रसीद के बतौर उस्तादी बोली में सौदागर ने कहा, 'स्याबास है, जीते रहो। चाय जिसका काम नईं था हमारे गले का साथ करना। लो ये इनाम लो।'

फ़ौरन दो मोहरें निकालकर उसकी तरफ़ बढ़ाईं। लेकर सलामें झुकाता हुआ बंदा अपनी जगह पर आ बैठा।

कमतरी के अहसास और खटाखट पिटती हुई गोटियों से रिसियाकर सबरंग ने कहा, 'ऐ हमने क्या कुछ उतरा हुआ तबला बजाया था हुज़ूर? इमान से चुटकी की क़द्र कोई गुनी ही समझे!'

कमतरी सबरंग ने महसूस की हो या न की हो, उसके इस ताने से मीरा ने ज़रूर महसूस की। उचककर बोला, 'वा, ये क्या बात हुई? चुटकी पै बराबर ध्यान है हमारा। लो देखो यह क्या है हमारी चुटकी में।'

चुटकी में पकड़कर और दो मोहरें उसने जेब से निकालीं और सबरंग के ऊपर उछाल दीं। ऊपर ही ऊपर लपकते हुए सबरंग ने सोचा, 'उस चुटकी' से तो न तुम्हारा वास्ता न मेरा, गुनीजनों का ध्यान तो इसी 'चुटकी' पर बंधा रहना चाहिए। सोचा तो यों और कहा यों कि, 'रहने दीजिए हुज़ूर, यह तो आपस का मामला है। इमान से मैं कोई पेशेवर तबलिया तो हूं नहीं।'

सौदागर ने कहा, 'ये तुम जानो, हम तो जो दे चुके, सो दे चुके!'

'आदाब अर्ज़ है, सौदागर की क़द्रशनासी है वर्ना हम क्या हमारी 'चुकटी' क्या।'

मोहरें जब सबरंग अंदर की जेब में रख रहा था तभी मोर्चे पर लड़ती हुई टुकड़ी के लिए कुमुक की तरह अचानक कहीं से किसी के नाच के घुंघरुओं की आवाज़ आई। यकसू होकर मीरा के कान उस आवाज़ से बंध गए। कनरसिया तो था ही, सुनते-सुनते यकायक 'अहा हा' पुकारकर उछल पड़ा।

उसकी उछाल ने गोया पल्टा खाकर सबरंग को चौंका दिया। बोला, 'क्या बात हुई सरकार?'

'यार ये घुंघरुओं की झनकाड़ कहां से आ रही है?'

इधर-उधर कान लगाकर उस लपचकने ने कहा, 'यहां तो आप हैं और आपके ग़ुलाम हम लोग हैं। हमें तो तोई झनकार कहीं से नहीं आ रही है!'

लेकिन झनकार आ रही थी, ज़रूर आ रही थी। मीरा सुन रहा था, बराबर सुन रहा था। यह कोई खोपड़ी की नसों में गांजे की झनझनाहट थोड़े ही है? बोला, 'सिरासिर्र झनकाड़ आ रई है।'

सबरंग ने बंदेमियां से पूछा, 'क्यों मियां?'

बंदेमियां ने कहा, 'सिर्फ़ हुज़ूर के ही सुर अलबत्ता कानों में गूंज रहे हैं। झनकार तो···'

झल्लाकर मीरा ने कहा, 'जरा चुप भी रहो यार !'

और यारों ने हुक्म की तामील की। मीरा सुनता-सुनता तकिये का सहारा लेकर आड़ा हो गया। ताल ठेके और बंधे हुए लहरे पर ठोकरें पड़ रही थीं। जैसे गुंजान पेड़ों पर बंधी हुई छत्रियों पर, पंजों में चांदी के छल्ले डाले हुए सैकड़ों लक्का कबूतर एक साथ उतर रहे हों—छम···छम···छम ! गांजे की चढ़त और घुंघरुओं की छनाछन ने थपकियां दे देकर मीरा की पलकें बोझिल कर दीं।

अल्लाबंदा और सबरंगखां चुपचाप वहां से उठकर चले गये।

□ □

सबरंग की जेब और अल्लाबंदे की सारंगी से अशर्फ़ियां निकालकर ऐशबेगम ने परखीं। बेशक, अशफ़ियां हैं, असली। दो-दो, चार-चार ही क्यों न हों, अशफ़ियां निकल ज़रूर रही हैं। मतलब यह हुआ कि मुसाफ़िर गिलट चांदी के सिक्कों में लेन-देन नहीं करता।

सुभान अल्लाह !

अगली सुबह मोर्चे की मार-काट और घायलों की देख-भाल के लिए खाने-पीने का सामान लेकर ऐशबेगम खुद सौदागर के कमरे में तशरीफ़ लाईं और अपने लिए मख़सूस विक्टूरियाई कुर्सी के क़रीब आकर बोलीं, 'हुज़ूर के मिजाज तो अच्छे हैं ?'

घोड़ी के पुट्ठे की तरह गद्दी फटकारकर एकदम से मीरा ने कहा, 'मिज़ाज-फिजाज को जाने दो, तुम जरा बैठो हमारे पास।'

यकलख़्त दांतों तले उंगली दबाकर और शर्म से सिमटकर ऐशबेगम ने कहा, 'ऐ यह क्या फ़र्मा रहे हैं आप सुबू ही सुबू ?'

इतना बारीक हर्बा मीरा की मेमारी चमड़ी पर खुट्टल ही साबित हुआ। कुछ न समझकर बोला, 'क्या ? क्या बात ?'

पैंतरा ज्यों का त्यों क़ायम रखते हुए ऐशबेगम ने कहा, 'न तो मैं आपके पास बैठने की हैसियत रखती हूं, न हमारे हां ग़ैर मर्दों के पास बैठने का क़ायदा ही है।'

इस तरह माफ़ी की तलबगारी के बाद ख़ादिमों से मुख़ातिब होकर बोलीं, 'जाओ जी, अपना काम करो।'

और फिर सबके चले जाने के बाद जरा बेतकल्लुफ़ होकर कुर्सी पर बैठते हुए सौदागर को बरजकर ऐशबेगम ने कहा, 'आपने तो ग़ज़ब ही कर दिया इत्ते आदमियों के सामने !'

मीरा जब यह समझा ही नहीं कि इत्ते आदमियों के सामने उसने क्या ग़ज़ब

कर दिया तब बिलकुल चित होकर ऐशबेगम ने पूछा, 'रात शायद नींद नहीं आई आपको ?'

मीरा ने कहा, 'बस ये मत पूछो। ऐसी रात हमारी कदी नई कटी थी।'

'ऐ कुछ फ़र्माइये तो सही, क्या हुआ ?'

'बस कुछ नई। आज हमारा जी खाने से, पीने से, सबसे फिरा हुआ है।'

परेशान होकर बेगम ने कहा, 'यह तो हमारे लिए बड़ी फ़िक्रमंदी की बात है। न जाने हमारे किस इंतिज़ाम में कमी रह गई जो ऐसा हुआ। कुछ न कुछ बतलाइए तो सही हुज़ूर।'

आख़िर मीरा ने भेद की गठड़ी उठाकर पटक दी, 'अजी कईं से घुंघरुओं की झनकाड़ इस बलाय की आती रई कि हमारी नींद उड़ंछू हो गई।'

'हाय अल्ला' कहकर हीरे के छल्ले से दमकती हुई उंगली, चिबुक और होंठ के बीच की गुंजाइश में रखकर ताज्जुब से ऐशबेगम बोलीं, 'सितम करते हैं जनाब! भला घुंघरू यहां कहां ?'

मीरा ने कहा, 'ये क्या बात ? बराबर छमाछम्म सुनी है हमने।'

'ऐ सुन ली होगी ख्वाब में, ख्वाब क्या आते नहीं हैं ?···लेकिन आप हमसे पूछिए तो कहें कि हमारे साथ क्या हुआ है।'

इनके साथ क्या हुआ ? दिलचस्पी से मीरा ने पूछा, 'तुमें भी नींद नई आई ?'

बेगम ने दर्द की जगह उघाड़ी, 'ऐ कहां ? वह आपकी आवाज़ क्या सुन ली कि बेचैनी सर पर सवार हो गई। फिर नींद किसे कहते हैं और चैन किसे कहते हैं। औरत जात होने की वजह से आपके पास न आ सकी मगर दिल कम्बख़्त ने न जाने क्या-क्या तक़ाज़े किये।' फिर यकबयक दिल की जगह पर रुपट्टा डालकर बोलीं, 'मैं क़ुर्बान जाऊं सौदागर, ऐसा न देखा था कि आदमी रईस भी हो और गुनी भी हो। आवाज़ सी आवाज़ पाई है आपने !'

मीरा ने कहा, 'अजी अपनी आवाज़ तो हम तुमें जब तुम कौगी जबी सुना देंगे पर तुम हमें इन घूंघरुओं का भेद समजाओ।'

अगाड़ी की टुकड़ी की मदद के लिए मोर्चे पर फेंके हुए अनदेखे हथियार की फ़ना-फ़िल्ला से ख़ुश होकर, जाने के लिए उठती हुई ऐशबेगम ने ग़नीम के मुंह पर एक उस्तादाना चपत लगाई, 'जाने दीजिए हुज़ूर, घुंघरुओं का राज़ तो आज तक साज़ भी नहीं जान सका, मैं क्या समझाऊंगी और आप क्या समझेंगे !'

जाती हुई के पीछे घायल ने एक हसरत भरी सांस फेंकी, 'छोड़ चलीं ?'

पलटकर बेगम ने कहा, 'जरा उस झनकार को दिल से उतारकर नाश्ता फ़र्मा लीजिए।'

मीरा ने सत्याग्रह का ऐलान कर दिया, 'बस हम तो पहिले पता लगा लेंगे जबी नुवाला खायेंगे।

ऐसे भूख हड़तालियों से क्या सरकारें झुकती हैं ? दरख़्वास्त के लहजे में अपनी ही बात आगे करके मुस्कराकर ऐशबेगम ने कहा, 'आज कहीं फिर न गा दीजियेगा ख़ुदा के वास्ते !'

जाने लगीं तो मीरा ने पुकारा, 'जब तलक सबरंग बेग को नईं भेज दोगी तब तलक नास्ता-पास्ता कुछ नईं होगा।'

'जो हुक्म सौदागर !' कहकर ऐशबेगम चलीं तो गईं लेकिन इस हुक्म की तामील नहीं हुई। न जाने कैसे ऐशबेगम की सराय भर में यह ख़बर शोहरत ज़रूर पा गई कि एक बग़दादी मुसाफ़िर है जो किन्हीं अनजानी अनचीन्हीं, सिर्फ़ आवाज़ों पर फ़रेफ़्ता है और उनके लिए खाना-पीना तक छोड़ बैठा है।

□□

ध्वनि जिसका ध्यान भंग नहीं कर पाती, रूप जिस पर स्वयं आसक्त है, रस जिसकी रसना का दास है और गंध जिसकी अपनी ही चराचर में व्याप्त है उसके लिए निवास के स्थानों में भेद कैसा ?

वाणी को जिसने मूक कर दिया है, निद्रा जिसके नेत्रों से भय खाती है, आहार जिसका आहुति मात्र है, उसके लिए खाना-पीना, सोना-जागना, बोलना-चालना क्या ?

द्वंद्व जिसके अंतर को छोड़कर मुंह मोड़ गया है उसके सामने उद्वेग की चर्चा क्या ?

संसार का उन्माद जिसे उन्मन नहीं करता और जिसकी उपस्थिति से संसार व्यथित नहीं होता, उसके लिए एकान्त क्या, और भीड़-भड़क्का क्या ?

दरियाशाह, ऐशमंज़िल की मामूली मुसाफ़िरों की एक अंधेरी-सी कोठड़ी के एक कोने में चटाई पर बैठे हुए चिलम के होम-धूम पर दृष्टि जमाये आप ही आप मुस्करा रहे थे कि परेशान क़तराशाह ने प्रवेश किया। चकाचौंध से एकदम अंधेरे में आ जाने के कारण वह तत्काल उन्हें देख नहीं सका। चौखट पकड़कर बोला, 'बड़े मियां !'

दरियाशाह ने कहा, 'ख़ैर सल्ला ?'

आगे बढ़ते हुए क़तराशाह ने कहा, 'बड़े इज़्तिराब (व्यग्रता) की बात है।'

'वह क्या ?'

'वह शख़्स—अमीरअली—यहीं आकर ठहरा है।'

'ठहरा होगा, यह सराय है। इसमें इज़्तिराब की क्या बात है ?'

इतनी गर्मागर्म ख़बर इतने ठंडे तरीक़े से और इतनी बेग़र्ज़ी से सुनी जाय, यह बात क़तराशाह को कुछ बहुत अच्छी नहीं लगी। अमीरअली की करनी-

धरनी से क़तई न भी सही, कुछ न कुछ ही सही, सरोकार तो है ही। यह अपनी ही दौलत का तो करिश्मा है जो वह दो कौड़ी का आदमी आज नवाबी शान से ऐशमंज़िल में टिका हुआ है। आख़िर इतनी बेहिसी की बात क्या है ? बड़े मियां को उकसाने के लिए बोला, 'सुना है कि उसनें कहीं से घुंघरुओं की आवाज़ सुन ली है और अब नाचने वाले को देखने के लिए बेक़रार है।'

हमदर्दी से दरियाशाह ने कहा, 'भई दिल है इंसान का।'

इस अजीब हमदर्दी से ताज्जुब में पड़कर क़तराशाह ने पूछा, 'यानी ?'

'यानी यह कि आदमी जब जलवा कर नहीं पाता तो बेचैन हो ही जाता है।'

'हुज़ूर उस बेवक़ूफ़ के दिल में उसके देखने की इतनी लगन है कि सुना है कि खाना-पीना तक छोड़ बैठा है।'

'लगन तो शहज़ादे ऐसी ही होती है।'

कमाल है, यह मियां कैसी बातें करते हैं ! बोला, 'मगर उसने तो नाचने वाले को देखा तक नहीं है, देख लेगा तो क्या होगा ?'

हँसकर दरियाशाह ने कहा, 'जो कुछ भी हो, लेकिन इसमें तुम्हारे इज़्तिराब की वजह क्या है ?'

'मैं उसको समझाऊं कि बग़ैर जानी-पहचानी चीज़ की तरफ़ इस तरह राग़िब (आकर्षित) होना ठीक नहीं है ?'

दरियाशाह ने उसे बैठने का इशारा किया। वह बैठ गया तो आहिस्ता से पूछा, 'मुल्ला बनने का इरादा है ?'

तेज़ दवा सुंघाने से होश खोया हुआ आदमी जैसे होश में आने के लिए हरकत करता है उसी तरह कुछ हरकत-सी करके आहिस्ता से क़तराशाह ने जवाब दिया, 'जी नहीं, ऐसा तो नहीं है। मैं सिर्फ़ इस फ़िक्र में था कि देख लेगा तो न जाने इस शख़्स की क्या हालत होगी।'

उसकी आंखों से सीधी आंखें मिलाकर दरियाशाह ने कहा, 'फ़िक्र में थे ?'

शब्द के अर्थ की तो सीमा है, पर दृष्टि के प्रभाव की कोई सीमा नहीं। दरियाशाह की एक नज़र ने सैर की सारी शर्तें क़तराशाह को झंझोड़कर याद दिला दीं। उसे पूरी तरह होश में आया हुआ देखकर दरियाशाह ने कहा, 'वह हालत तुम्हारी फ़िक्र पर नहीं बल्कि फ़नकार के हुस्न और राग़िब होने वाले की रग़बत पर मुनहसिर है क़तराशाह। इसमें न तुम्हारी मदाख़लत की ज़रूरत है, न फ़िक्र की, न इज़्तिराब की ?···शिरकत की तो बिलकुल ही नहीं है।'

क़तराशाह ने सर झुका लिया।

कितना मुश्किल है दामन बचाये रहना !

□□

भूख पेट तो होता ही है, भूखी आंखें भी होती हैं और भूखे कान भी ? भूखा दिल भी होता है और भूखा दिमाग़ भी ! उस दिन कानों में घुंघरुओं की झनकार पड़ते ही इक कनरसिया के दिल की भूख जाग पड़ी। दिल की भूख जब जाग पड़ती है तब इसको बुझाने वाला दिमाग़ का अंजन फ़ेल हो जाता है। तब यह आग दिल के टुकड़े खा-खाकर सुलगने लगती है। इसका बुझाना मुश्किल है, लहकाना आसान।

सो यह आसान काम करने के लिए अल्लाबंदे और सबरंगखां आज कई दिन के बाद सौदागर के कमरे में आए हैं। मरीज़ की नब्ज़ जिस नई बीमारी का इशारा इन चारागरों को दे चुकी है, या यों कहिये कि इन हकीमों के इलाज से जिस दूसरी बीमारी ने उछाल मारी है उसका इलाज करने के लिए तबले और सारंगी के साथ-साथ आज यह घुंघरू भी लाये हैं। अब जान का खटका नहीं है।

बंदेमियां सारंगी मिलाने लगे, सबरंग ने तबला कसा और फिर घुंघरू अपने पांवों में बांधने लगा।

मसनद पर उकड़ूं बैठा हुआ, दोनों घुटनों पर ठुड्डी टिकाये दोनों हाथों से दोनों तरफ़ से अपना चेहरा दबाये चुपचाप मीरा इनकी तैयारियां देखता रहा।

घुंघरू पांव में बांधकर सबरंग ने बायें पांव की एड़ी धम से कालीन पर मारी और छन्न से जो आवाज हुई तो बंदेमियां के मुंह से निकला 'आ हा !'

सबरंग ने दूसरी ठोकर लगाई और फिर बंदेमियां ने कहा, 'वाह वा !'

बैठे ही बैठे बल खाकर तीसरा टहोका सबरंग ने दिया तो बंदेमियां बोले, 'कसम से क्या लाजवाब झमक है !'

तंग होकर उस बीमारे-गम ने कहा, 'तुम हमें क्यों दिक्क करते हो भई, हम ह्यां अपनी ई फिकर में पड़े हैं।'

सबरंग ने अहसान जताया, 'हुज़ूर गो कि मैं कई रात हाज़िर नहीं हो सका, लेकिन मुझसे तो जब से अम्मीजान ने आपकी घुंघरुओं की निस्बत दिलचस्पी का ज़िक्र किया, मैं तो तभी से चकरघिन्नी बना हुआ हूं, वर्ना इमान से यह कोई मेरा पेशा है ?'

बंदे ने गवाही दी, 'कसम से आप ख़ुद घुंघरुओं की झनकार के लिए बेक़रार थे इसीलिए सबरंगख़ां को मनाया था हमने।'

यह कहकर बंदेमियां ने गज़ सारंगी के तारों पर फेरा। तारों की गुंजार के साथ ही साथ पांव का पंजा क़ालीन में उलझाकर सबरंग ने यहां से वहां तक खींचा और घुंघरुओं की लकीर-सी झनकार से सौदागर को पुचकारकर बोला, 'बस अब ख़ुश हो जाइए जैसे उस दिन हुए थे।'

रूठे हुए बच्चे की तरह मीरा ने कहा, 'हम तुम्हारे नाच से खुश नईं हुए थे जो आज भी हो जायें।'

'तो उस दिन आपके ख़याल से कौन नाच रहा था ?'

मीरा ने समझाने की कोशिश की , 'मियां वो जनानी ठोकर थी।'

सबरंग बुरा मान गए, 'अब यह आप न फ़र्माइए, इमान से मर्द भी बहुत बारीक़ नाच सकता है। मुलाहिज़ा हो'''चाचा ज़रा लगाना तिताला।'

चचा ने सारंगी छोड़कर तबले पर तिताले का ठेका दिया और सबरंग ने खड़े होकर एक तर्रार-सा तोड़ा मारा। बंदे ने वाह्वाही शुरू की तो रुआंसा होकर मीरा बोला, 'भई या तो तुम चुपचाप बैठ जाओ नईं तो ह्यां से चले जाओ।'

सौदागर की बेदिली से दोनों गोया सहम गए। घुंघरू बंधा हुआ बायां पांव दायीं रान के नीचे दबाकर और ऊपर को मुड़े हुए दायें घुटने पर दायीं कोहनी रखकर चुटकी में ठुड्डी पकड़कर, सबरंग छम-छुम-छुम करता हुआ बैठ गया और उदास नज़रों से सौदागर को तकने लगा। अल्लाबंदे ने तबला आगे से सरकाकर एक वांव-वांव-सी आवाज़ निकाली 'या अल्ला माफ़ कर ख़ता मैं तेरा गुनाहगार बंदा हूं।'

तभी एक ख़िदमतगार दहकती हुई चिलम लेकर अंदर आया। बंदे ने उसके हाथ से चिलम लेकर सौदागर को देते हुए कहा, 'इसे चखिये ज़रा। आज ही नया माल आया है सीधा नेपाल की सरहद से।'

मीरा ने लपककर चिलम ले ली और खींचकर ज़ोर से दम लगाया तो बालों के सूराख़ खोलकर उदासी झप से निकल गई। चेहरे पर लाली देखकर बंदेमियां बोले, 'रातोंरात शहर में हुज़ूर की आवाज़ ने हंगामा मचा दिया। सौदागर के नाम का ढिंढोरा पिट गया कसम से!'

ऐसा कहां से लायें जो नाम का ढिंढोरा सुनकर कानों में उंगली दे ले ? ख़ुदा भी नाम सुनकर झांसे में आ जाता है। गुदगुदाहट भरी दिलचस्पी से मीरा ने पूछा, 'हमारा नाम सैर में कैसे पोंच गया ?'

सबरंग ने उछलकर सौदागर के पांव का अंगूठा पकड़ लिया और ज़ोर से बोला, 'हुज़ूर, मुश्क ख़ुशबू ब गोयद न कि अत्तार ब गोयद !' (मुश्क (कस्तूरी) गंध से जानी जाती है, न कि अत्तार से।)

बंदा ले उड़ा, 'सुब्हान अल्लाह, कसम से क्या बात कही है !'

और तभी कहीं से सुरों की चाशनी में तर-बतर एक ज़नानी आवाज़ में गाने के वही बोल उसे सुनाई दिये जो उसने ख़ुद उस रोज़ गाये थे। वही बकावली, वही विलाप—'हये-हये मेरा गुल ले गया कौन, हये-हये मुझे जुल दे गया कौन ?'

मीरा औंधे से सीधा होता चला गया, जैसे डोरे में बांधकर खींच लिया हो।

टकटकी फ़ानूस से बंध गई और कान दीवारों से लग गये।···वही बोल···वही तर्ज़···वही ढंग···वही डौल ! सिर्फ़ आवाज़ ही अलग थी जो कि तेग़ की तरह कलेजे में घुसती चली जा रही थी। मीरा आंखें मूंदकर कहीं भीतर से चीख़ा, 'हाय-हाय !'

सबरंग ने पूछा, 'ख़ैरियत बंदानवाज़ ?'

'देख लो क्या कहता था मैं' की तरह मीरा ने कहा, 'सुन लो, है कि नईं जनानी अवाज ! येई उद्दिन नाच भी रई होगी। नाच-गाने का तो संग है भाई सात्र।'

हवा में पत्ता ग़ायब करके सबरंग ने बंदेमियां से कहा, 'क्या है चचा, ज़रा तुम भी तो सुनो। कोई आवाज़ आ रही है ?'

दरो-दीवार उस सुरीली सदा से गूंज रहे थे। हर झाड़, हर फ़ानूस, हर कंवल, हर तस्वीर गुल के वियोग में आहोज़ारी कर रही थी, 'हये-हये मेरा गुल ले गया कौन ? हये-हये मुझे जुल दे गया कौन ?'

इस गुल के जुल से बिलकुल बेबहरा सबरंग और बंदेमियां सलामें झुकाते हुए बाहर चले गए।

तरन्नुम के इस चश्मे का (संगीत के स्रोत का) निकास मालूम करने के लिए मीरा ने खिड़कियों की झिरियों से झांका, दरवाज़ा से उझककर देखा। देखते ही कुछ दिखाई देना तो दरकिनार, यकायक आवाज़ आनी बंद हो गई। अंधेरा, अंधेरा, चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा। उसने दरवाज़ा आहिस्ता से उड़काया और उस ग़ैबी आवाज़ के ख़याल से छिदता-बिंधता लौटकर वह क़ालीन पर ही गिर गया।

ज़रूर कुछ राज़ है कि वह घुंघरुओं की झनकार सुनना चाहता है तब गाना सुनाई देता है और जब गाना सुनना चाहता है तब सन्नाटा !

इन्सान चाहता कुछ है, होता कुछ है।

□□

अगली सुबह अल्लाबन्दे के साथ जब ऐशबेगम की सवारी मिज़ाजपुर्सी के लिए सौदागर के कमरे में आकर रुकी तब सौदागर फ़र्श पर मुंह औंधा किए हुए पड़े थे। बेगम ने समझा कि सो रहे हैं। मीठी नींद में ख़लल न पड़ जाये इसलिए वे रुकीं और आहिस्ता से मठारीं। सौरागर ने करवट-सी ली तो पहिले तो उन्होंने मीनार की आख़िरी मंज़िल को किसी तरह ख़म देक़र गोल गुम्बद तक झुकाकर कोर्निश की और फिर लपककर सौदागर के क़रीब पहुंचकर बोलीं, 'ऐ हुज़ूर, यह आपको क्या हो गया, जो यह फूल-सा नाज़ुक बदन इस मुई ख़ुरदरी

ज़मीन पर डाले पड़े हैं ?'

सौदागर ने आंखें नहीं खोलीं।

बेगम ने फिर कहा, 'ज़रा उठिए तो सही, आपके लिए नाश्ता लाई हूं।'

जब सौदागार ने सांस ही नहीं लिया तो घबराहट के मारे ऐशबेगम बिलकुल उसके क़रीब ही ढह पड़ीं और मातमी आवाज़ में बोलीं, 'ख़ैरियत तो है सरकार, क्या कल रात भी नींद नहीं आई ?'

सौदागर ने जवाब नहीं दिया तो फिर कहा, 'ऐ ज़रा हां-ना तो कीजिए।'

आंखें मूंदे ही मूंदे कराहकर मीरा ने कहा, 'अजी किस बात की हां-ना करें ? उद्दिन तो घुंघरुओं की झनकाड़ से मार दिए और कल उस गाने ने कलाकीमा कर दिया !'

'ऐ बुरा हो उस गाने वाले का ! इधर तो आपकी यह हालियत और उधर मैं तारे गिनगिनकर रात गुज़ार रही हूं।···पूछिये इन मियां से !'

बंदेमियां ने गुड़-मुड़ करके गवाही दी, 'कसम से आधे तो हमने खुद ही गिनवाये हैं।'

ऐशबेगम ने फिर कहा, 'सोचती थी कि बहुत कुछ देख-सुन चुकी हूं, लेकिन कल रात नाच की एक गत—सिर्फ़ एक टुकड़ा जो मेरे कानों में पड़ा तो मुई नींद हराम हो गई। ऐ ऐसा कोई नहीं देखा था कि रईस भी हो और नाचता भी हो !'

बंदेमियां ने कहा, 'कसम से, सौदागर को खाना तो खिलाइए।'

आंखें बंद किए हुए ही मीरा ने कहा, 'ये खाना-दाना—आज का और बासी—तुम अपना उल्टा फेर के ले जाओ। हम तो जब तक उस जादूगरनी का दीदार नई पा लेंगे, आंख नई खोलेंगे। न्यौं ई पड़े रहेंगे औंधे !'

ऐशबेगम ने समझाने की कोशिश की, 'ऐ ख़ाक डालिये उस मुई जादूगरनी के मुंह पर, आप मेरी तरफ़ देखिए।'

उसके सिवा और किसी की तरफ़ देखने से साफ़ इन्कार में ज़ोर से गर्दन हिला कर मीरा ने कहा, 'बस और कुछ कहा-सुनी का कोई फायदा नईं है। तुम बताती हो तो कल रात वाले सुरों का भेद बताओ।'

ऐशबेगम ने उठते हुए अपनी उसी उस्तादाना जुबान में जवाब दिया, 'सुरों का भेद तो सौदागर बड़े-बड़े रसिया न जान सके, मैं क्या बताऊंगी और आप क्या समझेंगे !···आंखें खुलने लगें तो खबर दिलवा दीजियेगा ! इजाजत हो।'

ऐशबेगम चलीं तो पट से मीरा ने आंखें खोल दीं। सांसों के सहारे को दरवाज़े से निकल कर जाते हुए देखकर वह बिलबिलाकर चीख पड़ा, 'बेगम !'

लेकिन बेगम ने शायद सुना नहीं।

झटके से मीरा उठा और 'बेगम ! बेगम साब !' पुकारता हुआ दरवाज़े की तरफ झपटा।

बेगम जा चुकी थीं ।

दरवाज़े में खड़े होकर और ऊपर को मुंह उठाकर उसने ज़ोर से आवाज दी, 'बेगाऽऽऽम !'

याद करते ही जैसे लकड़हारे की मौत उसके सामने आकर नमूदार हो गई थी उसी तरह मीरा के पुकारते ही उसकी क़ज़ा ने चिलमन से झांका ।

मीरा के कमरे के ऐन सामने वाली ऊपर की मेहराब के खम्भे के पास रेशमी चूड़ियों और चमचमाते हुए ज़ेवरों से भरी एक नाज़ुक-सी कलाई चिक के बाहर निकली। लम्बी-लम्बी, छल्ले-अंगूठियों से भरी हुई उंगलियों ने निवार की गोट लगा हुआ चिक का किनारा बड़े अंदाज़ से उठाया। आर-पार निकल जाने वाली एक नुकीली आंख दिखाई दी। भून डालने वाला, तपता हुआ एक आफ़ताबी रुख़-सार (उत्तप्त कपोल) नज़र आया। उसके ऊपर पूरे चांद की कोर के कुंडल की तरह थरथराती हुई नथनी दिखाई पड़ी। फिर होश ख़ता कर देने वाली अंगूरी की सुराही की तरह गर्दन का उतार-चढ़ाव दिखाई दिया और तब सलमे-सितारे जड़ी वास्कट के नीचे से तन से जान खींच लेने वाला सीने का एक उभार नज़र आया। बस फिर कुछ नज़र नहीं आया। आंखें चुंधिया गईं। चिलमन (पर्दा) डाल दी गई।

मीरा हक्का-बक्का, आंखें फटी हुईं, मुंह खुला हुआ, जादू की मूठ का-सा मारा, खड़ा का खड़ा और देखता का देखता रह गया। कुछ देर के बाद जब नज़र कुछ साफ़ हुई और उसने देखा कि जहां वह देख रहा है वहां से हज़ार-दास्तां (बुलबुल) उड़ गई, नशेमन ही नशेमन (घोंसला) रह गया है।

इश्क़ अगर सिर्फ़ एक वहम है तो ज़िन्दगी ही और क्या है ? यह बात अलग है कि वहम लोगों के मज़ाक़ की चीज़ है। इस तौर से दुनिया जिसे वहम कहती है वह आशिक़ का जज़्बा है। मज़ाक़ यह यों है कि जज़्बे की सूरत में अक़्ल से इसका कोई वास्ता नहीं है। इस हालत में अक्ल वालों के लिए यह एक उलझाव ही उलझाव है।

मीरा मेमार ने ठोकरें देखी तक नहीं, सिर्फ़ ठोकरों के धमाके सुने थे। मुखड़ा नज़र की पहुंच तक में नहीं था, सिर्फ़ गाने और तानें सुनी थीं। इतने से ही उसका इश्क़ मचल उठा। ग़ज़ब तो यह है कि वह यहां तक यक़ीन कर बैठा कि चिक के पीछे से जो बिजली कौंधा मारकर छिप गई, वह झनकार उसी के घुंघरुओं की थी, वह तानें और बोल उसी हज़ारा के मुंह से निकले हुए थे।

इश्क़ यों वहम करता है और इस तरह वहम को ईमान से सच्चा समझता है।

बेक़ाबू होकर मीरा ने गला फाड़कर ऐसे ज़ोर से सबरंग को आवाज़ लगाई जैसे दरियाशाह के तकिये से पुकार कर किसी को बगदार से बुला रहा हो।

कनकी उंगली मुंह में दबाये, लटपटाता हुआ आगे-आगे सबरंग उसके पीछे

कई ख़िदमतगार, चंद मुसाफ़िरों में एक क़तराशाह, गिरते-पड़ते दौड़ते हुए आकर चौक में जमा हो गए। 'क्या हुआ, क्या हुआ' का शोर मच गया। रेला मीरा के कमरे की तरफ़ बढ़ा तो मीरा ने यकलख़्त सबरंग का हाथ पकड़कर उसे अन्दर खींचा और दरवाज़ा बन्द कर लिया।

घबराकर सबरंग ने पूछा, 'इमान से क्या हुआ? कुछ फ़र्माइये तो सही!'

सबरंग के दोनों हाथ पकड़कर, ज़ोर से अपनी तरफ़ खींचकर, उसकी आंखों से आंखें लगाकर पागल की तरह मीरा बोला, 'हमें करके बेदम गया एक दम··· छुपा अब कहां हम पै करके सितम!'

सबरंग डर गया, 'इमान से!'

मीरा ने दुहाई दी, 'दोसत, कुछ मदद कर, नईं तो हम मरे!'

हाथ सौदागर के हाथों से छुड़ाकर और अपने सीने पर रख कर दमदर्दी से सबरंग ने कहा, 'सौदागर, हकीम तो हम हैं नहीं अलबत्ता हमारी जान हाज़िर है आपके लिए।'

मीरा ने उसे खींचकर अपने पास मसनद पर बिठा लिया और उसके गले में दोनों हाथ डालकर बोला, 'हमें कोठा ऊपर दे दे।'

काले कौडियाले पर अचानक पांव पड़ने से जैसे बेख़बर चलता हुआ आदमी उछल पड़ता है उसी तरह मसनद से गज़ भर ऊंचा उछलकर सबरंग ने कहा, 'या इलाही!'

मीरा ने पूछा, क्यों, 'इलाई क्यों?'

'अमां ऊपर तो हमारी हमशीरा रहती हैं रौनक़। अम्मीजान ऊपर मुसाफ़िर थोड़े ही ठहराती हैं!'

गले पड़कर मीरा ने कहा, 'हमें तो ठराना ई पड़ेगा!'

सबरंग ने पूछा, 'मियां यहां आपको क्या तकलीफ़ है, वह फ़र्माइये न?'

एक आह भरकर मीरा ने कहा, 'इत्ती दूर रहके तो हम ठौर ई मर जायेंगे।'

'दूर? दूर किससे? इमान से मैं तो आपके पास मौजूद हूं।'

नहीं, इस तरह काम नहीं बनेगा। मीरा ने तकिए के नीचे हाथ डाला, मुट्ठी बंद करके निकाली और सबरंग की तरफ़ बढ़ाकर बोला, 'सबरंग, चाय हमारे जान और माल दोनों ले ले, पर कोठा हमें ऊपर दे दे, तू कौल भर चुका है!'

सौदागर की मुट्ठी खुलवाकर और अपनी बंद करके सबरंग ने कहा, 'यह तो ख़ैर आप बज़िद हैं तो मैं अमानत के तौर पर रक्खे लेता हूं, मगर ऊपर कोठा देने का वायदा करने से मजबूर हूं।'

सबरंग चला गया और जलते-बलते रेगिस्तान में क़ाफ़िले से बिछुड़े हुए प्यासे ऊंट की तरह मीरा अकेला पड़ा रह गया।

□□

हज़ार छुपाने के बावजूद ऐशबेगम की सराय में मुसाफ़िर की अशर्फ़ियों की खनक और चमक का शोर मच गया। जाने किस सोने की नगरी से आए हुए इस उदार सौदागर को नज़र भर देखकर एक सिजदा करने के लिए महल्ले भर में होड़ लग गई। जुआरियों और भिखारियों की भीड़ रोकने के लिए ऐशमंज़िल की ड्यौढ़ी पर सबरंग बेग को ख़ास इंतिज़ाम करना पड़ गया।

कैसा अचरज है कि भीड़ से बच-बचकर चलने की ताकीद करके जिसे उंगली पकड़कर मेला दिखाने के लिए यह शर्त करके लाया गया है कि वह इस नुमायश की चमक-दमक और खेल-तमाशों को केवल दूर से देखकर ताली बजायेगा, इसके रंग-रूप से आकर्षित होकर अपना मुंह लाल-पीला करके अपनी ही मर्कट-लीला का प्रदर्शन करके उपहास का पात्र नहीं बनेगा, वह लोलुप जिज्ञासु इसके तमाशे के मोहफांस में फंसने के लिए बार-बार मचल-मचल उठता है अपनी इच्छा के प्रतिकूल अभिनय आचरण पर सिर धुनता है और क्रोध, क्षोभ से माथा पटक-पटककर लहू-लुहान हो जाता है।

शहर के अंदेशे से दुखी, चकित, व्यथित होकर पांव पटकता हुआ क़ाज़ी क़तरा अपनी अंधेरी कोठड़ी में पहुंचा। दरियाशाह उसी कोने में, उसी आसन पर योगी की तरह अविचल, निग्रही की तरह अचंचल, तटस्थ की तरह नेत्र मूंदे बैठे थे। ब्रह्मांड-सी शून्य कोठड़ी में न हुस्न की झलक थी, न दौलत की चमक। न महल्ले की हूल, न नगरी का ग़ुल। शान्त, अभ्रान्त, अक्लांत, अनुद्विग्न।

बैठ गया। दरियाशाह ने आंखें खोलीं तो झुंझलाकर बोला, 'बराहे करम मेरी तशवीश (चिन्ता) दूर कीजिए।'

तसकीन (संतोष) का जाम दरियाशाह ने पेश किया, 'अल्ला वाली है!'

लेकिन क़तरा यह बदज़ायक़ा जाम होठों तक न ला सका। अपनी ही धुन में कहने लगा, 'ऐसा कभी नहीं देखा था कि इन्सान सिर्फ़ एक आवाज़ सुनकर बीमार और दीवाना हो जाय!'

दरियाशाह ने सलाह दी, 'हमदर्दी है तो उसके लिए दुआ करो, तशवीश बेकार है!'

मचलकर क़तराशाह ने कहा, 'हैरानी पर तो क़ाबू नहीं है हज़रत, दुआ कैसे करूं? वह शख़्स उस नाचने-गाने वाले के दीदार के लिए दोनों हाथों से दौलत लुटा रहा है।'

दरियाशाह हँसे, 'यानी दरिया का पानी बहा रहा है।'

बात का सिलसिला याद आ जाने की वजह से क़तरा पहिले तो चौकन्ना हुआ और फिर गर्दन झुका ली। चुप बैठा रहा, लेकिन बैठ न सका। थोड़ी ही देर

में रेला उसके सर से उतर गया और फिर उसकी भटक ने ज़ोर मारा। बोला, 'एक औरत है···'

'औरत ?'

'जी !'

दिलचस्पी से दरियाशाह ने पूछा, 'कैसी है ?'

पूछने के इस ढंग से वह यह क़तई भूल गया कि यह पूछा नहीं जा रहा है, घसीटा जा रहा है ! उत्तेजित होकर कहने लगा, 'ऐसी है कि न तो ग़रज़मंद समझ कर जिसकी हिमायत की जा सकती है, न जिसे बेवकूफ़ समझकर नज़रअन्दाज़ किया जा सकता है, न जिसे बच्चा समझकर हँसी में टाला जा सकता है। वह उस ना-बकार के सामने खुद सिजदे कर रही है और उससे करा रही है।' कहता-कहता उठकर खड़ा हो गया और बोला, 'इन सिजदों का आख़िर भेद तो पूछूं उससे !'

दरियाशाह क़हक़हा मारकर हँस पड़े, 'सिजदों का भेद तो शहज़ादे बड़े-बड़े आब़िद नहीं जान सके, तुम क्या पूछोगे और वह क्या बतायेगी।···बैठ जाओ, जैसे फ़क़ीर बैठा करते हैं।'

छींटा-सा खाकर क़तराशाह बुझ गया। बैठता चला गया, जैसे कंधों से दबोच दिया गया हो। दिल ही दिल में शर्मसार भी हुआ। क्या करे ? सच्चा होते हुए भी जवान है—अनुभव से हीन और अस्थिर ! दृश्य आकर्षक हैं और दृष्टि ग्राही ! बुद्धि सतर्क है, मन चंचल ! परीक्षा भी ऐसी कि जिससे बचना है उसी में रमना है।

फिर आंखें बन्द करते हुए आप ही आप दरियाशाह ने कहा, 'मैं जिससे परेशान हूं उसी से वाबस्ता हूं।'

मालूम नहीं कि क़तराशाह ने सुना या नहीं, समझा या नहीं !

□□

उस दिन सबरंग ने बड़ा सच्चा माल जमाया चिलम में। सुरूर अगले दिन दोपहरी में रंग पर आया।

ऐशमंज़िल में भरी दोपहरी का सन्नाटा छाया हुआ था। कारोबारी मुसाफ़िर अपने-अपने काम के सिलसिले में बाहर गये हुए थे और बेकार अपनी कोठड़ियों और कमरों में निंदासे पड़े थे। बावर्ची, भिश्ती, पहरे-चौकी वाले—सब इधर-उधर अपने-अपने ठिकाने पड़े हुए ऊंघ रहे थे, मेहराब में लगे हुए एक छत्ते से बार-बार निकलकर दो-चार ततैये पिन्न-पिन्न करके इस दोपहरी के सन्नाटे को कभी-कभी यों तोड़ देते थे जैसे अल्लाबंदा सारंगिया अफ़ीम की पिनक में खरज के तार पर बार-बार गज़ फेरकर बार-बार रख देता हो। एक गूंगी-सी उदासी ऐशमंज़िल

के दरो-दीवार, चौक और दालानों में उबासियां ले रही थी।

अपने कमरे का दरवाज़ा खोलकर मीरा ने इधर-उधर झांका। दालान में पड़े हुए काठ के एक बहुत बड़े संदूक के नीचे से एक कुत्ते ने बग़ैर थूथनी उठाये ही आंखें खोलीं, हिक़ारत से मीरा की तरफ़ देखा और अलकसाकर फिर बंद कर लीं। मीरा बाहर निकला। आहट न हो इसलिए नंगे पांव, बिलौटे की तरह अचक क़दम रखता हुआ दालान से गुज़रा और ऊपर जाने वाले ज़ीने में चढ़ गया।

एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ—दिल ही दिल में बहिश्त की सीढ़ियां चढ़ता, गिनता, महारता हुआ पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से निकलकर चंद्र की कक्षा की ओर वह उठता चला गया।

ऊपर पहुंचा। एक हाथ से उछलता कलेजा और दूसरे से धुकधुकाता हुआ दिल थामे हुए, दीवार के सहारे-सहारे दबते-दुबकते दालान की एक बाज़ू पार करके वह यार की चौखट की तरफ़ मुड़ा ही था कि जलवा नज़र आया।

कमरे के दरवाज़े पर पड़ी हुई चिक के बाहर की तरफ़ ग़ालिबन दो फ़ुटी सफ़ेद दाढ़ी और उसी रंग की शरई मूंछों वाले एक शाहसाहब, दाढ़ी के ही रंग का बिलकुल सफ़ेद अंगरखा पहिने, भारी-सा सब्ज़ अमामा सर पर बांधे, पचासों तरह के बड़े-छोटे दानों के कंठे-कंठियां गर्दन में पहिने, निकल के चश्मे के नीचे-ऊपर से बहुत ग़ौर से नीचे को झुक-झुककर कुछ देख रहे थे।

दीवार की आड़ लेकर मीरा पीछे को हटा और उसने सोचा कि कोई भी हो लेकिन यहां क्यों बैठा है? और इतने ग़ौर से देख क्या रहा है?

शौक़ के दबाव से जो आगे को झुका तो 'अल्ला! अल्ला!!'

उसने देखा मेंहदी और ज़ेवरों से सजा-बजा किसी नाज़नीन का नाज़ुक-सा हाथ चिक के अन्दर से बाहर निकला हुआ शाहसाहब की बाईं हथेली पर रखा है और शाहसाहब अपने दायें हाथ की उंगलियों से उस नाज़नीं के गुदगुदे हाथ में मेंहदी से रची-बसी लकीरों को कभी चौड़ा कर, कभी सिमेटकर अपनी नज़र से आर-पार छेद डालने की कोशिश कर रहे हैं।

यह वही है, यह वही है, यह वही है। ज़रूर नीचे से उस रोज़ यह कलाई देखी थी। यही हैं वे उंगलियां जो सीने के संतूर पर उस दिन झाला-सा बजा गई थीं। यही हैं वे नाख़ून जिन्होंने उस रोज़ आंखों के तारों में चांद चमका दिये थे। यही वह गुलदस्ता है जिसके गुलों की रगों को यह अल्लाही नुमाइंदा कुरेद-कुरेदकर देख रहा है। यही वह फन है जिसने इतनी दूर से फुंकार मारकर उसके होश ख़ता कर दिये हैं!

मीरा ने कमर दीवार से लगाकर दोनों हाथों से छाती इस ज़ोर से दबाई कि पंजर चड़चड़ा उठा।

शाहसाहब ने फ़र्माया, 'ख़ुदा की क़ुदरत है। आज से ठीक चार सौ साल

पहिले, आज ही के दिन और इसी वक्त, इसी तरह पर्दे के बाहर बैठकर ठीक ऐसा ही हाथ देखा था जैसा कि अब देख रहा हूं। उस वक़्त मैंने उनसे कहा था कि आप इस मुल्क की मलिका होंगी। आज वही बात इस हाथ में देख रहा हूं।'

मीरा ने सोचा, ज़रूर यह मौलाना अल्लामियां के कोई क़रीबी मवाली मालूम होते हैं। वर्ना चार सौ साल ? तौबा !

और तौबा करते ही टूटने को हुई।

चिक के पीछे से बांसरी पर सरगम सुनाई दी, 'ऐ आप तो हम से दिल्लगी कर रहे हैं !'

मीरा वहां का वहीं पंजों के बल बैठ गया।

यही है, ज़रूर यही है वह आवाज़ जिससे वह बोल निकले थे जिन्हें मीरा ख़ुद गाया करता है। उसने महसूस किया हलक़ मेरा है, ज़ुबान उसकी है, या ज़ुबान मेरी और हलक़ उसका है। हये, यह कैसी गुत्थमगुत्था है।

शाहसाहब कह रहे थे, 'मुझ फ़क़ीर का दिल्लगी से क्या वास्ता ?'

फ़िक्र की आवाज़ में परेशान कर देने वाली बात अन्दर से सुनायी दी। 'हम तो जिस बादशाह से शादी करना चाहते हैं, हमारी अम्मां उससे करने ही न देंगी। आप ज़रा ग़ौर से तो देखिये।'

शाहसाहब ने कहा, 'मैं ग़ौर से देख चुका। इतना ही हो सकता है कि तुम्हारी शादी बादशाह से न हो, बादशाह जैसे किसी दौलतमंद रईस से हो जाय—किसी सौदागर से हो जाय।'

खुदा मालूम मीरा छुपा कैसे रह गया ! चुप कैसे रह गया ! बैठा कैसे रह गया ! सीना पीटकर चीख क्यों न पड़ा कि जो मुक़द्दर में लिखा है वह यह रहा ! वह ऐशमंज़िल की तलमंज़िल के कमरे में ठहरा हुआ है। वह इस वक़्त एक दीवार के पीछे छुपा बैठा है, उसका हाथ थामकर ले जाओ !

पर्दे के पीछे से हैरत भरी आवाज़ आई, 'सौदाग्र ?'

शाहजी ने कहा, 'जी सौदागर !···और कुछ बतलायें ?'

'ऐ बतलाइये न मीर साहब, हमें बड़ी बेचैनी हो रही है।'

'इस शख़्स से तुम्हें एक औलाद नसीब होगी।'

रूमानी माहौल में औलाद की बात कबाब में हड्डी की तरह आन पड़ी। सौदागर तो इस ज़ायक़ेदार हड्डी को चूस-चूसकर मज़े लेने लगा लेकिन औलाद पैदा करने वाली पर्दे के पीछे न जाने किस तकलीफ़ से चिहुंक पड़ी, 'उई अल्ला ! आप यह क्या कह रहे हैं हमसे ? कोई सुन ले तो ग़ज़ब ही हो जाये।'

'ग़ज़ब हो जाय या सितम हो जाय, हम जो कहते हैं डंके की चोट कहते हैं ! सुनना चाहती हो तो सुनो वर्ना रहने दो।' शाहसाहब ने हाथ झटककर छोड़ दिया।

हाथ फिर बाहर आया और आवाज़ में ख़ुशामद आयी, 'ऐ नहीं शाहसाहब, आपको ख़्वाजा का वास्ता जो हाथ न देखें।'

बिना देखे ही शाहसाहब ने कहा, 'वह औलाद उस वक़्त होगी जब वह बादशाह या सौदागर, ख़ुदा के हुक्म से जो कोई भी हो—तुम्हारे नाम से अपनी बस्ती में एक आलीशान इमारत बनवा देगा।'

आवाज़ ने बेइतमीनानी से कहा, 'मीर साहब, बुरा न मानियेगा, हमें यक़ीन नहीं।'

इस बेइतमीनानी से मीर साहब की दो फ़ुटी दाढ़ी ने फड़फड़ाकर ख़म ठोक दिये। ललकार कर फ़र्माया, 'यक़ीन हो न हो, लेकिन याद रखना कि अगले-पिछले पर नज़र रखने वाले के एक हमराज़ ने कभी कोई पेशीनगोई की थी ! वह औलाद ठीक उस दिन पैदा होगी जिस दिन वह इमारत बनकर पूरी हो जायेगी। उससे पहिले नहीं। और कुछ ?'

जवाब मिला, 'बस रहने दीजिये, हमें कुछ नहीं पूछना है आपसे !'

दीवार की आड़ से उचक-उचककर जिस हाथ की लकीरें मीरा ख़ुद पढ़ने की कोशिश कर रहा था वह तेज़ी से अन्दर चला गया और पेशीनगोई के बदले में उसने एक सोने की ज़ंजीर शाहसाहब के दामन में फेंक दी। शाहजी ने ज़ंजीर झोले में डाली, 'या अल्लाह' कहकर घुटनों पर हाथ टिकाकर उठे और सोटा खटखटाते हुए ज़ीने की तरफ चल दिये।

ज़ीने में पहुंचने के लिए उन्हें मीरा के सामने से गुज़रना था। सरक-सरकाकर एक कोने में चिपककर मीरा ने अपने हाथ को शाहसाहब की नजरों से बचाया। शाहसाहब देख लेते तो शायद कोने में छुपे हुए आदमी को देखकर 'चोर चोर' पुकार ही उठते ! लेकिन चार सौ साल पुरानी नज़र इस सदी का आख़िर क्या-क्या देखे ? मीरा बच गया।

पर मौत जिसके सर पर मंडरा रही हो वह किस-किस मुसीबत से बचे ?

अचानक उस कमरे के अन्दर से घुंघरुओं की खनक और तबले की थपक पर एड़ियों की धमक सुनाई दी।

हाय हाय, यह वही है !

बक़ौल ऐशबेगम, जिन घुंघरुओं का राज़ आज तक साज़ भी न जान सका वह सौदागर जान गया।

छमाछम इस तेज़ी से बढ़ी कि गोया फिरकनी घूम रही हो। मीरा की खोखली छाती में घुंघरुओं की झनकार इस तरह गूंज उठी जैसे गुम्बद में कोलाहल हो रहा हो।

सिर्फ़ एक पर्दे की आड़ !···

एक क़दम का फ़ासिला !···

एक वलवले की कमी !···

मीरा ने लपककर चिक उठाई और अंदर घुस गया।

□□

यह कमरा ऐशबेगम के दीवानख़ाने से सटा हुआ है। बाहर की तरफ़ खुलने वाले दरवाज़े के अलावा इसमें अंदर की तरफ़ दो दरवाज़े और हैं। एक दीवानख़ाने में खुलता है और दूसरा शायद ऐशबेगम या उनकी बेटी के सोने के कमरे में। गली के छज्जे की तरफ़ खुलने वाले दरवाज़े तो ख़ैर अक्सर बंद ही रहते हैं। दूसरे कमरों की तरह यह कमरा आराइश के सामान से लदा-फंदा नहीं है। दीवारों पर तसवीरें नहीं हैं। सिर्फ़ जहां-जहां जगह है बड़े-बड़े आईने लगे हुए हैं। छत के बीचोंबीच एक अकेला फ़ानूस लटका हुआ है। ज़मीन पर सिर्फ़ क़ालीन बिछा हुआ है, मसनद, कुर्सी, सोफ़ा कुछ नहीं है। एक कोने में दो सारंगी, तबलों की कई जोड़ियां, कई जोड़ घुंघरू और दो ढोलक रक्खी हुई हैं। वहीं एक पानदान और दो उगालदान रक्खे हुए हैं।

इसी कमरे में मीरा को तजल्ली (प्रकाशदर्शन) हुई।

इसी तूर के कोने में चुपचाप खड़े होकर उसने वह हाथ देखे, वह पांव देखे, वह चेहरा देखा, वह नथ देखी, नथ के दायरे में नूर देखा, वह उतार देखा, वह उभार देखा। आबेहयात (अमृत) का चश्मा देखा, दर्द की दवा देखी और चारागर देखा। तसवीर का आकार देखा और तसव्वुर (कल्पना) को रूबरू देखा।

मीरा को किसी ने नहीं देखा, लेकिन मीरा ने देखा कि सबरंग तबला बजा रहा है और उसकी बहिन नाच रही है, मुसकरा रही है। शायद शाहजी की पेशीनगोई की वजह से इस वक़्त चेहरा इस्तंबोली गुलाब की तरह खिला हुआ है। सर पर दुपट्टा नहीं है, ज़ुल्फ़ें बिखरी हुई हैं, रौनक़ ने लाल रेशमी बुंदकियों से कढ़ी हुई सफ़ेद आरकंडी की कुरती पहिन रक्खी है, जो नारंगी साटन के चूड़ीदार पाजामे को छोड़कर सिकुड़ती हुई सीने की तरफ़ उठती चली जा रही है। सीने पर हरे मख़मल की सलमे-सितारे जड़ी बिना बटनों की एक तंग-सी जाकेट है, जिसकी दोनों कटोरियां, दोनों बेक़ाबू उभारों पर कुछ इस तरह नज़र आ रही हैं जैसे हर चीज़ से बिदकती हुई बछेड़ी को सधाने के लिए उसकी आंखों पर चमड़े के पीतल जड़े अंखौड़े बांध दिये जाते हैं। गत-तोड़ों पर उछलते-उचकते वक़्त जाकेट की यह दोनों कटोरियां, थर-थर करती हुई गोलाइयों को आरकंडी की कुरती के ऊपर ही ऊपर से बार-बार इस तरह थपकियां दे देती हैं जैसे बेख़तर होकर उभरने के लिए दिलासा दे रही हों।

चारों तरफ़ लगे हुए आईनों में एक की अनेक नज़र आती हुई रौनक़ मीरा को

ऐसी लगी जैसे ज़र्रे-ज़र्रे में रौनक़ ही रौनक़ समाई हुई हो ।

यों देखो तो नज़र है अपनी-अपनी, वर्ना यह ऐशबेगम की लौंडिया असल में है क्या ?

चौड़े-चकले हाथ-पांव, चौड़ी-चौड़ी पिंडलियां, चौड़ी-चौड़ी रानें, भारी-भरकम सीना और चौकोर-सा चेहरा । सब मिलाकर एक मर्दमार-सी जवानी का नाम रौनक़बानो कहा जा सकता है । हां, आंखें बड़े ग़ज़ब की हैं । इन बड़ी-बड़ी चंचल चकमक आंखों की चलत में ज़िंदगी और फिरत में मौत, एक-दूसरे से आंख-मिचौली खेलती हुई-सी लगती हैं । इस सख़्त पत्थर के बुत की अगर कुछ हैं तो आंखें ही हैं । पल, घड़ियां, दिन, रात, महीने, बरस और ज़िंदगी की ज़िंदगी ऐसी आंखों को देखकर गुज़ारी जा सकती है ।

बेटी की इन्हीं ज़ालिम आंखों और अपने फ़न-गुन की ताक़त की बिना पर ही ऐशबेगम अक्सर अल्लाबंदे से कहा करती हैं कि 'कोई तो वजह है ही छज्जे के दरवाज़े न खोलने की ! गली के चलते-फिरतों को यह आंखें नहीं दिखलानी हैं, इन्हें कुछ और काम करना है ! मैं तो सिर्फ़ ऐशबेगम की सराय ही क़ायम करके रह गई लेकिन मेरी रौनक़ इन्हीं आंखों के इशारों से रौनक़ाबाद नाम की रियासत क़ायम करके न रहे तो लानत है मेरे गुनों पर और फिटकार है ऐसी आंखों पर !'

फिर मीरा बेचारे ने तो ज़िंदगी में न कभी वैसी आंखें देखीं, न ऐसी । न औरत के कान देखे, न हाथ-पांव । चढ़ाइयां-उतराइयां तो दूर की और सुपनों की बातें हैं ।

तन-बदन की सुध भूलकर भूखी-प्यासी निगाहों से मीरा मेमार इस जादू की पुतली को अगर बावला-सा ताकता रह गया तो ताज्जुब की कोई बात नहीं है ।

न जाने ताल चूकी या ठोकर, ऐशबेगम यकायक अन्दर के दरवाज़े से कमरे में दाख़िल हुईं । ताल ठोकर वाले तो बच गये, मुसीबत आयी उस कोने पर ! रौनक़ की तरफ़ घूरते हुए सौदागर पर नज़र पड़ी तो मीनार और गुम्बद अर्राकर एक साथ उसके ऊपर ढह पड़े । आव देखा न ताव, सौदागर का बाज़ू पकड़कर ऐशबेगम उसे खींचती हुई लाईं और कमरे के ठीक बीचोंबीच लाकर खड़ा कर दिया । सबरंग की ताक-धिन्ना सकते में आ गई और तोड़े पर उठा हुआ रौनक़ का बेताला पांव जहां का तहां अधर उठा रह गया । 'उई अल्ला' चीख़कर दायें हाथ से बायीं और बायें से दायीं मख़मली कटोरियां भींचकर वह भागकर उस कोने में जा खड़ी हुई जिसमें से उस नज़रबाज़ को खींचकर लाया गया था । अम्मीजान के गुस्से से जान बचाने के लिए सबरंग सबकी नज़र बचाकर यों ओझल हो गये जैसे कि थे ही नहीं । शायद इस भरी दोपहरी में सौदागर को जन्नत का सफ़र कराने में सबरंग बेग की ही कोई साज़िश हो !

गुस्से के मारे रुआंसी होकर ऐशबेगम ने कहा, 'क्यों जी सौदागर, उस दिन

तुमने हमारे बेटे से ऊपर कोठा मांगने की गुस्ताख़ी की और आज तुम यों हमारी बेटी के कोठे में चोरों की तरह घुस आये ? हमने बड़े-बड़े तीसमारख़ाओं को इस मासूम के नाख़ून तक देखने को तरसा दिया, और तुम यहां कोने में छुपे हुए इसका नाच देख रहे हो ?'

फिर बुक्का फाड़कर चीख पड़ीं, 'ऐ शरीफ़ की बेटी में अब और रह ही क्या गया देखने को !'

शाहसाहब के साथ रौनक़ की बातें सुनकर और पेशीनगोई के बाद उसके ख़ुश होकर नाचने की वजह से मीरा ने यह फ़र्ज़ कर लिया था कि दोनों सिरे सुलगे हुए हैं। ऐशबेगम के तने हुए तेवर और बरसती हुई आंखों से वह इस वक़्त घबराया नहीं। रौनक़ की तरफ़ कनखियों से देखता हुआ बोला, 'देखो उनकी अम्मां, कोठे में बी हम घुसियाये और नाच बी देख चुके। अब तुम हमें मारो चाय छोड़ो।'

इतने भौंडे तरीके से कही गई इस बात को सुनकर ऐशबेगम और ज़ोर से भभक पड़ीं, 'ऐ ठहरो तो सही ज़रा, हम अभी बुलवाते हैं कुतवालख़ां को, वही देखेंगे सब मार-छोड़ !'

कुतवालख़ां ?···मीरा सहम गया। जाने कौन है कुतवालख़ां ?···कोतवाल ही होगा !···मारे गए !

कुछ ले-देकर मामला रफ़ा-दफ़ा करने की नीयत से दांत निकालकर बोला, 'हमारे लिए तो तुम बी कुतवाल से कम नईं हो। आपी कुछ जुरीबाना लगा दो।'

बिफरकर बेगम ने कहा, 'जुरमाने का लालच किसे देते हो सौदागर ! हमें कोई मुई भटियारी समझा है तुमने ?···हम तुम्हें क़ैद करवा के रहेंगे कम से कम बारह साल की !'

कोतवाल को बुलवाने के लिए सबरंग, अल्लाबंदे और न जाने किस-किस को पुकारती हुई बेगम जो दरवाज़े की तरफ़ झपटीं तो मीरा मिस्त्री ने हाथों से सीना ढंके कोने में खड़ी हुई रौनक़ की तरफ़ आंखों का कास-सा (भिक्षापात्र) फैलाकर मेहर की भीख-सी मांगी और फिर बाहर जाती हुई ऐशबेगम की तरफ़ काली गाय की तरह देखने लगा। बेगम ने दरवाज़े के बाहर क़दम रक्खा ही था कि पीछे से सिसकियां सुनकर ठिठक गईं। पलटकर देखा तो कोने में दीवार की तरफ़ मुंह करके अपने ही दिल के टुकड़े को सिसकते हुए पाकर वह हैरत में रह गईं। लौटकर जल्दी-जल्दी क़रीब आईं और पूछा, 'ऐ यह और क्या है ? तुम क्यों रोती हो ? क़सूरवार तो वह हैं।'

हाथों में मुंह छुपाये हुए सुबकती हुई रौनक़, पलटकर अम्मी के सीने से चिमट गई और बोली, 'अम्मीजान, इन्हें क़ैद न कराइए ! मैं इनसे शादी करने वाली हूं।'

मार दिया !

जान से मार दिया !

लेकिन कैसा सख़्तजान है यह मीरा मिस्त्री ! मरता ही नहीं। न ग़म से मरता है, न खुशी से इसकी छाती फटती है ! बस, हर मौक़े पर कुछ दीवानगी-सी आती है और मौक़ा आकर चला जाता है। फिर भी यह मौक़ा ज़रा मुश्किल ही आया। पहिले तो मीरा के दिल की धड़कन यकबयक रुक जाने को हुई। फिर एड़ी से खोपड़ी तक सन-सन करके कुछ सनसनाहट-सी हुई। वह यह फ़ैसला ही न कर पाया कि कहां क्या हो रहा है। आख़िर पंजे में पंजा फंसाकर और ज़ोर से दबाकर वह वहां का वहीं खड़े से बैठा हो गया और टुकुर-टुकुर रौनक़ को ताकने लगा।

ऐशबेगम की भी हालत तो कुछ ऐसी ही हुई लेकिन हरकत दूसरी हुई। दिल के टुकड़े को सीने से झटककर उन्होंने कहा, 'हमारे जीते जी तुम यह फ़ैसला करने वाली कौन होती हो ?'

यह सवाल तजरबेकारों का हो, या नातजरबेकारों का, है ग़लत। यह फ़ैसले तो जवान बेटियों के ही हुआ करते हैं। रौनक़ ने कहा, 'यह फ़ैसला अब टल नहीं सकता।'

तमतमाकर ऐशबेगम बोलीं, 'ऐ बहुत फ़ैसले टाल दिये हैं हमने, रहने दो।'

अड़ियल टट्टू की तरह खुर जमाकर और गर्दन टेढ़ी करके रौनक़ ने कहा, 'यह नहीं टलेगा। जश्नशाह पेशीनगोई कर गये हैं कि इन्हीं से हमारी शादी होगी और इन्हीं से औलाद होगी।'

ऐशबेगम पछाड़ खाकर धरती पर गिर पड़ीं और सीना कूट-कूटकर स्यापा करने लगीं, 'ऐ लोगो, हम लुट गईं। ऐ यह किस घड़ी का मुसाफ़िर मंज़िल पर आया जो हमारी बेटी को गुमराह कर चला ! ऐ ख़्वाजा क्या हमारे मनसूबे थे और क्या क़हर टूटा है ! अल्ला हमारी बेटी को परदेसी ने फुसला लिया, हम कहां मर जायें !'

अपनी होने वाली खुशदामन (सास) का यह रोआराट जब मीरा की बरदाश्त से बाहर होने लगा तो वह बैठा ही बैठा पंजों पर उकड़ूं ही उकड़ूं सरककर धरती पर पड़ी हुई ऐशबेगम के पास आया। कहना चाहता था कि 'यह तो ऐसा ही होता आया है, बेटियां तो किसी न किसी के साथ जाती ही आयी हैं, आप रोती क्यों हैं ?' पर कहा उसने यह कि, 'तुम रोती काय के वास्ते हो उनकी अम्मां, कुछ रोने का भेद समजाओ !'

रोती-रोती ऐशबेगम सीधी होकर बोलीं, 'अमीरअली ठग, इस रोने का भेद तो बड़े-बड़े मन्तक़ी नहीं समझे, तुम क्या समझोगे और मैं क्या समझाऊंगी !'

फिर दांत पीसकर उन्होंने अमीरअली को एक टहोका जो मारा तो पंजों के बल बैठा हुआ वह ठगिया पीछे को लुढ़क पड़ा। ऐशबेगम ने उठकर पुकार लगाई, 'ऐ इत्ते वक़्त कहां जा मरे सबरंग बेटे, यह मुसीबत का मौक़ा है !'

जाने कहां से कलाबाज़ी खाता हुआ सबरंग अन्दर आया तो उसे देखकर ऐशबेगम फिर बैन करने लगीं, 'सबरंग बेटे, कुछ ख़बर भी है दुनिया जहान की, तुम्हारी नाक कट गई।'

चौंककर सबरंग ने अपनी नाक टटोलकर कहा, 'ऐं ?'

'ऐ यह उठाईगीरा तुम्हारी बहन को उड़ाये लिए जा रहा है।'

'इमान से ?'

'तुम्हारी बहन भी दिल दे बैठीं इस बग़दादी को !'

'इमान से ?'

झुंझलाकर बोलीं, 'इमान से या धरम से, जो होना था वह तो हो ही गया ! अब तुम इन दूल्हामियां को ले जाओ हमारी आंखों के अगाड़ू से, हम दिल खोलकर रो तो लें थोड़ी देर !'

धकेला खाकर चित होने की तैयारी में पड़े हुए दूल्हामियां के दोनों बाज़ू पकड़कर ज़मीन से उठाते हुए सबरंग ने कहा, 'उठिये सौदागर, रो लेने दीजिये अम्मीजान को, आप चलिये नीचे कोठे में।'

फिर नीचे का कोठा···इतनी जानमारी करके तो ऊपर कोठे में पहुंचे और सब कुछ हो चुकने के बाद भी फिर नीचे का कोठा ? सौदागर ने पलटकर तरफ़दारी के लिये रौनक़ की तरफ़ देखा तो सबरंग ने समझा कि गिर गये थे। इसीलिए अपनी पीठ देखना चाहते हैं। उनकी पीठ झाड़ते हुए सबरंग ने कहा, 'इमान से आप कोई चित्त थोड़े ही हुए हैं ? आपको ग़म क्या है···आइये !'

पीछे फिरकर देखने का वक्त दिये बग़ैर सबरंग सौदागर को बाहर निकालकर ले गया।

सौदागर के जाते ही सनमख़ाने की हवा ने रुख़ पल्टा। बुतों ने नक़ाबें उलटकर नक़ली रंग चेहरों से उतारे तो खुरदरी, दाग़-दग़ीला, मोटी चमड़ी भीतर से निकल आई। गोया राख की परतें उड़ गईं और नीचे से बदकारी और हविस के दहकते-लहकते अंगारे अपनी तपन और जलन को चमकाते-चटखाते हुए सतह पर उभर आये।

दौड़कर रौनक़ ने दरवाज़ा बंद किया और लपककर अम्मीजान के सीने से चिपककर बोली, 'अम्मीजान, हमारा काम कैसा रहा ?'

बेटी के सर पर लाड़ का हाथ फेरकर अम्मीजान ने कहा, 'ऐ क़ुर्बान जाऊं, कसर क्या रह गई ?'

उस्ताद से शाबाशी पाकर शागिर्द ने मुंह फुलाकर कहा, 'तो अब हमें कुछ पूछना है आप से।'

'पूछो।'

'इसका भेद हमें बतलाइये, कि बड़े-बड़े रईसों और बातहज़ीबों को छोड़कर

आपने हमारे लिये यह दहक़ानी क्यों ढूंढा ?'

प्यार से ऐशबेगम ने रौनक़ का बोसा लिया और फिर कहा, 'तुम्हें ज़ुरूर बतलायेंगे भेद, गिरह बांधो !'

गिरह बांधने के लिए आरकंडी की सिकुड़ी हुई कुर्ती का कोना उमेठती हुई, नारंगी साटन की टांगें चौड़ी करके रौनक़ फ़र्श पर पसरकर बैठ गई, और पानदान अपनी तरफ़ खींचकर ऐशबेगम उससे दो हाथ की दूरी पर बैठ गईं। चांदी के चपटे चम्मच से गुलाबजल में बसा हुआ चूना बनारसी पत्ते पर लगाती हुई ऐशबेगम ने संजीदा होकर कहा, 'चंद सवालों के जवाब दो।'

'जी !'

'तुम वाक़िफ़ हो कि हम तुम्हारी मां हैं ?'

'अल्ला, यह क्या सवाल हुआ ?'

'सवाल हम करेंगे, तुम्हें सिर्फ़ जवाब देना है।'

'जी !'

'तुम वाक़िफ़ हो कि हम तुम्हारा भला चाहती हैं ?'

'जी !'

'तुम वाक़िफ़ हो कि तुम्हारे खेलने-खाने के अरमान हमने अंधेरों में क्यों पूरे किये ?'

'जी !'

'और छज्जे के दरवाज़े कभी क्यों न खुलने दिये ?'

'जी, हालांकि हमें इससे कोफ़्त होती है।'

'कोफ़्त हम समझती हैं, हमदर्दी है। तुम सिर्फ़ हां-ना में जवाब दो।'

'जी !'

'तब तुम इससे भी वाक़िफ़ होगी ही कि तुम्हारी तरक्क़ी का मैयार (स्तर) हम क्या मुक़र्रिर किये हुए हैं ?'

'जी !'

'क्या भला ?'

'जी सिर्फ़ बेगम कहलाना तो ख़ैर मुद्दआ ही नहीं, आप अपनी बेटी को किसी रियासत की बेगम की सूरत में देखना चाहती हैं।'

'आमीन !'

'हालांकि सुना है कि रियासतें नेस्त होती जा रही हैं।'

'सुना करो ख़लक़त की बातें। नवाबियां नेस्त हुआ करती हैं ?'

'यहां तक भी हमारा सवाल तो ज्यों का त्यों ही रहा। यह दहक़ानी नवाब है ?'

'अगर होता तो तुम सिर्फ़ ताश की बेगम होतीं। खुद कह चुकी हो कि मुद्दआ

यह नहीं है।'

रौनक़ जिरह में मुंह की खाकर अम्मी का मुंह ताकने लगी।

ऐशबेगम ने कहा, 'ऐ चार-चार सौतों से कबूतर उड़वाना तो कंगालों के लिये भी जाइज़ है, कोई नवाब होता तो पचासियों के उड़वाता। इस दहक़ानी के हां जाके इसके सर पे बैठोगी और यह चूं नहीं करेगा—समझा करो !'

समझने के लिए थोड़ी देर चुप रहकर रौनक़ ने कहा, 'अम्मी !...'

'अब और क्या ?'

'आप अब भी यही समझती हैं कि यह कोई बग़दाद का सौदागर है ?'

ऐशबेगम ने तिरछी नज़र डालकर रौनक़ की तरफ़ देखा, और ज़रा टेढ़ा-सा मुसकराकर पूछा, 'क्या ख़याल है तुम्हारा, हम दीवानी हैं ?'

'नऊज़ बिल्लाह !' (ख़ुदा बचाये)

'ऐ इत्ता तो समझते ही हैं कि यह बग़दाद का हो, हिन्दुस्तान का हो, सौदागर न हो, नवाब न हो, लेकिन दौलत इसके पास चार नवाबों और आठ बेगमों से बढ़कर है, और यह तुम्हारी सूरत पर परवाना है !'

ठुनककर रौनक़ ने कहा, 'ख़बर नहीं यह मुआ कौन-सी बग़दाद ले जायेगा हमें।'

बेगम हँस पड़ीं, 'बड़ी मासूम हो अल्ला रक्खे !...ऐ बग़दादें हुआ थोड़े ही करती हैं, वह तो बनानी पड़ती हैं !'

इसी वक़्त सबरंग और शाहसाहब अन्दर के दरवाज़े से कमरे में दाखिल हुए। पेशीनगोई के सिले में चिक के पीछे से अता की गई सोने की ज़ंजीर ऐश-बेगम को लौटाते हुए शाहसाहब ने कहा, 'लो संभालो ! कहो, वसूल पाया।'

ज़ंजीर अपनी गर्दन में उलझाते हुए ऐशबेगम ने कहा, 'मियां यह तो वसूल पाया, कुछ इस बच्ची को तो समझाओ !'

ऐशबेगम यह ज़िम्मेदारी सौंपकर उनके लिए गिलौरी बनाने लगीं तो बात के सिलसिले का अंदाज़ लगाकर बेहतर तरीक़े से समझाने के लिये शाहसाहब ने पहिले अपनी दो फ़ुटी दाढ़ी से बेबाक़ होना ज़रूरी समझा। फिर दिक्क़त भी क्या है ? दाढ़ी मुंडवाना तो ज़रा मुश्किल है भी, पर सिर्फ़ उतारनी हो तो गिलौरी बनाने से ज़्यादा कसाले का काम नहीं है। 'या अल्ला माफ़ कर ख़ता, मैं तेरा गुनाहगार बंदा हूं' कहते हुए बहुत आसानी से शाहसाहब ने दाढ़ी उतारकर गुनाहों का ऐतराफ़ किया, फिर पान खाकर और आंखें भंवों में चढ़ाकर अपनी बंदेमियांनी आवाज़ में फ़र्माया, 'बानो, तुम्हारी अम्मां से पहिले यह ऐशमंज़िल यहां नहीं थी। कसम से इस महल्ले में भेड़िये लगते थे !...और अब बाज़ार लगा हुआ है...ऐशबेगम की सराय कहलाता है। ये जिससे निकाह पढ़वा के यहां आईं थीं...'

लो और सुनो ! यह भी कोई बात हुई ? छोटे-छोटे बच्चों के सामने यह इन मियां के कहने लायक़ बात है ? तपती दुपहरी में अमल हो गया है शायद ! ऐशबेगम ने टोका, 'ऐ ख़ाक डालो, वह मुआ कोई भी था ।—तुम्हारे लिये नसीहत यह है कि अब जा के बग़दाद बसाओ ! यह मुआ जहां का है, वहां के गंवार देहातियों को अपनी रैयत बनाओ, महल चिनवाओ और बेगम नहीं खुद नवाब बनकर हुकूमत करो ।'

हुकूमत और नवाबी तो ख़ैर ठीक है, कर ही लेंगे, पर वह बेगमाना ज़िम्मेदारी कैसे पूरी होगी ! फ़िक्रमंदी से रौनक़ ने कहा, और शाहसाहब की पेशीनगोई के अगले हिस्से का क्या होगा ?'

बंदेमियां ख़्वामख़ाह बोल पड़े, 'यानी क्या ?'

बड़ी मासूमियत से रौनक बोली, 'यानी औलाद कैसे पैदा होगी ?'

आंखें तरेरकर बेगम ने पूछा, 'क्यों, औरत नहीं हो क्या !'

औरत है तो क्या चाहे जिसकी औलाद पैदा करने के लिये है ? रौनक़ के मुंह से निकला, 'लाहौल वला···'

सबरंग ने भी बहिन के फ़िक्र में हिस्सा बंटाया, 'इमान से यह सवाल क्यों कर हल होगा ?'

ऐशबेगम ने झुंझलाकर कहा, 'तौबा है भई ?'

फिर रौनक़ से बोलीं, 'ऐ तुम्हें इससे क्या है ? वह ज़िम्मेदारी हमारी है। तुमसे नहीं होगी तो हम पैदा करेंगे ।'

अल्लाबंदे ने ऐशबेगम की तरफ़ मुसकराकर कहा, 'इन्शाअल्लाह !'

एक दचोका उनकी बग़ल में मारकर ऐशबेगम बोलीं, 'क्या कहा मियां ?'

बलबलाकर अल्लाबंदे ने कहा, 'कुछ नहीं, यह कहा कि वह मुबारिक वक़्त तो आये, कसम से अभी से उसकी क्या ले दे है ?'

लेकिन जिसे मोर्चा लेना है उसे तो ले दे अभी से है । एक नहीं, एक सौ एक पेचीदगियां हैं । औलाद, समझ लें हो जायेगी— न हुई तो अम्मीजान की ज़मानत भी मंजूर है, मान लिया । पर यह परदेसी सौदागर···निकाह करके जाना होगा··· जाने कहां ले जायेगा ? नकियाकर बोली, 'और यह सौदागर हमें काट डाले तो ?'

ऐशबेगम ने झिड़की देकर हौसला बढ़ाया, 'हद हो गई बचपने की ! ऐ उनके ज़िक्र से तो वाक़िफ़ हो न जिन्होंने सात-सात समंदर, दर्रे, जंगल, खड्डे, परबत, तन-तनहा खूंद-फांदकर रियासतें हासिल कीं और मुल्क आबाद किये ?'

उछलकर सबरंग ने कहा, 'इमान से क्या बात कही है अम्मीजान ने !'

अल्लाबंदे बोले, 'सुब्हान अल्लाह !'

बेगम ने फिर बढ़ावा दिया, 'फिर तुम कोई अकेली थोड़ा ही होगी, यह सबरंग बेटे तुम्हारे साथ होंगे, बंदेमियां होंगे ।'

जंडैल की ललकार पर जैसे झटाझट हथियार तानकर जवान तैयार होते हैं, ऐशबेगम से हौसला पाकर उसी तरह आरकंडी की कुर्ती रानों तक तानकर रौनक़ ने एक लहरदार अंगड़ाई ली और फिर बेगम के गले में दोनों बाहें डालकर प्यार से पूछा, 'रौनक़ महल नाम ठीक है न इमारत का ?'

उमंगों को उछाला देकर ऐशबेगम ने रौनक़ के दूसरे गाल का बोसा लिया और कहा, 'क़ुर्बान जाऊं मेरी जान, मुबारिक हो रौनक़ महल, मुबारिक हो रौनक़ाबाद !'

फिर सबरंग को हुक्म दिया, 'जाओ जी सबरंग, बुलाकर लाओ क़ाज़ी जी को—वह हरीफ़ुद्दीन, या शरीफ़ुद्दीन, क्या नाम है उनका !'

फिर बोलीं, 'तुम ठहरो, यह बंदेमियां जायेंगे ख़ुद।'

बंदेमियां 'या अल्ला' कहकर खड़े हुए।

ऐशबेगम ने रौनक़ से कहा, 'चलो जी, तैयारी करो सफ़र की। गो यह उसूल की बात तो नहीं है पर ख़ैर, वह अब तक की वसूलयाबी बंधी-बंधाई अपने साथ बांध लेना वक़्त-बेवक़्त के लिए।'

और इस तरह यह दौलत का दरिया अपने भंवर में दो-चार माहिर तैराकों को फांसकर, बहाव का रुख़ मोड़कर जोश-ख़रोश के साथ हिलोरें मारता हुआ फिर अपने निकास की तरफ़ दौड़ चला।

□□

कड़वा-मीठा चखने के सिवा ज़ुबान को सही-ग़लत बोलेने के लिये भी ज़िम्मेदार ठहराया गया है।

ज़ुबान वह अनोखी चीज़ है जिसे देकर और दी हुई को निभाकर इन्सान बरतर (श्रेष्ठ) कहलाता है और बेख़तर हो जाता है। ज़ुबान की तारीफ़ें और ज़िम्मेदारियां बहुत बड़ी हैं, जिसे ज़ुबान का पास नहीं, वह इन्सान कहलाने का हक़दार नहीं।

पीरा मेमार ज़ुबान की इस व्याख्या से परिचित है या अपरिचित यह तो मालूम नहीं, पर उसकी करनी-धरनी ज़ुबान की इसी व्याख्या के अनुसार है। वर्ना, यह भी कोई बात हुई कि क्या तो फ़क़ीर-फ़ुक़रों का काम, और क्या आधी मज़-दूरी की ज़ुबान देकर उसके लिये मरना-खटना, और क्या फिर आधी तक के टोटे हो जाने पर भी भूखे पेट डंड पेलने की ज़िम्मेदारी झेलते-पेलते ही चले जाना !

दरियाशाह की दी हुई पांच सेर पक्के की रुपयों की पोटली ख़त्म हो जाने के बाद पीरा रोज़ सुबह-शाम औज़ारों का थैला कंधे पर लटकाये हुए अकेला तकिये पर आता, दो-दो ढाई-ढाई हाथ उठी हुई चुनाव पर खुख्खल-सी नज़र

डालता, बची-खुची चूना-रेती, ईंट-रोड़ियों को ठिकाने से रखता, फिर रास्ते की तरफ़ थोड़ी देर ताकता, दरियाशाह की नादानी पर हँसता, फिर जुलाहों और मेमारों, दोनों की तलाश के बावजूद बड़े भाई का पता न पाने पर ताज्जुब-सा करता और फिर पीछे को ताकता हुआ आगे को चल देता ।

रोज़ वह यही करता है ।

आज भी यही ज़िम्मेदारी निभाने के लिए चिलचिलाती हुई धूप में भटकता हुआ पीरा कहीं से भरी दुपहरी में तकिये पर आ मरा । बिलकुल सुनसान था । पंछी भी पर नहीं मार रहा था । दूर-दूर तक बंदा नज़र नहीं आता था । बहुत ऊंचे पर धकधकाते हुए आकाश में उड़ती हुई दो-एक चीलें कभी-कभी टिनटिना उठती थीं । हवा इस तरह बेहरकत थी जैसे मुश्कें कस दी गई हों । बहुत ही उबा देने वाली दोपहरी और भून देने वाली गर्मी थी । पीरा ने खुदे-अधखुदे दरियाशाह के चौतरे के ढेर पर खड़े होकर इधर-उधर देखा, आंखों पर हाथों की छांव करके तपते हुए रास्ते को दूर तक ताका, फिर दो-चार ईंटें जहां-तहां से उठाकर क़ायदे से रक्खीं और अलकसाकर पिपलिया नीम की जड़ का सिरहाना लगाकर चित लेट गया, उसे झपकी आ गई ।

अचानक उसने आवाज़ सुनी—'अलख अल्लाह !' जैसे किसी ने सपने में पुकारा हो ।

पीरा चौंककर उठ बैठा और आंखें मिचमिचाकर उसने देखा कि चौतरे के टूटे-फूटे ढेर पर दरियाशाह बैठे हैं ।

पीरा ने अपने आपको झटका-सा दिया । हथेली से आंखें रगड़ीं, ग़ौर से आंखें फाड़कर देखा और चौतरे की तरफ़ लपका ।

दरियाशाह ने कहा, 'आओ पीरशाह आओ ।'

न सलाम न बंदगी ! आते ही पीरा ने दरियाशाह की टांग पकड़कर सीधी की और इतने ज़ोर से दबाने लगा जैसे ग़ुस्से के मारे तोड़कर ही धर देगा ।

थकान और गर्मी से परेशान दूर एक पेड़ के नीचे पड़े हुए क़तराशाह ने देखा—यह कैसा आदमी है ? यह कोई तरीक़ा है ख़िदमत का कि हड्डियां ही टेढ़ी किये डाल रहा है । वह भी नहीं रोकते, हँसे जा रहे हैं !

पूजा और प्रेम के भी अपने-अपने मार्ग हैं ।

पांव दबाते-दबाते पीरा बोला, 'तू तो बाबा बड़ा बेढब आदमी है ।'

हँसकर दरियाशाह ने कहा, 'क्यों भला ? यह क्या बात पीरशाह ?'

'अरे तू तो हमें फंसा के ई चल दिया !'

माफ़ी चाहने की तरह दरियाशाह ने कहा, 'भई हम ज़रा सैर करने चले गये थे पीरशाह ।'

पीरा ने माफ़ी की दरख़ास्त यों मंजूर की कि, 'कुछ भरोसा नईं तेरा, तू

तो मलंग है ।'

दरियाशाह ने गलबहियाँ डालने वाली आवाज़ में कहा, 'तुम भी तो मलंग हो, हमें तो भरोसा है तुम्हारा !'

हँसकर पीरा ने यों उज्र किया कि, 'मैं क्यों होता मलंग !'

उसकी दुनियादारी क़ुबूल करके दरियाशाह ने पूछा, 'राज़ी-ख़ुशी तो हो ?'

'मुजे क्या जोखों है ? सुकर ही सुकर है !'

'काम-धाम कैसा है ?'

'काम-धाम तो तू देख ले आपी, अधबिच में पड़ा है, ह्वां का ह्वईं ।'

चारों तरफ़ को उचटती-सी नज़र मारकर दरियाशाह ने कहा, 'हां भई, पड़ा तो है ।'

पीरा ने पोरुओं पर गिनती-सी गिनते हुए हिसाब समझाया, 'माल-पानी मंगाया, आधी मजूरी आप ली, आधी-आधी औरों को दी, एक दिन की आधी मीरा की है वो उन्ने ली नईं, सो धरी है बंधी हुईं, फिर तेरे पैसे खतम हो गए ।'

दरियाशाह ने उसका हाथ पीछे को हटाकर कहा, 'अरे पैसे तो ख़त्म हो ही जाते, वह थे ही कितने ? यह नहीं, तुम कुछ और नई बात सुनाओ !'

पीरा ने नई बात सुनाई, 'नई तो बस देख ले एक ई बात है । मीरा गैप है उसी दिन से जिद्दिन से तू गैप हुआ है । कईं पता नईं लगता, जने कहां चला गया उल्लू !'

लापरवाही से दरियाशाह ने कहा, 'आ जायगा, वह भी कहीं सैर करने चला गया होगा हमारी तरह । सब तुम्हारी तरह थोड़े ही हैं ?'

मुसकराकर पीरा ने कहा, 'हां ये तो हैई ।'

'और ?'

'औऽऽर···?'

'और' कहकर पीरा ने दूसरी नई बात सोची । सोचकर हँसा और फिर बोला, 'और तो बस वो आया था एक दिन जुलाहा !'

'कौन ?'

'किकरौली वाला !'

'कौन ? नूरमुहम्मद ?'

'हां वोई !'

दिलचस्पी से दरियाशाह ने पूछा, 'वही न जिसके यहां तुम्हारा रिश्ता ठहरा हुआ है ?'

शर्माकर पीरा ने कहा, 'वोई-वोई···'

और फिर आप ही आप हँसकर बोला, 'बड़ा नाराज हुआ उद्दिन । मुस्से कहने लगा, लठिया मार के तेरा खोपड़ा फोड़ दूंगा ।'

'क्यों ?'

'क्यों क्या ? तुजे तो मालूम ई है, वोई सादी-आबादी की बात !'

दरियाशाह ने नूरू जुलाहे की तरफ़दारी की, 'भई नाराज़गी उसकी सच्ची है पीरशाह, अब तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए । इस फ़र्ज़ से मुंह क्यों मोड़ते हो ?'

'तू भी बाबा वोई नाअकली की बात करता है । कर कैसे लूं ?'

'क्यों ?'

'ना तो भाई का पता, ना काम, ना धाम, ना रुपिये ।'

बातचीत पर कान लगाकर पेड़ के नीचे पड़े हुए क़तराशाह पर दरियाशाह ने एक नज़र डाली जैसे कि, 'सुनना मियां यह कंगाल दौलत के बारे में क्या ख़याल रखता है' और फिरपीरा को उलझाया, 'रुपये तो पीरशाह थे तुम्हारे पास ?'

पीरा ने सपाट-सा जवाब दिया, 'वो तो बाबा तेरे थे । मेरी तो आधी मजूरी थी, उसमें से रोटी खाता या सादी करता ?'

दरियाशाह ने कहा, 'तो काम की ही बात है तो काम तो तुम्हारे पास है !'

'अरे काम तो है पर रुपिये कां हैं ?'

जेब से पोटली का चिथड़ा निकालकर दरियाशाह के सामने पटककर बोला, 'ये ले अपनी पोटली का टुकड़ा ! माल थोड़ा-सा पड़ा हैं, देख ले अपनी आंख से !'

'अरे तो माल और ले आना भले आदमी, माल की कुछ कमी है क्या ? तुम काम शुरू कर दो ।'

यों कहकर अपनी फटी अलफ़ी की किसी फटी जेब में उस औघड़नाथ ने फिर हाथ डाला ।

जैसी पोटली ने बगदार के भूखे कारीगरों के मुंह में रूखा-सूखा निवाला डाला था, किसी को सब्र और किसी को बेसब्री के भंवर में ग़ोते लगवा दिये थे, किसी को सबक़ और किसी को सज़ा दे डाली थी, किसी की आंखों में धूल झोंक दी थी और किसी की में चकाचौंध पैदा कर दी थी, वैसी ही एक और पोटली दरियाशाह ने अपनी गुदड़ी से निकालकर हाथों में उछाली ।

फिर वही बात ! यह बात न हित की है, न नीति की । ज़ुरूरतमंद को अमानत सौंपना ऐसा ही है, जैसे चोर के हाथों में तिजोरी की चाबी दे देना । फिर पहिली ही पोटली ने कुछ कम तमाशा नहीं दिखाया जो और देखना बाक़ी हो । तकिया ही बनवाना है तो पैसा अपने हाथ में रखकर अपनी देख-रेख में क्यों नहीं बनवाते ? क़तराशाह के दिल में आया कि आगे बढ़कर पोटली दरियाशाह के हाथों से छीन ले । लेकिन यह उसके लिये मुमकिन नहीं था । पड़े ही पड़े उल्टा होकर उसने हाथों से आंखें मूंद लीं ।

पोटली पीरा को देते हुए दरियाशाह ने कहा, 'यह लो रुपये ।'

हाथों में पोटली तोलकर पीरा बोला, 'अब फिर तो नईं चला जायगा सहल

करने ?'

'चले जायेंगे तो क्या है ? यहां तो तुम हो ही।'

हां मैं तो हूं ई पर तू भी होता।'

'यह मैं और तू क्या पीरशाह ? जो तुम हो सो मैं हूं, जो मैं हूं सो तुम हो।'

कहकर दरियाशाह अनायास पुकार उठे, 'अलख अल्लाह !'

झपटकर भागते हुए जिस क्षण में दरियाशाह ने क़ुरान, इंजील और वेद-वेदान्त मरोड़कर इस तरह निचोड़ दिये, न उस क्षण का पीरा की दृष्टि में कोई महातम है न इस निचोड़ का। इस निचोड़ ही का नाम तो पीरा है ! इस पागल का कोई क्षण झपटकर नहीं भागता। इसका हर क्षण वही है जो था। दरियाशाह पागल पीरा को पीरशाह कहकर पुकारते हैं।

अचानक उठकर दरियाशाह ने कहा, 'बस तो पीरशाह, अब यहां की सब ज़िम्मेदारी तुम्हारी ! तुम चौकीदार हो यहां के।'

ताज्जुब से पीरा ने कहा, 'तू तो आते ई चल दिया ?'

अब यहां का तो तुमने सब तोड़-फोड़ डाला, रहें भी कहां ? कुछ बना-बन लो तो आ जायेंगे।'

जाने कितनी भीतर से सांस लेकर उठता हुआ पीरा बोला, 'जने कब आएगा !'

दरियाशाह ने जैसे चाहत की बड़ाई की, 'जब तुम चाहोगे तभी आ जायेंगे।'

फिर छेड़कर बोले, 'मगर तुम पहिचान भी लोगे हमें ?'

पीरा हो-हो करके हँस पड़ा, 'तू तो पगला है, पहचानूंगा क्यों नईं ?'

हँसते हुए दरियाशाह फिर तकिये से यों मुंह फेरकर चले गये जैसे इससे कोई वास्ता ही न हो।

प्राण शायद शरीर को इसी तरह छोड़कर जाता है।

क़तराशाह छाया की तरह उनके पीछे-पीछे चला गया।

संस्कार शायद इसी तरह प्राणों के साथ जाते हैं।

पीरा की नज़र ने उनका पीछा करने के बाद हाथ में पोटली का बोझ महसूस किया।

भाव शायद इसी तरह जिम्मेदारियों से दबे रहते हैं।

पीरा ने कुरता उठाकर ठोड़ी के नीचे दबाया और पोटली लुंगी की अंटी में बांधी।

धन की रक्षा के लिए फ़क़ीरों को भी अंटी कसनी पड़ती है।

पीरा मिस्त्री ने पिपलिया नीम के नीचे से औज़ारों का थैला उठाया, खोला, नाप की पट्टी निकाली और माल का अंदाज़ा-तख़मीना लगाने के लिए वह चुनाई की नाप-जोख करने लगा।

□□

धूप में अब उतनी तेज़ी तो नहीं थी मगर फिर भी बहुत थी। शून्य में थर-थर करते हुए तिरमिरे घुल चुके थे। टीले-टिब्बे जल-भुनकर लाली छोड़कर भूरे-भूरे होने लगे थे। रेतीले मैदान में इक्के-दुक्के कीकर-करील झाड़-झुंड गरम रेत की मोटी-सी चादर ओढ़े खड़े थे।

रेत की इस बादामी चादर को नाटक के पर्दे की तरह समेटता हुआ, चर्र-मर्र करता, हचकोले खाता हुआ एक क़ाफ़िला बगदार की तरफ़ बढ़ता हुआ नज़र आया। सबसे आगे एक इक्का था जिसका साईस मरियल से टट्टू की लगाम पकड़े उसे खींच-खांचकर मंजिल की तरफ़ लाने की कोशिश में उसकी मां-बहिनों से लगातार अपने रिश्ते बतलाता हुआ पैदल-पैदल चला आ रहा था। साफ़ ज़ाहिर था कि टट्टू और टट्टू वाला इस रास्ते से बिलकुल अनजान हैं। जानते होते तो शायद लालच पर लात मारकर इस भूड़ में भुनने के लिये न आते। इक्के में एक सवारी शायद जनानी है और एक मर्दानी। मर्दानी तो बैठी दीख रही है पर जनानी "शायद" इसलिए कि नज़र नहीं आती। उसके चारों ओर टाट का पर्दा इस तरह बंधा हुआ है जैसे मेले-ठेले में औरतों के नहाने-धोने के लिए बांध दिया जाता है। मालूम नहीं कि यह इंतिज़ाम पर्दादारी के ख़याल से किया गया है या धूल-धक्कड़ से बचने के लिये। जो हो, मर्दानी सवारी के चेहरे पर कोई परेशानी नज़र नहीं आती। लगता है कि यह रास्ते उसके जाने-पहिचाने रास्ते हैं। यह सवारी इस खटखटाते-ब्रसघसाते हुए इक्के पर बैठी हुई जो हरकत कर रही है उसे देखकर मामूली अक्ल का आदमज़ाद घटना का सही अंदाज़ा नहीं लगा सकता। एक मिट्टी के घड़े में से बार-बार यह मुसाफ़िर उस टाट के पर्दे पर तामलोट भर-भरकर पानी छिड़कता जाता है और बार-बार कहता जाता है कि 'बस आ गये, बस आ गये।' अंदर से न कराहने की आवाज़ आती है, न रोने की, न हँसने की, न बोलने की। कोई बीमार शायद बेहोश है।'

इस इक्के के पीछे-पीछे एक बैलगाड़ी है। सठमनी तो नहीं है लेकिन काफ़ी बड़ी है। सवारी की नहीं है, घास, फूस, भुस, चारा, गेहूं, बाजरा ढोने-लादने की है। इस वक़्त उसमें ऊपर तक डटाडट्ट सामान लदा हुआ है। सामान यानी संदूक, बिस्तरे, देग़-देग़ची, गठड़ी-मुठड़ी, अटरम-शटरम, न जाने क्या-क्या। सब सामान के ऊपर आड़ा-आड़ी एक बड़ा-सा निवार का पलंग रखा है—जैसा अक्सर दहेज़ वग़ैरा में आया-जाया करता है। उदासीन भाव से पलंग की छांव में ऊंघता हुआ गाड़ीवान गाड़ी हांकने का बहाना-सा कर रहा है। वर्ना इक्के का टट्टू बैलगाड़ी को खींच रहा है या बैलगाड़ी के बैल इक्के को धकेल रहे हैं यह पता लगना मुश्किल है। बैलगाड़ी में सवारी कोई नज़र नहीं आती, सिर्फ़ कहीं से एक गोंगाहट-सी

बेशक आ रही है जिसका सब मिलाकर मतलब इतना ही निकाला जा सकता है कि 'लाहौल-वला-क़ूव्वत-इल्ला-बिल्लाह, लाहौल-वला-क़ूव्वत-इल्ला-बिल्लाह !' इंसान इस गोंगाहट को सुन लेता तो शैतान से पहिले बगदार पहुंचता।

चलता-चलता यह क़ाफ़िला बगदार के मुहाने पर दरियाशाह के तकिये से आकर लगा। नंदनवन से होड़ लेता हुआ यह हरा-भरा नख़्लिस्तान देखकर जानवर जब सुस्ताने के लिए अड़ ही गए तो इंसान भी सवारियों से उतर पड़े। टाट की टपकती हुई क़नात में से सवारी जब निकली तो शायद का खटका भी मिट गया क्योंकि सवारी ज़नानी ही थी। बीमारी और बेहोशी का भी मिट गया क्योंकि वह तंदुरुस्त थी और होश में थी। पानी में छपाकों से भीगी हुई, पसीने में चिपचिपाती हुई, चिपके हुए रेत से करकराती हुई, खसखसाते हुए लिबास में जो औरत नमूदार हुई वह उस माहौल में ऐसी लगी गोया कोई चुड़ैल परी का भेस भरकर दिन-दोपहरे दुनिया का दौरा करने निकली हो।

बरहाल, वह ऐशबेगम की लाड़ली और अमीरअली सौदागर की ब्याहता रौनक़बेगम थीं। तामलोट से टाट पर पानी छिड़ककर बाहर की तपिश तो क्या, अन्दर की आग को ठंडा करने की कोशिश करने वाला नौशः अमीरअली था। जाहिर है कि पलंग दहेज़ का ही था, और तपन और सफ़र की वबाओं से बचने के लिये नीचे से घूसों की तरह निकलकर आने वाली हस्तियां, अल्लाबंदा और सबरंग बेग ही थे।

इसमें भी संदेह नहीं कि इस सारे प्रदेश में यह दरियाशाह का तकिया है भी बड़ा रमणीक। थका-हारा मुसाफ़िर यहां आते ही महसूस करता था कि अगर फ़िरदौस बर रूए जमीं अस्त, वह यही है, वह यही है। रौनक़ ने दोनों हाथ ऊपर को उठाकर एक नीचे-से पेड़ की ऊंची-सी टहनी को पकड़ा, एक अलसाई-सी अंगड़ाई ली, ऊंचाई की तरफ़ मुंह उठाया और फिर 'सुब्हान अल्लाह' कहकर हिरनी की तरह सीढ़ियां फलांगती हुई ऊपर चढ़ गई। छड़ीदारों को तो फिर जाना ही था।

हल्की-हल्की हवा चल पड़ी थी। पेड़ों का साया और रौनक़ का रुपट्टा फरफराने लगा था। टूटे-फूटे, बने-अधबने उस तिलिस्म से खंडहर ने रौनक़ पर मोहनी डाल दी। पत्थर के अवशेषों को कुतूहल से ताकती हुई रौनक़, अन्त में दरियाशाह के चौतरे के ढेर पर आकर खड़ी हो गई।

आदमी के अज्ञान की भी कोई सीमा है ? वह बेचारा नहीं जानता कि जिसे वह संयोग, चातुर्य, चालाकी या अपनी होशियारी समझता है वह वास्तव में अदृश्य की भूल-भुलैया का एक तमाशा है। सत्य से अनभिज्ञ और तथ्य से अनजान रौनक़, जिस रचना को उध्वस्त करके अवतरित हुई है उसकी विदीर्ण छाती पर चढ़कर पिपलिया नीम को सातवें आश्चर्य की तरह घूम-घूमकर देखने लगी।

इसी दशा में पीरा ने कहीं से उसे देखा। देखा तो मुंह बाये हुए देखता ही

रह गया। कौन है यह ? ढहाई बारहदरी के किसी सितून या मेहराब से यह क़हर, रूप धरकर निकला है क्या ? पीरा ओट में होकर उस क़हर को ताकने लगा।

सौदागर, अल्लाबंदा और सबरंग ऊपर पहुंचे। जगह के जादू से मोहित रौनक़ ने आहट सुनकर उनकी ओर बिना देखे ही पूछा, 'मियां सौदागर यह क्या जगह है ?'

चोरी की तहक़ीक़ात में हाकिम के तमाचे की तरह रौनक़ के सवाल से पहिले तो मीरा घबराया लेकिन फिर होश संभालकर घुटे हुए चोर की तरह उसने जवाब दिया, 'ये वो जगै है जहां हमें अग्गाज आई थी कि ऐ अमीरअली, तू परदेस जा और सौदागरी कर !'

औरत कैसी ही हो, ग़ैबी कारनामों से मुतास्सिर (प्रभावित) हुए बिना नहीं रह सकती। रौनक़ ने कहा, 'ये तब तो यह बड़ी मुबारिक जगह है !'

फिर इधर-उधर देखकर ललचाकर बोली, 'यह किसकी है मियांजी ?'

एक के बाद एक मोर्चा लेना पड़ जाय तो छाती ताने बिना बहादुर का काम चले भी कैसे ! फिर यह बग़दादी सौदागर अशर्फियों की बखेर करता हुआ जिस नवाब की बेटी को जीतकर लाया है, उसके सामने अपनी हैसियत को गिरने भी कैसे दे ?

शेखी मारकर बोला, 'होती किसकी ? अपनी ई है। ह्यां सब कुछ अपना ई है बेगम !'

रौनक़ ने कहा, 'ऐ तब तो हम यहीं रौनक़ महल चिनवायेंगे ! क्यों चचा ?'

पान की एवज़ बालू-रेत की जुगाली करते हुए अल्लाबंदे ने कहा, 'कसम से क्या बात कही है तुमने···क्योंजी सौदागर साहब ?'

पहिला अरमान ! माशूक़ की पहली दरख़्वास्त ! शादी के बाद बेगम की पहिली ख़्वाहिश ! घिरकर मीरा ने कहा, 'हां-हां, जरूर-जरूर !'

रौनक़ का शौक़ मचला, 'महल के चारों तरफ़ बग़ीचा लगवायेंगे !'

सबरंग बोले, 'मैं तो इमान से ख़ुद यही सोच रहा था—चम्पा-चमेली-गुलाब ज़ोरों से महक रहा हो !'

अल्लाबंदे ने भी नक्शे में नुक्ता लगाया, 'कसम से यहां पे बीचोंबीच एक उम्दा-सा चबूतरा हो, उस पर चांदनी बिछा करे, नाच-गाने हुआ करें, दावतें उड़ा करें !'

ओट में खड़े हुए पीरा ने शेखचिल्लियों के यह मनसूबे तो नहीं सुने लेकिन यह यक़ीन उसे हो गया कि यह औरत बारहदरी के सितून या मेहराब से नमूदार नहीं हुई है बल्कि ज़िन्दा गोश्त की बोलती-चालती पुतली है ! पर यह है कौन ? और इसके साथ यह आदमी कौन है ? मीरा-सा लगता है !

मीरा ?···ऐसा ?

रंग-बिरंगे रेशमी कपड़े मीरा के तन पर कहां से आये ? नहीं, यह मीरा

नहीं है।

मीरा है !

मीरा है तो इस परी-सी बैयर और इन लालदेव-कालदेव से मीरा का क्या वास्ता ?

पर आवाज़ तो मीरा की-सी ही लगी !

मीरा ही है !

कमाल है कि जिस दिन बाबा ग़ायब हुआ उसी दिन मीरा ग़ायब हुआ, जिस दिन बाबा आया उसी दिन मीरा आया !

पीरा ने ज़ोर से आवाज़ लगाई, 'मीरा !' और ओट से निकलकर उसकी तरफ़ लपका।

मीरा ने भाई को देखा और यकलख़्त उसके मुंह से निकला, 'अरे ! पीरा ?' न एक को छुपाव याद रहा न दूसरे को दुराव। न पांच सेर पक्के की पोटली, न पंद्रह रुपये का इन्कार। न आधी मजूरी न तबर्रुक का गुड़। ख़ून ने ज़ोर मारा तो भाइयों की आंखों से आंसू बनकर निकल पड़ा। दोनों दौड़कर एक-दूसरे से बग़लगीर हो गये। पीरा की बात साफ़ समझ में ही नहीं आई कि 'अरे तू कहां चला गया था ? तूने तो नींद ही हराम कर दी मेरी !'

कुचैली-सी लुंगी और मैला-सा कुरता पहिने सौदागर से बग़लगीर होने वाले भिखारी से आदमी को देखकर दूल्हा मियां की ज़ात, दर्जा और पेशे की निस्बत, रौनक़ बेगम ने अपने ज़ाते शरीफ़ भाई और चाचा अल्लाबंदे की ओर शंकित कनखियों से देखा।

मीरा ने रौनक़ से पीरा का तार्रुफ़ (परिचय) कराया, जैसे कराया जाता है, 'देखो जी ये हमारा भाई है, मां जाया !'

न अलेक, न सलेक ! रौनक़ मियां के मां जाये की तरफ़ यों ताकती रही जैसे चिड़ियाघर में खड़ी हुई कंगारू को ताक रही हो और पीरा उसे यों ताकता रहा कि ऐसी को देखे किधर से ! उसकी फटी-फटी आंखों से निकली पड़ती हुई हैरानी मीरा ने यों दूर करने की कोशिश की कि, 'पीरा, हमने शादी कल्ली है, ये तुम्हारी भाबीजान है।'

ऐसी जलती हुई मशाल-सी पीरा की भाभी ! पीरा की आंखें गोल होकर चुंधियाने लगीं। मीरा उसकी यह हालत देखकर अपनी जान जोखों भरी तलाश और बकावली के फूल की प्राप्ति के गर्व से फूलकर कुप्पा हो गया। भाई पर ही क्यों न हो, रिश्तेदारी का रौब ग़ालिब करने के लिए उसने परिचय आगे बढ़ाया, 'और ये सबरंग साब है, इनके भाई, हमारे साले !'

पीरा बेचारा देहाती आदमी, देहाती उसका मज़ाक़। हैरानी के मारे रिश्तेदारी के हिसाब में उलझा हुआ बोला, 'फिर तो ये हमारा बी साला ई लगा।'

चाबी के खिलौने की तरह एड़ियों पर गोल चक्कर खाकर सबरंग चों-चोंकर उठा, 'इमान से लाहौल वला···'

और इस पर पीरा घोड़े की तरह हिनहिना उठा। रौनक़ ने मुंह फेर लिया। मीरा ने अपना काम जारी रक्खा, 'और ये बुजरग हमारी घरवाली के चचा हैं, भला पीरा !'

पीरा अब तक भाई की घरबसाई से असल में ही ख़ुश हो चुका था। बोला, 'भई ये तो बड़ी खुसी की बात हुई मीरा। चलो अब जल्दी से घर को चलो सब जने।'

'घर ? अहा, घर और घरवाली ! वह भी ऐसी रूपों-अगली कि ज़िला का ज़िला डाह के मारे छाती कूट ले ! घरवाले ने अकड़कर घरवाली से कहा, 'चलो जी बैठ लो सवारियों में।'

चुपचाप तकिये से नीचे उतरकर रौनक़ बिना टाट का पर्दा लगाये ही इक्के में सवार हो गयी। सबरंग के पीछे-पीछे अल्लाबंदे भी अल्लामियां से गुनाह बख़्शवाकर बैलगाड़ी में चढ़ बैठे, मगर इस बार पलंग के नीचे नहीं, ऊपर।

मीरा और पीरा अरदलियों की तरह 'हटो जी, बचो जी,' करने के लिये पैदल-पैदल सवारियों के आगे-आगे चले।

थोड़ी दूर तक दोनों भाई चुपचाप चलते रहे। पीरा बार-बार मुड़कर कभी इक्के को देखता कभी इक्केवाली को, कभी बैलगाड़ी को, कभी गाड़ी के सामान को। कभी मीरा को देखता कभी उसकी जामे वारी शेरवानी को। आख़िर जब और नहीं देख सका तो बोला, 'मीरा, तेरे कपड़े बी बड़े बढ़िया हैं, जिसे ब्या के लाया है वो बी बड़ी आनबान वाली है, असबाब बी तेरे साथ भौत ई है ! ये क्या जादू है भई।'

मीरा ने उस पगले को समझाया, 'जादू क्या होता पगले ? परदेश में जा के हमने सौदागरी करी सो मालदार हो गये।'

और पगला समझ गया, 'बज्जी कुदरत है सब !'

अचानक मीरा ने कहा, 'अब एक बात कहे देते हैं हम तुज उल्लू से। हमें खाली मीरा कै के कदी मत बोलना !'

ताज्जुब से पीरा ने पूछा, 'और क्या कऊंगा ! कौन है तू ?'

पुचकारकर पीरा ने कहा, 'अमीरअली सौदागर कैना, भला !'

हँसकर पीरा ने आप ही आप दोहराया, 'अमीरअली सौदागर ?' फिर हीं हीं हीं करके बोला, 'ये तो बड़े मजे की बात है !'

पर उसे क्या है ? कोई चाहे अलादीन चिराग़ बुलवाले अपने आप को। बोला, 'अच्छी बात है, मुजे क्या है ? अमीरअली सौदागर कै दूंगा !'

इस तरह भाई से कायापलट का नामपलट और पहिचानपलट करवाकर बग-

दार के चौक से यह अमीरअली सौदागर की बारात जब चर्रखचूं-चर्रखचूं करती हुई गुज़री तो जैसे बावले गांव में ऊंट घुस आया। लाल-पीले, मैले-सैले रुपट्टे-पाजामे मकानों के टूटे-फूटे दरवाज़ों की झिरियों से झांकने लगे। नंगे-उघाड़े बच्चों की पल्टन की पल्टन हौका-सा खाकर सिमट गई। पचासों कुत्ते भौंकने लगे। दूकान के थले पर खड़ा होकर अलीजान पंसारी सामान से लदी गाड़ी और सवारियों को आंखें फाड़कर देखने लगा। थले के नीचे से शायद वही सदरी वाला मरियल-सा कुत्ता दुश्मन को पहिचानकर दुम दबाकर गुर्र-गुर्र करने लगा।

चौक पार करके क़ाफ़िला अपने घर की गली को मुड़ गया।

मीरा आ गया, मीरा आ गया, मीरा पा गया, मीरा पा गया!

बगदार वालों ने अंदाज़ बांधा कि हो न हो मीरा मेमार कोहे-क़ाफ़ से शादी करके लौटा है।

□□

कभी किसी आदमी को देखते ही हम जैसे मुहब्बत करने लगते हैं इसी तरह ख़्वामख़ाह नफ़रत भी करने लगते हैं। इस बेसाख़्ती की न मुहब्बत का कुछ हिसाब है न नफ़रत का। पहिली ही झलक में रौनक़ और उसके साथियों ने बेचारे पीरा को देखकर जो नाक सिकोड़ी तो सिकुड़ी ही रह गई। लेकिन भाभी के घर आने की वजह से पीरा बहुत ख़ुश था। बीसी भर बरसों से सुनसान पड़े हुए घर में आज ज़नाने क़दम आए, भाई के घर में रौनक़ आई, गोया पीरा के घर में ईद आई उछल-कूदकर भागते-दौड़ते वह बैलगाड़ी से उतारकर एक-एक सामान लाता जाता और बार-बार कभी भाभी से, कभी साले से, कभी ख़ुसर से, आराम से बैठने का इसरार करता जाता। बेचारे को यह अंदाज़ा ही नहीं लगा कि जैसे-जैसे उसकी मुहब्बत जोश खाती जाती है, वैसे ही वैसे रिश्तेदारों की नफ़रत बढ़ती जाती है।

मीरा की बात अलग है, हाल अलग है, हालत अलग है इश्क़ की इब्तिदा से लेकर उसके खतरनाक अंजाम तक—यानी निक़ाह तक, निक़ाह से लेकर रुख़सती तक, और रुख़सती से बगदार के चौक में आने तक अपनी इस माशूक़ बीवी के साथ पहिली रात गुज़ारने का रंगीन तसव्वुर करते-करते मीरा अंदर ही अंदर इतना उबल चुका था कि काढ़ा नहीं उसका कुश्ता हो चुका था। इस शौक़ में वह यह बिलकुल ही भूल गया कि डाल से तोड़े हुए ताज़ा अंगूर को चोंच में दबाए हुए आखिर वह कौआ इसे किस तरफ़ उड़ाए लिए जा रहा है। घोंसले तक पहुंचते-पहुंचते अंगूर की जिल्द में सिकुड़न पड़ गई थी, यानी कि माशूक़ की पेशानी पर बल आ गए थे और आशिक़ ने देख लिए थे।

बीवी के तेवरों से सिटपिटाया हुआ मीरा गर्दन झुकाये हुए किसी भारी-से

सामान को पीरा के साथ एक तरफ़ से उठाये हुए लाता और चौक में रखवाकर फिर चुपचाप लौट जाता । दम-दम पर उसे खटका हो रहा था कि अब कुछ खुला और अब कुछ खुला ।

संदूक़ आ गये, बिस्तर आ गये, गद्दियाँ आ गईं, गावतकिए आ गये, छत में लटकाने की कांच की हांडियां आ गईं, आधे आदमक़द का एक आईना आ गया, तांबे-जस्ते के बर्तन आ गए, पेचवान, पानदान आ गये और आख़िर तबला-सारंगी भी आ गए । मीरा का दालान और उसके आगे का आधा चौक इस दहेज़ के सामान से भर गया ।

दिन छिपते ही खंडहर से घर में एक नहूसत-सी आसमान से उतर आई । सुन रक्खा था कि किसी मुल्क में मुर्दे के साथ जिंदगी के सामान दफ़नाये जाते हैं । धुंधलके में अपने चारों तरफ़ बिखरा हुआ सामान रौनक़ को ऐसा लगा जैसे वह मर चुकी है और यह तबला-सारंगी, पानदान-पेचवान अज़ीज़ों ने उसके मुर्दे के इस्तेमाल के लिये जमा कर दिये हैं । मिट्टी के तेल की लपलप करती हुई ढिबरी जलाकर पीरा जब भाभी के सामने रखकर चला गया तो उसे लगा जैसे उसकी क़ब्र पर कोई चिराग़ रखकर चला गया हो । लौ फड़फड़ाने से उसकी पुतलियों में जब कुछ फक-फक-सी हुई तो एक झुरझुरी आ जाने की वजह से उसे मालूम हुआ कि वह ज़िंदा है । अंधे-से उजाले में आंखें फाड़कर उसने देखा कि कमर पर निवार का पलंग लादे हुए सौदागर का भाई, और हाथ में उगालदान और एक फूटी-सी लालटेन लिये हुए सौदागर बाहर से अंदर आये । बोले बिना उससे रहा नहीं गया, 'ऐ यह मकान मुआ किस क़िस्म का है, न इसमें मंज़िला है न छज्जा है ।'

सामान की देख-भाल में मीरा ने सुना नहीं तो रौनक़ अब के सीधी बोली, 'ऐ सौदागर, तुम हमें कहां ले आये ? इस मुई बग़दाद में हमसे कैसे रहा जाएगा ?'

मीरा ने नहीं पीरा ने दिलासा दिया, 'अरी क्यों घबराई जा रई है भाबी-जान, ये किला-सा घर खाली पड़ा है । सारे में तू ई रै ले ।'

देवर के दिलासे से तड़पकर भाभी ने मियां की तरफ़ जो देखा तो बीच में कठपुतली नाच गई । सबरंग बोले, 'इमान से यह क्या बदतमीज़ी है ।'

बंदेमियां ने भी नापसंदी ज़ाहिर की, 'कसम से तू-तड़ाक की हमें आदत नहीं है !'

मीरा ने बात संभाली, 'भई हमारा भाई सादा-सूदा आदमी है । पर हम समजा देंगे, अजी-तुम से बोलेगा । घर की बात ये है कि हम ह्यां मुद्दत से रये नईं हैं, इस मारै एसा पड़ा है । अभी तुम रओ फिर देखी जायगी !'

चिढ़कर रौनक़ ने कहा, 'ऐ क्या देखी जायगी सौदागर ! खटिया तलक तो साबित है नहीं इस तबेले में !'

बात सच थी । पीरा तेज़ी से आगे बढ़ा और पलंग बिछाता हुआ बोला,

'ले तू इस पै बैंज्जा, ये तो तेरे साथ का ई है।'

इस छोंक से बेगम छनछना उठीं, 'मुआ उठना-बैठना है वह चौपायों से गया बीता। बोल-चाल है वह निराली लठमार। अब हम कैसे जियेंगे मेरे अल्ला!'

संदूक से उठकर धप से पलंग पर बैठ गई और "जो सुने वह तामील करे" के अंदाज़ में बोली, 'ऐ वह पानदान तो उठाओ, मुंह में साबुन-सा घुला हुआ है!'

घबराकर पानदान के बदले जब सौदागर ने उगालदान आगे कर दिया तब तो हालात ही हाथ से निकल जाने का अंदेशा पैदा हो गया। वह तो ख़ैर हुई कि सबरंग पानदान लेकर आड़े आ गये और रौनक़ के सामने रखते हुए बोले, 'हमें तो इमान से काला पानी हो गया।'

अल्लाबंदे ने बात की ताईद की, 'कसम से ऐसा ही तो है काला पानी!'

देखा ही होगा उन्होंने!

ग़ौर करने पर भी जब इन लोगों की परेशानी की वजह पीरा की समझ में नहीं आई तब उसे हँसी आ गई। तीनों ने एक साथ उसकी तरफ़ देखा। मीरा उसे वहां से खींचकर एक कोने में ले जाकर बोला, 'देख पीरा, ये भौत बड़े घर की बेटी हैं, इनके सामने दांत मत फाड़ा कर, इनसे कभी भूल के तू-तड़ाक से मत बोलना।'

समझा या नहीं, यह मालूम नहीं हुआ तो उसका कंधा पकड़कर हिलाते हुए मीरा ने पूछा, 'समजा?'

हँसकर पीरा ने कहा, 'अरे कोई भैरा थोड़े ई हूं!'

मीरा ने पक्की क़िलाबंदी की, 'एक काम और करना पड़ेगा। जात वालों से और जो कोई बी मिले उसी से कैना कि कोई खाली मीरा ना कहे! अमीर अली सौदागर कहे नहीं तो तेरी भाबी नाराज़ हो जायगी।'

भाई की मुश्किल पीरा ने यों आसान की कि, 'तो फिर तो बस ऐसे करूंगा कि छप्पड़ में एक पंचात जोड़ के सबको एक साथ समजा दूंगा।'

तभी बाहर से पीरा को अलग-अलग कई आवाज़ों ने पुकारा। हँसकर पीरा बोला, 'ले घर बैठे ई काम हो गया, ह्यांई जुड़ गई पंचात! अबी कै दूंगा सबसे।'

बेचैन-सा होकर मीरा ने पूछा, 'कौन है?'

'जने कौन-कौन हैं!'

'ठैर जा तो, रोके रख सबको, मैं उधर पर्दा करवा दूं जरा।'

पर्दा? कैसी दिलचस्प और अनोखी चीज़ है पर्दा! कि जिसका न रहे वह बरबाद, और जिसका रहे वह आबाद! जिसके घर में हो वह आबरूदार, जिसके न हो वह लुच्चा-गुंडा-बेईमान! पर्दा जिसका ढंका हुआ है वह अनमोल, जिसका उठ जाए, वह दो कौड़ी का! पर्दा है तो दुनिया बसी हुई है, नहीं है तो उजाड़। दुनिया का दूसरा नाम पर्दा है क्या?

अपनी पैदाइश से लेकर आज तक पीरा ने घर में कभी पर्दा नहीं देखा। पर्दा कराने के लिए मीरा को अपने कोठे की तरफ़ भागते देखकर जाने कसी गुद-गुदी पीरा के पेट में हुई कि वह आप ही आप खिलखिलाकर हँस पड़ा। तभी नौ कम सौ के बुंदू चचा ने घर में दाख़िल होकर पीरा की खोपड़ी पर बात फटकारी, 'दिमाना हो गया क्या उल्लू के बच्चे, इकेला ई हँस रया है !'

हँसी रोकते-रोकते पीर ने देखा कि बुंदू चचा अकेले नहीं हैं, उनके पीछे-पीछे नूरू जुलाहा और किकरौली के दोनों साथी भी हैं; वही जो उस दिन तकिये पर आए थे। सलाम-दुआ के बाद पीरा ने सबको ख़ातिर से अपने कोठे के बाहर ज़मीन पर ही बिठा दिया। ख़ुद चिलम भरने को जाने लगा तो रोककर बुंदू ने ताज्जुब से पूछा, 'ये असबाब किसका है भई बड़े सहरी ठाठ का है !'

ख़ुश होकर पीरा ने जवाब दिया, 'अजी ये असबाब सौदागर का है।'

'सौदागर ?···सौदागर कौन ?'

'अमीरअली को नईं जानते ? जो गैप हो गया था ? हमारा भाई ?'

चिढ़कर बुंदू ने कहा, 'अबे तो मीरा क्यों नईं कैता उसे ?'

पीरा ने दोनों हाथ उठाकर बुंदू को रोका, 'नईं नईं नईं नईं ! ऐसे नईं कैंगे, तुम बी मत कैना !'

बुंदू ने उसके दोनों हाथ झटककर कहा, 'हमेशा से कैते आये हैं नामाकूल, अब क्यों ना कहें ?'

"वह पानी मुलतान गये" की सुरावट में भाई की शान का बखान करते हुए पीरा ने कहा, 'हमेशा की बात बदल गई चचा, अब वो सादी करके लाया है। कबी दिन में देखना भाबी को !'

किकरौली से नूरमुहम्मद का बुलावा आ जाने की वजह से बुंदू मियां आज गांव में थे नहीं, वर्ना कोहे-क़ाफ़ की परी के बगदार में आने की यह जग ज़ाहिर बात उन्हें मालूम न होती, यह कैसे होता ? मीरा की शादी और शादी के सामान की निस्बत वे और कुछ पूछताछ करें इससे पहिले ही नूरू के एक साथी ने चौंककर पहिले नूरू की तरफ़ देखा और फिर पीरा से पूछा, 'आ गया मीरा ? ···मीरा की सादी हो गई ! कद में को हो गई भई ?'

बीच में ही बात काटकर बुंदू ने कहा, 'अजी हो गई होगी सुसरी कदी में को ! पर इससे क्या मीरा मीरा ना रहा ?'

मीरा के 'मीरा' न रहने का क़तई फ़ैसला देकर पीरा ने बुंदू मियां को सही इत्तिला दी, 'उसकी जोरू भौत बड़े घर की बेटी है। बुरा मान जाती है खाली मीरा कैने से।'

एक किकरौली वाले ने बात इस तरह मंजूर की कि, 'ताजब क्या है मियां, आदमी का मुकद्दर न्योंई खुल पड़ता है। कोई सरकारी-दरबारी कंतराट मिल

जाय तो आदमी दम भर में सौदागर हो जाता है ।'

चलो बात ख़त्म । इतनी देर से गुमसुम बैठे नूरू जुलाहे ने मौक़ा देखकर आख़िर ख़ुद ही बिल्ली के गले में घंटी बांधी, 'अच्छा तो बोलो जी पीरअली, अब तो तुम्हारे पे भाई खोने का बहाना भी ना रया । अब बोलो, क्या कैना है तुमारा ?'

इतनी देर से चटापट बोलता हुआ पीरा एकदम चुप होकर सुकड़ गया । दूर रक्खी हुई ढिबरी की हिलती-डुलती रोशनी में चारों के चारों उसकी तरफ़ नज़र बांधकर देखने लगे ।

पीरा चुप ।

ग़लत है यह बात कि एक चुप सौ को हराती है । नूर मुहम्मद मेमार ने कन्नी-बसूली छोड़कर जुलाहे के सट्ट नली सट्ट तार जब हाथ में पकड़े थे, तब सारी बिरादरी को अकेले ने चुप रहकर नहीं एक-एक की सौ-सौ सुनाकर हराया था । यह बावला पीरअली चुप्पी साधकर नूरमुहम्मद को हरायेगा ? पीरा की ख़ामोशी से ताव खाकर नूरू ने बुंदू मियां की तरफ़ आंखें तरेरकर देखा तो बुंदू ने पीरा से कहा, 'बोलता क्यों नईं गूंगे की औलाद ?'

गूंगे की औलाद ने गूंगे की तरह उं:-ऊं:-सी करके कहा, 'अब जहां इत्ते दिन ठैरे हो, वहां थोड़े दिन और टिके रओ ।'

नूरू ने पीरा से सवाल किया, 'क्यों, अब क्यों टिके रहें ?'

पीरा चुप !

यह चुप्पी तन गई । नूरू के साथी ने कर्रा पड़कर कहा, 'अब चुप्प रहने से काम नईं चलेगा मियां, अब हम तुमें बुलवा के छोड़ेंगे । तुम्हारी आबरू हो चाय ना हो दूसरे की तो है !'

पीरा बोला, 'अजी आबरू तो तुमारी बी है, हमारी बी है पर इमानी बात ये है कि अबी मेरे पास पैसा नईं है । कोई दो तीन सै तो उट्ठेंगे ई !'

साथी ने झुंझलाकर कहा, 'तो मतलब तो येई लिकला के नूर मम्मद चित्त पड़े रैं और अमीना इनकी छाती पर बैठी रै !'

नूरमुहम्मद चित्त पड़े हैं और अमीना उनकी छाती पर बैठी है, कुश्ती के निकाल के इस ख़याल से ही पीरा को हँसी आ गई । इस कम्बख़्त को यह वक़्त-बेवक़्त की हँसी कहीं ऐसी जगह मरवाएगी जहां पानी न मिले । पीरा की हँसी बेटी के बाप के ग़ुस्से की आग में असली घी का काम कर गई । नूरू तमतमाकर उठा और यों बड़बड़ाता हुआ कि, 'बाश्शापसंद में ला के धिकेले देता ऊं लौंडिया को । फांसी हो जायगी और क्या !' यह जा और वह जा ।

पीरा ने सोचा कहीं असल में ही अमीना को कुएं में धकेलकर यह मियां फांसी न चढ़ जायें ! पलक मारते में उछलकर लपका और दहलीज़ के अंधेरे में नूरमुहम्मद

की कौली भर ली। बुड्ढे ने छूटने के लिए खूब हाथ-पांव पटके लेकिन ईमान के रूखे रोटों पर पला यह जवान पट्ठा—एक बार जो क़ैंची लगाई तो जाम हो गई। अधर उठाकर वापिस लाया और लाकर बैठने की जगह खड़ा कर दिया।

इस तरह नूरू जुलाहा तो फांसी से बच गया लेकिन झंझट उठ खड़ा हुआ दूसरा।

इस गुत्थमगुत्था में पीरा की लुंगी की अंटी ढीली पड़ गई और दरियाशाह की दी हुई रुपयों की दूसरी पोटली झमककर धरती पर गिर पड़ी।

ढीली लुंगी की अंटी कस ही रहा था कि यकायक नूरू ने धरती पर पड़ी हुई पोटली पर हाथ मारा। पीरा कर चाहे कुछ भी रहा था, लेकिन नज़र उसकी निशाने पर थी। नूरू के हाथ से पोटली उसने झपट्टा मारकर खींच ली और मज़बूती से फिर अंटी में उरसकर जीत की ख़ुशी में हँसता हुआ फिर अपनी जगह पर आ बैठा।

अब मार के बाद पुकार मची।

नूरू जुलाहे ने पंचों से फ़रियाद की, 'देख लो सब लोग, ये कैता था कि इसके पास रुपिये नईं हैं।'

साथी ने कहा, 'ये सिरासिर्र दगाबाजी की बात है।'

दूसरे ने कहा, 'झूठा है जमाने भर का। जुलाहों की आबरू उतारना चाहते हैं बगदारी लफंगे!'

बुंदू मियां भड़के, 'सारे बगदारियों को गाली मत दो मियां, हम देंगे इस इकेले को। तुम गाली देना क्या जानो!'

फिर पीरा की तरफ़ घूमकर बोले, 'जवाब दे वे गड्डामियर के बच्चे, फरेबी, लुच्चे! रुपिये नईं हैं तो क्या तेरे बाप की हड्डियां हैं इस पोटली में?'

यह पोटली जाने क्या-क्या इलज़ाम लगवायेगी इस अहमक़ के ऊपर। उनको भी जाने बैठे-बैठे क्या सूझी कि एक-एक पोटली निकालकर एक-एक आतिशबाज़ी का अनार छोड़कर चल देते हैं।

हँसकर पीरा ने कहा, 'चचा बाप की हड्डियां नईं एें, हैं तो रुपिये ई। पर बात ये है कै मेरे नईं एें, दूसरे के हैं।'

बुंदू ने किकरौलियों से कहा, 'बोलो जी अब बोलो! क्या फायदा हुआ इत्ती गालियां दिलवाने से? वो कैता है कि दूसरे के हैं।'

एक बोला, 'दूसरे के हैं तो क्या हुआ? इस बखत इनसे काम इकाले।'

हौले से पीरा ने कहा, 'अजी खैर, ऐसा तो नईं मैं करूंगा चाय कुछ हो जाय!'

नूरू मियां रुआंसे हो गए, 'हम इस इमानदार के तले यों दब गये कि लौंडिया हमारी सादी करे तो इससे करे, नईं तो अफीम खा के सो रहे!'

कहते-कहते जेब में से अफ़ीम की डिबिया निकालकर नूरू ने बुंदू को दिखाई और सुबककर बोला, 'देख लो हम डिबिया लुकाये फिरते हैं उससे।'

जवान त्रेटी के बाप की सुबकियों की आंच से बुंदू मियां मोम की तरह पिघल पड़े। दिलासा देकर कहा, 'ठैरो नूरू मियां, अबी मत रोओ। रोने की क्या बात है ? हम लिकालेंगे इसका तोड़···'

फिर पीरा को एक दचोका मारकर बोला, 'क्यों बे पीरअली।'

'हूं !'

'जब ये तेरा भाई मीरा अमीरअली हो के आया है तो इससे क्यों नईं लेता रुपिये ?'

पीरा ने सीधी-सी बात कह दी, 'उस पे होंगे तो आपी दे देगा।'

बुंदू ने झुंझलाकर कहा, 'अबे तो कै तो सई उससे मुंह फोड़ के बुद्धू के···'

अब यह तो जाने कब कहे, कहे भी ना भी कहे। वे ख़ुद ही कोठे की तरफ़ मुंह करके पुकार उठे, 'मीर···'

पीरा ने उनके मुंह पर हाथ रख दिया, 'अमीरअली कओ, सौदागर।'

सौदागर सही सुसरा, बखत पे गधे को बाप कहना पड़ता है। बुंदू ने पुकारा, 'म्यां सौदागर साब !'

वाक़ई वक़्त की ही बात है। सौ-सौ बरस के जो बुज़ुर्ग मीरा को सौ-सौ गालियां सुनाकर अख़ीर में मीरा गंजेड़ी कहकर बुलाया करते थे वो आज सौदागर साब कहकर अदब से पुकार रहे हैं ! पैसा ऐसी ही चीज़ है।

अमीरअली कंगाल भाई-बंदों की तरफ़ उस अमीराना शान से क़दम-ब-क़दम बढ़ाते हुए आए जैसे दीवाने आम में बादशाह सलामत आया करते हैं।

बुंदू ने अर्ज़ी पेश की, तफलीक ये कैने के वास्ते दी कि सुना है तुम निका कल्लाये, बड़ी खुसी की बात हुई। अब अपने भाई की सादी भी हो जान दो !'

मीरा ने कहा, 'जो रोके सो दुस्मन है। कल्ल को होती आज हो जाय !'

नूरू ने कहा, 'हो कैसे जाय ? इसके पास तो रकम है ई नईं !'

बुंदू ने नूरूको को दड़पकर कहा, 'तुम चुप रओ जी नूरमम्मद, हम कै रये हैं··'

फिर नर्मी से सौदागर से बोला, 'हमारा कैना ये है सौदागर साब कि तुम तो कोठे में सौदागरनी के साथ गुलछर्रे उड़ाते रहो और छोटे भाई की सादी रुकी खड़ी रहे तो तुम कमजात से भी कमजात हो !'

मीरा की रईसी ने दुलत्ती झाड़ी, 'देखो तुम ऐसी बात कदी मत कैना हम से। पीरा की सादी कैसे रुकी खड़ी रैगी ? हमारे पास रुपिये की कमताई नईं है। ये मैंजूद हैं। सौ, दो सै, तीन सै जित्ते मांगो उत्ते। तुम तैयारी करो···इसी दम करो !'

नोटों की एक गड्डी जेब से निकालकर मीरा ने पीरा के सामने डाल दी।

गड्डी के गिरते ही नूरू जुलाहा और उसके साथी उठकर खड़े हो गये। नूरू बोला, 'अल्ला कारसाज है। बुंदू मियां तुम जुम्मेवर हो, ठीक जुमरात के दिन इस पागल को दूला बना के लियाना मेरे दरवज्जे पे !'

यों कहकर वह तुरत-फुरत रातों-रात उठकर किकरौली को चल दिया। मेहमानों को गांव की हद तक पहुंचाने के लिये बुंदू मियां भी साथ-साथ ही निकल गये।

हुमककर पीरा बोला, 'सौदागर भाई, तुम भाबी लियाये, आते ई हमारे वास्ते बीबी ला रये हो ! अब दोनों भाई और दोनों लुगाई साथ-साथ रैंगे। ये तो बड़े मजे की बात है !'

दोनों भाइयों और दोनों बीवियों के साथ-साथ रहने की पीरा की बात सुनकर ज़िदगी मीरा को बड़ी जायक़ेदार खटमिट्ठी चाट-सी लगी। चटख़ारा सा लेकर बोला, 'हां, ये तो है ई।'

पीरा ने नोटों की गड्डी मीरा को वापिस देते हुए कहा, 'सौदागर, ये काम तेरे ई वास्ते अटका हुआ था। ले, रुपिये अपने पास रख। तू बड़ा है, तू ई इंजाम कर, चल मेरे साथ !'

जाने क्यों मीरा हिचक गया। ना-नुकर-सी करके बोला, 'देख पीरा, तेरी भाबी नई-नई आई है और घर का बंदोबस्स अबी ठीक है नईं, सो मेरा चलना नईं बनेगा। तू ये रुपिये ले ले और सब काम अपने आपी कल्ले !'

भाभी की तरहदारी याद करके, भाई की बात पीरा को वाजिब ही लगी। उसने रुपये ले लिये और बुंदू चचा को देने के लिए फ़ौरन बाहर चला गया।

उसके जाने के बाद हिचर-मिचर करता हुआ मीरा कोठे की तरफ़ मीठा-मीठा-सा पुकारता हुआ चला कि, 'अजी सुनती हो, मर्द चले गये, पर्दा छोड़ दो !'

लेकिन पर्दे में और कीलें ठुक गईं। कोठे में घुसने को ही था कि धाड़ से दरवाज़ा बंद हो गया। पीछे को उछलकर उसने अपनी पेशानी पर सिजदे का दाग़ पड़ने से किसी तरह बचाया।

बंधे बिस्तर के सहारे अधलेटे अल्लाबंदे की अंधेरे में ही गुड़म-गुड़म सुनायी दी, 'या अल्ला माफ़ कर ख़ता मैं तेरा गुनाहगार बंदा हूं !'

□□

दरवाज़ा बंद करके, कड़ी-कुंडे अटकाकर रौनक़ हाथ-पांव फैलाकर धम से पलंग पर पड़ गई। कोठे की घुटन से उसका सांस पसीना बनकर रोम-रोम से निकल पड़ा। बछेड़ी के तंग की तरह कसी हुई वायल की चोली की पसीने में भीगी हुई सरवटें कमर और सीने में सुतलियों की तरह गड़ने लगीं। गर्दन के आगे-पीछे

से पसीने की बूंदें धारें बनकर अगली-पिछली खाइयों में सरसराती हुई कमर-बंद के नीचे को उतरने लगीं। रानें पसीजकर चिपचिपा उठीं। रोशनी बिजली की होती तो यह सरसराहट और चिपचिपाहट न जाने क्या अहसास पैदा करती मगर लालटेन के पीले-पीले उजाले में उसे एक मलमलाहट और झुंझलाहट-सी आयी और यकलख़्त उसके मुंह से निकल पड़ा, 'लाहौल वला क़ुव्वत !'

दिल में आया कि अभी इसी वक़्त कुंडा खोलकर बाहर जाये और सौदागर समेत इस घर में इसी लालटेन का तेल छिड़ककर, इसी की बत्ती दिखा दे और रातों-रात पैदल वापिस चली जाय।

यह जाहिल देहाती, हैवानों के सामने हम से पर्दा करायेगा ? कुत्ते की तरह दुम हिलाकर और सीने पर पंजे जमाकर हमारा मुंह चाटेगा ? कौआ अंगूर का स्वाद चक्खेगा ? यह पालतू रीछ बाज़ीगरनी से ही वस्ल का अरमान रखता है ? और इसका वह बग़लोल-सा भाई हमसे तू-तड़ाक करके इस क़ब्रिस्तान से घर को क़िला बतलाता है ?

लानत है !

झटका-सा खाकर रौनक़ उठी और पलंग के ऊपर खड़ी हो गयी। खड़ी होते ही पीछे की दीवार में लगे हुए मुग़ल काट के जाली के झरोखे से पसीने में भीगी हुई पीठ पर एक ठंडी हवा का झोंका सरसराकर लगा। पलटी, और जाली के सूराख़ों में उंगलियां फंसाकर तमतमाये हुए गालों को ठंडे झरोखे से सटाकर खड़ी हो गयी। झोंके पर झोंका आता ही चला गया। गर्म पसीना पिघला हुआ बर्फ़ हो गया और छातियां ठंडी होकर तन गईं। आंख, नाक, गाल, मुंह और माथे की रेशमी जिल्द के आर-पार होकर हल्के-हल्के हवा के झोंकों ने दिल से लेकर नाक तक ठंडी पट्टी-सी लगा दी।

और अचानक रौनक़ को वक़्त बेवक़्त के लिए साथ लाया हुआ तब तक की वसूलयाबी का संदूक़चा याद आ गया।

फिर तो यादों का सिलसिला ही बंध गया। अपने ही घुंघरुओं की झनकार याद आयी, फिर अशर्फ़ियों की बौछार याद आयी। अशर्फ़ी वाले का मदमाता इश्क़ याद आया। अम्मीजान की मस्लेहत याद आयी, शाहसाहब की पेशीनगोई याद आई। रौनक़महल याद आया, रौनक़ाबाद याद आया तो जिनसे पर्दा करना था वह रैयद भी याद आई, हुकूमत याद आई और सबके बाद निकाह याद आया।

निकाह ? हां, निकाह की कुछ जिम्मेदारियां हैं। निकाह के कुछ फ़र्ज़ हैं। निकाह के बाद निकाह निभाने की रस्में हैं !

कुत्ता पहरा देगा तो क्या मुंह नहीं चाटेगा ? चाटेगा ! पर सरकश के गले के लिए चमड़े का पट्टा और पट्टे के लिये लोहे की ज़ंजीर भी तो है ही ! रस्में निभाने की अपनी-अपनी क़िस्में हैं।

रौनक़ झरोखे से हटकर पलंग पर लेट गई। तन को तांत की तरह ताना और फिर ढीला छोड़ दिया। एक फ़सादी-सी मुस्कान के बाद नजरें नाक की नोक देखने के लिए झुकाईं। नज़ाकत के साथ गाल पर ढाल-सी पड़ी हुई नाक की नथ चुटकी में दबाकर उठाई। नथ के घेरे में से आर-पार कुछ निशाना-सा साधा। सूराख़ में मुड़कर अटकी हुई नथ की नोक दबाकर निकल पड़ने का अंदेशा दूर किया और अपने आप में लिपटकर सो गयी।

□□

दिन निकला। सफ़र की थकान उतर गयी थी पर किरकिराहट बाक़ी थी। एक नशा-सा आंखों में चढ़ा हुआ था जैसा भांग के उतार पर चढ़ा रहता है। धूल का भी नशा होता है। नशा करना और धूल फांकना शायद एक ही बात है।

ग़ुस्लख़ाना तो था नहीं, ग़ुस्ल के लिए दालान के ही एक कोने में पानी की देग़ भरकर रख दी गयी थी। ज़रा हटकर साथ लाई हुई एक दरी बिछा दी गई थी और उसके ऊपर कुछ लेटी, कुछ बैठी हुई-सी रौनक़ बेगम बंदेमियां से बातें करते-करते नहाने की तैयारियों में आहिस्ता-आहिस्ता अपने आप को उरियां (नंगा) करती जा रही थी। दुपट्टा उतार दिया था, नथ के सिवा और सब ज़ेवर इधर-उधर बिखरे पड़े थे। शमीज़ मुसमुसाकर पानदान पोंछने के लिए छोड़ दी गयी थी। सीने पर वही रात वाली चोली ढीले मुछीके की तरह उलझी हुई थी। रेशमी पाजामा उल्टा होकर टख़नों तक उतर चुका था और दोनों एड़ियों में फंसे हुए पांयचे खींचकर निकालने के लिए सामने की तरफ़ बैठकर अपनी दोनों एड़ियां दरी पर अड़ाये हुए अल्लाबंदे दोनों हाथों में पाजामा खींचने के लिए ज़ोर लगा रहे थे। मलमल की एक सफ़ेद साड़ी गुलाबी बिल्लौर की रानों पर कुछ यों ही-सी फैली पड़ी थी। बहुत था, इससे ज़्यादा चचा से छिपाव भी क्या?

पांयचे खींचते हुए अल्लाबंदे ने कहा, 'हो न हो, कसम से यह सौदागर कोई राज मेमार हैं!'

तुनककर रौनक़ ने कहा, 'चचा बड़े नादान हो इत्ते बड़े हो के! हमारे दूल्हामियां की ज़ात हमारे सामने ही बखान रहे हो? ऐ क्या दुश्मनी कराने का इशारा है खुदा न ख़ास्ता?'

पांयचे पांवों में से इस झटके के साथ निकले कि इत्ते बड़े अल्लाबंदे ठुकराई हुई गेंद की तरह गद्द से दीवार में जा धड़के। जो बोल उनके मुंह से निकले वह यों थे, 'ना कसम से?'

हवा के झोंके मीरासी बच्चा कुतुबनुमे की तरह पहिचानता है। फिर अल्ला-बंदे तो ठहरे उस्ताद! कमर में यकायक कुछ गुद्दा-सा लग जाने की वजह से

उनकी आवाज़ में कुछ धचका-सा लगा था वर्ना उन्होंने तो मुस्कुराकर ही कहा था, 'ना कसम से ?'

रौनक़ के कुछ और कहने से पहिले ही जाने कहां से दुलकी उछालते हुए सबरंग दालान में दाख़िल हुए और बोले, 'इमान से यह तो वह है कि माले मुफ़्त दिले बेरहम !'

कनखियों से देखकर रौनक़ ने पूछा, 'ख़ैरियत ?'

'मैं तो सब सुन रहा था कल शाम, अंधेरे में !'

'तो अंधेरे में क्या सुन नहीं सकता इंसान सबरंग भाई, पर क्या सुना वह भी तो कहो !'

'मियां के भाई की शादी है !'

उचककर साड़ी का पल्ला नीचे से खींचकर ज़रा दायें को लेते हुए रौनक़ बोली, ऐ तो मुबारिक हो शादी, पर इसमें माले-मुफ़्त की क्या बात है ?'

सबरंग ने रपट लिखवाई, 'नोटों के बंडल थमा दिये सौदागर ने !'

'अजी तो उनकी रक़म है और उनका भाई है ।'

नुकसान के अंदेशे से परेशान होकर सबरंग ने कहा, 'इस तरह तो इमान से क्या ख़बर किस-किस को कित्ती रक़में पकड़ा दिया करेंगे !'

अल्लाबंदे बोले, 'कसम से मसला ग़ौर तलब है ।'

रौनक़ ने दुतर्फ़ा ठोकर लगाई, 'ऐ तुम हमारे ख़ैरख़्वाह हो या हमारे दुश्मन हो ? हमें लड़वाना चाहते हो मियां जी से ?'

घुटनों पर हाथ रखकर अल्लाबंदे की बराबर में ही सबरंग नीचे को मुड़ता चला गया और पूरा मुड़कर बोला, 'ना इमान से ?'

रौनक़ ने कहा, 'क्या इमान से ?'

सबरंग ने तशवीश जाहिर की, 'अब न जाने कहां रहेगी वह दीवाने की दुलहिन ?'

रौनक़ ने कहा, 'तौबा है भई ! ऐ आ गई तो इसी क़िले में रहेगी और कहां रहती ? आख़िर तो हमारे देवर की जोरू है कोई ग़ैर तो नहीं है !'

सबरंग अल्लाबंदे की तरफ़ और अल्लाबंदा अपनी पलकों की तरफ़ देखने लगा ।

मालूम नहीं रौनक़ को अंदाज़ा था कि सौदागर दालान के बाहर चौक में खड़ा हुआ है या सौदागर ही अंदर आने का मौक़ा ढूंढ रहा था । तबीयत का रुख़ सौ फ़ीसदी अपनी तरफ़ देखकर या सुनकर या इत्तिफ़ाक़ से, हौसला बांधकर अंदर जो आया तो सतर-सपाट पड़ी हुई सांपन यकायक कपड़ा डाल देने से जैसे सैकड़ों बल खाकर सिमट जाती है वैसे ही 'उई अल्ला' कहकर रौनक़ मलमल की साड़ी में उलट-पुलटकर गुंडल-मुंडल हो गई । हीं हीं करते हुए मीरा मक्खन-सी

बोली में बोला, 'ऐसे में हम आते नईं···पर···पर···'

पर और पर करके ही मीरा चुप हो गया तो झिलमिली साड़ी के नीचे से वही आंखें···उफ़ !—वही आंखें चमकाकर उन्हीं आंखों के पपोटे झप-झप झपकाकर और मुंह फुलाकर रौनक़ने कहा, 'क्यों नहीं आते ?'

मीरा पिघलकर बह चला, 'आते क्यों नईं,···आते, जरूर आते'—

रौनक़ ने दूसरा झकोला दिया, 'क्यों आते ?'

झकोला खाकर मीरा हकला उठा, 'क्यों आते ?'···आ गये··· तो बी··· हमारे आने में क्या है ?'

रौनक़ रूठ गई, 'क्यों आए हैं ऐसे में ?'

रूठ से घबराकर और कुछ सूझा नहीं तो बोला, 'आये थे एक खुस-खबरी सुनाने !'

'सुनाइये !'

'मीरा ने कहा, 'हमारे भाई की सादी है !'

कुलबुलाकर जिस लहजे में रौनक़ ने मुबारिकबादी दी उस लहजे का भेद कुछ ऐशबेगम ही समझे तो समझें। मीरा ने यों समझा कि दोनों भाई और दोनों बीवियां साथ-साथ रहेंगी और मजा आ जायगा। हिम्मत बंध गई तो बोला, 'ये असबाब ठिकाने से लगवा दें तो उद्दिन रौनक हो जायगी !'

साड़ी के नीचे से फन निकालकर रौनक़ ने उचककर दीवार का सहारा लिया। दायें हाथ से पल्ला चोली पर रोका, बायें से पानदान पर पड़ी हुई मुसी हुई शमीज़ खींचकर पल्ला छोड़ दिया और शमीज़ सीने पर रखकर दोनों हाथों से दबाई और फिर नज़रें उठाकर मीरा की आंखों पर पंजों की तरह जमा दीं। यों उसे नज़रबंद करके उस आमिल (जादूगर) ने कहा, 'बैठो हमारे सामने !'

मामूल (माध्यम) बैठ गया।

'तुमने किसी को कुछ रक़म दी है कल ?'

'हां दी है !'

'कित्ता ?'

'तीन सै ?'

आमिल ने उस सरकश जानवर की गर्दन में पट्टा डाला, 'हमसे बिना पूछे किसी को रुपये देने का तुम्हें क्या अख़्तियार था ?'

मीरा चुप ! उसे यह ख़याल तक नहीं था कि अब उसकी शादी हो चुकी है और उसकी करनी-धरनी का एक इतना ज़बरदस्त साझी पैदा हो चुका है जो ऐसा सवाल कर सकता है कि मुंह में ताला और नाक में नकेल डाल दे। क्या बोले ? लेकिन सवाली सामने था, जवाब मांग रहा था, जवाब देना ज़रूरी था। अटकता-खटकता-सा बोला, 'पर वो तो हमने अपने भाई को ई तो दिये हैं !'

भाई ? उंह, भाई पैदा करने वाली औरत ने जाने कितने भाई, भाइयों से जुदा कर दिये हैं। दूध फाड़ दिये हैं। मांओं से पूत लूट लिये हैं, बापों से सहारे छीन लिये हैं, बाज़ू काट दिये हैं और कुनबे बारह बाट कर दिये हैं। दांत की जड़ तक को खट्टा कर देने वाली खटास औरत ने दूध में घोली, 'हम भाई-जमाई नहीं जानते, हमारे रुपये तो दिये ना ?'

जाने क्या उस नज़रबन्दी का असर हुआ कि मीरा के सोचने का तरीक़ा कमअसल के वायदे की तरह एकदम बदल गया।—झूठ भी क्या है ? रुपया तो हाथ से निकल ही गया। रुपया कौन किसको देता है ? भाई हो चाहे कोई हो—उस भाई ने तो पोटली में से पन्द्रह रुपये तक के लिए इन्कार कर दिया था !

पता नहीं यह औरत के जिस्म पर जा-बजा उभरे हुए गोश्त की करामात है, या उसकी चंचल चितवनों का फ़ितूर है या उसकी लटपट चाल का उलझाव है, या खुदा मालूम उसके कौन से कल-पुर्ज़ों का कसाव है कि आदमी-सा आदमी पलक मारते में आदमीयत तो आदमीयत, आदमीयत का अहसास तक छोड़ देता है। क़तराशाह इस पेच में पड़कर दरियाशाह की चौखट पर माथा रगड़ने आ गया तो कोई अचम्भा नहीं।'

ज़हर का असर चढ़ते देखकर रौनक़ ने दूसरा दांत मारा, 'जाओ वापिस लाओ अपने भाई से हमारे तीन सौ रुपये !'

वापिस ?···वापिस कैसे लाये ?···उधार थोड़े ही दिये है, उसकी शादी के लिये दिये हैं। चार आदमियों के सामने दिये हैं, बड़ा बनकर दिये हैं। रईसी की पूंछ फटकार कर दिये हैं। वापिस देने के लिए किस मुंह से कहे ? न इतना बेहया, न इतना हियाव !

भोला-भाला आदमी औरत की छलना में पड़कर इस तरह छलिया हो जाता है। मीरा ने कहा, 'देखो बेगम, इस तरियों तो तुम हमारा धंदा रुजगार ई छुड़वा दोगी। हम तो उधार देते हैं और मुनापा लेते हैं !'

रौनक़ उसका मुंह ताकने लगी। ताकती रही और ताक चुकी तो गुलाबी होठों पर नीली मुस्कुराहट लाकर बोली, 'अच्छा, उधार दिये हैं ?'

'हां, उधार तो दिये ई हैं।'

'इस अपने भाई से उधार पर मुनाफ़ा लोगे ?'

'और नईं तो क्या न्यों ई ?'

'ऐ तो हम कब रोकते हैं उधार देने से और मुनाफ़ा लेने से ! हम कोई मुल्ला नहीं, क़ाज़ी नहीं !'

मीरा ने पोंहचा पकड़ने की तरह दांत निकालकर कहा, 'हमारी तो सबी कुछ हो जो रुपिये उल्टे फेरने को कैती हो !'

सीने पर ढंकी हुई, मुसी हुई, क़मीज़ हाथों से छोड़कर रौनक़ ने उसकी गर्दन

के पट्टे में लोहे की ज़ंजीर डाली, 'अच्छा तो सभी कुछ हैं तो हम सबरंग भाई से आइन्दा लेन-देन का हिसाब रखवायेंगे।'

यह तजवीज़ सौदागर को बहुत पसंद आई।

रौनक़ ने कहा, 'चचा ज़रा जाना सबरंग भाई के साथ, एक हिसाब बही का इन्तिज़ाम करना कहीं से।'

दोनों इस ज़रूरी काम के लिये फ़ौरन उठकर चले गये।

गर्दन में पट्टा और पट्टे में ज़ंजीर डलवाकर किसी गुलअंदाम के पीछे-पीछे शान से दुम हिलाकर चलने वाले कुत्ते का अहसास ऐसा ही होता होगा जैसा इस वक़्त मीरा का है। दुत्कार को पुचकार समझकर चाटने के लिए मीरा ने ज़ुबान निकाल दी। आगे को सरककर रानों को झलकाती हुई मलमल पर हाथ रख दिया तो उछलकर रौनक़ बोली, 'अल्ला कितनी देर से नहाने के लिए बैठी हूं। लो ज़रा परे को मुंह करके इसका पर्दा बांध देना उधर को!'

बिल्लौरी बदन पर पड़ी हुई साड़ी खींचकर उसने मीरा के मुंह पर फेंक दी और उठकर झुकी-झुकी पानी की देग़ की तरफ़ झपट गई। मन और मुक़द्दर का मारा मीरा परे को मुंह करके साड़ी का पर्दा बांधने लगा।

कैसा ही पारदर्शी क्यों न हो पर्दा रहना अच्छा है।

□□

मकान का मीरा वाला हिस्सा दुलहिन की तरह सज गया लेकिन दुलहिन जिसमें आने वाली थी उसमें झाड़ू भी नहीं फिरी और जुमे का दिन निकल आया। कल ही बुंदू मियां उस पागल को दूल्हा बनाकर किकरौली ले जाने वाले थे! ले गये शायद! किसी को कुछ मालूम नहीं। मीरा भी नहीं जानता। पता नहीं बुंदू ने पीरा को कहां बन्द करके सजाया और किन-किन के बीच में घेरकर उसे ठेले में लाद ले गये? पैदल तो नहीं ले गये होंगे! पर पैदल या सवारी, सवाल यह नहीं है, सवाल यह है कि आज वह आ जायेगा, आज चौथा दिन है।

चौथे दिन रौनक़ का सर-दर्द अचानक बढ़ गया। सोचा सर धो डालें। सुबह ही सुबह सर पर चार डोल पानी डालकर पलंग उठवाकर चौक में अपने—यानी सौदागर के—दालान के बाहर डलवा लिया, पानदान उगालदान क़रीब रख लिये और सर सुखाने-संवारने के लिए खर्रे पर ही आ बैठीं।

सुबह से दोपहर होने को आई लेकिन ज़ुल्फ़ें आज कुछ ऐसी उलझीं कि सुलझाव में ही नहीं आ रही थीं। धूप पलटकर जब पलंग की पट्टी से कुल हाथ भर रह गई और बानो तब भी नहीं उठीं तब अल्लाबंदे अन्दर से कुछ अमल-सा करके आये और बात का मुंह खोलने के लिए दीवार से टिककर बोले, 'दरो-

दालान तो साबुत नहीं है पर यहां की आबो-हवा लाजवाब है। कसम से इत्ते ही दिनों में बानो का चेहरा रंग पा गया।'

हंटर की तरह बालों को फटकारकर रौनक़ ने कहा, 'ऐ ख़ाक डालो मुई आबो-हवा पे, हमें तो यह खंडहर फाड़े खा रहा है !'

कच्ची-पक्की खाने के लिये एक ही दाना देखा जाता है। सो देख लिया और समझ लिया कि आज न कच्ची का सवाल है न पक्की का, आज तो जलकर रहेगी। कुछ कहने ही वाले थे कि कहीं दूर से आती हुई ढोल-ताशे की ताल पर चाल दिखाते हुए बाहर से सबरंग आये और आते ही बाले, 'अपने ही घर का है !'

तड़ातड़ ज्यों-ज्यों पास आती गई त्यों-त्यों बहुत-सी देहातनों के एक साथ रीं-रीं करके गाने की आवाज़ में मिली हुई बच्चों की पल्टन के चीख़ने-पुकारने की चों-चों, हों-हों के आगे-आगे आख़िर दूल्हा बने हुए पीरअली, नाफ़े तक का घूंघट निकाले हुए सर से पांव तक ढंकी हुई अपनी दुलहिन को लेकर हँसते हुए दरवाज़े में नमूदार हुए। अमीरअली साथ-साथ थे।

जल्दी-जल्दी में किसी बगदारन के हाथ के सिले हुए या शायद अलीजान पंसारी की शादी के वक़्त के उससे किराये पर लिये गये, कहीं से ढीले और कहीं से तंग, फूलदार पिक्कट और बेहूदा से कपड़ों में पीरअली ऐसा नज़र आ रहा था जैसा इकन्नी-दुअन्नी के तमाशे के तम्बू के बाहर भीड़ जमा करने के लिए खड़ा किया गया भांड।

और उसकी दुलहिन, अपने ही बाप के बने हुए और शायद उसी के हाथों अधूरे और पूरे अरमानों के लाल-गुलाबी जज़्बे में कहीं से ज़्यादा और कहीं से कम रंगे हुए गजी-गाढ़े का जोड़ा पहिने, ईमान की चांदी का मुलम्मा चढ़े चंद गिलट के गहनों से भरे हुए हाथों की कसावट से मालूम होती थी कि है, काफ़ी है ?

पीछे पीछे भम्भड़। देहातनों का। हरे, पीले, जामनी, कत्थई फटे-गंठे सुथनों और ओढ़नियों का। ग़रीबों का, ख़ैरख़्वाहों का 'दुख-दर्द के साझियों का। पड़ोसी की ग़मी में रो पड़ने और खुशी में गा उठने वालियों का, अपनी ही जैसी एक और की ख़ैर मनाने वालियों का। दूध-पूत का असीम बखेरने वालियों का, और इस असीम के असर से नंगे-अधनंगे, मैले-कुचैले, बताशों के लिए राल टपकाते हुए बच्चों का।

भम्भड़, गाता हुआ भम्भड़, और उसके पीछे गली में ढोल-ताशों की ढमढम-तड़तड़।

शादियाने जैसे इस ड्यौढ़ी पर बजे, खुदा करे कि सबकी ड्यौढ़ियों पर बजें !

लेकिन ढोल-ताशों पर देहातनों के गानों से रौनक़ बेगम की जुल्फ़ों में और ज़्यादा पेच पड़ गये। जब बहुत देर तक गाने-बजाने, चीख़ने-पुकारने के बावजूद सुलझाव के कोई आसार ही नज़र नहीं आये तो अपनी दुलहिन का पल्ला पकड़-

कर पीरा उसे खींचकर भाभी के पलंग के पास लाया और बोला, 'देख री अमीना, ये हमारे भाई सौदागर की बेगम है। ये बी बिलकुल नई-नकोर आई है, जैसी तू आई है?··· और देख, ये इसका भाई है, सौदागर का साला···'

आगे को सरककर सौदागर ने कहा, 'दोनों के घर एक संग आबाद हुए हैं अल्ला के फजल से। अब दोनों एक साथ रैंगी, चिमन हो जायगा !'

बाल उलझे हुए छोड़कर रौनक़ने सौदागर की तरफ़ घूरा। मीरा सिटपिटा-कर बग़लें झांकने लगा तो दुलहिन के पीछे खड़ी हुई एक पक्की-पोढ़ी पड़ोसन से देखा नहीं गया। धमधम करके करीमन दो क़दम आगे को आई और बेगम से बोली, 'बी घूर क्या रई अै ? घर में दुलहिन आई अै, मचान से उतर के इसे बिठा तो सई।'

लेकिन रौनक़ ने जुम्बिश नहीं खाई। वह थोड़ी देर तक तो करीमन की तरफ़ टकटकी बांधे रही और फिर न जाने उसे क्या सूझा कि यकायक हथेली पर हथेली पटकाकर दायें हाथ का अंगूठा करीमन को यों दिखला दिया कि मेरी बिठाये बला !

इस ज़नखानी हरकत से भीड़ में हँसी का जो रेला उट्ठा तो गाना बंद हो गया। चिढ़ी हुई करीमन ढोल-ताशों की तड़-तड़ पर और आगे बढ़ी और मोर्चा संभालकर बोली, 'ये कसबियों की तरैं उंगली अंगूठा किसे दिखा रई अै ?'

ग़ज़ब हो गया।

यह गंवार देहातन हमारे मुक़ाबिले पर खड़ी होकर बदज़ुबानी करने की जुरअत करती है ?···अम्मीजान की रटाई हुई लुग़त (कोश) कौंधा मार के याद आ गई। रौनक़ ने कहा, 'कसबी (वेश्या) होगी तू, या वह जिसे दुलहिन बना-कर लाई हो।'

'हये-हये-हये-हये, यह औरत कह क्या रई अै ? दुलहिन ने कदम बी नहीं रक्खा है पूरा-सा, यह मुंह है कि मुआ भट्टा ?' भीड़ में चख़-चख़ शुरू हुई।

कसबी ? फनफनाती हुई जवानी की सन्नाती हुई घड़ियों में अपनी अस्मत को मोटे-झोटे, फटे-पुराने ताने-बाने में ढांके-लपेटे हुए जिस दीवाने को एक बार दिल से मान लिया उसी से शादी करने का हठ बांधकर जो बरसों तक अफ़ीम की डिबिया तलाश करती रही वह कसबी ?

उस नूरू जुलाहे की बेटी जिसने एक की नहीं सारी बिरादरी के ताने-तिश्ने करतबों की ढाल पर झेलकर अपनी ज़िंदगी के ऊबड़-खाबड़ रास्तों में से पग-डंडियां निकाल लीं, यह इतनी चुभती बात कैसे बरदाश्त करती ?

अमीना ने पलंग की तरफ़ बंदूक़ की तरह घूंघट ताना और नई दुलहिन की दबी हुई आवाज़ में लिबलिबी दबाई, 'तू तो सूरत से ई कसबी दीख रही अै !'

करीमन ने सहारा दिया, 'तू पलके पे नई चाय कोठे पे चढ़ जा, हम उड़ती

चिड़िया पहिचान लें !'

रौनक़ ने हाथ नचाकर कहा, 'चिड़ीमारी का पेशा होगा तेरा, हमारा नहीं है।'

करीमन को पीछे खींचकर अमीना आगे बढ़ी, 'तेरा नई अै तो मूंड फकेरे ये जुलफजाल फैलाये क्यों बैठी अै ?'

अब के रौनक़ ने गोला दाग़ दिया, 'ऐ तू हमारे पैसे से तो ख़रीद के लाई गई है और हमारे ही सामने बोलने का मुंह रखती है ?'

अमीना का बुर्ज ढह गया। 'यह कैसा बोल मारा इस बैरिन ने ? मैं इसके पैसे से ख़रीदकर लाई गई हूं ? इतने दिन तप करके भी आख़िर इस चौखट पर मैं इसके पैसों से क़दम रख पाई हूं क्या ? इससे तो यही अच्छा होता कि बरसों पहिले इस दीवाने का दामन थामकर चुपचाप कहीं को मुंह काला कर गई होती !'

लेकिन मैदान तो पछतावा करने की जगह नहीं है। मैदान सिर्फ़ हमला करने की जगह है। दांत मिसमिसाकर अमीना ने पांव जमाये, 'मैं तो बिक गई बाई जी एक दफ़ा, पर तू तो रोज-रोज की बिकने वाली है।'

क़सम से, इमान से, भगदड़ पड़ गई। अचूक निशाने की तारीफ़ में भीड़ हो-हो करके चिल्ला उठी। ग़ुस्से के मारे पानदान में लात मारकर रौनक़ ने कहा, 'ऐ तू समझती क्या है अपने दिल कम्बख़्त में !...'

बात बिगड़ती देखकर मीरा जैसे-तैसे रौनक़ की तरफ़ सरककर बोला, 'बेगम साब जी तुम हमारी तरफ को देखो !'

गला फाड़कर रौनक़ चिल्लाई, 'न देखती तो इस मुई दुलहिन को दीवार में चुनवा देती ! ऐ मैं नवाब की बेटी, मेरा इनका साथ क्या ?'

मीरा ने समझाया, 'अजी है क्यों नईं, देवर की दुल्हन है, तुम बड़ी हो, तुमें तो साथ रैना ही पड़ेगा !'

रौनक़ ने ज़ोर से हथेली पटकाकर कहा, 'रहेगी मेरी बला, मैं इस घर में हरगिज़-हरगिज़ नहीं रहूंगी।'

सुबह से ही अल्लाबंदे को जो खटका लगा हुआ था, वही बात निकली। अन्दाज़ा ग़लत होता ही नहीं उनका। 'कसम से' कहकर मुंह फेरते ही रौनक़ की आवाज़ आई, 'यह मुंह और हम देखेंगे ?'

अमीना ने नक़द वापिसी दी, 'तुम अपना मूं दिखाती फिरो दुनिया को, हमें क्या दिखाना पड़ा है !'

यह मौक़ा हँसने का तो बिलकुल ही नहीं था पर इतनी देर चुपचाप तमाशा देखता हुआ पागल पीरा शायद इसे बच्चों की चों-चों समझकर हँस पड़ा और अमीना से बोला, 'अरी भलीमानस, हमने रस्ते में बी तेरे कान में फूंक मारी थी कि भाबी का मूं बड़ा देखना है, भाबी भौत बड़े घर की बेटी है !'

घूंघट ही घूंघट में तनकर घुस-घुस करके दुलहिन ने जवाब दिया, 'होगी तो अपने लिये होगी, हमसे क्यों तिरछी बोल रई अै ?'

पीरा ने ठंडा-सा छींटा दिया, 'बस हो चुकी। अब तू इससे माफी मांग ले, राजी हो जायगी !—बढ़ अगाड़ी को।'

पर अमीना नहीं बढ़ी। उसका क़ुसूर भी क्या था जो इतनों के सामने माफ़ी मांगकर आप ही अपनी और अपने हिमायतियों की हेठी कराती ? अकड़कर बोली, 'हम क्यों मांग लें माफ़ी इस नबाबजादी से ?'

शह खाकर रौनक़ फिर उबलीं, 'ऐ हमने बड़े-बड़ों से···'

मीरा ने उसके मुंह पर हाथ रखकर कहा, 'रौनक़ तुमें हमारी कसम जो चुप्प न रखो !'

मुंह से हाथ लगते ही मीरा के हाथ में चटाक से एक चांटा मारकर रौनक़ ने कहा, 'अब हमको ही चुप भी करने लगे ?'

सबरंग ने ताज्जुब किया, 'इमान से हद हो गई !'

अल्लाबंदे हैरत में आ गये, 'कसम से कमाल है !'

रौनक़ ने फ़ैसला सुना दिया कि, 'हम इस ज़ुबानदराज़ औरत का मुंह नहीं देखेंगे चाहे कुछ हो जाय।'

मुंह नहीं देखना चाहतीं तो नहीं सही, मीरा ने तजवीज़ सुझाई, 'अजी तो बीचोंबीच पर्दा तान लो। उठो, रात होती आ रई है।'

उठो कहते ही पलंग के ऊपर खड़े होकर रौनक़ ने इस हदबंदी के ख़िलाफ़ ऐलान कर दिया, 'मैं गली में बैठ के रात काट लूंगी पर जहां यह औरत होगी वहां दम नहीं लूंगी !'

आड़े वक़्त में और कोई नहीं तो हमलावर की पार्टी का ही सही, सबरंग का बाजू पकड़कर मीरा उसे कोठे में खींचकर ले गया।

अब हालत यह है कि दूल्हा-दुलहिन निहत्थे खड़े हैं, भीड़ भौंचक होकर पलंग पर बाल खोले खड़ी मरखनी भैंस की तरह फन्नाती हुई रौनक़ को ताक रही है। मोर्चे पर तनाव बना हुआ है और बाहर मारू बाजा बज रहा है।

बाजे पर ध्यान जाते ही करीमन ने पिछाड़ी की गारद को अपना काम जारी रखने के लिए पुकारा, 'अरी चलो रसम तो पूरी कर दो अल्ला की बंदियो, तमासा तो फिर भी देख लोगी !'

औरतों ने फिर गाना शुरू कर दिया जैसे कुछ हुआ ही न हो। दूल्हा-दुलहिन को बीच में लेकर 'बन्नी से बन्ना मजेदार, हरियाली बन्ना, दुलहन से दुल्हा मजेदार, हरियाली बन्ना' गाता हुआ ग़ोल का ग़ोल बार-बार रौनक़ की तरफ़ मुड़-मुड़कर देखता, हँसता, खिलखिलाता हुआ मकान के पीरा वाले दालान की तरफ़ सरकने लगा।

पचासों पैनी-पैनी तीर की नोक-सी नज़रों से छिदकर रौनक़ इस तरह चिचिया उठी जैसे धड़ाधड़ लाठियां पड़ने से कुतिया चिचिया उठती है, 'सौदागर मियां, सबरंग भाई !'

पिनक में ऊंघते हुए अल्लाबंदे ने अलकसाकर कहा, 'जरा मशवरा कर रहे हैं ।'

रौनक़ ने चीख मारी, 'मैं सलाह-मशवरा कुछ नहीं मानूंगी अब । इसी दम हमारा सामान उठाकर गली में डाल दो ।'

और यों कहकर वह वाकई पलंग से कूदकर दरवाज़े की तरफ़ भागी । अल्लाबंदे क्या करें ? एक ख़ाली संदूक़ को रगेद-रगादकर रौनक़ के पीछे-पीछे बाहर चले गये ।

कोठे में से सबरंग के पीछे-पीछे आते हुए सौदागर का सूजा हुआ मुंह देखकर ऐसा लगा कि सलामती के बिचौलिये ने शायद हमलावर का ही पक्ष लिया । आते ही दोनों की नज़र ख़ाली पलंग पर पड़ी तो दोनों का कलेजा बैठ गया ।

'इमान से सौदागर तुमने हमें बड़ा बुरा फंसाया ।'

कहता हुआ सबरंग घुटनों के नीचे ही नीचे से तैराकी खड़ी लगाता हुआ-सा बाहर चला गया ।

पीरा औरतों के टेहले-टोटकों से किसी तरह बच-बचाकर बाहर आया तो मीरा को यों खड़े हुए पाया जैसे मेले में बिछड़ गया हो । 'भाबी कां गई, भाबी कां गई' करता हुआ कोठे से दालान में और दालान से चौक में चक्कर मारने लगा । तभी बाहर से अल्लाबंदा और सबरंग आये और बिलकुल दायें-बायें देखे बिना पीरा और सौदागर के ठीक बीच में से निकलकर सीधे कोठे में घुस गये । पीरा कोठे की तरफ़ ताकता रहा । सारंगी और तबले की जोड़ी लिये हुये अल्लाबंदा और सबरंग कोठे से बाहर आये और फिर उसी तरह बिना बोले-बताये चुपचाप दोनों के बीच से निकलकर एक ने पलंग के ऊपर से पानदान उठाया, दूसरे ने नीचे से उगालदान और फिर दोनों मिलकर बाहर चले गये ।

नतीजा पीरा की समझ में आ गया । मौत हो गई ! कुछ देर तो मीरा की तरफ़ जाने क्या देखता रहा फिर इस तरह बोला जैसे ख़ाली कुएं या खत्ती में से बोल रहा हो, 'लाओ जब असबाब उठाना ई है तो हमीं उठवाये देते हैं ।'

उस जोकर जैसे दूल्हा ने बिना किसी की मदद के दहेज़ का पलंग उठाकर कमर पर लादा और चार दिन पहिले जिस तरह अन्दर लाया था उसी तरह आहिस्ता-आहिस्ता बाहर को ले गया ।

गली में पलंग रखकर पीरा जब वापिस लौटा तो मीरा बाहर जा रहा था । ढोल-ताशों की आवाज़ पर आते-जाते भाइयों के सिर्फ़ कंधे ही घिस्सा खाकर रह गये ।

पीरा सर पकड़कर दीवार से टिक गया। जाने कहां तकलीफ़ हुई कि ज़िंदगी में पहिली बार उसकी आंखों से दो आंसू निकलकर गालों पर ढुलक पड़े।

पीरा भी रोता है!

हाय री औरत!

खुदा न करे किसी की ड्यौढ़ी पर ऐसे शादियाने बजें!

□□

अलीजान पंसारी को पीरा की शादी से कोई लाभ नहीं पहुंचा। वह दूल्हा के कपड़े भी अलीजान के नहीं थे। उस कंगले की शादी-आबादी में बिकरी-बट्टा तो खैर क्या होना-जाना था; हां, ये अचरज उसे ज़रूर हुआ कि पीरा रुपया उधार मांगने क्यों नहीं आया? अलीजान से क़र्ज़ लिये बिना बगदार में किसी की शादी ज़चगी, जापा-स्यापा कभी हुआ हो, ऐसा आज तक तो हुआ नहीं। बेचैनी से थले पर कुलबुलाकर पैंसठ बैठक बदलने के बाद उसे मीरा मेमार के अमीरअली सौदागर बनकर आने का ख़याल आया।

'हूंऽऽहूं, तो इस शादी में लागत उस गंजेड़ी ने लगाई है!'—यानी बगदार में एक प्रतिद्वंद्वी पैदा हो गया।

अलीजान के सीने पर सांप लोट गया।

'नहीं, सदरी अब नहीं लौटाऊंगा।' पगड़ी की तरह इस रईस की कम से कम रग तो दबी रहे, पर नक़द?—कई बार उसने सोचा कि मय मुनाफ़े के अपने साढ़े बारह रुपये और तोला भर माल की क़ीमत तो वसूल कर लाऊं, पर किसी बेहतर मौक़े की तलाश में वह मन मारे बैठा रहा।

आज वह मौक़ा अपने आप चलकर आ गया।

रात हो गई थी। लालटेन में फूंक मारकर अलीजान ने दूकान बढ़ा दी, किवाड़ें बन्द करके बाहर के पटरे पर झटोली बिछाकर यह हाजी का पोता 'या पड़वड़दिगाड़' कहकर लेटने के लिये बैठा ही था कि अंधेरे में से कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई। यह सदरी वाला मरियल कुत्ता उसी रात से, मालूम नहीं क्यों अलीजान की दूकान के बाहर ही रहने लगा है—क्या बात है? इतना तो यह कभी भौंकता नहीं है। भौंके ही चला गया तो अलीजान ने पुकारकर पूछा, 'कौन है?' जवाब में कंकर की मार खाकर पहिले तो कुत्ते की क्यांव-क्यांव सुनाई दी और उसके पीछे-पीछे मीरा ख़ुद नज़र आया। यह कुत्ता उस दिन से मीरा के शायद बिलकुल ही ख़िलाफ़ हो गया मालूम होता है। कुत्ता ठहरा, आदमी से इसका अहसास ज़्यादा नाज़ुक है!

जितनी नाराज़ी से कुत्ता भौंक रहा था उतने ही प्यार से ललककर अलीजान

बोला, 'कौन, मियां अमीड़अली ? आओ आओ। मियां तुम तो ईद के चांद हो गये। कई बाड़ सोचा कि अलीजान खुद आपी मिलकड़ आवे सौदागड़ से, पड़ अपना औड़ भाई का घड़ बसाने में तुमें फुड़सत नईं होगी ये सोचकड़ नईं आया।'

मीरा बैठ तो गया पर किसी बात का जवाब उसने नहीं दिया। अलीजान ने पूछा, 'चिलम ?'

'नईं इस बखत नईं।'

ऐसा नहीं हुआ था कि मीरा ने चिलम के लिए कभी इन्कार किया हो। ज़रूर कुछ काला-धौला है। अलीजान ने कहा, 'ड़ात में कैसे तकलीप कड़ी ? अलीजान को बुलवा लेते !'

मीरा ने इस बात का भी जवाब नहीं दिया तो अलीजान ने अब के परखी मारी, 'सौदागड़, जिद्दिन तुम सहड़ से चले उद्दिन चड़की दादड़ी के सिमिट का क्या भाव था ?'

आख़िर सौदागर के चोले में से वह पिटा हुआ प्रेमी जीव यों बोला कि 'भाव-ताव इस टैम हमें याद है नईं, एक जरूरी के काम से आये हैं, हां करो तो कैं।'

छाती पर हाथ रखकर अलीजान बोला, 'कभी ऐसा हुआ है कि तुमने कुछ कहा हो और अलीजान मुकड़ा हो ?'

मीरा की हिम्मत बंधी, 'हम ये ई सोच के आये हैं।'

'तो फिड़ हां-ना क्या, काम बताओ।'

मीरा ने खट से ईंट-सी मारी, 'अपना दुमंजला हमारे हाथ बेच दो।'

इस टके के कारीगर की यह हैसियत हो गई कि अलीजान का दुमंजिला ख़रीद ले ? दिल ही दिल में जल-बलकर अलीजान ने बाहर से मजबूर होकर कहा, 'वो मक्कान बेचने का तो अलीजान को कानूनी हक्क नईं है अमीड़अली साब ! पड़ तुम क्या कड़ोगे ? तुमाड़ा तो घड़ का मक्कान मैजूद है माशाल्ला से !'

मीरा ने कहा, 'वो तो है ई पर हम अब दुमंजले में रैंगे।'

अलीजान ने कुरेदा, 'दोनों भाई ?'

'नईं, खाली हम और हमारे रिस्ते वाले।'

एक घर में दो औरतों के आते ही दूसरे मकान के रातों-रात इन्तिज़ाम की वजह का अंदाज़ा लगा लेना अलीजान के लिए क्या मुश्किल काम था ? दरार में पच्चर ठोकने के लिए बोला, 'ये अच्छा सोचा तुमने। आजकल का जमाना है किसी तड़ों का।'

इतना खुलते ही मीरा और खुला, 'फिर बेगम है नवाब की बेटी, और हमारे घर में नईं है छज्जा !'

नवाब की बेटी ?···तो किसी नवाब की दौलत अर्रा पड़ी इस बेलदार के घर में। रौब में आकर ऐसा सुन्न हो गया जैसे काले ने डस लिया हो। नवाब

की बेटी इस कंगाल के हत्थे कैसे चढ़ गई, इस तरद्दुद (चिन्ता) में उस बेटी के लिए छज्जे की क्या ज़रूरत है, यह पूछना तक अलीजान भूल गया। उसे चुप देखकर मीरा ने कहा, 'तो फिर ?'

होश में आते ही अलीजान ने कहा, 'तो खड़ीद के क्या कड़ोगे, किड़ाये पै ले लो।'

मीरा के पास ख़रीद-बेच और किराये-भाड़े की हुज्जत के लिए वक़्त कहां था। बेगम गलियारे में पड़ी थी। हाथ फैलाकर बोला, 'अच्छा किराये-भाड़े की बात होती रैगी पीछे, जो कौगे सो दे देंगे, कुंजी निकालो तुम !'

उसका फैला हुआ हाथ फैला का फैला ही रखने के लिए अपने दोनों हाथों में दबाकर अलीजान ने पूछा, 'ये ड़ातों-ड़ात कुंजी का क्या कड़ोगे मियां अमीड़अली ?'

मीरा ने कहा, 'हम इसी टैम जाके बसेंगे उसमें।'

पिछली वसूलयाबी, अबकी पेशगी, एक तोला माल और कुत्ते वाली सदरी, सबका तक़ाज़ा किसी और वक़्त के लिए मुलतवी करके चाबियों के गुच्छे में से एक चाबी निकालकर मीरा को देते हुए अलीजान ने कहा, 'अच्छा, तो अलीजान को क्या उजड़ है तुमसे !'

मीरा चाबी को मुट्ठी में भींचकर उड़ने की तरह चला और फिर यकायक रुककर बोला, 'तैखाने में तो ताला नईं है ना ?'

तहख़ाना ?···इस अलीबाबा को बिल्ली के लिए छींका चाहिए था छींके के लिए बिल्ली ? बेगम के लिए मकान चाहिए या उसकी दौलत के लिए तहख़ाना ? चकराया हुआ-सा अलीजान बोला, 'याड़ तैखाना तुमने बहुत याद ड़क्खा ?'

याद रखने की साफ़ वजह मीरा ने यों बतलाई कि, 'वाह, हमारे अब्बा ने और हमने तो बनाया ही था ये मक्कान।'

"जानता हूं बे जानता हू तेरी असलियत" की तरह अलीजान बोला, 'लो ये तो भूली गया था अलीजान !···नईं ताला नईं है उसमें।'

'बस तो ठीक है' कहकर मीरा के चलने से पहिले ही अलीजान ने उसे फिर रोका, 'भाई अमीड़अली, कोई नफ़े का जुगाड़ हो तो मिल के कड़ें !'

अब इस वक़्त रोजगार की क्या चल रही है इस हाजी के लगते को, वहां तो बेगम धूल में लोट-पोट हो रही हैं, यह रोजगार की बात कर रहा है। जल्दी-जल्दी बोला, 'इस बखत जादै बात का टैम नईं है, धंदा तुम सोच लो, हम तुम्हारे साथ हैं। रकम भौत पड़ी है।'

'इन्शाल्ला, कड़ेंगे बातचीत।'

मीरा भागा तो अलीजान ने फिर पुकारकर पूछा, 'अलीजान आये क्या सामान उठवाने ?'

वहीं से मीरा ने जवाब दिया, 'नईं बस कोई आदमी भेज दो।'

फिर भागते-भागते अचानक आप ही रुक गया और लौटकर अलीजान के कान में फुसफुसाकर बोला, 'जरा एक बात पै ख्याल रखना—हमारे रिस्तेवालों में से कभी कोई उंकारी (इन्क्वायरी) करे तो जरा न्योंई कै देना कि मक्कान सौदागर का ई है।'

उतने ही ज़ोर से अलीजान ने कहा, 'अजी कै क्या देंगे, वो तो है ई।'

'बस तो ठीक है।'

मीरा तिराहे पर पड़ी हुई बेगम की तरफ़ उड़कर चला।

□□

दिनों के बीच में रातें न होतीं तो दुनिया जहन्नुम होती। रात, थके-हारों की कसक-चसक को अपनी गुदगुदी हथेलियों से थपकाकर मीठी-मीठी झपकियां तो ला ही देती है, दिन के दुख-दर्द पर मरहम लगाकर प्यार के सुरीले गीत गुनगुनाती हुई जान से प्यारों की मौत तक का ग़म हल्का कर जाती है। रातें अगर स्वर्ग में नहीं हैं तो संसार बड़ा सुखदायी है।

भीतर के कोठे से अमीना जब बाहर चौक में आई तब भी रात बाक़ी थी। जितनी नशीली, जितनी रसीली, जितनी रंगीली और जितनी मतवाली बनकर उसे कोठे में मिली थी, उससे बहुत थोड़ी। अंधेरा था पर सन्नाता हुआ नहीं था। वातावरण में सितार का झाला-सा गूंज रहा था, जैसा उसकी नसों में गूंज रहा था। थरथरी-सी लेकर उसने ऊपर को देखा। घर की चारों दीवारों के बीच में आसमान का चौकोर चंदोवा तना हुआ था, जैसे उसका सीना तना हुआ था। बीचों-बीच भाग्य के शुभ सितारे की तरह सूक का अकेला तारा झिलमिल-झिल-मिल कर रहा था, जैसे उसका दिल कर रहा था। चंदोवे में जड़े हुए झिलमिल तारे को तोड़कर आंगी में रख लेने की उद्दाम लालसा से उसने पैरों के पंजे उचकाकर सीधी पीठ को और सीधा करके लम्बी-लम्बी बाहें और लम्बी करके ऊपर को उठा दीं, भोले बालक की तरह। उंगलियों के पोरुओं से भी ऊंचाई अधिक होने के कारण फिर कभी के लिए यह काम छोड़कर उसने एक लम्बी-सी अंगड़ाई ली। चटख़े-चटख़ाये जोड़ नहीं चटख़े तो आप ही आप शर्मा गई और एक अस्फुट-सी हँसी के साथ-साथ झटके से दोनों बाहें एक साथ नीचे गिरा दीं। चोला ढीला छोड़कर इधर-उधर देखा। ओढ़नी उतारकर खूंटी पर लटका दी। सुतवां-सी चिबुक को नीचे झुकाकर ढीले इज़ारबंद को सर्र से खोला और फिर ज़ोर से कसा। इज़ार के पांयचे खींचकर गोल-मटोल सांवली पिंडलियों में फंसा लिये और घर में बरसों की चढ़ी हुई गर्द को बुहारने लगी।

बुहारते-बुहारते ही कहीं से मुर्ग़े की बांग सुनाई पड़ी, तोड़ी के आलाप की

तरह। तारा मद्धम पड़ गया और उसके नये घर की दीवारों के बीच-बीच का आसमान रंग बदलकर हल्का-हल्का सुरमई हो गया। उसके अपने रंग की तरह पक्का-पक्का! किकरौली के बांधे हुए बालों में धूल भर गई और सांवले-सांवले हल्दी-मेंहदी चढ़े हाथ-पांव गर्द से गोरे-गोरे हो गए। जल्दी-जल्दी मुंह पर पानी के छपाके मारे, सर पर हाथ फेरे, पांव-पिंडलियों पर पानी डालकर पक्के रंग पर कभी न चढ़ने वाला नक़ली रंग उतार दिया। पिंडलियों का पानी झटकाया और पांयचे नीचे उतार दिये। खड़े होकर फ़िक्रों की तरह तन झाड़ने लगी तो बदन के आधे-आधे उभारों तक ऊपर खिसकी हुई चोली पर नज़र गई। मुश्किल से उंगलियां फंसाकर ज़ोर से चोली को नीचे खींचा और मीठे-प्यारों की अमानत को होशियारी से ढांक दिया।

प्यास-सी लगी तो मटके की तरफ़ देखा। लावारिस सबील (प्याऊ) के ख़ैराती घड़े की तरह मैल की मोटी-मोटी सफ़ेद परत चढ़ी हुई थी। प्यास तो लगी की लगी रह गई, बदना, तसला, कूंडा, मटका जो कुछ था वह उठा-उठाकर लाई और ईंट के टुकड़े से रगड़-रगड़कर जाने कब-कब की जमी हुई काई छुड़ाई और खंगालकर सूखने के लिए दीवार के सहारे औंधे टिकाने लगी तो मियां की शादी की नई जूती के पास, एक तली घिसी हुई जूती पड़ी देखकर, तरस-सा खाकर दोनों को उठा लिया। पटककर झाड़ा और फिर रान के पास इज़ार से पोंछकर बर्तनों की बराबर में आबरू से रख दिया। कोने में उदास पड़ा हुआ जस्त का हुक़्क़ा उठाया, ताज़ा किया और आग सुलगाने के लिये रसोई के छप्पर में घुस गई।

चिलम भरकर चौक में आकर हुक्के पर रखने लगी तो चोली के नीचे से इज़ार तक और ऊपर से गर्दन तक सुरमई चट्टान पर सुबह की धूप का सेक-सा लगा, रात मियां के छूने की तरह। खूंटी से ओढ़नी खींचकर, नज़रें गिरेबान में अटकाकर, तैरती हुई-सी अन्दर गई। दीवार की तरफ़ मुंह करके चोली के ऊपर कुर्ती बदन में उलझाई और ऊपर से ओढ़नी सर पर डालकर जब वह फिर चौक में आई तो नंगे पिंडे पीरा दीवार से कमर लगाये बैठा हुआ ऊंघ रहा था।

मियां के गोरे-गोरे, चौड़े-चकले सीने और कसी हुई मछलियों की तरफ़ अमीना मुग्ध होकर ताकने लगी। ताकते-ताकते, उंघते हुए को छेड़कर बोली, 'मिस्त्री, क्या रोजीना इसी टैम पे उठते हो?'

मीरा ने सुना नहीं, तो फिर पुकारा, 'मिस्त्री जी!'

फिर भी कोई जवाब न देकर जब पीरा धरती पर ही आड़ा हो गया तो वह पंजों के बल उचकती हुई उसके पास गई और उसे झंझोड़कर हँसती हुई बोली, 'मैंने क्या बात पूछी हीरा मिस्त्री, जबाव क्यों नईं देते?'

निंदासी आवाज़ में पीरा ने कहा, 'अरी तू अब तो सो लेने दे हमें!'

अमीना ने कहा, 'अब उठ बैठो, चार पहर दिन चढ़ियाया!'

किसी तरह दीवार के सहारे सीधा होकर आंखें मूंदे-मूंदे ही पीरा बोला, 'अरी आदमी रात में सोयेगा जभी तो दिन में जागेगा !'

कहीं पोरुवे से फिर गए तो कंपकंपी-सी लेकर बोली, 'हाय अल्ला, रात भर कौन सी खेती रखाते रये तुम ?'

पीरा ने आंखें खोल दीं । नज़र भरकर नई नवेली को देखा और मुस्कराकर बोला, 'अजी खेती क्या चीज है हमारे खजाने के अगाड़ी ?'

सांवला मुखड़ा लाल हो गया । मुंह फेर लिया और बात बदल दी, 'रोज इसी बखत उठते हो ?'

पीरा ने कहा, 'अरी वैसे तो हम तारों की छांव उठने वाले हैं, पर तैंने सारा कायदा ढुलक-मुलक कर दिया आके !'

फिर से आंखें मींच लीं और जंभाई लेकर बोला, 'अब ऐसी जी में आ रई है कि फिर के सो जाऊं।'

अमीना हुक्क़ा उठाकर लाई, सामने रक्खा और नगाली उसके मुंह से लगा कर बोली, 'ये सोने का टैम नईं है, लो हुक़्क़ा पी लो।'

सुबह का वक़्त, ताजा हुक़्क़ा, भरी भराई चिलम, चूड़ियों की खनक और होठों में नगाली ! अफ़वाहें पीरा ने भी सुनी थीं पर भोगा-आज । दम लगाकर बोला, 'वाव्वा, वाव्वा ! सुलगा सुलगाया है, पी पिला के धरा होगा तैंने !'

घंटियां-सी बज उठीं । हँसकर अमीना ने कहा, 'दिमाने हो तुम ! हुक्का पीती ऊं मैं ? वो देखो नजर उठाके, कित्ता कूड़ा लिकला है तुमारे घर में से !'

पीरा ने छेड़ा, 'बस तू ई देख ले तेरे बिना क्या हालियत थी हमारे घर की !'

न चाहते हुए भी अमीना ने बात बदलने की कोशिश की, 'देखो तो सई, एक तो ये हांडियां मट्टी की, उप्पर से मैली-कुचैली !...'

पीरा ने बात बदलने नहीं दी, 'बस अब तू जाने, तू मालक है हमारी बी, और हमारे घरवाये की बी !'

घरवाली ने कहा, 'अब के सब चीज तामचीनी की लियाना।'

घरवाली से काहे का छिपाव । हँसकर पीरा ने साफ़गोई की, 'तामचीनी की तो हमारी जात भर में नईं हैं किसी के घर !'

अमीना हो या आयशा, ऐसा कैसे हो कि औरत मायके का बड़प्पन न छांटे ! बोली, 'हमारे गांव में तो पान-छः घरों में लिकलियावेंगे।'

पीरा की तबीअत आज हाज़िर थी । बोला, 'तेरे गांव में तो तुस्सी तू ई थी सो हम लियाये।'

अनजाने में ही मर्द ने जो कुछ कह दिया उससे ज़्यादा औरत और कुछ सुनना नहीं चाहती । इससे कम में उसे सब्र नहीं है, इससे ज़्यादा उसके लिए कुछ नहीं है । इसके सिवा जो कुछ है उससे उसे सरोकार नहीं है ।

कसी हुई ढोलक पर नौ कम सौ के तोड़े की तरह, अपने हाथ के भरे हुक़्क़े की गुड़गुड़ाहट सुनकर अमीना ने कहा, 'कल क्या मेरे डर के मारे नींद नईं आई कै और कुछ ?'

अचानक बात आसमान से धरती पर उतर आई। पिछली शाम की याद ने पीरा के चमकते चेहरे पर काली छाया-सी डाल दी। उदास होकर बोला, 'अरी बोई कल वाली चों-चों होती रई हमारे कानों में। आज के दिन के लिए हमने सोची थी और, और हो गई और !'

कूड़ा भरने को तसला उठाते हुए अमीना ने कहा, 'तुमीं सारे रास्ते अपनी भावीजान के नात गाते आये थे !'

हमने एक भी बात झूंट कई हो तो बता दे। देख ले कैसा चांद-सा मूं है उसका !'

'उस चांद से मूं से बोल तो बड़े मीठे लिकले !'

'कसर तो मुल तुमने बी नईं छोड़ी !'

'तो हमें क्या बोलना नईं आता है ?'

'वो तो तैंने दिखा ई दिया।'

गर्दन तानकर अमीना ने कहा, 'जो मौके पे नईं बोलते तो बोलते कद ?'

पीरा ने एक गहरा सांस भरा और फिर छोड़ दिया। फिर दर्द की जगह दिखलाता हुआ-सा बोला, 'वो जो रातों-रात उठके चल दी—ये कोई बात हुई ? हम सोच रये थे कि दोनों मिल-जुल के रहोगी !'

अमीना ने तो यह कभी चाहा नहीं कि मिल-जुलकर न रहे। वह ही न रही तो इसमें अमीना का क्या दोष है ! दंगल के लिए वह ही तो पहिले से ख़म ठोके बैठी थी, अमीना ने कब ललकारा था उसे ? एक बात सी बात कही, 'वो हमसे माफी मांग ले, हम अब बी तैयार हैं !'

पीरा दुनियादार आदमी तो है नहीं पर न जाने किस भावना के बस में आकर उसने दुनियादारी की बात कही, 'जरा गरूर छोड़ के तू ई उससे माफी मांग ले तो कैसी रहे ?'

अमीना तन गई, 'ये बात उससे कओ जिसे गरूर है।'

पगले के मुंह से ज्ञान निकल पड़ा, 'जिसे गरूर है उससे क्यों कहें ?'

'तो जिसका कसूर नईं अै उससे बी मत कओ।'

कूड़े का भरा हुआ तसला उसने सर पर रक्खा और फेंकने चली तो हँसकर उसे सुनाता हुआ पीरा आप ही आप बोला, 'औरत बी हमें ऐसी मिल गई है कि बस जिरहबाज की खाला—जैसी हमें चैये थी !'

जाती-जाती ने उसे सुनाते हुए आप ही आप कहा, 'मैंने बी गिन-गिन के दो बीसी और पांच चिल्ले खेंचे हैं हीरा मिस्त्री, मिलती कैसे नईं !'

दो बीसी और पांच चिल्लों के हिसाब के फेर में जो पीरा ने हुक्क़े में दम मारने शुरू किये तो फिर नहीं हँसा। जली हुई चिलम के धुएं के आर-पार मीरा का दालान और खाली कोठा देखते-देखते न जाने क्या हुआ कि हुक्क़ा सरकाकर यकबयक खड़ा हो गया। भीतर गया, अंधेरे कोने में दीवार की ओर मुंह करके अच्छी तरह लुंगी बांधी, कुरता पहिना, औज़ारों का थैला कंधे पर लटकाया और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ दरवाज़े की ओर चला।

अमीना ने पुकारकर पूछा, 'कहां चले ?'

'एक काम है !'

कहता हुआ वह बाहर को लपका चला गया। अमीना कहती ही रह गई कि, 'अजी चपातियां तो ले जाओ, अबी पकाये देती हूं...'

पर वह नहीं रुका।

घर में पांव रखने से लेकर इस घड़ी तक रौनक़ का उसके पैसे से अमीना के ख़रीदे जाने का जो ताना अमीना के कलेजे में कुंडली मारे बैठा था वह पिछली शाम की धमाचौकड़ी, पहिली रात की लड़त और सबेरे की भाग-दौड़ में पीरा से अनबूझा, अनबोला ही फन फैलाये फुन्नाता रह गया।

□□

एक बात है कि पानी से गाढ़ा ख़ून होता है। लेकिन पैदा करने वाली का हो, तो ख़ून से भी गाढ़ा दूध होता है। वह यही दूध है जो ख़ून में लाली और लाली में शक्ति पैदा करता है। इस दूध में जो जीवन, जीवन में उमंग और आवेग है वह खुदाई रहमत का जीता-जागता सुबूत है। अल्लाह अगर मेहरबान न होता तो इस दूध को ख़ून पैदा करने का ज़रिया न बनाता, सीधा ख़ून पैदा करता। इसी दूध की मिठास और मिठास में जो कीमियाई आकर्षण है वह भाइयों के ख़ून में अपनत्व, मन में सहानुभूति और भावों में कोमलता लेकर पैदा होता है।

पीरा जो अपने घर से चला तो कहीं से चूना, कहीं से पीपा, कहीं से हांडी, कहीं से सीढ़ी, और अपनी कूंची लेकर चुपचाप मीरा के दुमंज़िले की बैठक में पहुंचा। बैठक खुली हुई थी और सब लोग ऊपर बालाख़ाने को ज़नानख़ाना बनाने में मसरूफ़ थे। पीरा ने बैठक का सामान इधर-उधर सरकाकर पीपे से हांडी में चूना भरा और दीवारों पर सफ़ेदी करने के लिए वह सीढ़ी टिकाकर चढ़ गया। खटर-पटर सुनकर मीरा ने ऊपर के दरवाज़े से झांका तो पीरा को देखकर ज़ीने से नीचे उतरता चला आया और ताज्जुब से बोला, 'अबे पीरा ? तू कद में को आया ? क्यों आया ? कली क्यों कर रा है ?'

सीढ़ी पर चढ़ा हुआ पीरा बोला, 'अरे रैन दे यार ! एक तो ये ई बुरी बात

हुई कि इत्ता बड़ा घर छोड़के तू ग़ैर के घर आ बसा। आ ई बसा तो मैंने सोचा कै इस मैले-कुचैले घर में कैसे रहेगी भाबी, जने किस कंत्राटदार की बेटी है!'

फिर बात को वहीं छोड़कर दीवारों को देखता हुआ बोला, 'दो-तीन हात फेरने पड़ेंगे!'

फिर आप ही आप हँसकर कहा, 'खबर नई, कद से नईं पुतवाया है कंजूस ने।'

मीरा दूध में घुल गया। ममता के हिलौरे मारते हुए सरोवर में ग़ोता खाकर वह उछाले के लिए हाथ-पांव मारना भूल गया। अपनत्व के दूधिया प्रभाव ने भाई को द्वैत और दौलत के जाल से खींचकर बाहर निकाल लिया। असलियत की मोती-सी आब चमक उठी।

मीरा ने आस्तीन चढ़ाई और पीपे में हाथ डालकर चूना घोलने लगा।

कूंची का एक लम्बा-सा हाथ दीवार पर मारकर रोने की तरह हँसकर पीरा बोला, 'हम सोच रये थे कै मिल-जुल कै रैंगे!'

मीरा ने भाई को दुलारा, 'मिल-झुल कै ई रैंगे रे, इस औरत जात का क्या है अबी खुस है अबी नाखुस है!'

सौदागर के वापिस ऊपर न पहुंचने की वजह जानने के लिए ज़नानख़ाने के पर्दे में से जोरू के भाई ने नीचे को झांका, पलटकर जल्दी-जल्दी इशारा करके अपनी बहिन को बुलाया और भाइयों के मेल का ख़तरा दिखलाकर कान में फुस-फुसाया, 'देखो अब यह हुआ करेगा। किसी तरह इमान से इन दोनों का मेल छुड़ाओ नहीं तो दग़ा हो जायगी।'

मेल से वफ़ा होती है, पर दग़ा भी होती हैं। पानी का कोई रंग नहीं होता, मेल का भी रंग नहीं होता। पानी में जैसा रंग मिला देते हैं वैसा ही हो जाता है। मेल भी इष्ट के अनुसार रंग बदलता है। जैसे कि एक दूध शरीकों के लिए मेल वफ़ा है, दूसरों के लिए दग़ा। सबरंग का खयाल ग़लत नहीं है।

ताव खाकर घात लगाये हुए बिल्ली के पांवों रौनक़ नीचे उतरी। सबरंग पीछे-पीछे आया। सीढ़ी पर दीवार की तरफ़ मुंह करके खड़े हुए पीरा को, और क़लई की हांडी ऊपर उठाये पीरा की तरफ़ ताकते हुए मीरा को इसकी आहट तक नहीं लगी। ग़ुस्से में होंठ भींचकर रौनक़ ने मीरा के साफ़े का पीठ पर लटका हुआ सिरा पकड़कर जो ज़ोर से झटका तो सफ़ेदी की हांडी ज़मीन पर गिरकर देसी पटाख़े की तरह धमाके से फूट गई और बिना रोड़ी की, गुड़ डालकर पीरा की घोटी और मीरा की छानी हुई सफ़ेदी चारों तरफ़ को छिटककर मीरा, रौनक़ और सबरंग के रेशमी-तनज़ेबी कपड़ों और चेहरों पर चिपक गई। यह देखकर पीरा की जो हँसी छूटी तो उसकी सरकती हुई सीढ़ी को उधर तो लपककर मीरा ने पकड़ा और सबरंग ने रौनक़ के दामन पर लगे हुए धब्बे झटकारने शुरू किये।

किसी तरह हँसी रोककर आड़ी-टेढ़ी सीढ़ी के उपर सरकसिया कलाबाज़ की तरह बदन साधे हुए पीरा बोला, 'सितम गुजार दिया भाबी, रातों रात उड़ियाई, जरा हमारा दिल बी तो देखा होता !'

होली के भड़ुओं की तरह रंगे हुए तीन मुसलमान, तीनों के बीच में फूटी हुई हंडिया, बिखरी हुई क़लई की फिसलन और दीवार पर लटका हुआ भंगेड़ी की तरह हँसकर अपना दिल देखने का इसरार करता हुआ दीवाना ! रौनक़ आपे से बाहर हो गई। भौंचक होकर ताकते हुए सौदागर से बिफरकर बोली, 'ऐ अब देख क्या रहे हो काठमारे से ? एक तो हमारे कपड़े खराब कर दिये, ज़रा अपनी शक्ल तो देखो आईने में !'

आईना तो शक्ल देखने के लिए वहां था नहीं, मियां का चेहरा सबरंग ने देखा। फिर पीठ उनकी तरफ़, नज़र फूटी हांडी की तरफ़ और आवाज़ रौनक़ की तरफ़ फेंककर सबरंग स्यापा करने की तरह बोला, 'तुम्हें धोखा हो गया, तुम्हारे मियां राज हैं पेशेवर !'

जैसे धचका-सा खाकर रौनक़ के मुंह से निकला, 'ऐ नहीं ?'

फिसलन में पांव जमाकर बेशर्मी से मीरा ने मौक़ा संभालने की कोशिश की, 'हम चाय कोई बी हों, तुम्हारे तो गुलाम ई हैं।'

रौनक़ चढ़ बैठी, 'राजगीरी तुम्हारा पेशा न होता तो तुम्हारा सगा भाई क़लई करता फिरता ?'

पेशे की असलियत ज़ाहिर होने से कन्नी काटकर मीरा ने भाई की तरफ़दारी करके कहा, 'देखो जी, एक तो हमारी म्हौबत का मारा वो मक्कान में कली करने आया, उप्पर से तुम उसकी जात बखान रई ओ, वो बिचारा बुरा नईं मानेगा अपने जी में ?'

पीरा की समझ में यह झमेला बिलकुल नहीं आया। हम तो राज हैं ही ! चुनाई-मरम्मत, क़लई-सफ़ेदी हमारा पेशा ही है, इनमें काहे का तो धोखा है, किसकी जात बखानी जा रही है और क्यों हम बुरा मानेंगे अपने जी में ? तमाम बातों में एक ही बात उभरकर समझ में आने वाली थी कि भाभी ने अपने मियां से मज़े में आकर चुपचाप ठठोली की जिससे हंडिया फूट गई, क़लई बिखर गई और सबके मुंह किकरौली वाली के दहेज़ के पजामे की तरह सफ़ेद बुन्दकी की कत्थई छींट जैसे हो गये। सो यह तो सिर्फ़ हँसने की बात है। लिहाज़ा तिरछी सीढ़ी पर बैठा हुआ वह सबको देख-देखकर बस हँसे जा रहा है।

रौनक़ ने दांत भींचकर कहा, 'ऐ वह क्या बुरा मानता मुआ, वह तो उल्टा हँस रहा है हमारे ऊपर। यह चाहे तुम्हारा भाई हो चाहे कोई हो, इसकी औरत ने हमें कसबी कहा है, हमें गंवारनों के सामने बे-हुरमत किया है। तुम बुरा मानने को कहते हो, हम इसे घुसने नहीं देंगे दहलीज़ में। कह दो इससे हमारी रक़म

इसी दम वापिस दे और फिर कभी रुख न करे दुमंज़िले का ।'

रक़म ? हां ऽऽह रक़म ! तीन सौ रुपया ! हवाला लेकर जिस पर बेगम ने सूद तायद करा दिया । देने की शर्त पर हालांकि लिया नहीं गया पर पीरा को देना पड़ेगा ही ।—लेकिन इसी दम कहां से देगा बेचारा ? पर मीरा ने रौनक़ से कहा, 'अजी तुम बी क्या बात कै रई ओ। चार दिन रुपिये दिये नई हुए अबी कां से दे देगा बिचारा ?'

रौनक़ अड़ गई, 'हम अभी लेंगे ।'

मीरा ने समझाया, 'अबी होंगे नई उसके पास ।'

कटखनी घोड़ी की तरह गर्दन हिलाकर रौनक़ ने कहा, 'हम लेकर छोड़ेंगे ।'

इस पीरा कम्बख़्त को जो लोग पागल कहते हैं वह ठीक ही कहते हैं। जाने क्या सूझी कि, 'भाबी हमारा दिल अजमा रई है, हम क्या जानते नई हैं ?' कहता हुआ सीढ़ी से नीचे उतरा, उतरकर कुरता ऊपर को उठाया, लुँगी की टेंट में से दरियाशाह वाली पोटली निकाली और रौनक़ की नाक के सामने झुनझुना-सा बजाकर बोला, 'देख ले, रुपिये तो मेरे पास मैंजूत हैं पर दूंगा नई ।'

आदमियत के जिस दुश्मन ने सबसे पहिले रुपया ईजाद किया उसकी भी अल्लामियां से बहुत ही अंदरूनी अदावत होगी ! वह ज़रूर ख़म ठोककर उसकी कचहरी से निकला होगा कि मैं भी देखूंगा कि अपने बंदों में कितना ईमान, कितना सब्र, कितना क़रार और कितना लिहाज़ तूने अता फ़रमाया है । तेरे जैसा दूसरा अगर तेरी दुनिया में मैंने पैदा न कर दिया तो मुझे भी तू क्या याद रक्खेगा । जिसे तू दुनिया का आधार समझता है उस दीन से, अगर तेरे जैसा ही दूसरा पैदा करके मैंने उसकी पूजा न करा दी तो मेरा भी नाम आदमी नहीं ।

पोटली की छनकार सुनकर रौनक़ के ही नहीं मीरा के भी तेवर बदल गये। भाई भाई की नीयत पर शुबहा करने लगा और बीवी शौहर की छाती पर चढ़ बैठी, 'देखा ! रुपया अंटी में लगाये फिरता है और क़र्ज़ा अदा करने से इन्कार करता है बेईमान ! तुम कहते हो कहां से देगा बेचारा है ?'

मीरा ने पीरा से कहा, 'इसका क्या मतबल भई ?'

पीरा ने कहा, 'मतबल वोई, रुपिया है, पर दूंगा नई ।'

ताव-पेच खाकर रौनक़ ने पालतू हुसकाया, 'सबरंग मियां, ले लो इसी वक़्त अपने सारे रुपये और मुनाफ़ा !'

सबरंग कमर लचकाता हुआ पीरा की तरफ़ बढ़ा तो हँसकर चूने की फूटी हुई हांडी और टेढ़ी टिकी हुई सीढ़ी के चारों ओर कोड़ा जमालशाही खेलता हुआ पीरा बोला, 'मैंने कै दिया नई दूंगा ।'

दायरे में दौड़ लगाते हुए सबरंग ने कहा, 'हमें हुक्म हो गया है इमान से, हम लेके छोड़ेंगे !'

पोटली पेट से लगाकर बेसाख़्ता हँसता हुआ और चक्कर काटता हुआ पीरा बोला, 'साले क्यों हलकान करता है, रुपिया नईं दूँगा ।'

साले की बात पर सबरंग ने रुककर हांफते हुए ईमान से लाहौल पढ़ा तो मीरा ने नाराज़ होकर पीरा से कहा, 'हँसने की बात नईं है पीरा, इनके रुपिए दे दे ।'

एकदम चुप होकर पीरा ने मीरा से पूछा, 'इनके रुपिए कौन से ?'

'जो हमने तुजे दिये वो इनों के थे !'

'अच्छा ?'

पीरा सोच में पड़ गया और फिर बोला, 'ये बात है तो बी कोई बात नईं। कईं से मजूरी के आये नईं और हमने दिए नईं ।'

रौनक़ ने कहा, 'यह क्या चोरी के हैं ? जो हैं उनमें से दो इसी वक़्त !'

पीरा ने समझाया, 'चोरी के नईं ऐं भाबी, पराये हैं । इनमें से मैं दे नईं सकता ।'

मीरा जानता है कि पराये हैं तो पीरा नहीं देगा, चाहे उसकी गर्दन मार दी जाय । वक़्त टालने के लिए औरत को मर्दानगी दिखलाता हुआ पीरा से बोला, 'जा तू चला जा ह्यां से । दो दिन के भीतर-भीतर रुपिया नईं फेरा तो तू बेइमान से बेइमान है !'

दांत मिसमिसाकर रौनक़ ने मीरा से कहा, 'ऐ लानत है सौदागर तुम्हारे ख़ानदान की ईमानदारी पर !'

फिर पीरा की तरफ़ मुड़कर बोली, 'अगर ईमानदार हो तो हमारी रक़म लेकर क़दम रखना इस दहलीज़ पर । जाओ चले जाओ यहां से ।'

तेज़ी से रौनक़ ज़ीने की तरफ़ लपकी ।

मीरा का किया-कराया काम, मना-मनाया माशूक़ और बना-बनाया खेल बिगड़ गया । चूने के पीपे में थोड़ी देर पहिले उठा हुआ भाई की मुहब्बत का दूध-सा उफान गंदी मोरी के पानी के छपाकों से बुझकर बैठ गया । बीवी को सुनाकर उसने जोर से भाई को धमकाया, 'जाता क्यों नईं जब कै दिया उनोंने तो !···'

और वह रौनक़ के पीछे भागा ।

मीरा को पर्दे के पीछे जाते हुए देखकर यकायक पीरा को एक बात याद आ गयी । पुकारकर बोला, 'सौदागर, पीर के दिन काम लग जायगा फिरके ! आवेगा न ? तेरा नाम है लम्बर में !'

काश कि इस वक़्त मीरा के हाथ में कन्नी होती, थापी होती, बसूली होती या गुम्मा ईंट होती, तो ऐसी घुमाकर मारता जो पीरा के खोपड़े की खील-खील बिखर जाती । वहीं से चीख़ मारी, 'अबे तू जाता क्यों नईं करमफोड़ ?'

इतनी सीधी और भले की बात पर मीरा के इस तरह चिढ़ उठने की वजह

पीरा बिलकुल नहीं समझ सका। समझाने की कोशिश में हिलते हुए पर्दे की तरफ़ थोड़ी देर तक बुद्धू की तरह ताकता रहा और फिर यह नतीजा निकालकर कि 'पगला है मेरा भाई' आप ही आप हँस पड़ा और हँसकर क़लई भरने के लिए दूसरी हांडी ढूंढने लगा।

होशियारी और दीवानगी के दरमियान की लकीर बहुत बारीक़ है। ज़माना जिस होशदारी को अंधियारी राहों के लिए ज़रूरी समझता है वह ऐसी ही तो नहीं है जैसी पीरा की दीवानगी ?

□□

दिन भर पीरा के घर में पास-पड़ौसनों की आ-जा लगी रही। किस बेलिहाज़ के पैसे की मोहताज होकर उसने ज़िंदगी के इस जन्नती दरवाज़े में क़दम रक्खा है, इस खटक को तीर की नोक की तरह दिल में कोंचे हुए अमीना दिन भर आये-गयों की आवभगत करती रही, बराबर वालियों से हँसती रही, पक्की-पोढ़ियों की सुनती रही और इस तीर की नोक को खिचवाने के लिए पीरा मिस्त्री का इन्तिज़ार करती रही।

दिनमुंदे जब टीन की ढिबरी उसने जलाई तब पीरा आया। औज़ारों का थैला कोने में पटका और हुश करके दीवार से टिककर बैठ गया। अमीना ने हुक़्क़ा लाकर सामने रक्खा तो उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुराया। कैसी तसकीन है इस दीवाने की मुस्कान में कि इबादत की ज़रूरत नहीं है। मुरझाये हुए सांवले-सलोने गुलाब के फूल पर बरबस ताज़गी आ गई।

मुंह फेरकर अमीना ने पूछा, 'करियाये मजूरी ?'

नखरे से बोला, 'ये तो काम ई है अपना !'

'मैं पुकारती रई, रोटियां ले जाओ, रोटियां ले जाओ !'

झूठमूठ पछतावा करके बोला, 'ले मुजे याद ई नई रया कि अब पकाने वाली आ गई है !'

'कहां खाई रोटी ?'

'अरी खाने की क्या चलती है, वां खबर नई कित्ते दिन से कली नई करवाई थी दीवालों पे। फुरसत ई नई मिली रोटी खाने की।'

'इत्ती महनत का काम था तो मजूरी भी बत्ती ही मिली होगी !'

पीरा हुक़्क़ा पीने लगा।

घर के अधिकार के साथ-साथ घरवाले की कमाई का अधिकार औरत को लुभाव में मिलता है ! पीरा ने जवाब नहीं दिया तो हाथ फैलाकर बोली, 'लाओ !'

'क्या, पैसे ?···वो काम पैसों-ऐसों का नई था।'

अमीना ने जवाब तलब किया, 'क्यों ? दिन भर काम किया तो पैसे क्यों नईं ?'

पीरा ने सफ़ाई दी, 'भाई और भाबी जिस घर में जा के रये हैं उसमें कली करनी थी। मैंने सोचा ये बड़े घर की बेटी है, कैसे रँगी !'

बहुत गर्म हांडी में बघार लगा। छन्न से जलकर सारे मसाले की राख हो गई। जली-जली-सी पहिले तो वह इस औघड़नाथ को ताकती रही फिर बोली, 'उनोंने बुलाया था ?'

'नऽऽईं, वो क्या बुलाते !'

अब जले हुए मसाले की बदबू फैली, 'तो आपी आप उमाला आ गया भाई-भाबी का !'

पीरा ने कहा, 'अरी उमाले की क्या बात है, भाई-भाबी तो वो हैं ईं।'

अमीना झुंझलाई, 'उन सौदागर साब को इत्ती बी ना सूजी कि भाई ने दिन भर काम किया है, रोटी ना सई इसे मजूरी तो दे दूं ?'

पीरा हँस पड़ा, 'नैदान है तू तो। भाई से मजूरी लेता मैं ? फिर वो बी तो ऐसेई नई सादी करके लाया है, जैसे हम तुजे लाये हैं, ऐसे में पैसे-टके की क्या बात ?'

बात नावाजिब भी नहीं थी और मियां के भाई से उसका कोई कीना-क़रीना भी नहीं था। अमीना कोई ऐशबेगम की बेटी भी नहीं कि वजह-बेवजह खोंखिया उठती। घूंट पी गई। घूंट तो पी गई पर इस घूंट की घुटन से ही कलेजे में कुंडली मारे बैठी हुई बात भीतर से फुंकार उठी। अमीना ने पूछा, 'उस छैल-छमक्को से भी बात करी होगी तुमने !'

'क्यों नईं करते ?'

अमीना पीरा के बिलकुल सामने आकर बैठ गयी और बोली, 'क्या-क्या बात हुई, सब बताओ मुजे।'

हँसकर पीरा ने कहा, 'कुछ बी नईं ऐसेई-वैसेई मखौल मारती रई पैसे मांग रई थी···'

अमीना के कान खड़े हुए, 'कैसे पैसे ?'

पीरा ने बता दिया, 'अरी वो तुस्से सादी करने के वास्ते हमने सौदागर से तीन सै रुपिये लिए हैं न !'

जिस बोली की गोली अमीना की छाती में घुसी हुई उसे इतनी देर से तड़पा रही थी वह अचानक इस तरह खिंचकर निकल पड़ी तो वह चीख़ मारकर कराह उठी, 'तो जिस्से लिये हैं वो मांगे, वो बिच में किसने जामिन लगाई है ?'

दाना आदमी ने उस नादान औरत के जख्म पर यों फाहा लगाया कि, 'अरी जैसे तू अर हम मिलके एक हैं वैसेई वो भी भीतर से एक हैं। सौदागर भी कै

रया था कि रुपिये उसी के हैं, कोई वैसेई थोड़े ई मांग रई है ?'

न रोने की गुंजाइश रही, न कराहने की । न रार की न तकरार की । अमीना ने समझ लिया कि गंदे नाले के छिड़काव से बंजर में बहार आयी है । नसीब ने लंगड़ा लाचार करके उसे ज़िन्दगी की चढ़ाइयों पर दौड़ा दिया है । एक कमअसल औरत के ज़नमुरीद मर्द के क़र्ज़ का बोझ उसकी गर्दन पर सवार है और जब तक वह चुक नहीं जायगा, उसकी गर्दन हल में जुते हुए बीमार बैल की तरह नीचे को ढलकी रहेगी । गुमसुम होकर वह सोचने लगी कि भूखा-प्यासा रहकर, बिना मजूरी के, बिना बुलाये, बेलिहाज़ों के घर में क़लई करता फिरने वाला यह अहसास का पुतला क्योंकर अपनी बीवी को इस लानत से बचा पायेगा ?

औरत को चुप और सुस्त देखकर उठते हुए पीरा हँसा । दोनों हाथ ऊपर को उठाकर कुरता उतारते हुए बोला, 'अरी तू किस फिकर में पड़ गई नैदान, ले सदरा ले ।'

गर्दन से निकलते हुए उल्टे कुरते के पीछे छिपी हुई उसकी आंखों से आंखें बचाकर चौड़ी-चकली छाती से फिसलती हुई अमीना की नज़र लुंगी की फेंट में उरसी हुई पोटली पर पड़ी तो आगे बढ़कर उसने एक हाथ से पोटली पकड़ ली और पूछा, 'इसमें क्या है ?'

पोटली खिसककर उसके हाथों में चली न जाय, इस खटके से कुरता गले में लटका हुआ छोड़कर दोनों हाथों से पोटली पकड़ने की कोशिश करता हुआ पीरा झट से उकड़ूं बैठ गया । एक हाथ से कसकर पोटली पकड़े हुए अमीन भी उसके घुटनों से घुटने भिड़ाकर सामने डंट गयी और आंखों पर आंखें जमाकर बोली, 'बताओ इसमें क्या है ?'

पीरा ने कहा, 'तू छोड़ दे जब बताऊंगा ।'

'पैले बताओ जब छोड़ूंगी ।'

हँसकर पीरा ने कहा, 'पैले तू छोड़ दे जब बताऊंगा ।'

छोड़कर बोली, 'लो छोड़ दी, बताओ ।'

मुस्कुराकर बोला, 'इसमें हैं रुपिये ।'

ताज्जुब से अमीना ने कहा, 'रुपिये ? कित्ते ?'

हाथ में पोटली तोलते हुए पीरा ने अन्दाज़ बताया, 'कोई पान सेर पक्के तो होंगे, जादै बी हों !'

खीझकर अमीना ने कहा, 'तो फिर दिये क्यों नईं अपनी उस भाबी चुड़ैल को ?'

रसाई से पीरा बोला, 'गाली वाली रैन दे ।'

अकड़कर अमीना ने कहा, 'क्यों रैन दूं ? याद भी है, क्या-क्या चुभनी-लगनी कई अैं उन्ने मुस्से ?'

मीठा-मीठा-सा बोला, 'अरी वो भी कोई याद रखने की बात है भलीमानस !'

चांद की आरसी पहिने हुए अंगूठे के बराबर वाली उंगली को सतर तानकर अमीना ने पीरा को बजाया, 'हीरा मिस्त्री, उसके रुपिये नईं दोगे तो वो रस्ता रोक के तमासा दिखायेगी छिनाल !'

नहीं देने की बात से अचरज में आकर पीरा ने कहा, 'देंगे क्यों नईं ?'

'तो इसमें से क्यों नईं दिये ?'

'कई थी उसने—पर इसमें से तो मैं देने वाला ई नईं ऊं ।'

'क्यों ?'

'अरी इसमें से कैसे दे देता ? ये तो दूसरे के रुपिये हैं ।'

अमीना ने जिरह की, 'दूसरें के रुपिये तुमारे पास क्यों ?'

हँसकर पीरा ने कहा, 'ओः तेरा भला हो जाय जिरहबाज का । अरी जिसके हैं उन्ने अपने काम को दिये हैं, वैसे हां, इनें खर्चं मैं ई करूंगा ।'

इस भोले बच्चे को रस्ते बीच में कहीं कोई ठग न ले, इस डर से हाथ बढ़ाकर अमीना ने कहा, 'लाओ मुजे दो, मैं रख लूं !'

और बच्चे ही की तरह झटपट पीठ पीछे पोटली छुपाकर पीरा बोला, 'ना, य बात नईं होगी ।'

तमककर अमीना खड़ी हो गई, 'क्यों ? मैं कोई गैर हूं या लेके भाग जाऊंगी ?'

उठकर पोटली फिर से लुंगी के अंटी में कसते हुए पीरा ने अमीना से कहा, 'तेरे लिए मेरी जान हाजर है पर ये पोटली नईं दूंगा ।'

'देखूं कैसे नईं दोगे ?'

कहकर अमीना पीरा के ऊपर झपट पड़ी । पीरा ने दोनों हाथों से पोटली जकड़ ली और ज़ोर-ज़ोर से हँसता हुआ कमर से दोहरा होकर कंगारू की तरह उछट्टी मार-मारकर चक्कर काटने लगा । अमीना की हँसी छूट पड़ी । दुनिया के दुख-दर्द और झगड़े-झंझट को भूल-भालकर दोनों जवानियां हँसती-खिलखिलाती हुई एक-दूसरे से छुआ-छू का खेल खेलने लगीं । अमीना ने लपककर पीरा की लुंगी का सिरा पकड़कर जो ज़ोर का झटका मारा तो अंटी ढीली होकर खिसक गई । 'अरी लुंगी खुल जायगी, लुंगी खुल जायगी बेसरम' पुकारता हुआ वह लुंगी और पोटली पकड़े हुए कोठे में भागा । अमीना ने पीछा किया और फिर कोठे के किवाड़ बंद हो गये ।

□□

क़तराशाह होते तो दौलत की करामात देखते ।

बरसों बंद पड़ा हुआ अलीजान का ठूंठ-सा दुमंज़िला मकान सौदागर की

दौलत के जादू से चार दिन के अन्दर ही रंग-रोग़न से चाक़-चौबंद होकर चमक उठा। चार दिन में ही अमीरअली सौदागर की बेगम के रूप और उसके हरम की सजावट की बगदार की चौहद्दी में शोहरत हो गई। नीचे बैठकख़ाने में अमीरअली सौदागर की मसनद जम गई और आते-जाते राहगीर रुक-रुककर सलामें बजाने लगे।

लेकिन सौदागर को दिक़्क़त हुई रुपये की? यानी मतलब यह कि रुपया तो उसके पास बिलकुल था ही नहीं, अशर्फ़ियां ही अशर्फ़ियां थीं। बगदार जैसे उजाड़ गांव में तो क्या, दिल्ली-आगरे जैसे बड़े-बड़े शहरों में भी सिर्फ़ अशर्फ़ियों के दम पर जिन्दगी बसर करना आसान भी नहीं है और ख़तरे से ख़ाली भी नहीं है। वाक़ई इस आड़े वक़्त पर काम आया अलीजान पंसारी। सौ-सौ जोखों उठाकर भी उसने सिर्फ़ पांच रुपये फ़ी अशर्फ़ी बट्टे ख़र्चे के काटकर सौदागर की अशर्फ़ियां भुनाने का ठेका ले लिया।

ख़र्च तो भुनी हुई अशर्फ़ियों से चल निकला, लेकिन ग़ज़ब की बात है कि बेभुनी अशर्फ़ियों की बौछार से भी रौनक़ के चौड़े-चौरस मुखड़े पर मछली फांसने के हुक जैसी नाक में पड़ी हुई छोटी-सी नथनी हिली तक नहीं। रोज़ तनी-तनी-सी अंधेरी रातें आती हैं, और जेबों से निकलकर पलंग की सफ़ेद बर्राक़ चादर पर अशर्फ़ियां बिछ जाती हैं, पर चादर बग़ैर सरवटों के ज्यों की त्यों दीदे-से फाड़े रहती है। आख़िर छज्जे की तरफ़ से सुबह की धूप घासलेटी क़ंदील की रोशनी को थपड़ाती हुई भीतर घुस आती है और दोनों के मिलवां उजाले में पलंगड़ी पर पड़ी हुई पीली-पीली अशर्फ़ियां मिट्टी की टीकरियां-सी नज़र आने लगती हैं।

रोज़ दिन निकल आता है और रोज़ नथनी की घुंडी के ज्यों की त्यों होने की दिलजमई करके, बग़दाद की बेगम नीचे फ़र्श पर पड़े हुए रईसे-बग़दाद से ताने की तरह अस्सलाम अलैक करती हैं और ग़ुस्ल को चल देती हैं। यों ही क़ुछ वाले-कुम-सी करके पीछे से उनकी उचक-लचक चाल को सौदागर देखते रहते हैं, और आग बुझ जाने के बाद आहिस्ता-आहिस्ता उठते हुए धुएं की तरह घुमसते रहते हैं।

कोई-सा होता तो पलंग की पट्टी में सर मार लेता। छुरियों से सीना गोद लेता, या गरेबां फाड़कर सेहरा की तरफ़ बेतहाशा भागा चला जाता। यह सौदागर का ही दिल-जिगरा था जो हार-हारकर बार-बार कामयाबी के लिए कमर-बस्ता हो जाता था।

आशिक़ की आबरू इसी में है।

दोपहरी ढलकर शाम के क़रीब आने को थी। उजाड़ देहात की बीरानी से परेशान ऊपर वाले कोठे में फ़र्श पर लेटी अधलेटी-सी रौनक़ अल्लाबंदे के साथ रमी खेल रही थी। अल्लाबंदे शायद उनकी दिलबस्तगी के लिए ही हार पर हार खाते चले जा रहे थे। यह बाज़ी भी रौनक़ जीत गई तो सीधी होकर दूसरी के

लिये पत्ते गडमड करती हुई बोली, 'लाइये, चवन्नी के हिसाब से हमें उन्नासी रुपये दिलवाइये।'

बलबलाकर अपनी हमेशा की बिलम्पत में अल्लाबंदे ने कहा, 'बस तो बी, सरंगी से पानदान में डाल लो, पानदान से सरंगी में डाल लो—हिसाब सफ़ा।'

ताशों की गड्डी अल्लाबंदे पर उछटाकर रौनक़ ने कहा, 'ऐ जाओ चचा, तुम से तो न हार के फ़ायदा, न जीत के फ़ायदा।'

अपनी अबरुओं की तरफ़ आंखें चढ़ाकर अल्लाबंदे बोले, 'हमें तो कसम से न तुमसे जीत के नुकसान है, न हार के नुकसान है।'

पानदान अपनी तरफ़ सरकाते हुए रौनक़ ने कहा, 'चचा यह सुराग़ नहीं लगा कि यह इत्ती अशर्फ़ियां हमारे मियां के पास कहां से आईं!'

बिखरे हुए ताश इकट्ठा करते हुए चचा बोले, 'हमें तो कभी का लग गया।'

चौंककर रौनक़ ने पूछा, 'क्या?'

बंदे मियां ने भेद खोला, 'यह तुम्हारे दूल्हा अलीबाबा के मुतबन्ना (दत्तक) हैं।'

ढीली पड़कर रौनक़ बोली, ऐ नौज! अच्छा सुराग़ लगाया।'

बंदे ने कहा, 'न सही, मगर तुम्हें इससे क्या है?'

पान पर चूना लगाते हुए उकताहट से रौनक़ ने कहा, 'हमारा तो इस बियाबान में दिल नहीं लगता, कहो तो चल दें यहां से उठके!'

'और अशर्फ़ियां किसके लिए छोड़ चलें?'

रौनक़ कुछ बोली नहीं। बंदे मियां ने बुर्दबाराना (गंभीर) लहजे में धमकाया, 'कसम से दीवानी हो जाती हो कभी-कभी...'

फिर समझाकर बोले, 'तुम निकाह पढ़वा के आई हो, तहम्मुल से (धीरज से) अपना हक़ हासिल करो।'

रौनक़ जानती है कि हक़ हासिल करने के लिए फ़र्ज़ अदा करना पड़ता है; लेकिन फ़र्ज़ अदा करने के ख़याल से ही मलमलाहट-सी होती है। चाहती है कि तारों को इतना तान दूं कि तंबूरा बिना छेड़े ही झनझनाता रहे। बंदे मियां समझाते हैं कि ज़्यादा तनाव से तार टूट जाता है, और तंबूरा फिर तंबूरा नहीं, बल्कि दोतारा रह जाता है। लेकिन रौनक़ दोतारे पर ही मींड़-मूर्छनाए निकालने का भरम बांधे हुए है। गिलौरी की रकाबी बंदे मियां के सामने सरकाते हुए ज़िद्दी बच्चे की तरह लाड़ में आकर पहेली की बोली में बोली, 'हमारे पास जित्ते भी ज़ेवर हैं उनमें अपनी नाक की यह नथनी हमें बहुत पसंद है।'

गिलौरी बंदे मियां ने कल्ले में तो दबा ली मगर चबाई नहीं। रौनक़ की नथनी की तरफ़ देखा, फिर उसकी अबरुओं की तरफ़ और फिर कुछ ऐसी आवाज़ में बोले कि समझ में आ जाय तो ठीक, पर न समझकर 'क्या?' पूछ बैठें तो कुछ

और कहा जा सके, 'माशाअल्लाह यह ज़ेवर भी ऐसा है कि कसम से चाहे जित्ती दफ़ा उतार लो, चाहे जित्ती दफ़ा पहन लो, इसकी आब नहीं जाती !'

इस समझी-समझाई बात को रौनक़ भला कैसे न समझती ? ऊपर से यह और समझ गई कि कम्बख़्त बंदे ने इस तरह तारीफ़ करके उसकी नथनी की आब पूरी तरह उतार डाली। बात को कानों पर टालकर बोली, 'न यहां वह मजलिसें हैं, न सोहबतें हैं, न रंगतें हैं...'

टोककर बंदे मियां ने कहा, 'मगर अशर्फ़ियां हैं। हर चीज़ पर ख़ाक डालो बानों, मतलब पे नज़र रक्खो ! तुम्हें इस बगदार का नाम पलट के रौनक़ाबाद करना है, रौनक़महल तामीर कराना है। जिन्होंने रियासतें बसाई हैं उन्हें लाखों के ख़ून बहाने पड़े हैं और तुम रंगतों के लिए परेशान हो रही हो ? कसम से हमें तो देखो !'

ज़ीने में आहट हुई। रौनक़ ने जल्दी-जल्दी रमी के पत्ते बांटे और खेल में डूब गई। आगे-आगे सबरंग और पीछे-पीछे सौदागर आये। भूखे की दुहाई और प्यासे की पुकार नज़रों में समेटे हुए, दाता को धमक न लगे इसलिए अचक क़दम रखते हुए, आकर रौनक़ के पीछे सटकर सौदागर बैठ गये। पत्तों के जोड़-तोड़ में जब रौनक़ को जैसे उनके आने की, और आकर बैठने की ख़बर ही नहीं लगी तो सौदागर ने उनकी पीठ में डरते-डरते यों उंगली छुलाई जैसे दिये की लौ में छुलाई हो। झुरझुरी-सी लेकर बिना देखे ही रौनक़ ने अलकसाकर कहा, 'क्या हुकुम है हुज़ूर ?'

'हुज़ूर' सुनकर मीरा की हिम्मत बंध गयी। साले-सुसरे की मौजूदगी को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करके, हुज़ूर गिड़गिड़ाकर हाले-दिल बयान कर ही बैठे, 'देखो बेगम, हमने तुमारे लिए क्या-क्या तो कड्डाला और क्या-क्या करने को तैयार बैठे हैं। हम तुमारे वास्ते अपने भाई से न्यारे हो गये, पुस्तैनी मकान छोड़ दिया, रातों-रात दुमंजला खुलवा दिया, पर तुम खुस नजर नईं आईं !'

रौनक़ शायद इस जांगलू की बोली से ही जलती है, वर्ना बातें तो सभी सच थीं। अनसुनी करके चुपचाप खेलती रही। पर मीरा भी आज जान पर खेलने का फ़ैसला ही करके आया था। बोला, 'कुछ नराजी है हम से ?'

बायें हाथ में ताशों का जापानी पंखा फैलाये, दायें हाथ से एक भारी-सा पत्ता फेंककर उलाहने की उचटती-सी नज़र सौदागर पर डालकर रौनक़ बोली, 'अल्ला आक़बत (परलोक) तो न बिगाड़िये।'

बैठा-बैठा ही उचककर मीरा ज़रा-सा और आगे को सरका और दांत निकालकर बोला, 'कैसे ? हमने कैसे बिगाड़ी ?'

बंदे मियां का फेंका हुआ पत्ता उठाकर तीया बनाते हुए रौनक़ ने उदासी से कहा, 'मैं और आपसे नाराज़ हो सकती हूं ?'

पीछे से ही उसकी ठोड़ी में हाथ डालकर मीरा ने पूछा, 'फिर ऐसे कैसे बोल रई ओ उतरी हुई-सी ?'

'सुब्हानअल्लाह' कहकर अल्लाबंदे ने हाथ के पत्ते फेंक दिये और तारीफ़ में पुकार उठे, 'क्या बात कही है दूल्हामियां ने, वाह वा !'

मीरा और तो कुछ नहीं समझा लेकिन इतना समझ गया कि कोई बढ़िया बात कह दी उसने। पत्ते फेंककर रौनक़ ने अपनी ठोड़ी में लगा हुआ उसका हाथ काटकर कहा, 'मियां हटो भी, हमें अपना घर याद आ रहा है। तुम्हें हमारी ख़ानदानियत का हाल मालूम है ! ज़रा सोचो कि ऐसा वहां होता तो क्या-क्या हुआ होता !'

कैसा ?—कुछ मालूम नहीं, लेकिन ज़रूर कुछ होने से रह गया। फिर बेगम का ही क्या क़ुसूर है जो तब से अब तक बेरुख हैं ? उसका अपना भी क्या क़ुसूर है जब नवाबी घरानों की रस्मों से वह वाक़िफ़ ही नहीं है ?' बहुत-सी रस्में होंगी जो ज़चगी, सुन्नत, मंगनी, शादी, बारात रुख़सती और ख़ुसूसन पहली शब के मौक़े पर नवाबों में मनाई जाती होंगी ! मेमार बेचारा उन्हें बतलाये बग़ैर कैसे जान सकता है। पर ज़रूर कुछ रह गया। कहां आकर गांठ खुली है। पीछे हटाया हुआ हाथ अपनी छाती पर रखकर मीरा ने कहा, 'तुम हुकम चलाओ, जो कोई ना करें तो कैना।'

कोने में से सबरंग बोले, 'हमारे लोगों में से कोई नये मकान में जा के बसता तो नाच होते, गाने होते, दावतें होतीं, इमान से इस शब को नाते-रिश्ते में जाने क्या-क्या लेन-देन हो जाता—क्यों चचाजान ?'

बहुत मजबूरी-सी ज़ाहिर करते हुए चचाजान ने कहा, 'यहां इन बातों की किसे मालूम है ? देहातियों की बस्ती है।'

रौनक़ ने बुरा माना, 'वाह, हमारे मियांजी देहाती थोड़े ही हैं !'

मीरा चने के पेड़ पर चढ़ गया, 'दावत-जापत, लेन-देन का सब बंदोबस्त हम करेंगे, पर नाचने-गाने वाली तुमसे बढ़िया कहां से लावें ?'

हुनर की तारीफ़ से इठलाकर हुनरमंद ने दिल खोल दिया। छन-छन करके घुंघरुओं की जोड़ी खींचकर बोली, 'लो चचा, ज़रा मिलाना साज़, मियांजी भी क्या याद करेंगे आज के दिन को।'

अल्लाबंदे ने सारंगी के कान उमेंठे।

सबरंग ने ठक-ठक करके जोड़ी मिलानी शुरू की।

रौनक़ ने घुंघरू बांधकर बैठे ही बैठे ठोकर लगाई।

रईसे-बगदार ख़ानदानी तमाशबीन की तरह मसनद पर डट गये।

संगत में रंगत आई।

और बगदार के चौक में फैल गई।

□□

शाम हो रही थी। सुबह की तरह अलीजान पंसारी की दूकान के बाहर अपने-अपने औज़ारों के थैलों को दायें-बायें रक्खे हुए काम-धाम से लौटे हुए कारीगर, नीचे ज़मीन पर बैठे हुए चिलम फूंकते दिन भर के करे-धरे का चिट्ठा बांच रहे थे। लम्बे-लम्बे घूंघट किए औरतें 'बाशशापसंद' पर पानी भरने के लिए आ-जा रही थीं।

अचानक तबला-सारंगी और घुंघरुओं की तमक-झमक सुनकर सबकी नज़रें दुमंज़िले की तरफ़ उठ गईं।'

बहुत दिन से सुस्ताई हुई सारंगिये की उंगलियों ने, तबलची की चाटों ने और नौची की हाज़िर-तबीअत ने मिलकर मीरा को मीटर-मीटर भर ऊपर को उछाल दिया। ख़याली सुहागरात की पहिली शाम ऐसी झुककर दुमंज़िले में आई कि गांजे की चिलमों से सुनहरी धुआं निकलने लगा। प्यासे शराबी के सामने अंगूरी की बोतल ने ऐसा ता-थैया मचाया कि बालाख़ाना सुकड़कर छोटा हो गया। गाती-नाचती, ठुकमती हुई रौनक़ जोश में आकर अन्दर से छज्जे की तरफ़ निकल गई।

बस यहीं ग़ज़ब फट पड़ा।

गाने-बजाने की आवाज़ सुनकर दो-दो चार-चार जनी सरों और कूल्हों पर मटके-मटकियां रक्खे छलकती-भीगती आती गईं और एक-दूसरी को देखकर थमती गईं। इस तरह कुएं से पानी भरकर लौटती हुई औरतों का दुमंज़िले पर जमघट लग गया। करीमन और अमीना इत्तिफ़ाक़न इस जमघटे में सबसे आगे थीं। दरअसल रौनक़ नाचती हुई जो छज्जे में आई, वह इसी जमघटे की खुसर-फुसर सुनकर आई थी। औरतों ने वज़न के मारे कूल्हे तो दायें-बायें झुका लिये, गर्दन तानकर सर के मटके पीछे को खिसका लिए और अलीजान की दूकान के आगे से छज्जे की तरफ़ ताकते हुए मर्दों को पीठ देकर घूंघट ऊपर को पलट लिये। पंसारी की दूकान के बाहर औज़ारों के थैले लादे कारीगर, ख़रीदा हुआ सामान हाथों में संभाले गाहक, और गुल्ली-डंडे लिए हुए बीसियों नंगे-अधनंगे बच्चे, सबके सब साकित होकर इस तरह ऊपर को ताकने लगे जैसे रमज़ान के आख़री दिन ईद के चांद को ताकते हैं।

इस फूंस में टीमी इस तरह लगी कि जब छज्जे में निकलकर नीचे की भीड़-भाड़ देखने के बावजूद रौनक़ ने ताल न टूटने दी और ठुमका लगाये ही चली गई तो [illegible]टकों के पानी के साथ-साथ कुछ औरतों की हँसी छलक पड़ी। देहातनों की इस [illegible]ी से रौनक़ की ठोकर जो ताल से चूकी तो भीतर तबला कहीं और सारं[illegible] हो गई। ताल-सुर के इस दर्दनाक फ़ज़ीते को ऐशबेगम की रौनक़

जैसी शागिर्द कैसे बरदाश्त कर सकती थी। तलुवों से जो लगी तो सिर से तालुवे तक पहुंच गई। चीख़कर रौनक़ ने कहा, 'ऐ भीड़ क्यों लगा रक्खी है मेरे दरवाज़े पे। क्या देख रही हो दीदे फाड़-फाड़ के?'

जाने कौन बोल पड़ी, 'हम रौनक देख रई हैं, जरा-सी और नाच दे!'

बस इतने के बाद जो भड़की तो भड़कती ही चली गई। रौनक़ ने गाली-सी दी, 'तुम दहक़ानियों की लौंडियां हमारा नाच देखोगी?'

गाली खाकर किसी ने ढेला मारा, 'और तुम यहां किस काम के लिए आई हो?'

रौनक़ ने पत्थर फेंका, 'तुम से पानी भरवाने आई हूं।'

इस पर करीमन ने आगे बढ़कर सच बोल दिया, 'हम तो जानें भाइयों को लड़वाने आई हो!'

मोर्चे पर, सबसे पहिले उसे 'कसबी' कहने वाली औरत की पिछाड़ी संभाले हुए अमीना को देखकर रौनक़ के तन-बदन में आग लग गई। ललकार कर बोली, 'ऐ वह जो तुम्हें हिमायती बनाकर लाई है उसे बुलवाओ तो जानें!'

झगड़े से जान बचाने के लिए अमीना ने बदन चुराया तो करीमन ने बाज़ू पकड़कर उसे खींचा। मटकी से छलके हुए पानी से शराबोर उसके सांवले चेहरे को अपने ख़ाली हाथ से पोंछकर करीमन ने उससे कहा, 'तुजे पीरअली की जान की क़सम है जो इस लालपरी से ना बोले।'

क़सम खाकर भी चार दिन की आई अमीना का सरे-राह मुंह नहीं खुल पाया तो रौनक़ चढ़ बैठी, 'यह क्या बोलेगी हमारे सामने, ज़रख़रीद लौंडी!'

दुखती रग पर ठोकर खाकर अमीना का मुंह खुल पड़ा, 'तुम तो किराये की हो के बी हमारे सामने बोल रई ओ फिर भी हया का पता नईं।'

रौनक़ ने फिर दुखती पर दूसरी चोट मारी, 'हयादार हो तो दे दे हमारी रक़म इसी दम। हमारी गिरवीं होकर हमें ही गालियां सुनाती है? ज़रा फिर तो कहकर देख उस दिन वाली बात।'

बड़े ज़ोर से लगती है, यह चोट बड़े ज़ोर से लगती है। अमीना बिलबिला गई। कमज़ोर-सा हथियार चलाकर बोली, 'अब तो मैं क्या कोई बी कै देगा, तुम तो जात पे आई खड़ी हो।'

गला फाड़कर रौनक़ चिल्लाई, 'ख़बरदार जो ज़ात-बिरादरी निकाली।'

अब अमीना ने भी आवाज़ का देहाती चढ़ाव दिखाना ज़रूरी समझा। उसी सर में सुर लगाकर बोली, 'सिरासिर छज्जे में खड़ी नटनियों की तरैं तमासा दिखा रई है और उप्पर से नरेर मार रई है! खबरदार जो मुस्से तगाजा लगाया!'

भटियारियों की तरह हाथ नचाकर रौनक़ पूरी तरह असलियत पर उतर आई, 'सौ-दो सौ रुपल्लियों के लिये तू बाप के घर में पड़ी बरसों-बरस खराब

होती रही । न ढकने को कपड़ा, न सजने को गहना, तू है क्या चीज़ !'

बाप के घर का नाम सुनकर अमीना ने सर का घड़ा उतारकर दगड़े में पटक दिया । आधे सर तक पीछे को पल्ला खींचा और नया पट्ठा जैसे अखाड़े में उतरकर रान फटकारता है, हाथ उठाकर और मुंह बिचकाकर बोली, 'अरी तबलची-सरंगची तेरे संग लगे फिरते हैं, छज्जे में खड़े होकर ठुमके लगाने की तेरी टेब नई छुट्टी, पड़ौसनों को तू ठेंगे दिखाती है, ये कौन से नवाब के घर का सहूर है उसका नाम तो बता, उसपे हजार नालत बोल दूं ।'

अपने पट्ठे का हौसला बढ़ाने के लिए दंगल में जो शोर बरपा हुआ तो बगदार से किकरौली तक का जंगल गूंज उठा । ऊपर से रौनक़, नीचे से अमीना और पीछे से भीड़ । कौन किससे क्या कह रहा है यह समझ सकना नामुमकिन हो गया । सिर्फ़ एक दल की दल चों-चों-चख़-चख़ के साथ-साथ छाउ नाच की तरह हाथ-पांवों की उठा-पटक और कथक्कली की तरह अबरुओं की नोंक-झोंक के सिवा कुछ न सुनाई देता था, न दिखाई देता था ।

अमरूद के बाग़ में जैसे चिड़िया-कौवे उड़ाने के लिये हुर्रे-हुर्रे हुआ करती है वैसे ही आख़िर मर्दों की भीड़ में से हांका उठा । किसी ने पुकारा, 'लतीपे की मां । ओ लतीपे की अम्मां !'

किसी दूसरे ने आवाज़ लगाई, 'अजी करीमन ।···बी करीमन !'

इसके बाद सब एक साथ चिल्ला पड़े, 'अरी ए बीबी—अरी ओ बीबियो—अरी चुप हो जाओ ख़ुदा के वास्ते—अरी गली में झगड़ा मत करो भागवानों—अरी मान जाओ ख़ुदा की बंदियो···'

किसी चिल्ल-पों का कोई असर न होते देखकर बुंदू मियां मजबूर से बोले, 'हद्द गुजर गई रे मियां कोई सुनता ई नईं !'

चिलम के धंसके से खांसते हुए किसी ने कहा, 'पास जा नईं सकते, हाथ पकड़ के ला नईं सकते, अब हो तो कैसे हो ।'

माथा ठोककर अलीजान रोया, 'अलीजान जिससे डड़ता था वोई होके ड़ई सुसड़ी । गड़क हो गई दुकनदाड़ी । चीख-पुकाड़ इत्ती और बिकड़ी धेले को नईं ।'

आख़िर दुमंज़िले की तरफ़ मुंह उठाकर पोपले मुंह से बुंदू मियां चिल्लाये, 'मीरा ! ओ मीरा !'

थले पर खड़े हुए अलीजान ने ग़लती सुधारी, 'मीड़ा मत कओ अमीड़अली कओ ।'

झल्लाकर बुंदू ने कहा, 'अमीड़अली सई साले, अमीड़अली सई···'

फिर ऊपर को आवाज़ दी, अमीरअली—मियां सौदागर !'

चौक में जब नाम की दुहाई लग रही थी तब फ़रियादियों की नज़र से बचने के लिए जहांगीर अपने हरम में गर्दन समेत झुका बैठा था । बायां तबला बायें

घुटने के नीचे दबाये, दोनों भवों को दोनों चुटकियों में पकड़े सबरंग बैठा था और अल्लाबंदे सारंगी सामने लिटाये बेसरोकारी से टुकड़े पर चूना लगा रहे थे। बेगम अकेली, बेख़तर होकर इंसाफ़ के छज्जे में डटी हुई थीं और भीड़ में से लगातार सितमज़दाओं की पुकारें आ रही थीं।

बुंदू मियां की एक ज़ोरदार आवाज़ आई, 'अबे मीरा के बच्चे, कहां छिप गया नामर्द ?'

औरत के सामने नामर्दी के इलज़ाम से मीरा में कुछ हरारत आई तो सलाम करके सबरंग के कान में गिड़गिड़ाया, 'सबरंग तुजे खुदा का वास्ता है मियां, इनें बुला।'

खुदा के वास्ते से सबरंग ने चुटकियों से भवें छोड़ दीं। सौदागर की तरफ़ हिक़ारत से देखा और फिर एक लम्बा-सा सांस भरकर अहसान करने के लिए तैयार हो गया। दूल्हा मियां को साथ-साथ आने का इशारा करके, चौक की भीड़ की नज़रों से बचने के लिए वह हाथों और घुटनों के बल झुका-झुका बंदर की तरह छज्जे की तरफ़ चला। उसके इरादे का अंदाज़ा लगाता हुआ मीरा भी उसके पीछे-पीछे चौपाये की तरह लग लिया। गुल-गपाड़े में रौनक़ को इसकी आहट ही न मिली कि पीठ पीछे छुरा भौंका जा रहा है। सबरंग ने छज्जे के दरवाज़े की चौखट पर पहुंचकर खट से रौनक की उंगली पकड़ ली। चौंककर रौनक़ ने संभाल लिया और छुड़ाने की कोशिश की लेकिन सबरंग ने इतना कसकर उसे खींचा कि रौनक़ झटका खाकर नीचे आ लगी। रौनक़ के नीचे झुकते ही मीरा ने भी लपककर उसे जा लिया। चीखकर रौनक़ इन दोनों के हाथों से छुटने के लिए छटपटाने लगी लेकिन यह हावी हो चुके थे। किसी तरह खींच-खांचकर अन्दर लाये और दरवाज़े के इस तरफ़ की दीवार से लगाकर दोनों उसे भींच-भांचकर बैठ गये।

मोर्चा ख़ाली देखकर चौक की भीड़ अपने बहादुरों और ज़ख़्मियों का जुलूस बनाकर हँसती-खिलखिलाती हुई छंटने लगी लेकिन अपनों ही की दग़ा से मैदान में ज़िच खाकर रौनक़ ग़ुस्से के मारे रुआंसी होकर बोली, 'ऐ तुम अपने हो कि दुश्मन हो हमारे ? उल्टे हमीं को कस रहे हो !'

सौदागर ने ठंडा पानी छिड़का, 'अजी तुम हमारी सुनो बेगम साब जी, हम बोई बात फिर कैते हैं कै वो तो बेआबरू है पर तुम तो अपनी आबरू सिम्हालो !'

बेगम हिलकियां लेकर रो उठीं, 'ऐ मैं बरबाद हो गई सौदागर, तुम मेरे लायक़ आदमी ही नहीं निकले ! ये बग़दादनें हमें बेइज्ज़त कर रही हैं और तुम टुकुर-टुकुर ताक रहे हो ? न खुद उठके उनसे कुछ कहते हो न हमें ही बोलने देते हो। मैं इसी दम अपनी अम्मां के पास जाती हूं। भाड़ में जाय तुम्हारा ज़ेवर-गहना !'

दोनों लातों से मियां और भाई, दोनों को परे धकेलकर, एक-एक ज़ेवर

उतार-उतारकर रौनक़ ने सौदागर के ऊपर फेंकना शुरू किया ।

अंधेरे में ज़ेवर सौदागर के ऊपर कंकड़ों की तरह बरसने लगे । अंगूठियां आईं, छल्ले आये, बाज़ूबंद आये, गले की ज़ंजीर आई, गुलूबंद आया, कानों के बुंदे उतरआये, पर हाय ! नथनी नहीं उतरी ! क्या-क्या मंसूबे बांधे थे आज ! आज मुक़द्दर हँसा था । हज़ार सिजदों के बाद बुत मुस्कराया था । पहिली बार ज़ुहर (शुक्र) का सितारा आज सातवां होकर चमचमाया था । आज पहिली शब मनाई जाने वाली थी ! झिलमिली मलमल में लिपटे हुए लाल गुलाबों के गुच्छे को आज खोला-टटोला जाने वाला था । आज का सुख भोगकर मीरा मर जाने वाला था, पर हाय रे दुर्भाग्य ! वह तड़पने के लिए अधमरा करके छोड़ा जा रहा है, बेगम अम्मां के पास जाने को कह रही हैं, ज्यों की त्यों !

दुनिया-भर की दीनता आंखों के पानी में भरकर मीरा ने सबरंग की तरफ़ देखा । सबरंग भी इस वक़्त दाता गंजबख़्श की तरह काम आया । अन्धेरे में ज़ेवर टटोल-टटालकर रौनक़ को पहिनाते हुए बोला, 'इमान से रौनक़, इसमें भाई जान की ख़ता बिलकुल नहीं है । ये देहाती औरतें तो ऐसी ही हुआ करती हैं ।'

यकायक आंसू पोंछकर रौनक़ ने कहा, 'ऐ तुम क्या बहलाते हो मुझे, यह सारी ख़ता सौदागर की है ।'

मीरा ने डरते-डरते पूछा, 'हमारी कैसे ?'

रौनक़ सबरंग से ही कहती रही, 'इन्होंने गिरह से रक़म दी और यह जल्लाद औरत ख़रीद के मंगवाई—कि अल्ला जाने किराये से मंगवाई ।'

फिर मीरा की तरफ़ घूमकर बोली, 'ऐ मतलब तो यही था न कि यह आ जाये और हमारी छाती पे मूंग दला करे ?'

मीरा ने यक़ीन दिलाने की कोशिश की, 'तुम हमसे कसम उठवा लो जो…'

बात काटकर रौनक़ ने कहा, 'ऐ तुम्हारी क़समों का क्या ऐतबार ?'

मीरा ने घुटने टेक दिये, 'तो फिर तुम जैसे को…'

रौनक़ ने पूछा, 'करोगे ?'

छाती पर हाथ रखकर मीरा ने कहा, 'आज की घड़ी को तुम राजी हो जाओ तो जो कौ सो ना करें तो सौ जूती और हुक़्क़े का पानी !'

रौनक़ ने कहा, 'यह बातहै तो अपने भाई से उस औरत को तलाक़ दिलवाओ और हमारी रक़म वसूल करके लाओ इसी दम ।'

द्वेष मानने और दुश्मनी करने का कारण अधिकतर अपना ही अहसास है, वर्ना ऐसा भी क्या तनाज़ा कि पीरा और उसकी औरत से बदला लेने की रौनक़ की इच्छा तलाक़ की हद तक पहुंच जाय ? पीरा इस नवाबज़ादी से जान-बूझकर तू-तड़ाक करता है ऐसी तो बात है नहीं, वह तो दरियाशाह तक से इसी तरह

बोलता है। अमीना की शुभ साइत में उस दिन भी घर के चौक में रौनक़ ही मातम करने के लिए बाल खोलकर बैठी थी और आज भी छज्जे में खड़े होकर इसी ने अमीना को ललकारा था, उसने तो पहल नहीं की। रही बात रुपये की, सो रुपया तो बड़े भाई ने छोटे भाई को दिया था, उसकी महब्बत और अपनी इज़्ज़त के सदक़े, उधार नहीं। उधार भी सही और शौहर की रक़म पर बीवी का अधिकार भी सही, तो भी उधार क्या इस तरह मांगा जाता है? इस तरह तो वह हाजी का पोता महासत्यानासी क़साई अलीजान पंसारी भी नहीं मांगता।

मीरा सोचने लगा—तलाक़?···पीरा से उसकी दुलहिन को तलाक़ दिलवाया जाय? न बात समझ में आई, न कोई वजह नज़र आई, न मुमकिन ही लगी!···पर अभी बेगम से शर्त बदी है, अभी बाज़ी मारी है, अभी पीछे को कहां को सरक जाय?··· शर्त को शायद सिर्फ़ सौ जूती या सिर्फ़ हुक़्क़े के पानी तक घटाकर समझौता करने के इरादे से मीरा खड़ा होकर बोला, 'तलाक-मलाक की तो हातों-हात नईं कँ सकते, पर रकम हम अबी असूल करने जाते हैं।'

मीरा चला गया।

रौनक़ ने सबरंग से कहा, 'तुम इनके साथ जाओ जी सबरंग भाई, कहीं मुरौवत में ही नम्बर मिटे यह मेमार!'

सबरंग मीरा के पीछे चला गया तो बंदे मियां ने पानों की रकाबी रौनक़ के आगे सरकाकर अपनी उसी बिलम्पती बलबलाहट से फ़र्माया, 'कसम से आज तुमने ऐसी निखाद लगाई कि सितम गुज़ार दिये!'

गिलौरी मुंह में रखते हुए आदतन रौनक़ के मुंह से निकला, 'आदाब अर्ज़ है!'

□□

दरियाशाह के तकिये पर दोबारा मदद लगाने के लिए मालताल का अता-पता करने के चक्कर में पीरा आज दिन भर आस-पास के भट्टे पज़ावों में घूम-घामकर दिन छुपे बाद जब अपने घर में घुसा तो अमीना मौला भड़भूंजे के भाड़ की तरह सुलग रही थी। बड़ी मुश्किल से पीरा के मनाने-बहलाने के बाद तो वह बोली, और बोली तो फिर अंगारे ही उगल दिये। पीरा चुपचाप अंगारों की तपन को झेलता रहा। जब वह आग बरसा चुकी तो आहिस्ता-आहिस्ता बर्फ़ीले छींटे देता हुआ बोला, 'देख अमीना, एक तो वो बड़े भाई की बीवी, दूसरे बड़े घर की बेटी! उसने तुस्से कुछ कै बी दी तो गई गुजरी कर। इस टैम तेरा भी मिजाज गरम है और उसका भी गरम ई होगा। थोड़े दिन में तू बी भूल जायगी वो बी भूल जायगी···'

फिर बुज़ुर्गों की तरह बोला, 'म्हौबत बढ़ाने से बढ़ती है।'

पर आग इतनी भड़क चुकी थी कि पानी ने भी घी का ही काम किया। ताव खाकर अमीना ने कहा, 'मुजे इस बेहा रंडी से नईं बढ़ानी म्होबत-फोबत ! ···अल्ला करे इसकी खटिया लिकले मचमचाती हुई।'

पीरा ने रोका, 'हमने तू उद्दिन भी समजाई थी कि गाली-वाली ठीक नईं है।'

अमीना ने दो-टूक सवाल किया, 'वो हमें गाली दे तो हम बल्दे में गाली ना दें उसे ?'

हँसकर उस ईसामसीह के लगते ने कहा, 'वाव्वा अमीना बेगम, सलाम है तुजे। अरी गाली के बदले में तो गाली देनी ई नईं चैये !'

यह पगला कहता-करता कुछ और है और इससे होता-जाता कुछ और है। हँसता और मतलब से है, नतीजा निकलता है और। इस वक़्त इसकी हँसी का नतीजा यह निकला कि अमीना चिल्ला पड़ी, 'गाली के बल्दे में उसके सिर में ईंट मारूंगी उठा के, अबके उसे कहने दे कि मैं खरीद के लाई गई हूं।'

बेशक, है ईंट मारने की बात। अकेली नूरू जुलाहे की बेटी के लिए ही नहीं, आत्म-सम्मान रखने वाली किसी भी बहू-बेटी के लिए इस ख़रीद-बेच के मानी सिर्फ़ कुछ रुपये के लेन-देन तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि सूरत और सीरत के मोल-भाव का मतलब रखते हैं। सिर्फ़ ईंट मारने की बात, अमीना ने बहुत कम बात कही। उसे आते ही मौक़ा मिला था, उस कमीनी औरत की ज़हर बुझी ज़ुबान उसे उसी वक़्त काट डालनी चाहिये थी।

पीरा फिर हँस पड़ा, 'अरी उसके कैने से क्या होता है, मैं तो तुजे निका करके, ढोल-तासे बजवा के लाया हूं।'

झूंझल में भरकर अमीना ने कहा, 'मेरा कलेजा मत फूंको मिस्त्री। तुम रुपियों की पोटली लुंगी में इलझाये फिरते हो, ढोल-तासे बजा के मार क्यों नईं आते उस नबाबन के थूथन पे ?'

पोटली की इस बात पर पीरा फिर बिदका, 'फिर वोई बात—उस पोटली की तो तू बात ई मत कर।'

चीख़कर अमीना ने कहा, 'क्यों ना करें जब है तुम्हारे पास ?'

बिना हँसे, बिना मुस्कराये, बिना आवाज़ ऊंची-नीची किये पत्थर से चेहरे से पीरा ने कहा, 'वो तो मैं किसी को देने वाला ई नईं हूं।'

न जाने इससे आगे क्या होता कि मीरा और सबरंग दरवाजे में दिखाई दिये। पहिली पकड़ में ही गुद्दी पर अखाड़े की मिट्टी लथेड़कर और बाजू चौड़ा-कर चलने वाले लालखां की तरह ज़बरदस्ती औसान इकट्ठा किये हुए आगे-आगे मीरा अन्दर आया और पीछे-पीछे पहलवान की ख़ुराक की बचत-खुचत के लालच में लगे हुए पिछलग्गू लौंडे की तरह सबरंग। भाई को देखते ही पीरा खुश होकर बोला, 'अरे मीरा—ना, सौदागर ! आओ भई आओ !'

मालूम नहीं भाई की बीवी को देखकर, या शायद औरत ज़ात से ही इसकी कन्नी कटती है, अमीना पर नज़र पड़ते ही मीरा के चौड़ाये हुए बाजू फटे हुए गुब्बारे की तरह सिकुड़ गये। बग़लें-सी झांकता हुआ ख़्वाम-ख़ाह अकड़कर बोला, 'पीरा हमें एक काम है तुस्से !'

पर्दा करके अमीना पैर पटकती हुई जाकर कोठे के किवाड़ों के पीछे खड़ी हो गई। काम की बात सुनकर पीरा ने समझा कि भाई किसी काम की साई लेकर आया है। बोला, 'हाँ-हाँ, ये तो बड़ी अच्छी बात है। बस, माल दूसरे का महनत हमारी। माल की बड़ी दिक्कत है आजकल।'

तंग होकर मीरा ने कहा, 'अरे माल-महनत पै लानत भेज। तू हमारे वो रुपिये दे दे फौरन !'

पीरा हँस पड़ा, 'ये तो फिर वोई बात लियाया तू ! अरे, कै के तो आया हूं तेरी बेगम के सामने।'

कोठे के किवाड़ हिले तो मीरा हल्लन के हिलाये की तरह हिल गया। पीछे से सबरंग ने टेका लगाया तो पांव टिकाकर बोला, नईं वो बात नईं चलेगी। हम अबी लेके जायेंगे, वां झगड़ा होता है।'

पीरा ने कहा, 'झगड़ा तो खैर ठीक नईं है पर रुपिये मैं इस बखत नईं दे सकता।'

जली-बुझी अमीना किवाड़ के पीछे से धुंधिया उठी, 'देख लिया ? भाई भाई करके जिनके म्हैल में कली गोतते फिरते हो वो तुमसे तगाजा लगाने आए हैं।··· फेंक क्यों नईं देते उस पोटली में से निकाल के ?'

पोटली का नाम सुना तो दायें हाथ की पहिली उंगली नीचे के होंठ से लगाकर ताज्जुब से सबरंग ने कहा, 'तुम क़िस क़िमाश (तरह) के आदमी हो जी इमान से। पोटली दबाये बैठे हो और क़र्ज़ा नहीं चुकाते दूसरे का ?'

बरबस पीरा की हँसी छूट पड़ी, 'हत्तेरी पोटली की, जिसे देखो उसी की नजर पोटली पे लग रई है। मैं अबी इसे इधर-उधर करे देता हूं।'

यों कहकर जो पीरा चला तो मीरा ने उसका हाथ पकड़ लिया। हाथ पकड़ते ही अमीना ने कोठे से बाहर क़दम रक्खा। पूरी तरह बाहर आ भी नहीं पाई थी कि मीरा का हाथ सिमट गया। कहना तो जाने क्या चाहता था पर कहा उसने यह, 'अब उनके भाई को बता दे तू रुपिये कब देगा।'

पीरा ने कहा, 'बस मैं जो कै चुका वो कै चुका, मजूरी के आये नईं और मैंने देने सुरू करे नईं।'

फिर चला तो सबरंग ने फिर पकड़ लिया, 'देखो पीरअली, अब से आगे वास्ता है हमसे। मैं मजूरी-अजूरी कुछ नहीं जानता हूं, अगर कल तलक हमारा क़र्ज़ा नहीं उतारोगे तो इमान से मैं तुम्हारी इज्ज़त उतार लूंगा।'

झटपट इस घेराव से भागने के लिए सबरंग का हाथ खींचकर उसे दरवाज़े की तरफ ठेलते हुए मीरा ने कहा, 'चलो बस हो गया फैसल्ला।'

यह मौक़ा किसी तरह हँसी का नहीं कहा जा सकता लेकिन मीरा के ख़ुद बख़ुद किये हुए फ़ैसले और उसके धकेले से दरवाजे की तरफ ईमान से लुढ़कते हुए साले के ढांचे को देखकर पीरा बच्चों की तरह हँस पड़ा।

इतनी भारी बेइज़्ज़ती पर भी इतनी बेशर्मी और बेहूदगी से मियां को दांत फाड़ते हुए देखकर अमीना का ख़ून खौल गया। लुंगी की अंटी ठीक करके पोटली को हराम के पेट की तरह छुपाते हुए पीरा को देखकर नफ़रत और ग़ुस्से के मारे वह थर-थर कांपने लगी। पोटली इधर-उधर करने के ख़याल से जब पीरा ने दरवाज़े की तरफ़ क़दम उठाया तो ख़ुददारी का एक तूफ़ान-सा उसके भीतर से सांय-सांय करके उठा और बेंत की क़मची की तरह सड़ाक-सी आवाज़ उसके मुँह से निकली, 'सुनो मिस्त्री!'

पीरा रुक गया।

भीतर से निकलकर अमीना चौक में आई। तनकर उसके सामने आकर खड़ी हो गई। तीर की तरह आंखें तानकर सीधी पीरा की आंखों से भिड़ा दीं और बोली, 'अगर तुम मेरे मरद हो तो इन अपनों का कर्जा उतार के घर में आना।'

पीरा के चेहरे से हँसी पुछ गई।

औरत की बोली बंदूक़ की गोली की तरह दन से उसके कलेजे में धंस गई।

वह मुस्कुराहट, जिसे साथ लेकर वह मां के पेट से पैदा हुआ था, पल भर में ग़ायब हो गई और उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

क़र्ज़ न चुकाने की पीरा की नीयत नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि दूसरे की रक़म में से वह अपना क़र्ज़ कैसे उतार दे? वह क़ायदा नहीं जानता। क़ानून नहीं जानता। मज़हब नहीं जानता, ईमान भी नहीं जानता। सिर्फ़ इतना जानता है कि अमानत में ख़यानत करना गुनाह है। वह भी इन शब्दों में नहीं बल्कि इस तरह जानता है कि यह रुपया दूसरे ने अपने काम के लिए उसे ज़िम्मेदार बनाकर दिया है और उसे ज़िम्मेदारी निभानी चाहिए। वह दूसरा कोई फ़क़ीर-फ़ुक़रा न होकर क़ारून का भाई, यह सौदागर अमीरअली होता तो भी पीरा यही करता।

पर दुनिया चाहती है कि वह ज़िम्मेदारी पूरी न करे। दुनिया की नज़रें उसकी अमानत की पोटली पर लगी हुई हैं। दुनिया चाहती है कि वह चोरी करे और मुंह उजला कर ले। रिश्तेदार उसका ईमान ख़रीदना चाहते हैं। सगा भाई उसे बेईमान बनाने की कोशिश में है। यह अपनी औरत···

यह शरीफ़ औरत जो उसके ईमान में, दीन में, दुनिया में, आक़बत में, निवाले में, अमीरो में, कंगाली में, पैंतालीस-पैंतालीस चिल्ले खींचकर जीवन की

साथिन बनकर आई है, यह भी यही चाहती है कि वह किसी की जेब काटकर सफ़ेदपोशों में मिल जाय।

पर यह फटेहाल कंगाल पीरा मेमार न रूप से सफ़ेदपोशों में मिल पायेगा, न दिल से मिल पायेगा। यह पागल, कुत्तों को देखकर भौंकता है, कुत्ते भी इसे अपनी ज़ात में शामिल नहीं करेंगे।

पीरा अंधेरे में टकटकी लगाकर अमीना को घूरने लगा !—क्या कहा इसने ? 'अगर तुम मेरे मरद हो तो…'

चुपचाप वापिस लौटा। औज़ारों का थैला उठाकर कंधे पर डाला और फिर आहिस्ता-आहिस्ता गली के अंधेरे में मिल गया।

□□

छप्पर खचाखच भरा हुआ था। बगदार के सारे के सारे मेमार छंट-छंट के छप्पर में जमा हो गए थे। एक टूटी-सी लालटेन एक कोने में फक-फक कर रही थी। दसियों चिलम और कई हुक़्क़े गुड़गुड़ा रहे थे। घुटे हुए धुएं में छप्पर की बल्ली के ऊपर लटकी हुई ढोलक, नौ कम सौ के बुंदू मियां के पोपले मुंह की तरफ़ छोड़ी हुई लुगाई की तरह गाल पिचकाये हुए हसरत से देख रही थी। जब गलेबाज़ ही छप्पर छोड़कर दुमहले में जा चढ़ा तब बुंदू मियां क्या ढोलक इन सरफ़ू जैसे क़नसुरे खटरागियों के लिए बजायें।

चर्चा था शाम के झगड़े का। सौदागर की औरत का, उसके नर्तनियों जैसे नाच का, डोमनियों जैसी हरकतों का। भरे गांव के बीचोंबीच रंडी-भडुओं के आ बसने का। भाई की मदद के लिए दिए हुए भाई के रुपयों के यकलख़्त क़र्ज़ की सूरत अख़्तियार कर लेने का और वसूलयाबी के लिए एक बलूचन की धौंसबाज़ी का।

ऐसे में पीरा आया और बुंदू मियां के पास जाकर बैठ गया। आज उसके चेहरे पर हँसी नहीं थी। यारों ने समझा कि जोरू के झगड़े से ताव खाए हुए है। किसी ने हुक़्क़े की नै उसके हाथ में थमा दी तो वह चुपचाप दम मारने लगा। इतने सारे गुल मचाते हुए आदमियों में ऐसी ख़ामोशी छा गयी कि बहुत देर तक हुक़्क़ों की गुड़गुड़ाहट के सिवा और कोई आवाज़ छप्पर में नहीं थी।

आख़िर बुंदू मियां ने बात का मुंह फोड़ा, 'रात में औजार लिए क्यों फिर रा है भई ?'

पीरा ने जवाब नहीं दिया और चुप्पी फिर तन गयी तो फिर थोड़ी देर में बुंदू ने कहा, 'अरे मियां कुछ बोल तो सई, क्या सांप सूंग गया ?'

आहिस्ता से पीरा बोला, 'एक बात समज में नई आती चचा !'

'क्या ?'

ज्ञानियों की मंडली में एक शास्त्रीय प्रश्न पीरा ने कर डाला, 'कै अपना कौन है और गैर कौन है !'

यह मामूली-सी बात पीरा ने कुछ इतनी संजीदगी से पूछी कि हल्के से बोल, मनों का बोझ बनकर साथियों के सर पर चढ़ गए । पर सवाल बिलकुल सीधा था। सीधा-सा जवाब बुंदू मियां ने दे दिया, ये जित्ते बैठे हैं सब तेरेई हैं ।'

इससे आगे कुछ और सुनने के लिए अपनी तरफ़ ताकते हुए लोगों पर एक नज़र घुमाकर पीरा फिर हुक़्क़ा पीने लगा तो बुंदू ने कहा, 'अबे देख क्या रया है ? सब तेरी जात के हैं, तेरे गाम के हैं, तेरे कैने के हैं । तेरे कैने से तकिए पे आधी मजूरी पे काम करा है । और कैसे अजमावेगा ?'

आहिस्ता से पीरा ने कुरता ऊपर को उठाया, लुंगी में से पोटली निकाली और जादूगर की तरह बीच में रखकर बोला, 'ऐसे अजमाऊंगा !'

एक साथ सब पोटली देखने को झुके । बुंदू ने पूछा, 'क्या है इसमें ?'

'इसमें हैं रुपिये !'

रुपये ? इतने सारे ? पीरा के पास ? ताज्जुब से देखने लगे । अंदाज़ लगाया कि कोठे वाली का झगड़ा मिटाने के लिए कहीं से मांग-तांगकर लाया है शायद, पंचों से अदा करने को कहेगा ।

बुंदू ने कहा, 'तो पोटली भुखमरों के बीच में काय को धर दी उल्लू ?'

पीरा ने कहा, 'इनके लिए तो है ई !'

बुंदू ने कहा, 'अबे मतलब पे को आ !'

किसी ज़माने में संकट की घड़ी में बीड़ा सामने रखकर जैसे माई के लालों को बीड़ा उठाने की ललकार लगा दी जाती थी वैसे ही पीरा ने आज़माइश का ऐलान कर दिया, 'बस तो जो तुममें से अपना हो वो इसे उठा ले ।'

असल मां-बाप की औलाद के आगे बढ़ने की मदारी की पुकार पर जैसे मजमुआ हिचक जाता है, वैसे ही सारे मेमार हिचके, ठिठके, सुन्न खड़े-बैठे रह गये । सन्नाटा तोड़कर पीछे को सरकते हुए बुंदू मियां ने कहा 'भई इस बात पे हम तो हैं नईं तेरे !'

लेकिन ऐसा थोड़े ही है कि बुंदू नहीं है तो दुनिया में कोई किसी का है ही नहीं !

वही सरफ़ू जिसने पिछली बार तकिये के काम पर आधी मज़दूरी की वजह से मीरा के सिवा सबसे ज़्यादा नाक मारी थी, वही सरफ़ू जो मीरा के ग़ायब होने के सारे इलज़ाम पीरा के सर थोप देने से नहीं हिचकिचाया था, वही सरफ़ू जो मीरा के अमीरअली बनकर लौटने के बाद उसके आगे-पीछे दुम हिलाता फिरता है—पीरा का सबसे ज़्यादा अपना निकला । आगे बढ़कर आया और बोला, 'ले मियां हम हैं तेरे, बोल क्या बात है ?'

पीरा ने कहा, 'तू है तो, देख, ये रुपिए दरियाबाबा के हैं। इनमें से आधी मजूरी तू आप ले, आधी-आधी दूसरों को दे। इनीं में से मालपानी का इंतजाम कर और कल तड़के से ही तकिये के अधूरे काम पे मदत लगा दे।'

पोटली उठाकर सरफ़ू ने कहा, 'तो लग जायगी, इसमें क्या है !'

पीरा ने सब्र की सांस ली।

ज़माने की थपेड़ों की मार से पोले-पोपले हुए, सौ-सौ बरस के तजुरबे की सौ-सौ लकीरें चेहरे पर सिकोड़े हुए बुंदू मियां बोले, 'तुजे क्या हुआ बे, अपना काम आप क्यों नईं करता ?'

पीरा ने कहा, 'चचा, मुज पे कर्जा बड़े जोर से चढ़ा हुआ है सौदागर का, और तगाजा है कर्रा, सो परदेस जा रा हूं। पैसे-टके जुड़ जायेंगे तो फिर तुम में ई आ मिलूंगा।'

पंचों के बीच में इस तरह उस अमानत की पोटली का बोझ सर से उतारकर, औज़ारों का थैला कंधे पर लटकाकर पीरा खड़ा होकर बोला, 'सलाम है भई सब भाइयों को !'

और फिर सब अपने-परायों को छप्पर में बैठा छोड़कर अंधेरे में ही किसी अनजानी राह पर पीरा इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता चला गया जिस तरह बीमार जिस्म से पाक रूह निकलकर चली जाती है !

□□

धुन का पक्का, बात का सच्चा, बोली का मारा और कर्त्तव्य का पुकारा हुआ पीरअली रातों-रात चलकर जब गुलिस्तान के पास पहुंचा तब रात गूंज-गांजकर खत्म होने पर आ गई थी। हवा बेशक ज़न्नाटे की चल रही थी। क़ब्रों में सोने वालों के कलेजे तोड़-फोड़कर जहां-तहां निकली हुई झाड़ियां बेक़रारी से सर पटक रही थीं। ऊंचे-ऊंचे और घने-घने पेड़ों की शाखाओं ने हवा के ज़ोरदार झोंकों से आपस में टकराकर जो हौलनाक आलम गुलिस्तान में पैदा कर रक्खा था उससे ऐसा मालूम होता था कि क़ब्रों के मुर्दे और उनकी छाती पर खड़ी हुई सृष्टि पीरअली की यात्रा के विरोध में विप्लव करने पर उतर आई है और उसने यह पक्का इरादा कर लिया है कि उसे किसी हालत में गुलिस्तान से आगे न बढ़ने दिया जाय, मंज़िल से भटका दिया जाय और थपेड़े मारकर दुनियादारों की तरह रहने पर मजबूर कर दिया जाय।

पर जो ज़िन्दा लोगों के उठाये हुए तूफ़ानों में स्वभाव से ही अडिग खड़ा मुस्कुराता रहता है उसके लिए मुर्दों का जिहाद क्या अर्थ रखता है ? आगे-पीछे, दायें-बायें, ऊपर-नीचे, कहीं कुछ न देखकर जो मंज़िल पर नज़र का निशाना

बांधे सीधा चलता चला जाता है वह पहुंचता है और पहुंचने के बाद पहुंचा हुआ कहलाता है।

शायद है कि वली ऐसे ही को कहते हों।

पीरा ने सोचा क्यों कोसों का चक्कर लगाऊं? गुलिस्तान से ही क्यों न निकल जाऊं!

और वह उसी रास्ते और उसी पगडंडी पर चल पड़ा जिस पर उसका भाई मीरा, गधे पर दौलत लादकर सौदागरी करने गया था।

नाले का चमचम करता हुआ निर्मम पानी सुहानी सुबह के झुटपुटे में झक-झोर हवाओं से मनमौजी बालकों की तरह उछलता हुआ चला जा रहा था। पीरा का बालक मन उछालों को देखकर मचलने लगा। वह रुका, छप-छप करके छींटे उड़ाये, मुंह पर पानी के छपाके मारे और बिना मुंह पोंछे ही प्रवाह के सुर में सुर मिलाकर ज़ोर-ज़ोर से गाता हुआ किनारे-किनारे चलने लगा 'न कोई दोस्त न कोई यार, दुस्मन सारा सदर बजार!' एक ही गाना आता है। इस गाने के भी शायद इतने ही बोल। जब रोने को मन करता है तब भी यही गाता है, हँसने को करता है तब भी यही गाता है, कोई गाने को कहता है तब भी यही गाता है।

पुलिया के नीचे बैठे हुए क़तराशाह वज़ू कर रहे थे। इस हौलनाक माहौल में इतनी उमंग से गा उठने वाला मुर्दा कौन-सी क़ब्र से उठकर खड़ा हो गया है यह देखने के लिए क़तराशाह उठकर खड़े हो गये।

और पीरशाह को देखकर ताज्जुब में रह गये। यहीं से वह मीरा मेमार भी एक रोज़ गुज़रकर गया था। यह उसका भाई पीरा भी आज उसी राह पर है। यह भी ऐग़मंज़िल की तरफ़ ही तो मुखातिब नहीं हो गया? लेकिन गधा तो इसके साथ है नहीं, खाली हाथ जा रहा है! यह सोचने का होश क़तराशाह को नहीं था कि ख़ाली हाथ आया होगा यह, पर ख़ाली हाथ जा नहीं रहा है। इसके कंधे पर थैला है और तसबीह की तरह इसके थैले में औज़ार हैं।

हाय रे! हमेशा बग़ल में तोशा बांधे रहने वाले इस क़तराशाह को मंज़िल का भरोसा नहीं है। पीरा को रोककर इसने सफ़र की वजह मालूम करनी चाही। अपनी राहों में भटका हुआ मुसाफ़िर इसी तरह दूसरों के सफ़र की पूछ-ताछ में खोया रहता है। चाहा कि आवाज़ लगा दे पर रह गया। शौक़ ने रहने न दिया तो वज़ू-अज़ू छोड़-छाड़कर तेज़ी से लौट पड़ा।

उसी जगह, उसी तरह, उसी पेड़ से कमर लगाए, उसी तरह आंखें मूंदे और उसी तरह चिलम हाथ में लिए दरियाशाह बैठे हुए थे। गीली लकड़ियों का धुआं और सूखे हुए पत्ते हवा के ज़ोर से धूल में मिलकर उनके चारों ओर उड़ रहे थे। क्षुब्ध तत्त्वों की हलचल में क़ब्रों और चिताओं के सधिस्थल पर निश्चल बैठा

हुआ यह महात्मा ऐसा लग रहा था जैसे नाले के दोनों ओर की संतप्त आत्माओं को शांति पहुंचाने के लिए कमर बांधे बैठा हो।

आहट से आंखें खोलीं और मुस्कराकर बोला, 'क्या जुस्तजू है बंदे?'

'हुज़ूर वह आपके पीरशाह कहीं जा रहे हैं, रोकूं?'

बैठक बदलकर चिलम उलटते हुए दरियाशाह ने कहा, 'जाने दो उन्हें पहुंचना है।

क़तराशाह ने फ़िक्र ज़ाहिर की, वह उसी राह से जा रहे हैं, कहीं ऐसा न हो कि···'

बेसरोकारी से दरियाशाह ने कहा, 'पसंदीदा राहें ही सही राहें हैं।'

किस बात के जवाब में क्या बात उन्होंने कह दी इस पर ख़लाल देना तो रहा एक तरफ़, क़तरा सोचने लगा कि कमाल है इनकी बेसरोकारी! पीरा मेमार तो इनका क़रीबी आदमी है, इतना कि यह खुद उसे पीरा की बजाय पीरशाह कहकर बुलाते हैं। पर वह सामने से गुज़र रहा है तो भी उससे बात तक नहीं करना चाहते। नाराज़-सा होकर बोला, 'सफ़र की वजह पूछना तो शायद बेजा न होगा। तकिए की चुनाई-मरम्मत का भी अंदाज़ा हो जाता।'

हँसकर दरियाशाह ने कहा, 'पूछोगे तो शायद, यह कहेंगे कि गिरह की रक़म दूसरे को सौंपकर खुद क़र्ज़ की अदायगी के लिए रोज़गार करने जा रहे हैं।'

क्या मतलब! वह रक़म इसने किसी दूसरे को दे दी?—रक़म, वह भी दूसरे की—खुद क़र्ज़ में डूबा हुआ—पकड़ा दी न जाने किसके हाथ में, आप चल दिया ठोकरें खाने के लिए, फिर भी इस ग़ैर ज़िम्मेदारी का इससे जवाब तलब न किया जाय। आख़िर इसकी वजह?

दूसरे के हाथों में रक़म सौंपकर, काम अधूरा छोड़कर भाग जाने से तो यही बेहतर था कि उस रक़म में से अपना क़र्ज़ ही चुका देता।

बुद्धि-चक्र में फंसकर इस तार्किक साधु का मन उचित-अनुचित, कर्म-अकर्म, व्यवहार और अव्यवहार के ताने-बाने में उलझकर फड़फड़ाने लगा।

अफ़सोस की हद नहीं है कि बार-बार होशियार किए जाने के बावजूद ज़ाहिर के फेर में आदमी बातिन (गुप्त) को कितनी आसानी से भुला देता है!

कितना मुश्किल है याद रखना और कितना आसान है भुला देना!

आश्चर्य है कि ठोस को आर-पार देख सकने वाले की आठों पहर की संगत, नसीहत और मेहरबानियों के बावजूद आदमी की आंखों का जाला नहीं निकलता।

कितना मुश्किल है पा लेना और कितना आसान है खो देना!

झोला-कफ़नी गले में डालकर साझा न करने का वचन देकर जो गदाई (भिक्षा) के लिए निकला है वह साझा तो साझा, पूरा का पूरा चाहता है। अपने

आप को कर्त्ता-धर्त्ता समझता है, उत्तरदायी बनता है। उत्तरदायी बनाता है। हिसाब करता है और फ़ैसले देता है।

क़तराशाह ने कहा, 'इसके मानी तो यह हुए कि ऐसी अक़्ल वाले को दुनिया में रहने का कोई हक़ नहीं है।'

दरियाशाह ने पूछा, 'इस फ़ैसले की बिना क्या है शहज़ादे ?'

बिना न बतलाकर क़तराशाह ने शक ही दोहराया, 'यह अक़्ल लेकर आदमी दुनिया में कैसे रह सकता है हज़रत, कि अपनी रक़म तो दूसरे को दे दे और ख़ुद क़र्ज़ में डूबा रहे ?'

दरियाशाह बोले, 'क़तराशाह, दुनिया में ऐसी ही अक्ल वाले का दम ग़नीमत है। पीरशाह के पास जो रक़म थी वह उनकी कब थी ?'

क़तराशाह ने दलील की, 'तो फिर उन्होंने वह दूसरे को क्यों दे दी ?'

दरियाशाह ने कहा, 'यह तो उन्होंने कमाल ही दिखला दिया। आदमी हर आदमी को अपने जैसा समझ ले तो यह समझो कि वह कामिल उल्फ़हम (पूर्ण ज्ञानी) है।'

बात के बोझ से दबकर क़तराशाह ने उज्र किया, 'बजा इरशाद, मगर दूसरा आदमी वैसा साबित न हो तो क्या ?'

दरियाशाह ने दामन झाड़ दिया, 'जो न हो वह ख़ुद ज़िम्मेदार है।'

सच जैसे कह देना मुश्किल है वैसे ही सुन लेना भी मुश्किल है, मान लेना तो बहुत ही मुश्किल है। मजबूरी में पड़कर क़तराशाह ने कहा, 'लेकिन यह अमल तो पीरशाह की परेशानी का बाइस हो सकता है।'

दरियाशाह ठठाकर हँस पड़े, 'परेशानी पीरशाह मानें तो परेशानी है।'

हवा का ज़ोर कम होने लगा था। पत्तों की खड़खड़ाहट कम हो गई थी, धुआं छंट गया था। चारों ओर एक सुकून-सा आ गया था मगर क़तराशाह का दिल अपने ख़याल की सचाई से बेचैन था। यह कैसे मुमकिन है कि ग़लत अमल के नतीजे में परेशानी न निकले और वह मेमार परेशानी महसूस न करे ? कुलबुलाकर बोला, 'इजाज़त हो तो अब भी दौड़कर उन्हें रोक लूं ?'

आदमी की आदमी के साथ हमदर्दी से बेशक दरियाशाह प्रभावित हुए। दुनियावी दिलचस्पियों में उलझे हुए इस ईमानदार त्यागी साधु की सच्ची जिज्ञासा की वे अवहेलना न कर सके। क़तरा भाग्यवान है। इस बियाबान में रहनुमा मिलता किसे है ? सहानुभूति की प्रबल प्रेरणा से दयार्द्र होकर उन्होंने क़तराशाह की ओर देखा और यों बोले जैसे आंखों से बोल रहे हों, 'शहज़ादे, ख़ामोश होकर बैठ जाओ। सुकून आ जाय तो यों सोचना कि हम कौन हैं, फिर यों सोचना कि मस्लेहत में दख़ल देने के हमारे अख़तियार कितने हैं; जवाब मिल जाय तब अमल करना।'

दिन निकल आया । सूरज की पहिली किरणें दरख़्तों से छनकर दरियाशाह पर पड़ीं । उन्होंने पुकार लगाई, 'अलख अल्लाह !' कहीं से एक परिंदे ने जवाब दिया, 'कक्काऽऽकू, कक्काऽऽकू अल्लाहू अल्लाहू !'

आंखें बंद कर लीं तो क़तरा सर झुकाकर फिर वज़ू करने चला गया ।

□□

इष्ट के प्रति एकनिष्ठ, कठिनाइयों से उदासीन, संतोष के धन से धनी, आत्मा के आदेश से परिचालित, रागद्वेष से अपरिचित, प्रसन्नता के अक्षय भंडार का अधिपति पीरा पागल, साधु की धरोहर के सदुपयोग का सरफ़ू से आश्वासन पाकर, निश्चिन्तता का कवच बांधकर ऋणमुक्त होने की इच्छा से धनार्जन करने के लिए अनजानी राहों पर चलता-चलता जिस बस्ती में पहुंचा, उसकी गलियों में गन्दे पानी के निकास के लिए मोरियां बनाई जा रही थीं । आते ही ऐसे सत्कर्म से कमाई का श्रीगणेश हो जाने के बाद दिन-भर की मज़दूरी में से रूखे-सूखे टुकड़े के लिए कुछ निकालकर उसने पेट भर लिया, बची हुई पूंजी एक कपड़े में बांधकर अंटी में लगा ली । और मुस्कराकर एक पेड़ के नीचे लेट गया ।

इसी तरह दूसरे दिन, फिर तीसरे दिन, फिर चौथे दिन, काम मिलने तक ठहरता, न मिलने पर आगे बढ़ता चला गया । जिस अनुराग से पीरा बस्तियों के बाद बस्ती बदलता गया, उसी बैराग से बैरागी बस्तियां बदला करते हैं । अनुराग और बैराग का सुख भी एक, दुःख भी एक ।

जगत के चाक चिक्य पर आश्चर्य करने का उसके पास समय नहीं था । आदमी यदि जगत की चकाचौंध पर आश्चर्य करता रह जाय तो फिर रह ही गया समझो । ऐसे रहे हुए आदमी पर जगत आश्चर्य करना छोड़ देता है ।

स्वप्न के लिए भी अकल्पित धरती के गर्भ में घुसकर दैत्याकार लोहे के पाइपों को टिकाने के लिए उसने अपनी कन्नी से जन्म-जन्मांतर तक न हिलने वाले पाये बनाये । प्राणों की बाज़ी लगाकर गगनचुम्बी इमारतों पर चढ़कर असम्भव कर्म किये । सड़कों पर रोड़ियां कूटीं, पटड़ियों पर पत्थर जमाए । ऊंचे-ऊंचे पुलों पर गारा ढोया, छोटे-छोटे घरों में सफ़ेदी की । गलियारे से चौमहलों के शिखरों तक कोई काम, किसी दिन उसने नहीं छोड़ा । पेट भरने के लिए जितना कम-से-कम सम्भव है उतना हर मज़दूरी से निकालकर पेट में डालता गया और शेष उस कपड़े में डालकर पोटली पेट के ऊपर बांधता गया ।

दस महीने के अविश्रांत श्रम से क्लान्त होकर, वर्षा की एक रात में, एक बंद दूकान के सायबान में लेटते हुए पीरा को एक दिन अचानक पूर्ण गर्भा स्त्री की तरह अपने पेट के ऊपर भार और भीतर कुछ हलचल-सी प्रतीत हुई । उठकर बैठ

गया। पेट टटोला और पहलौठी गर्भिणी की तरह कसाले से हँसा, और फिर लेट गया।

पर आज उसे नींद नहीं आई। झंझोड़कर उसी आवाज़ ने पुकारा—अगर तू मेरा मर्द है तो अपनों का क़र्ज़ चुकाकर घर में आना।

उठा। ज़ोर की अंगड़ाई लेकर चड़-चड़ करके हड्डियां चटखाईं। सारी थकान को दुर्विचारों की तरह झटक दिया। सफ़र के सम्बल की तरह औज़ारों का थैला कंधे पर लटकाया और पानी में भीगता हुआ ही चल दिया।

□□

पीरा के रातों-रात बगदार से चले जाने के बाद अमीना को अगली तारीख पर ही मालूम हो गया था कि वह घर में अकेली नहीं है, उसके पेट में दूसरा पीरा पल रहा है। वह कमबख़्त खुद ग़ायब होकर अकेली औरत को ही अल्लावास्ते नहीं छोड़ गया है बल्कि उसे किसी और को भी ज़िंदा रखने की ज़िम्मेदारी दे गया है। चील के घोंसले में तो रक्खा ही क्या था जिससे वह अपना पेट पालती और पेट के लौंदे में जान डालती! कुछ दिन तो किसी तरह कट गये लेकिन उसके बाद सूने घर में चूहे डंड पेलने लगे। पास-पड़ोसिनों को मालूम हुआ तो अपनी-अपनी औक़ात के मुताबिक़ दाना-दुनका ले-लेकर मदद को आईं मगर इस ग़ैरतमारी औरत का ख़ैरात को सिर्फ़ देखकर ही पेट भर गया। नूरू जुलाहा दामाद के गधे के सींग की तरह यकायक ग़ायब हो जाने की खबर सुनकर दौड़ा हुआ आया और बेटी को बकरी का दूध पिलाकर पालने के लिए किकरौली चलने का इशारा करने लगा, पर इस अल्ला की बंदी ने मियां की चौखट उलांघने से साफ़ इन्कार कर दिया। फ़ाक़ाकशी जब मुंह फाड़कर सामने आ डटी तो दो-चार गिलट, चांदी के आरसी-छल्ले सांवले-सलोने तन से उतार कर हमराज़ करीमन बी के हाथों अलीजान पंसारी के यहां बेच-खोच डाले और मायके में सीखे हुए हुनर के दम पर मेमार के घर में एक खड्डी लगा ली। इस तरह सट्ट नली सट्ट तार करते-करते उसने पेट में पलती हुई पीरा की ख़ैरात में हरकत पैदा कर दी। कोठे वाली का तक़ाज़ा बराबर लगा रहा। पीरा के न होने की वजह से या किसी और वजह से सौदागर ख़ुद तो नहीं आते थे पर मुंशी सबरंग बेग जब दूसरे-चौथे उस ख़ैराती की देनदारी का तक़ाज़ा करने आता था तो यह पेट की ख़ैरात अमीना के तन-बदन में इतने ज़ोर की उछाल मार बैठती थी कि जैसे अभी सामने आकर तक़ाज़गीर का थूथड़ा पीट डालेगी। लेकिन बदों के मुंह क्या यों पिटा करते हैं?

इस तरह पापड़ पीटते-पीटते, पीरा की राहें तकते-तकते और आहटें सुनते-सुनते अमीना ने एक दिन रमज़ानी जन दिया।

अपनत्व का अर्थ तो एक ही है पर प्रकार बहुत हैं।

अपनत्व एक तो वह है जिससे दरियाशाह क़तराशाह को साथ लिये अपना ठांव-ठिकाना छोड़ कर भटकते हुए उसकी गुत्थियां सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं, एक वह है जिसके कारण क़तराशाह दूसरों की करनी-धरनी से व्याकुल होकर चाहे जिसके फटे में पांव फंसाने को दौड़ पड़ते हैं। अपनत्व एक वह है जिससे ऐश-बेगम जैसी खाती-पीती औरत अपनी बेटी को किसी रियासत के सिंहासन से नीचे और कहीं देखना ही नहीं चाहतीं, एक वह है जिससे रौनक़ जैसी रूपसी सारे नवाबी ऐश-आराम छोड़कर बगदार के बंजर में आ बसी है, और एक वह भी है जिसके कारण मीरा जैसा आदमी-सा आदमी उसके इशारों पर कठपुतली की तरह नाचता फिरता है। अपनत्व एक वह है जिसके कारण अमीना जैसी जवान-जहान कुंवारी अपनी जवानी की चाहत की राख में दबाकर एक पागल के लिए पांच-पांच बरस चिल्ले खींच जाती है, और एक वह है जिसके कारण पीरा पागल चार दिन की आई नई-नवेली को अकेली छोड़कर दस-दस महीने तक देश-विदेश में तन तोड़ता फिरता है। अपनत्व एक वह है जिसके कारण मान-अपमान का विचार छोड़कर पीरा अपने भाई के घर में सफ़ेदी पोतने के लिए चूना-कूची लेकर जा पहुंचा, एक वह है कि जिससे भाई को देखते ही प्रेयसी का भय भूलकर मीरा ने रेशमी आस्तीन खींचकर चूना घोलना शुरू कर दिया। अपनत्व एक वह है जिसके कारण नौ कम सौ के बुज़ुर्ग बुंदू मियां ने सारी कठिनाइयों की जानकारी होते हुए भी पीरा की पोटली लेने से इन्कार कर दिया और एक महा महिमा-मय अपनत्व वह भी है जिससे सरफ़ू जैसे साधारण राज ने पोटली का उत्तर-दायित्व ओढ़कर पीरा को क्षण भर में धर्म-संकट से उबार लिया।

इसी सरफ़ू के अपनत्व के परिणाम को साकार देखने की उत्सुकता में पांव बढ़ाता हुआ पीरा दस महीने बाद लौटकर बगदार के सिवाने में आया।

धूप नहीं थी। ऋतु सुहानी थी। कोई बदली बरस चुकी थी और धूप धरती पर जमकर कठिन हो गई थी। चलने में बिलकुल ज़ोर नहीं पड़ रहा था। जाते समय जहां-तहां खड़े हुए रूखे-सूखे रूख तो हरे हो ही गए थे, और भी बहुत से निकल पड़े थे।

विचारों में तरंगें उठ रही थीं—

अच्छा ही सोचा बाबा ने। राहगीरों को सर छुपाने का ठिकाना तो हो ही जाएगा। पहिले तो अहाते की दीवार ही नज़र आएगी—ऊंचाई मालूम नहीं कितनी उठाई होगी—मेहराबें, दालान, कोठड़ियां तो ऊपर जाकर ही दीखेंगी—जोड़ियां तो क्या चढ़ी होंगी—रुपया भी पोटली में इतना थोड़े ही होगा—शायद

और दिया हो बाबा ने—बाबा के बैठने की जगह पता नहीं वहीं रक्खी है या बदल दी—मीरा ने चौंतरा खोद-खाद तो पहिले ही दिन डाला था—अब मालूम नहीं कहां बनाया होगा सरफ़ू ने !'

टीले पर पहुंचते ही पीरा का मनोरम मनोरा अर्राकर ढह पड़ा ।

पिपलिया नीम के नीचे का चौंतरा ही नहीं, तकिये का तकिया सपाट पड़ा था । जो था वह निःशेष हो गया था, जो होने को था उसका पता नहीं था । जितना सामान वह अपने हाथों से संभाल-संवारकर रख गया था उतने का ही कुछ बचा-खुचा जहां-तहां फैला पड़ा था और उसमें वर्षा के कारण झाड़-झुंड निकल आए थे । काई से काला-नीला होकर दरियाशाह का तकिया भूत प्रेतों का बासा नज़र आ रहा था । पंछी रहित पिपलिया नीम, साधु के उध्वस्त बसेरे के ऊपर दुर्दान्त राक्षसों की तरह हज़ारों बांहें फैलाये हुए इस तरह सन्ना रहा था जैसे तकिए की दुर्दशा के उत्तरदायी को लीले बिना छोड़ेगा नहीं ।

स्थितप्रज्ञ प्रज्ञाहीन हो गया । हाथ हिलने बंद हो गए । मुंह खुला का खुला रह गया, आंखें फटी की फटी रह गईं । कोई देखता तो समझता कि इमारत प्राकृतिक कोप से ढह गई है और प्रतिमा दैवयोग से खड़ी रह गई है ।

कहां गई वह पोटली ?

जिस पोटली को बद नज़र से बचाने के कारण, अपने उससे पराए हो गए और पराये अपने हो गए, उस पोटली का क्या हुआ ?

अपनी खुद्दार (स्वाभिमानी) हयादार बीवी की हया, पर्दा और आबरू चौराहों पर उतरवाकर भी जो उसने नहीं खोली वह पोटली कहां गई ?

जिस पोटली को पोटली वाले के काम में लाने का हठ करके, चार दिन की आई अपनी जान से प्यारी औरत को छोड़कर वह दस-दस महीने से जानी-अन-जानी जगहों में भटकता, मरता, खपता फिर रहा है उस पोटली का क्या हुआ ?

कहां है वह अपना जिसने पंचों के बीच में बैठकर अपना बनकर पोटली का बीड़ा उठाया था ?

जिसकी थी वह पूछेगा तब ?

पहिचान के चोर ने जान से मार डाला ! क़तराशाह ने कहा था कि यह अमल पीरशाह की परेशानी का बाइस हो सकता है । क़तराशाह जो कहते हैं वह सच है, दरियाशाह जो कहते हैं वह महज़ ख़ामख़याली है ।

पीरा ने एक छातीफाड़ चीख मारी, 'बाबाSSSS !'

सुना है कि बंदा जब और जहां याद करता है, खुदा वहीं होता है पर नऊज़ुबिल्लाह, जानकारों ने शैतान की भी यही ख़सलत बताई है !

पीरा की पुकार पर एक आहट-सी जो हुई और चौंककर पीरा ने उधर देखा तो मज़बूत बांस-बल्ली गाड़कर तिरपाल-चटाई छाकर बनाई हुई एक

झोंपड़ी-सी में से पीरा का 'अपना' सरफ़ू मेमार नमूदार हुआ। मेंह रुक जाने की वजह से झोंपड़ी के ऊपर सूखने के लिए डाले हुए दो-एक ज़नाने कपड़ों पर भी उसकी उचटती-सी नज़र पड़ी और साथ ही साथ ऐसा भी लगा कि सरफ़ू के पीछे झोंपड़ी के अन्दर से कोई ज़नाना चेहरा भी उसकी तरफ़ झांक रहा है। पीरा को देखते ही सरफ़ू इस तरह बग़लें झांकने लगा जिस तरह सफ़ेदपोश जेबकतरा सिपाही की पकड़ में आ जाने पर झांकता है। ज़बरदस्ती मुस्कराकर ताज्जुब से बोला, 'कौन, पीरा ?'

अचानक जवान मौत पर हक्का-बक्का होकर जैसे कोई सगा बिना रोए ही कह उठे कि 'यह क्या हुआ ?' ऐसे ही पीरा के मुंह से निकला, 'ये क्या हुआ ?'

कोई जवाब न देकर संगी-साथी जिस तरह ऊपर को हाथ उठाकर हिला देते हैं उसी तरह सरफ़ू ने हाथ हिला दिया।

ऊपर को पीरा क्या देखे और देखकर क्या समझे ? सदा सामने ही देखता आया है और सामने सिर्फ़ हाथ हिलते हुए दीख रहे हैं। कुछ समझा नहीं। बोला, 'तू ह्यां कैसे बसा हुआ है ?'

'मैं तो सात-आठ महीने से हईं पड़ा ऊं।'

'क्यों ?'

कुछ जवाब नहीं मिला तो आंखों से ही झोंपड़ी की तरफ़ इशारा करके पीरा ने पूछा, 'ये कौन है ?'

अब सरफ़ू इसे यह क्या बताए कि यह कौन है ? यह तो सरफ़ू की उभरी हुई नस है। उसके ऐमाल का नतीजा है : सरवर की बेवा है। बुंदू मियां तो ख़ैर बे-औलाद हैं, यह उनके भतीजे की जोरू है। उन्हीं के घर रहता था भतीजा। पीरा के बगदार से जाने के बाद यकायक किसी बीमारी से सरवर मर गया तो क़ब्र की मिट्टी सूखने से पहिले ही शकूरन सरफ़ू से हिल गई या सरफ़ू ने हिला ली। बुंदू ने शकूरन को धक्के देकर निकाल दिया तो बिरादरी वालों ने भी सरफ़ू को को पीट-पीटकर सपाट कर दिया। पिट-पिटाकर सरफ़ू ने सकूरन से कन्नी काटने की कोशिश की, लेकिन टूटी हुई बांह थी, गले पड़ गई। आखिर सरफ़ू उसे लेकर दरियाशाह के लावारिस तकिए पर आ बसा। तकिए पर मदद लगती कैसे ? और सरफ़ू यह बताए भी क्या कि यह कौन है !

टालकर बोला, 'बस यार ये मत पूछ !'

पीरा के लिए यह जानना ज़रूरी भी नहीं था। जो ज़रूरी था वह उसने पूछा, 'अच्छा नईं सई, पर ये तू बता कि ये काम ऐसे कैसे पड़ा है ?'

सरफ़ू ने तोते-से उड़ा दिए, 'अरे यार किसी ने फातिया बता दी, किसी ने दरूद (कर्मकांड) बता दी। कोई कर्ज में, कोई मर्ज में, कोई हर्ज में। मजूरी हरामियों ने महीनों की पेसगी ले ली और फिर कोई आन के नईं फटका।'

पीरा घुटने पकड़कर बैठ गया। दस महीने की तनतोड़ मेहनत के दौरान इतनी थकान उसे कभी नहीं चढ़ी। ऐसा लगा कि वह बैठा-बैठा यहीं पीछे को लुढ़क जायगा और फिर नहीं उठेगा।

परिस्थितियां बड़े-बड़े ज्ञानियों का ज्ञान झाड़ देती हैं।

सरफ़ू घबराकर 'बोरी लाऊं बैठने को—पानी पियोगे?—आराम से बैठो! —गर्मी तो ऐसी है नई—बरखा तो कल से कैई झड़ आई है—' वग़ैरा कह-कहकर खड़ा-खड़ा पांव पर पांव बदलने लगा।

बेईमान की आवाज़ में ईमानदार से अपनापन ज़्यादा होता है।

झोंपड़ी के भीतर से खट-खट करके शकूरन ने चिलम का हाथ बाहर निकाला। झोंपड़ी तक जाने और लौटने का यह दस क़दम का फ़ासला तय करने के बहाने ज़रा देर के लिए पीरा के आगे से हट जाने का मौक़ा पाकर सरफ़ू की जान में जान आ गई। चिलम शकूरन के हाथ से ले ली, पीरा के सामने आकर बैठा और चिलम उसकी तरफ बढ़ाई। पर चिलम के लिए पीरा का हाथ नहीं बढ़ा। अंधे से कुंए में से आवाज़ आई, 'हम तुजे जिम्मेदार करके गए थे!···'

हल्के से कश में सरफ़ू को भारी-सा धक्का लग गया। खांसता-खांसता बोला, 'मेरा तो भाई साहब कुछ कसूर है नईं इसमें···'

'उस धड़ी पक्के की पोटली में से···'

'वो तो हो गई खर्च। मजूरी दे दी, माल मंगवाया था, वो कुछ लौंडे-लारे उठा के ले गए, कुछ मेंह-पानी में बह गया, यां छान नईं, छप्पर नईं।'

गुमसुम पीरा, बाबा के उजड़े-उखड़े चौंतरे को ताकने लगा। ताकते-ताकते बहुत देर हो गई तो सरफ़ू ने फिर उसकी ओर चिलम बढ़ाई। पीर ने ले ली और ज़ोर का एक कश लगाकर चिलम लौटाता हुआ बोला, 'दरिया बाबा नईं आया?'

'नां!'

एक बहुत लम्बे सांस के साथ पीरा की कहीं नाफ़ में से 'हूं' जैसी कुछ आवाज़ निकली और फिर बोला, 'तो इसका मतलब ये हुआ सरफ़ुद्दीन कि मैं अपने भाई का करजदार तो था ई अब फकीर का बी हो गया।'

ज़बरदस्ती शर्मिन्दा होकर सरफ़ू ने कहा, 'भई हमसे तो पीरअली तुम जैसे कहो वैसे तैयार हैं।'

पीरअली कह सकता था कि हरमज़ादे वह पोटली निकाल जो तूने पंचों के बीच में अपना बनकर उठाई थी। दो झापड़ मारकर पोटली के बदले में पीरा उसके दांत भी निकाल सकता था, हाथ भी तोड़ सकता था, टांग भी तोड़ सकता था, पर दग़ाबाज़ की हड्डियों को तकिये के बुनियाद में भरता क्या!—नहीं, कोई फ़ायदा नहीं। वक़्त निकल गया, पीरा चूक गया! अब पछताने से क्या फ़ायदा?

बहुत सोचने की पीरा को बुद्धि भी नहीं है, आदत भी नहीं है। क़सूरवार उसने ढूंढ़ लिया, सज़ा का फ़ैसला भी कर लिया। फ़ैसले के बाद उछाला-सा मारकर ऊपर आया। बोला, 'ये बात है तो सरफ़ू पैले तो तू अपनी जनानी को ले जा ह्यां से ! झोंपड़ी उखाड़ दे, फिर जो-जो मजूरी पेसगी ले चुके हैं उनों को बुला के ला। कल तड़के से ई काम जुड़वा !'

पेशगी लिए हुए कारीगर सरफ़ू कहां से लाए ? कहीं हों तो लाये ! झोंपड़ी उखाड़ दे तो शकूरन को कहां ले जाय ? वह तो यह सोचे बैठा था कि यह पागल मर-खप गया होगा कहीं ! जाने कहां से आ मरा कम्बख़्त काम जुड़वाने को। काम जुड़ा तो फिर सारा हिसाब लगा देगा बुड्ढा बुंदू ! यह चूल्हा फूंकने से तो बाप को नाज न मिलना ही अच्छा। सरफ़ू ने पीरा को डराया, 'पर भाई साब पैसा···मालताल···मोल-मजूरी···'

पीरा ने कहा, 'तू खड़ा हो जा। मैं ये बचा-खुचा माल जमाता हूं ठिकाने से, घर भी पीछे ई जाऊंगा।'

झोपड़ी के अन्दर से शकूरन की आवाज आई, 'इनसे कओ पैले घर चले जायें, इनके बाल-बच्चा हुआ है !'

'अल्ला कसम ?'

भीतर से उछाह और उमंग की कुछ ऐसी तरंग-सी उठी कि 'अल्ला कसम' कहकर पीरा, कमानीदार खिलौने की तरह इतना उछल पड़ा कि घुटने में अटकाया हुआ औज़ारों का थैला तो धड़ाम से धरती पर गिरकर खुल पड़ा और पेट पर बंधी पोटली ने कोख में एक धक्का-सा मारा। दोनों हाथों से पेट पकड़कर झांझन पहिनी हुई घोड़ी की तरह इस पांव से वह पांव, और उस पांव से यह पांव बदलता हुआ, वह 'हीं-हीं-हीं-हीं' करके हिनहिनाने लगा। फिर बोला, 'ये तो खूब बात हुई। अच्छा तो सरफ़ुद्दीन भाई, मैं पैले घरी हो के आता हूं, तुम झोंपड़ी उठाओ !'

जल्दी-जल्दी बिखरे हुए औज़ार थैले में भरे और कई-कई सीढ़ियां कुलांचता हुआ पीरा गांव की तरफ़ भागा।

माथा ठोकता और पांव पटकता हुआ सरफ़ू झोंपड़ी में गया और टिकाव की बल्ली पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाने लगा। शकूरन ने घबराकर कहा, 'झोंपड़ी उखड़ गई तो मैं कां रऊंगी बंदे ? गाम में कौन घुसने देगा मिजे ?'

झल्लाकर बल्ली झकझोरते हुए सरफ़ू ने कहा, 'बी ये तो ऐसे ई है। झोंपड़ी है तो सकूरन नईं, सकूरन है तो झोंपड़ी नईं। आ, लिकल बाहर को !'

शकूरन के बाहर आते ही उस बे-बुनियाद गिरस्ती की छत चरचराकर ढह पड़ी। अपनी ही करनी से अपने पांवों में कुल्हाड़ी मारकर, पीरा की रक़म इकारकर पीरा से ही सरफ़ू ख़्वामख़ाह खार खा गया।

अपनत्व का एक प्रकार यह भी है .

□□

पीरा जब घर की दहलीज़ में घुसा तो अमीना तो सामने नहीं थी, दालान में एक खटिया पर गुदड़ी में लिपटा हुआ, काली सांवली मां के पेट में पलकर भी उसके रंग में बिलकुल अलग-थलग, पूरी तरह बाप के रंग और नाक-नक़्श वाला, गुल के चेहरे और गुलाब की रंगत का बच्चा कोंपलों से हाथ-पांव हिला-हिलाकर अकेला ही मुसकुरा रहा था जैसे पीरा की आमद पर मुसकुरा रहा हो। पीरा ने औज़ारों का थैला धीरे से धरती पर रख दिया और धरती से अधर पांव उठाकर पंजों के बल अचक-अचक चलकर वह खटिया पर झुका और गुदड़ी हटाकर उसने लाल लपक लिया। इस बेजा मदाख़लत से बच्चा एकदम से मुंह बिसूरकर रो उठा तो पहिले तो पीरा ने कई तरह की तुतलाहटों से उसे चुप करने की कोशिश की पर जब वह रोये ही चला गला तो वह खुद भी हँसकर उसके रोने की तरह रेंकने लगा।

आवाज़ें सुनकर जली हुई ढिबरी हाथ में लिए भीतर से अमीना बाहर आई तो मां के कलेजे की तरह कांपते हुए उजाले को देखकर बच्चा चुप हो गया। पीरा ने आंखें उठाकर अमीना की तरफ़ देखा—

नंगी गर्दन के ऊपर सुरमई अंडे सा चेहरा, कंगाली के खसोटे हुए रूखे-सूखे बाल, बरस भर के कड़वे तजरुबों की पेशानी, मिलने की जगह सुकड़ी हुई भवें, सुतवां नाक के तने हुए नथुने, कंपकंपाती हुए नुकीली ठुड्डी के ऊपर थरथराते हुए पतले-पतले होंठ और टप-टप करने को लबालब भरी हुई आंखें—

अमीना को एक हिचकी आई और आंखें बांध तोड़कर बह निकलीं। सुबकती हुई बोली, 'आ गया तू मियांजी औलाद पे लाड़ करने को?·· जा, अब बी क्यों आया है?···यां तेरा है कौन जो आया है?'

मुंह फेरकर और बच्चे को सीने से लगाकर धीरे से पीरा ने कहा, 'तू है जो मेरी बीवी!'

अमीना छलककर बिखर पड़ी, 'गारत ना हुई मैं तेरी होते हुए! तुजे सरम नईं आई जो मुज अकेली को छोड़ के चला गया? मेरे पेट में बच्चा है, और मैं मजूरी करती फिर रई ऊं, धूप में क्या, मेह में क्या! आप नंगी बैठी ऊं और दूसरों का तन ढकने को रात-दिन चर्खा कात रई ऊं और खड्डी चला रई ऊं। किस दाता के सहारे छोड़ के गया था मुज मुकद्दर मारी को? जरा अपना चेहरा तो कर मेरे सामने को हीरा खां!'

पीरा चेहरा सामने नहीं कर सका। शर्म से, ग़ैरत से, ग़लती के अहसास से

या मौला जाने, बाढ़ के उतार के इन्तिज़ार में ! सूंस की तरह सुन्न होकर वह गर्दन झुकाये और बच्चे को सीने से लगाये चुपचाप बैठा ही रहा तो झुंझल में आकर अमीना ने ढिबरी ज़मीन पर दे मारी। अन्धेरे में ही उसके सामने बैठकर उसके घुटने दोनों हाथों से झंझोड़कर बोली, 'अरे तू तो बुरा बी नईं मानता अल्ला के बंदे, तू पागल है, दिमाना है, या क्या है ?' बुरा मान के ई जवाब दे दे कुछ !'

बच्चा सो गया था। गुदड़ी में ढंककर उसे खटिया में लिटाते हुए पीरा ज़रा-सा इस तरह हँसा जैसे अमीना ने कोई बहुत ही नासमझी की बात कह दी हो। बोला, 'अरी बुरा किस बात का मानें जब तू ठीक इ कै रई है।'

ऐसे से कोई क्या तो कहे और क्या सुने। ग़लत को ग़लत मानने वाला आदमी न कभी जीता जा सकता है, न हराया जा जा सकता है। ऐसे को अपने लिए तो बुरा कुछ है ही नहीं, ऐसे की बात का बुरा मानना ख़ुद अपने आप में एक बुराई है। दुनिया ऐसे को ग़ैर दुनियादार, भोला, बुद्धू, पागल या दीवाना कह तो सकती है, पर सूरज की तरफ़ थूकने से क्या फ़ायदा है ?

सो फटी हुई ओढ़नी के आंचल से आंसू पोंछकर अमीना ने पूछा, 'कहां गये थे ?'

पीरा ने कहा, 'अरी गया तो सौदागर का कर्जा चुकाने के वास्ते ई था।'

बेशक, गया तो इसी काम के लिए था। अमीना तड़पकर बोली, 'फिर क्या हुआ तो ? तगादा ज्यों का त्यों क्यों है कोठे वाली का ?'

बुड़-बुड़ करके पीरा बोला, 'तगादा कोई झूठ थोड़े ई है !'

इतने दिन बाद जागे हुए नसीब में अमीना ठोकर नहीं मारना चाहती थी पर इन हिचकोलों पर झुंझलाये बिना न रह सकी ! 'मियां कुछ समज में आने लायक बोली बी तो बोलो, कहां गई वो रुपियों की पोटली ?'

पीरा ने समझ में आने लायक़ बोली में कहा, 'वो पोटली तो जिसकी थी उसके काम में उस रात लगा के ई गया था मैं।'

तक़ाज़ा सच होने की वजह भी समझ गई बेचारी। साल भर की खड़तल ज़िंदगी के जोड़-तोड़ लगाकर आज यह हल भी निकल ही आया था कि उसका आदमी किसी की अमानत में खयानत करके पेट भरने या क़र्ज़ चुकाने वाला कच्ची मिट्टी की मिलावटी चुनाई करने वाला मेमार नहीं है, बल्कि अपने साथ बीवी-बच्चों तक को ईमान की भट्ठी में तपा डालने वाला लुहार है। पोटली आज होती, तो भी होती न होती-सी ही होती। मियां की इस ईमानदारी ने उस नेक औरत की किसी दुखती हुई जगह पर मीठा-मीठा सेक करके आराम-सा पहुंचाया।— 'भाड़ में गई पोटली। यह मेरे सुहाग की पोटली, यह मेरे करे-धरे के सवाबों की पोटली, यह मेरा बावला आदमी राज़ी-ख़ुशी घर लौट आया, बस बहुत है। शुक्र है परवरदिगार का !'

शुक्रिया करके कुछ हल्की होकर बोली, 'अब इत्ते दिनों में कुछ कमा के बी तो लाये ई होगे।'

पीरा ने झट कुरता ऊपर को उठाया और लुंगी में उरसी हुई कमाई की पोटली दिखाता हुआ बोला. 'हां-हां, लाते क्यों नई, ये देख।'

ठंडक पड़ गई।—चलो अच्छा हुआ। अब अपनी ही कमाई से क़र्ज़ चुकाकर इसे भी सब्र आ जाएगा, और अल्ला मेरा भी मुंह उजला कर देगा। कोई बात नहीं, इसने दुख तो बहुत दिये हैं, पर गया तो मेरे ही अरमान पूरे करने को था। मर्द कमाऊ भी हो और ईमानदार भी हो, ऐसा तो किसी भाग भरी को ही मिलता है।

उसे भरोसे में लेकर बोली, 'अब जो कुछ मैं कऊं वो सुन लो चुपचाप बैठ के।'

पीरा ने कहा, 'बस अब तू कैती रैगी और मैं सुनता रऊंगा, युंई मौज आती रैगी !'

बच्चे ने कुलबुलाकर 'कुंआ-कुंआ' की तो हँसकर बोला, 'पर देख ले, अब तू हम से कुछ सखत बात कैगी तो ये रोवेगा अमीनुउद्दीन।'

अमीना की हँसी छूट पड़ी, 'हय-हय, उसका नाम अमीनुउद्दीन थोड़े ई अै, वो क्यों रोएगा ? वो तो रमजानी अै।'

बच्चा उसने गोद में उठा लिया और उसे झोटे से देती हुई बोली, 'वो तो लमजानी है—मीनुउद्दीन क्यों होता हमाला बेता—लमजानों में हुआ है—उसका नाम लमजानी है—कब्बी नई लोयेगा !'

अमीना ने पूरा मुंह खोलकर चटाक से बच्चे के सारे गाल का चुम्मा ले लिया।

पीरा ने देखा अमीना ज़रा ढीली होकर पहले से ज़्यादा लचकदार हो गई है।

गोद में बच्चा लिए हुए सुन्दर स्त्री से अधिक सुन्दर इस संसार में और कुछ नहीं है।

पीरा अपनी उसी पीराछाप हँसी से हिनहिनाकर बोला, 'अमीना, ये तो बड़ी उसक[illegible] बात हो गई !'

समझ[illegible] तो [illegible]ई, पर न समझकर बोली, 'किसकी ? क्या ?'

पीर[illegible] 'ये ई, तेरे बच्चा जो हो गया !'

झट[illegible] फेरकर अमीना ने अन्धेरे में शीरा ही शीरा बखेर दिया, 'हाय अल्ला, [illegible] क्या बात हो गई ? मेरे तो होता ई।'

इस[illegible] चिपक से अचानक पांव उखाड़कर उठता हुआ पीरा बोला, 'अबी अ[illegible]

अ[illegible], 'कां चल दिए आते ई ? रोटी तो खाते जाओ।'

जाते-जाते ही मीरा ने कहा, 'बस अब तू टोक मत। कुछ नाच-तमासा होने दैये घर में।'

अमीना निहाल हो गई।

□□

दौलत इन्सान को जो कुछ दे सकती है वह सब कुछ देकर भी मीरा को उसने ठेंगा ही दिखा दिया। ग़ज़ब की बात है कि साल भर होने को आया, सोने की चमक-चमकदार मोहरों की लगातार मार से नथनी का पेच तक ढीला नहीं हुआ!

अपनी सच्ची मुहब्बत का सुबूत देने के लिए एक दिन अलीजान के ज़रिये कहीं से मंगवाकर हीरे की एक दमदमाती हुई नलकी लेकर मीरा ऊपर के कोठे में आया और रौनक़ से गिड़गिड़ाकर बोला कि 'लो बेगम, आज यह कोहेनूर की नलकी नाक में डलवाकर वह पुरानी-धुरानी नथनी हमसे उतरवा लो!' तो बेगम नलकी क़ुबूल करके यों मचली कि 'अल्ला, यह इत्ती मोटी डंडी की नलकी से हमारी नाक का सुराख़ कित्ता हो जाएगा! हम नहीं उतरवायेंगे, हमें आदत नहीं है!'

इस नकेल से भी उछलती हुई बछेड़ी काबू में नहीं आई और कुत्ता फिर हौंकता रह गया।

साल भर हो गया। नलकी न मालूम कहां रख दी गई है और नथनी बद-स्तूर पहरे पर है।

एक दिन अहसास की नाजुक घड़ियों में मीरा ने छिपी जगह का यह गहरा ज़ख्म अलीजान के आगे नंगा कर दिया। पुट्ठा थपथपाकर, हिम्मत बंधाकर, मुट्ठियों माल की चिलम में चांदी करवाकर, एक काले इल्म वाले स्याने से एक तावीज़ लाकर अलीजान ने मीरा के बाज़ू पर बांध दिया कि कैसी ही पत्थर-दिल औरत क्यों न हो, पिघल न जाये तो लानत भेज देना।

तभी से तावीज़ बाज़ू पर बांधकर मीरा रौनक़ के इर्द-गिर्द डंड फटकारता हुआ घूमने लगा, पर रौनक़ चित नहीं हुई।

ख़ुदकशी के ख़याल में एक दिन सब के सो जाने के बाद मीरा अलीजान के पास पहुंचा। बे-वक़्त आने की वजह बतलाई कि लानत-मलामत करने आया हूं। अलीजान ने कहा 'कि आपको अख़तियार है, लेकिन ग़लती आप ही की है। अब तक तो तावीज़ आपको बेगम की कमर से बांध देना चाहिए था भाई जान। आप चूक गये, मगर ख़ैर अभी कुछ बिगड़ा नहीं है।' बिल्ली के गले में घंटी बांधने की तरह उसने कहा कि 'शर्त तो यह है कि तावीज़ नंगे जिस्म से हर वक़्त छुआ

रहना चाहिए। यह नहीं कि लटका हुआ है इज़ार के ऊपर। फिर न हो तो अलीजान लानतों के लिए बैठा ही है।' बस उसी दिन से यह बेचारा नामुराद आशिक़, माशूक़ की नंगी कमर तक नसैनी लगाने के फ़िराक़ में ताक-झांक करता फिरता रहता है।

इधर मुरब्बी अल्लाबंदे ने बार-बार इशारे किए हैं कि 'बी कसम से यह तांत इतनी न तन जाए कि तड़ से टूट जाय।' लेकिन बी हैं कि ताने ही जा रही हैं। मक़सद पूरा किए बग़ैर वह ढाल फेंककर वार झेलने के लिए क़तई तैयार नहीं है। और मक़सद कैसे पूरा हो?

रौनक़ महल की तामीर के साथ ही रौनक़ को शाहसाहब की पेशीनगोई का दूसरा हिस्सा याद आ जाता है तो कोफ़्त होने लगती है। मुई कोई तुक है कि तामीर के साथ-साथ पेट में बच्चा पालना पड़े!

इसके सिवा बच्चे के ख़याल के साथ ही साथ अब उसे अमीना के बच्चे का ख़याल आने लगा है। जिस दिन से अमीना के बच्चा हुआ है रौनक़ की नींद हराम हो गई है। अमीना के मान न मार सकने का दुख ही कुछ कम नहीं था। क़र्ज़ के डर से मर्द के भाग जाने के बावजूद वह दो कौड़ी की औरत मेमारन से जुलाहन बनकर घर में खड्डी तो चलाने लगी, लेकिन टुकड़ा मांगने बगदार की बेगम के दरवाज़े पर आनकर न झांकी। बढ़े हुए पेट पर पट्टी बांधे मेहनत-मज़दूरी करने तो निकल पड़ी, पर नाक रगड़ने दुमंज़िले की तरफ़ नहीं आई। तक़ाज़े करा-कराकर सबरंग से उसकी चौखट घिसवा डाली, पर वह बेशर्म बंदी गिड़गिड़ाने के लिए रौनक़ के पास आन के न फटकी। इस रस्सी के बल वह न जला पाई!

ऊपर से हो गया बच्चा!

न जाने क्यों रौनक़ को ऐसा लगता है कि यह बच्चा उसके मुक़द्दर में मेख मारने के लिए ही पैदा हुआ है। ऐशबेगम की यह दूरंदेश बेटी इस बच्चे की पैदाइश की घड़ी से बड़ी बारीक उलझन में पड़ गई है। औरत के दिल की थाह पाना बड़े-बड़े ग़ोताख़ोरों के लिए भी मुमकिन नहीं है।

पर इस औरत का मर्द इस वक़्त न इसकी उलझन में है, न दिल की थाह पाने की कोशिश में है। वह इन दिनों सिर्फ़ उसकी नंगी कमर में तावीज़ बांधने की फ़िक्र में डूबा हुआ है।

अक़्लमंदों का कहना है कि जब अपनी अक़्ल काम न दे तब दुश्मन से भी सलाह लेने में गुरेज़ न करे। फिर बंदेमियां तो दुश्मन भी नहीं हैं, वह तो चचा हैं। सो एक दिन ग़म का मारा, दम के ठसके से खांसता-खांसता मीरा अल्लाबंदे से कुछ शिकवा करने ही वाला था कि आंधी से उड़े हुए सूखे पत्ते की तरह पीरा, उड़का हुआ दरवाज़ा धाड़ से खोलकर अन्दर आया और आते ही बोला, 'अमीर अली सौदागर सलाम, खुसर मियां सलाम!'

गिले-शिकवे तो गया भूल और यकायक पीरा को देखकर, लेनदार होते हुए भी मीरा, देनदार की तरह सिटपिटाकर बोला, 'अरे वा रे पीरा पगले, सलाम ! ···राजी-खुशी खैरसल्ला ? कहां चला गया था भैया ?'

हँसकर पीरा ने कहा, 'बस जैसे तू चला गया था वैसे ई हम बी चले गये थे। अब आए हैं तो घर में लड़का हुआ पाया है !'

मीरा सचमुच अमीना की खुशी में शिरकत करना चाहता था। रौनक़ के डर का मारा मन मारे बैठा था कि पीरा के आने से फिर बात ताज़ा होते ही गांजे की चढ़त में मीरा की खोपड़ी में दूसरा ही गुबार उठ खड़ा हुआ। 'अव्वल तो सुसरा यह तावीज़ वहां बंधना ही मुश्किल है, फिर समझो बंध भी गया, और ख़ुदा-न-ख़ास्ता वह बात नहीं हुई तो औलाद होगी ही कैसे ? नहीं हुई तो क्या होगा ? कौन हमारी अटाटूट दौलत का वारिस होगा ? यह तो लुट जाएगी।'

लम्बा-सा कश मारकर मीरा बोला, 'पीरा, हम इसी फिकर में थे कि हमारे औलाद नईं हुई तो हम अपना धनमाल किस पे छोड़ेंगे। अब रस्ता लिकलियाया, हम तेरा लड़का ले लेंगे।'

कोई होता तो लड़का लेने की बात कर दुश्मनी ठानने की हद तक बुरा मानता। कोई होता तो धनमाल के लालच में लड़के के साथ लड़के की मां को भी धाय के बतौर कल का देता आज ही दे जाता, पर पीरा ने कहा, 'अरे धन-माल की क्या बात करता है, लड़का तेरा ई है। तू बड़ा है, हम छोटे हैं।'

इसी वक़्त ज़नानख़ाने का पर्दा हटाकर बड़े की बे-औलाद जोरू और जोरू का भाई ज़ीने से नीचे उतरे। वारिस चुन लेने के सिर्फ़ फैसले से ही बाप बन-कर बैठे हुए मीरा ने उमंग में भरकर रौनक़ से कहा, 'देख लो जी आ गया है पीरअली।'

भाभी को देखकर देवर ललक उठा, 'सलाम है भाबीजान, सलाम भई साले, तू राजी-खुसी है ना ?'

चकफेरी मारकर सबरंग चटचटाया, 'लाहौल वला, इमान से आते ही चोंच लड़ानी शुरू कर दी।'

साले की हरकत पर खिलखिलाकर पीरा ने रौनक़ से कहा, 'भावी, परदेस में तू हमें भौत याद आती थी।'

फिर सबरंग की तरफ़ मुड़कर बोला, 'तू तो साले ऐसा ई है कलाउड्डू-सा, पर भई हमने भौतों के मूं देखे, ऐसा सुबक नईं देखा जैसा तेरी भैन का है।'

पीरा की ज़ुबानी अपने मर-मिटने की वजह सुनकर मीरा ने दांत निपोरकर सबरंग की बहिन की तरफ़ देखा। सबरंग की बहिन ने पीरा से कहा, 'मुंह तो देख लिया अब रुपये तो निकालो मुंह दिखाई के। साल भर हो गया सबरंग भाई को जूतियां घिसते-घिसते, अब तो खूब कमा के लाये होगे ?'

पीरा ने कहा, 'हां-हां कमा के तो लाये हैं।'

फटा हुआ कुरता ऊपर को उठाकर पोटली दिखलाता हुआ बोला, 'देख ले, पर तुजे नई दूंगा अबी।'

रौनक़ के चेहरे पर तनाव आया, 'क्यों नहीं दोगे जी ?'

पीरा ने कहा, 'जरा एक काम जरूरी आ गया बिच में, पैले वो करना पड़ेगा।'

रौनक़ ने कूल्हों पर दोनों हाथ रखकर कहा, 'और हमारा क़र्ज़ा चुकाना ज़रूरी नहीं है क्या ?'

वक़्त रहते ही हालात पर क़ाबू पाने की कोशिश में मीरा बोल पड़ा, 'अजी तुम बी कहां की चर्चा ले बैठीं बेगम, उसके हां लौंडा हुआ है, वो बी याद है कै नईं?'

लो, जिसके सिवा बेगम को आजकल और कुछ याद ही नहीं है उसके लिए यह बौड़म पूछता है कि वह भी याद है कि नहीं।

बक़ौल दरियाशाह के कामिल-उल-फ़हम पीरा ने रौनक़ से कहा, 'देखो भाबी, हम तुमें सलाम कर रहे हैं। कल सवेरे तुम अपने भाई को, चचा को और सौदागर को, सब को ले के चली आओ। जरा नाच-गाना हो जाय तो रौनक हो जाय। अमीना का जी राजी हो जायगा। तुम सी नाचने-गाने वाली भी और कौन मिलेगी बगदार में ?'

क़र्ज़ रह गया एक तरफ़, तक़ाज़ा एक तरफ़ और न जाने क्या हुआ कि या तो पीरा के सलाम से प्रभावित होकर, या प्रशंसा से उत्तेजित होकर या आदतन, या ख़ुदा जाने मस्लेहतन, रौनक़ के मुंह से निकला, 'आदाब अर्ज़ है !'

अल्लाबंदे और सब्ररंग यह नया पैंतरा भांपने के लिए चौकन्ने हुए !

मीरा बैठा-बैठा यों तन गया जैसे अलेल बछेड़ी को सधाने वाला सवार !

पीरा इस तरह ऊपर को उठता चला आया जैसे तार में बांधकर खींचा हुआ काठ का उल्लू। बोला, 'आओगी न ?'

रौनक़ ने कहा, 'ऐ हां-हां, आऊंगी क्यों नहीं ? ख़ूब नाचूंगी, ख़ूब ग़ाऊंगी, यह तो घर का मामला है।'

'बस तो बन गया काम' कहकर पीरा जैसे आंधी में सूखे हुए पत्ते की तरह उड़कर आया था वैसे ही उड़कर चला गया।

रौनक़ मसनद की तरफ़ आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ी। अल्लाबंदे उचककर पीछे हट गये। रौनक़ सौदागर के बिलकुल पहलू में जाकर बैठ गई। सौदागर ने अपने बाजू पर बंधा हुआ जंतर सहलाया। बैठक हिंडोले की तरह झूलने लगी। इस नये रौनक़ी-हिंडोल-राग की सुरावट पहिचानने के लिए इतनी देर से चुप बैठे हुए अल्लाबंदे ने तार छेड़े, 'बी दूल्हामियां का इरादा अपने भाई के लड़के को गोद बिठाने का हो रहा है।'

रौनक़ ने *अलाप गुन गुनाया, 'हां तो यह तो अब फ़ैसला ही समझो कि* इनके तो औलाद होगी नहीं ।—ऐ कोई जशनशाह हो या हसनशाह, सब मुए झूठे हैं, दग़ाबाज़ !'

राग पहिचानकर अल्लाबंदे ने बीरोज़े पर गज़ फेरा, 'जशनशाह की पेशी-नगोई टल जाय तो कसम से, हम तो वायदा कर चुके हैं कि अपने इलम पे तुम्हारी सलीमशाही भर के ख़ाक डाल देंगे ।'

सबरंग ने आड़ताल पकड़ी, 'इमान से चार सौ बरस से आज तक कभी कोई बात ग़लत साबित हुई है उस बुज़ुर्ग की ?···दूल्हा भाई तो ख़ुद वाक़िफ़ हैं इस बात से, क्यों जी ?'

शशोपंज में पड़कर मीरा मिनमिनाया, 'वोई तो सोच रये हैं हम !'

रौनक़ यों हँस पड़ी जैसे किसी को फिसलन में धकेलकर हँस पड़ी हो, 'सौदागर, बस तारीफ़ है तुम्हारी अक़िल की भी, अल्लाक़सम वह हाल है कि जैसे गधे पर सोना लाद दिया ।'

पहलू से सटी हुई रौनक़ की तरफ़ देखकर खिसियानी मुस्कुराहट से सौदागार ने कहा, 'देखो, अल्लाकसम खाके गधा बता रई ओ हमें ।'

सारी पैंतरेबाज़ी और होशदारी को खता कर देने के लिए उस अमेज़न ने मीरा के कलेजे में ज़हर का बुझा हुआ क़ातिल तीर भोंका, ऐ तो यों भी तो सोचो कि साल भर से तो तुम्हारा भाई परदेस में पड़ा था, यह बच्चा इसका हुआ कैसे ?'

यकलख़्त सबरंग के मुंह से निकला, 'इमान से !' और अल्लाबंदे कलमे की तरह बुदबुदा पड़े, 'या अल्ला माफ़ कर ख़ता मैं तेरा गुनाहगार बंदा हूं !'

और मीरा ?···यह तीर खाकर मीरा मसनद पर जाम हो गया। उसने महसूस किया—यह तो वाक़ई वही हाल है जो बेगम कहती हैं—कि जैसे गधे पर सोना लाद दिया। यह बात तो ख़याल में ही नहीं आई।

मीरा की नैया को यों डांवाडोल करके तीनों ने एक-दूसरे पर उचटती हुई नज़र डाली और फिर जुगाली-सी करते हुए माथे में आंखें चढ़ाकर अल्लाबंदे ने कहा, 'उस दुआ के साथ तो शर्त लगी हुई है मियां, यह भी तो सोचो। कसम से इमारत बने बग़ैर औलाद पर क्या इलज़ाम है कि न हुई ?'

निकाह करके इस परीजमाल को बगदार ले आने के बाद यह मेमार का बच्चा जब मेहर की शर्त ही भुला बैठा तो कैसे तो इसे जलवानुमाई हो जाती और कहां से औलाद टपक पड़ती ! आज अचानक सारी उलझन का सिरा हाथ आ गया। सोचने लगा कि बेकार ही साल भर तरसे। आते ही खुदाई लगा देते तो अब तक बाल-बच्चेदार भी हो जाते और महलदारख़ां भी हो जाते !

सबरंग ने कहा, 'इसमें सोचना क्या है इमान से ? सुबू उठते ही बुनियादें

रखवा दो ।'

बड़ी फ़िक्रमंदी से मीरा बोला, 'अबी तो कोई जगै बी नई ढूंढी है, बुन्याद कहां धरवा दें ।'

अल्लाबंदे ने कहा, 'मियां वह जगह क्या बुरी है जो बेगम ने आते ही पसंद की थी, और कसम से जहां आपको इलहाम (आकाशवाणी) हुआ था ?'

सबरंग उछल पड़ा, 'सुब्हान अल्लाह, इमान से उस जगह का क्या कहना !'

मीरा ने हिचर-मिचर की, 'कोई औरी जगै ढूंढ लेते ।'

अल्लाबंदे ने पूछा, 'क्यों ! वह जगह आपकी नहीं है ?'

झूठ बड़ी यारबाशी तबीअत का होता है; अकेला कभी नहीं चलता । पीछे-पीछे सवा लाख यार लेकर चलता है । झूठ सच्चा भी इतना होता है कि बोल-कर बदलने से जान ही मार देता है । उस दिन की कही हुई बात बदलने से कहीं हत्ते से ही गुड्डी न कट जाय इस घबराहट से मीरा की जुबान में हकलाहट आ गई, 'हां-हां···नई···वो तो है ई···। हमने तो एक बात कई ।'

इस हकलाहट में ही रौनक़ ने आख़री बोली लगाकर एक-दो-तीन कह दिया । बंदे और सबरंग को रोककर बोली, 'ऐ छोड़ो भी, क्या इमारत और बुनियाद की चख़चख़ लगाई है ऐसे में ।'

फिर एकदम से पलटकर दोनों हाथों से सौदागर के दोनों कंधे उसने पकड़ लिये । नंगी गर्दन पर सरगम बजाने की तरह नाज़ुक उंगलियां चलाईं । तत्ती-तत्ती हिनाई सांसें उसके मुंह पर छोड़ीं और आँखों में आंखें पिरो दीं !—वही दिलदोज़ आंखें !···सितमशार आंखें !···होशरुबा आंखें ! अल्लाह रे तेरी आंखें, जान ही क़ालिब से निकाल ली । इस तरह मामूल पर क़ाबू पाकर उस छलावे ने रियाज़ी गले से मौसमी सुर निकाले, 'सुरमई बदलियां छाई हुई हैं, फुहारें पड़ रही हैं, जंगल पर जोबन आया हुआ है, तबीअत हाज़िर है, कल उस टीले की सैर तो करा दीजिये ।'

इन ठंडी-मीठी फुहारों में भीगकर किलकारी-सी मारता हुआ मीरा बोला, 'जरूर-जरूर, कल्ल गजरदम किसी की बैलगाड़ी जुतवा के लावेंगे हम ।'

कुचले हुए तिलचट्टे की तरह अंगूठे और तर्जनी से मीरा की एक उंगली उधर पकड़कर नशे में धुत शराबी की लड़खड़ाती हुई चाल से रौनक़ उसे ज़ीने चढ़ाकर अपने कमरे में ले गई और दरवाज़ा बंद कर लिया ।

□□

भाभी को नाच-गाने का बुलावा देकर सौदागर की बैठक से पीरा चला तो गया था जल्दी ही, पर घर ख़ासी रात गये पहुंचा । छप्पर से लौटते हुए घर के

रास्ते के बीच में ही एक इतने ज़ोर का दौंगड़ा बरस पड़ा कि घर पहुंचने तक पीरा ऐसा लग रहा था जैसे कच्चे घड़े पर तैरकर सोनी के दर पर महीवाल आया हो। 'अमीनुद्दीन की अम्मां, अमीनुद्दीन की अम्मां !' कहकर दरवाज़ा खुलवाने के लिए पुकारने लगा तो फुदकते हुए दिल को हाथों में दबाकर अमीना ने कुंडा खोला और फटी हुई ओढ़नी में मुस्कान छुपाकर बोली, 'अल्ला ये कोई बात हुई ? हम कोई वो हैं ?'

अंदर आते हुए पीरा ने पूछा, वो कौन ?'

किवाड़ भेड़ते हुए अमीना ने कहा, 'मीनुद्दीन की अम्मां ?'

'और कौन है तू !'

अमीना के दिल में आया कह दे 'रमजानी की अम्मां !' पर बोल मुंह ही मुंह में नये गुड़ की डली की तरह घुल-घुलाकर रह गये। मीठी-सी बोली, 'खाली अमीना क्यों नईं कैते ?'

पीरा ने कहा, 'अरी खाली कां है तू अब ?'

कोख में गुदगुदाई जाकर बोली, 'तो मैं बी अब हीरा मिस्त्री ई कऊंगी तुमें।'

'वो तो तू पैली रात से ई कैने लगी थी हमें।'

पीरा ने अमीना को खींचकर अपनी भीगी हुई छाती से जो चिपकाया तो गरम दूध से भरी हुई छातियों में ठंडक पड़ गई। पर ना, जितना है उतना ही सही, रमज़ानी के लिए दूध गरम चाहिये। छूटने के लिए कुलबुलाती हुई बोली, 'देखो हीरा मिस्त्री, हमें छेड़ना नईं अबी।'

'क्यों ?'

इस क्यों का इस अनाड़ी आदमी को क्या जवाब दे औरत ? दिल में तो आया कि इस बरस भर के भटके-बिछड़े की भूख-प्यास अभी छककर मिटा डाले, मगर दाता की भी तो कुछ मजबूरियां हैं ही। उसे बहलाकर बोली, 'रोयेगा रमजानी--चलो भीजे कपड़े उतार के रोटी खा लो।'

हवा के झोंकों से बचाकर ढिबरी रख दी। हांडियां झाड़-झूड़कर सेकी हुई रोटियां और कुछ शोरबा-सा मिट्टी की रकाबी में परोसकर उसके सामने रख दिया। भीगे कपड़ों में ही मियां बैठकर खाने लगा और हिलती-डुलती लौ के उजाले में बीवी उसे निहारने लगी। वह टुकड़ा तोड़ता तो उसके हाथों पर, हाथ उठाता तो कलाइयों पर, मुंह में रखता तो मुंह पर, निवाला निगलता तो गले पर, उसकी नज़रें झुकने, उठने और घूमने लगीं। उस तरह नहीं तो इस तरह मर्द की भूख मिटाकर औरत अपना दिल भरने लगी।

खिलाते-खिलाते बोली, 'कां गये थे ?'

'सौदागर के हां।'

'कित्ता लिया मुनापा ?'

चौंककर पीरा ने पूछा, 'कैसा मुनापा ?'

'कर्ज का और कैसा ?'

'अरी यां असल का ई टोटा है तू मुनापे की बात कर रई है ।'

'क्यों ? कमती पड़ गये पोटली में ?'

'अरी कैसी पोटली, तू कै क्या रई है ?'

'मियां कमाई की पोटली, जो मुजे दिखाई थी कुरता उठा के वो पोटली, और कैसी पोटली ?'

हँसकर पीरा बोला, 'दिखाई तो भाबी को बी थी पर कै दिया कि देख ले, हैं पर दूंगा नईं ।'

एकदम अमीना की भवें टेढ़ी हो गईं, 'क्यों ?'

बदना भर पानी ढकोसकर पीरा ने कहा, 'अरी वो तो रगड़ा लिकलियाया न बिच में ।'

ताब खाकर अमीना बोली, 'कैसा रगड़ा मियां ? कहां है पोटली ? दिखाओ मुजे, उठाओ कुरता ।'

दोनों हाथों से जांघों के बीच में कुरता दबाकर बच्चों की तरह हँसते हुए पीरा ने कहा, 'अब इस बखत कुरता मत उठवा तू, रोटी खा लेन दे ।'

मर्द के ग़म की मारी, ग़रीब बेचारी हामला औरत पर रहम खाकर चार दिन के लिए भी क़र्ज़ का तक़ाज़ा रोकने की भलमनसाहत जिन लेनदारों ने नहीं बरती उन बेशर्मों की देनदारी चुकाने में इस आदमी के सामने फिर कुछ रगड़ा निकल आया बीच में ?···ऐन जापे के दिन भी वह लपचकना दरवाज़े पर मुंडचिरों की तरह हाथ फैलाये खड़ा था, यह क्या अमीना भूल जायगी ? पर भोग चुकी थी बेचारी । घुट-घुटाकर बोली, 'तुमें कर्जा चुकाना बी है कि नईं उनका ?'

पीरा ने कहा, 'अरी चुकाने को तो लाये ई थे पोटली, पर बता तो दिया तुजे कि रगड़ा ई दूसरा लिकलियाया ।'

अमीना के दिल में आया कि वह ख़ाली बदना उठाकर इस आदमी के सर में दे मारे । मार तो नहीं सकी, पर मारने की तरह सख़्त आवाज़ में खनखनाकर बोली, 'तो गये क्यों थे वां सिर पे पांव धरके ।'

पीरा ने बताया कि, 'वो तो हम तुस्से कै के ई गये थे कि कुछ नाच-तमासा करवायेंगे घर में ।'

दांत पीसकर अमीना ने कहा, 'कै के तो गये थे पर वां क्यों गये थे, ये बी तो फूटो मूं से ।'

हँसकर पीरा बोला, 'अरी तू तो बड़ी कमअक्कल बैयर है !···अरी भाबी से अच्छी नाचने-गाने वाली बगदार में और कौन है ?'

'हाय मेरे अल्ला ऽऽऽ!'

हक्की-बक्की होकर अमीना हैरत के हौज़ में डूब गई। शक और शुबहे से आंखें फाड़कर वह इस आदमी की सूरत पर कहीं मामूली अक़्ल के निशान तलाश करने लगी।

इस तलाशी की कोशिश में वह देनदारी और पोटली का पीटना तो भूल गई और उस पागल के कंधे झंझोड़कर बोली, 'हीर खां, दम मार के आये ओ क्या चरस में ?'

पीरा ने कहा, 'बेकूप है तू, दम हम नईं मारते हैं, हमारा भाई सौदागर मारता है।'

अमीना को यक़ीन नहीं आया, बोली, 'मियां तमाखू की भूल में गांजा पियाये ओ सौदागर के घर से ?'

पीरा हीं-हीं-हीं-हीं करके हिनहिनाने लगा।

अमीना ने फिर पूछा, 'सच्ची बताओ, नाचने के लिए तुम सौदागरनी को बुलावा देने गए थे ?'

संजीदगी से पीरा ने कहा, 'और किसे देते नईं तो ?'

अल्ला यह आदमी झूठ तो बोलता नहीं है कभी ! इसे क्या हो गया आज ? टटोलने के लिए पूछा, 'क्या बोली वो ?'

'बोलती क्या ?' सिर नीचे को करके पैले तो सलाम करी उसने, फिर बोली 'आऊंगी, बेजरूर आऊंगी, ये तो घर का मामला है।'

हवा की जगह ताज्जुब से भरे हुए लाल-पीले-नीले इतने गुब्बारे आज अमीना के सिर पर फटा-फट फूटेंगे कि बग़ैर मार के ही बेहोश हो जायगी शायद ! होश में होने का यक़ीन लाने के लिए उसने खुद ही अपनी रान में एक चिकोटी काटी और दरअसल चुभन महसूस करके हांडी को उल्टी-सीधी टकोर मारकर परखा, 'और क्या बोली ?'

'और क्या बोलती ?'

'तुम व्हईं थे इत्ती देर से ?'

'वां से छप्पर में गया था, काम था !'

'सौदागर क्या कै रये थे ?'

'बड़ा राजी हो रया था बच्चे की सुन के !'

'वो क्या-क्या कै रई थी और ?'

'और क्या कैती ?'

'कब आवेगी ?'

'कल फजर में। गजरदम !'

'नाचने को कै रई थी ?'

'हां नाचेगी बी। उसका चचा बी आवेगा, भाई बी आवेगा तबला-सरंगी लेके,

जिरैबाज की खाला !'

पीरा रोटी खाकर उठ गया लेकिन अमीना ज्यों की त्यों बैठी रही। थर-थर करती हुई ढिबरी की लौ कभी-कभी तेज़ हवा के झोंके से बुझने-बुझने को हो जाती थी और झोंका मंदा पड़ते ही फिर सतर होकर धुंधुआने लगती थी। बारिश का रेला आकर बंद हो गया था कहीं-कहीं से पानी टपकने की टप-टप आवाज़ें ही बाकी रह गई थीं। टप-टप सुनते-सुनते ही टेढ़ी बांकी मुस्कान तनकर अमीना के होठों पर उभर आई—

'तो वह नखरैल कोठे वाली कसबी मेरे बच्चे की खुशी में नटनियों की तरह आखिर मेरे आंगन में आकर नाचेगी और उसके लगते-सगते उसके पीछे खड़े होकर तबला-सारंगी बजायेंगे। नसीब सिकंदर है मेरे बच्चे का, जो देनदार के सामने लेनदार की नाक नीची करके उसे नाचने के लिए मजबूर कर रहा है। दे दूंगी कुछ नेग-नेम का, दो-चार रुपए तो उस पोटली में से यह औलिया दे ही देगा।'

पीरा के रोटी खाए हुए जूठे बर्तनों पर नज़र गई तो ख़याल आया कि उसने भी रोटी अभी तक नहीं खाई है। रकाबी अपनी तरफ़ खींचकर तसले के नीचे से रूखी-सूखी रोटियां निकालकर सामने रक्खीं और सालन निकालने के लिए हांडी में करछुल डाली तो खट से बज उठी। खोपड़ी में इतने ज़ोर की खटाके की आवाज़ हुई कि औक़ात चीख़ पड़ी और करछुल हाथ से छूट गई। अपने दोनों गालों पर टिचकियां मारकर अमीना आप ही आप बड़बड़ा उठी, 'तौबा है मेरी, तौबा है मेरी, हजार दफा तौबा है राजिक ! नालत है मेरी नरेर के ऊपर, फिटकार है मेरे गरूर पे जो मैं ऐसी बात सोचूं ! बड़ों की इक्तेदार वाली औरत मेरी खुसी में साझा करने आ रई है, अल्ला उसे और बड़ा बनाये !'

□□

तकब्बुर (घमंड) की तौबा करके हज़ारों लान-मलामतों से अपना मुंह पीट-कर, नाचने वाली के दम-क़दम की खैर मनाकर उस दिन अमीना के पास-पड़ौस से टाट-चटाइयां मांग-तांगकर रातों-रात अपने आंगन में बिछाईं। करीमन बी के ज़रिए महल्ले में नाच के बुलावे दिलवाए। ज्यों-त्यों कतरब्योंत करके बांटने के लिए बताशे मंगवाए। पुलक-दुलककर ख़ुशी की बेचैन करवटें बदल-बदलकर रात काटी। तारे तो आसमान में थे नहीं, सुबह ही सुबह बादलों की छांव उठकर ख़ुद नहाई, जल्दी-जल्दी बच्चे को नहलाया और गाढ़े का एक पीला झंगोला पहनाकर नज़र-गुज़र की टिकली उसके माथे पर लगाई और भरी गोद से सुदिन का स्वागत करने के लिए तैयार होकर बैठ गई। कोठे वाली अमीना के यहां नाचने के लिए आने वाली है इस अजब अनहोनी को होती हुई देखने के लिए सारे गांव की औरतें

दिन निकलते ही पीरा के घर टूट पड़ीं। घर में ठसाठस भरी हुई बगदारनों की चुलहबाज़ियों से पीरा का टूटा-फूटा घर गूंज उठा।

पर गूंजता ही रह गया, रौनक़ नहीं आई। औरतों की अपनी भागदौड़ से ही टाट-चटाइयां सिमट-सिमटाकर ढेर हो गईं, पर रौनक़ नहीं आई। एक तरफ़ तो इस भाग-दौड़ से चौंककर रमज़ानी ने दम तोड़कर रोना-हौंकना शुरू कर दिया और दूसरी तरफ़ इंतिज़ार से बौलाकर औरतों के साथ आये हुए बेसब्र बच्चों ने बताशों की टोकरी पर हमला बोल दिया। कटर-कटर चबाये हुए और पैरों से कुचले हुए बताशों का चूरा कुटी हुई हड्डियों की तरह सारे चौक में बिखर गया। खूब दिन चढ़े तक भी जब रौनक़ नहीं आई तब एक बार ऐसा हुआ कि सारी की सारी औरतें यकायक खामोश होकर अमीना की तरफ़ ताकने लगीं। तनी हुई नज़रों के घेरे में पड़कर इस पल भर की चुप्पी में ही अमीना समझ गई कि दानिश-मंदी के लीतड़ों से उसका मुंह पिट गया। भागकर कोठे में घुस गई। शर्म के मारे बेचारी को पिटा हुआ मुंह छिपाने के लिए घर में साबुत ओढ़नी भी नहीं मिली। हक़ीक़त समझकर सब औरतें पीरी की अक़्ल पर छी-थू करने लगीं। करीमन ने पीरा पर इतनी बे-भाव की बरसाईं कि वह घर से भाग निकला। जाना तो उसे था ही। पिछली रात भाभी को नाच-गाने का बुलावा देकर छप्पर में कारीगरों से क़रार-मदार करके माल-ताल की रकम दे-दिलाकर घर में आया था, जल्दी सबको लेकर उसे तकिये पर पहुंचना था। वह तो चला गया, पर उसी वक़्त से अमीना का दिल उससे फट गया। उसकी अक़्ल से उसका ऐतबार पूरी तरह उठ गया। उसने समझ लिया कि इस सच में बिलकुल शक नहीं है कि उसका नसीब वाक़ई एक पागल के पल्ले से बंध गया है। वापिस आ गया तो आस बंधी थी कि अब फंद कट जायेंगे पर उसमें भी कुछ रगड़ा निकल आया। कमाई की पोटली में से न कोठे वाली का क़र्ज़ उतरा, न रोटी खाई, न खाने दी।

भूख लगती है। पेट में रोड़ियां नहीं भरी जातीं, रोटियां भरी जाती हैं। अपने पेट में रोड़ियां भर भी ले, पर रमज़ानी के तो अभी दांत भी नहीं आये जो दूध के बदले उसकी छातियों के गोश्त में मुंह मारकर पेट भर ले।

मजबूर होकर अमीना ने फिर खड्डी की तरफ़ देखा।

□□

तकिये पर कुआंरी की जवानी की तरह सुहानी सुबह आई। पिपलिया नीम मस्त रिंद की तरह झूम-झूमकर टप्पा गाने लगा। गुंजान पेड़ों के पत्तों से टप-टप टपक-टपकर बूंदें ताल देने लगीं। फुहारें इतनी मद्धम हो गईं जैसे धुनकी से धुने जाकर सेमल की रुई के ज़र्रे उड़-उड़कर गिर रहे हों। नंगे सीने पर माशूक़ा के

नाज़ुक हाथों की सहलन की तरह हल्की-हल्की हवा फरफराने लगी। नन्हें-नन्हें जंगली फूलों के गुच्छे देहात में आये हुए बारातियों की तरह जहां-तहां अपने-अपने गुट बांधकर हँसते खिलखिलाते हुए तुरुप चाल खेलने लगे। इधर-उधर बिखरे हुए ईंट-चूने के कंकरीले ढेरों में से लम्बे-नुकीले, कंटीले झंखाड़ सेवकों की तरह हुकुम की तामील के लिए मुस्तैद होकर आक़ाओं का मुंह ताकने लगे।

ठीक दरियाशाह के चौतरे की जगह के ऊपर पिपलिया नीम की एक मजबूत-सी बांह में एक झूला लटका हुआ है और उसमें एक पटरी फंसी हुई है। कड़ी लकड़ी की खुबन से बचने के लिए पटरी पर सौदागर का रेशमी साफ़ा रक्खा है और उस पर रौनक़ बेगम टिकी हुई-सी बैठी हैं।

गोरे-गुलाबी मरमर से बदन पर चिपका-चिपका हरी साटन का फिसलना पाजामा, ऐसा कि हाथ रख दो तो फिसलता ही चला जाय। जाड़े की जमी हुई लौनी की तरह चिकना बदन, देख लो तो मुंह मारने पे दिल आ जाय। पाजामे की रंगत से ज़रा उतरती हुई उसी रंग की वैसी ही चिकनी फंसी-फंसी-सी कुर्ती, ऐसी कि ज़रा सांस फूल जाय तो सीने से चिर जाए। सरसराती हुई हवा में परवाज़ करते हुए काले सियाह बालों में ख़ामख़ाह अटककर शानों पर फरफराता हुआ सितारे जड़ा धानी दुपट्टा। गोया सरापा सब्ज़परी का इम्तिहान लेने तकिये पर आया हो।

गले में जौ-नुमा नाज़ुक बनावट की चम्पाकली, कानों में मछलीनुमा जड़ाऊ बुंदे और—

ग़ज़ब रे ग़ज़ब! नाक में कोहेनूर की नलकी नहीं—नथनी! ज्यों की त्यों। हुस्न की दिलेफ़रेब दौलत की पहरेदार—कुंडल मारे, फन फैलाए, फुन्नाती हुई।

हद हो गई। फिर कल रात गुलफ़ाम की गर्दन पर सरगम बजाई ही क्यों थी? होश ख़ता करने के लिए हिनाई सांस उसके चेहरे पर छोड़े ही क्यों थे? उंगली पकड़कर उसे बिजली के झटके दिए ही क्यों? उसे अन्दर ले जाकर दरवाज़ा बंद करने की ज़ुरूरत ही क्या थी? वाह क्या तर्ज़े सितम तुझको सितमगर याद हैं!

पर कोई न कोई वजह ज़ुरूर है जो एटमी झटका खाकर भी सौदागर का चेहरा मुरझाया हुआ नहीं है। कोई न कोई वजह ज़ुरूर है जो मेहरबान न होते हुए भी रौनक़ मेहरबान नज़र आ रही हैं।

रौनक़ झूले में बैठी हैं। एक तरफ़ एक चटाई के टुकड़े पर अल्लाबंदे सारंगी मिलाए गज़ ताने बैठे हैं और दूसरी तरफ़ एक दोहरी दरी बिछाये तबले पर नहीं, ढोलक पर थाप साधे सम पकड़ने की तैयारी में गर्दन झुकाए सबरंग भाई बैठे हैं। झूले को झोटा देने की तैयारी में रौनक की पीठ से सटकर खुद दूल्हामियां रईसे-रौनक़ाबाद सौदागर अमीरअली खड़े हैं; पर झूले की रस्सियां थामे हुए नहीं हैं

बल्कि दोनों हाथों से रौनक़ की पीठ पकड़े हुए धीरे-धीरे कुछ टटोल रहे हैं। कह सकना मुमकिन नहीं है कि यह शख़्स उसे गुदगुदी करने का ख़्वाहिशमंद है, या झोटा देने के लिए उंगलियां जमा रहा है या उस मुक़ाम पर कुछ तलाश कर रहा है ।

आख़िर रौनक़ के पंजे की जुम्बिश के साथ सबरंग ने ढोलक पर थाप मारी, बंदे ने तार छेड़े, सौदागर ने झोटा दिया और कोयल ने कूक लगाई, 'अंबुआ तले डोला धर दे मुसाफिर, आई सावन की बहार रे !'

पेंग बढ़ाकर सावन की बहार जो पेड़ की फुनगियों की तरफ़ उठी तो ऊपर से फंसी-फंसी और नीचे से ढीली-ढीली कुरती हवा से फड़फड़ाई और रपटनी कमर से साटन के फिसलने पाजामे का नेफ़ा ज़रा नीचे को सरका तो सौदागर के खिले हुए चेहरे के भेद ने अपना मुखड़ा बे-नकाब कर दिया ।

तावीज़ रौनक़ की कमर में बंधा हुआ था ।

मार दिया ! तो यह बौना नसैनी लगाकर आसमान की सैर कर आया । तावीज़ का डोरा पकड़कर चांद का चक्कर लगा आया । पर शायद अभी वहां उतर नहीं पाया है वर्ना नाक के सुराख़ में कोहेनूर की नलकी के बजाय वही नथनी क्यों नहीं होती ? तावीज़ बांध ज़रूर आया, पर कमाल है, न जाने कैसे बांध आया ! नींद में ? ना, रौनक़ की नींद ऐसी नहीं है कि वह ख़ुद न चाहें और कोई उचाट दे, या उचटी हुई हो और उनके चाहे बिना आ जाय ! तो फिर क्या उन्होंने ख़ुद ही इजाज़त दे दी ? मुमकिन है किसी वजह से कोई दिलचस्पी पैदा हो गई हो !

बहरहाल बेगम की कमर में तावीज़ बंधा हुआ है और नाक में नथ पड़ी हुई है ।

हरियाली और रिमझिम में रिल-मिलकर रौनक़ की कोयल-सी पुकार, सारंगी की झनकार और ढोलक की गमकार से फटेहाल फ़क़ीर के उजड़े हुए तकिये पर जन्नत उतर आई । बादलों से झांककर कभी नरम-नरम धूप चमकने लगती, कभी हल्की-हल्की दुलाई में बादल को लपेट लेते । नीचे की रंगरलियों और ऊपर की आंख-मिचौलियों में कब दिन चढ़ आया और कब कड़ाके की धूप पड़कर माहौल को भूनने लगी इसका ख़याल ही नहीं आया ।

ठीक दोपहरी में निकली हुई जिन्नात की बारात की तरह बुंद्दू मियां और सरफ़ू समेत सारे मेमारों को साथ लिए हुए पीरा तकिये पर आया । पीछे-पीछे दस-पन्द्रह गधों पर ईंट-चूना, रेता-मिट्टी लादे हुए तकिये की सीढ़ियों पर हांक-ललकार और गाली-गुफ्तार करके गधों को चढ़ाते हुए गधे वालों की चीख़-पुकार, राज-मिस्त्रियों की बोल-चाल और हँसी-मज़ाक के गुल-गपाड़े ने चाशनी की कढ़ाई में धूल झोंक दी । मीरा के दांत किरकिरा उठे । उसे यह शान-गुमान भी न था कि अभी तक इस तकिये की मदद का सिलसिला किसी तरह से जारी है । उसने

यह ज़ुरूर सुना था कि फ़कीर बरसों से फ़रारहै और तकिया ख़ाली है, लावारिस है। सोच लिया था कि मर-खप गया होगा कहीं। पर यह पीरा—पीरा का तो कोई सवाल ही नहीं था। यह न तो रक़म लगा सकता था, न इसकी कोई वजह ही थी कि यह किसी फ़क़ीर-फ़ुक़रे की ज़मीन पर बिला वजह माल ढोता, मजूरी करता और इमारत चुनता-चुनवाता फिरे। यह तो ख़ुद ही क़र्ज़ चुकाने और पेट भरने के लिए मारा-मारा फिरता है। लेकिन इन सब अंदाज़ों के ख़िलाफ़, बरसों तक रोज़े रखने के बाद ऐन उसकी ईद के दिन, यह उल्लू का पट्ठा पीरा उसके ब-मुश्किल तमाम करवट बदलते हुए नसीब में मारने के लिए इतने गधों पर ईंटें लादकर आन धमका !

ग़ुस्से के मारे मीरा के तन-बदन में आग लग गई।

रौनक़ की पेशानी पर सरवटें पड़ गईं।

इन सरवटों से सबके सब झिझक गये। किसी ने उसकी तरफ़ से बिलकुल मुंह फेर लिया, कोई सरापा नूर से चुंधियाकर कनखियों से ताकने लगा।

कुछ गधे रेंकने लगे, कुछ पेशाब करने लगे।

लेकिन पीरा न झिझका, न पेशानी के बल उसने देखे। लपककर आगे बढ़ा और रौनक़ से बोला, 'अरी भाबीजान, तैंने तो बड़ी बाट दिखाई। अमीना सारी रात तैयारी करती रई तेरे नाच की। करीमन सारी लुगाइयों को लेके आ गई, घर में ठट्ट जुड़ गए। तैंने तो हम में झगड़ा ई करवा दिया अल्ला की बंदी !'

और भी न जाने क्या उलाहने देता, पर चिढ़कर मीरा बीच में बोल पड़ा, 'तू क्यों आया है यां इस पल्टन को ले कै ये बता।'

पीरा ने कहा, 'चल ये बी अच्छा हुआ कि तू टैम पे ई मिल गया। उतार दे कपड़े, मजूरी तैयार है, आधी मिलेगी। आधी तेरी पैले दिन की जमा है, वो बी नगद मिलेगी।'

इतने सारे आदमियों के सामने, ख़ासकर बेगम के मुंह दर मुंह, ऐसे मौक़े पर इस तरह किरकिरी हो जाने की वजह से सब भाई-चारा भूल मीरा ग़ुस्से से थर-थर कांपने लगा।

तमककर बोला, 'अबे उल्लू, कुछ हमने बी पूछा ?—तू क्यों आया है ह्यां ?'

अचरज में आकर पीरा ने पूछा, 'तुजे ख़बर नई है कि तकिया बनाना है ?'

अकड़कर मीरा ने कहा, 'तकिया-फकिया कोच्छ नई, यां हमारा मक्कान बनेगा।'

'ओः हो ! इसी वायदे पर सनम की कमर में तावीज़ बंधा है शायद !'

पर मीरा की इस बात को पीरा दिल्लगी के सिवा और क्या समझता ? हँसकर बोला, 'क्यों भई तेरा क्यों ? तेरी कोई जगै है ये ?'

मीरा तनकर सतर खड़ा हो गया और कड़ककर बोला, 'नई है तो क्या हम

वैसेई म्हैल चिनवा लेंगे ह्यां ?'

पीरा को अब शक नहीं रहा कि सवेरे से ही धुआं उड़ रहा है आज। मुस्कराकर कहने लगा, 'तेरी ये जगें कैसे हो गई, कुछ इसका भेद बी तो बता।'

चिल्लाकर मीरा ने कहा, 'भेद क्या बतावें जगै के बच्चे, तू है कौन भेद पूछने वाला ? हमने नगदी दे के खरीदी है। ले जा इस फौज-फर्रे को उल्टा के !'

और फिर एकदम मेमारों की तरफ़ मुंह करके उसने सरकारी हुकुम सुनाया, 'ये काम छोड़ कै सब हमारी हवेली पे चले आओ—पूरी मजूरी मिलेगी। नाप-तोल, नक्सा-खाका समजते ई दागबेल डाल दो, समजे ?'

फिर आप ही आप सबको समझा हुआ समझकर रौनक़ का हाथ पकड़कर उसे उठाते हुए बोला, 'चलो जी बेगम साब, कल रौनक म्हैल की बुन्याद पड़ जायगी।'

रौनक़, बंदेमियां और सबरंग को साथ लेकर झपाझप सीढ़ियां उतरता हुआ सौदागर नीचे खड़ी हुई बैलगाड़ी में आकर बैठ गया और गाड़ी तेज़ी से गांव की तरफ़ हांक दी।

बैलों की घंटियों की ठनाठन जब दूर निकल गई तब सोच में बैठे हुए पीरा को सारी जमात ने घेर लिया। बुंदू मियां उसके सामने बैठकर बोले, 'क्यों भई पीरा ये क्या क़िस्सा है ? मीरा कैता है यां उसका काम लगाओ और तू कैता है यां तकिया बनेगा।'

एक की बात का पीरा ने दस को जवाब दिया, 'तुम कोई परदेसी थोड़े ई हो, तुम सबको खबर है कि जगै दरियाबाबा की है और रकम की पोटली देकर वो मुजे तकिया बनाने को कै गया है।'

बुंदू ने सब की तरफ़ देखकर कहा, 'हक्क बात है।'

इस हक़ बात को सुनकर सब एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे।

ताका-ताकी से तंग होकर बुंदू मियां ने कहा, 'अबे दुफैर उतर गई, लदान लदा खड़ा है, नुवाले टुकड़े का टैम है, कुछ बोलो तो सई।'

सरफ़ू ने कहा, 'अब बोलने की तो ये है कि जग्गै चाय किसी की हो हमें तो मजूरी से मतबल है।'

यह दूसरी हक़ बात सामने आई तो दो-चार एक-साथ बोल पड़े, 'बात तो येई है।'

पिछाड़ी मज़बूत पाई तो सरफ़ू और आगे बढ़ा, 'फरक ये है कि सौदागर मजूरी पूरी देगा और पीरा आधी देगा।'

यह सरफ़ू वह है जिसे अलीजान की दुकान से सौदागर के खाते में सुलफ़ा मुफ़्त मिलता है। यह वह है जिसने पीरा की पोटली की पोटली दुरूद-फ़ातिहा के नाम पर शकूरन पर वारफेर कर दी। यह सरफ़ू पीरा का 'अपना' आदमी है।

पीरा हक़ पर मरने वाला आदमी है तो सरफ़ू भी उसी के नक़्शे-क़दम पर चलना जानता है । जिस हक़ की बिना पर पीरा ने तकिये से सरफ़ू की झोंपड़ी उखड़वा दी उसी हक़ की बात कहने से सरफ़ू कैसे बाज़ रह जाय ?

पूरी और अधूरी मजूरी की चिनगारी इतनी चमकदार निकली कि भूखे-कंगाल राज-मिस्त्री अनजाने में ही भेड़ों की तरह सरक-सरककर सरफ़ू के पीछे हो गये ।

यह ही कुछ कम नहीं है कि मजूरी-अजूरी के वक़्त बुंदू इस सरफ़ू को जमात में आने से रोकता नहीं है । इस नाहक़ बात पर उसे भुस में चिनगी डालते हुए देखकर भड़क उठा, 'बज्जात के बच्चे, मेमारों का नाम लगा के तू उसकी पोटली पेट में उतार गया, अब जब वो दूसरी रकम ले के आया है तो मजूरी पे भड़का रया है सबको ? जब एक दफ़ै उसे जिबान दे दी तो बदलने का क्या मतलब, कुछ इमान बी है कैं नईं सुसरा ?'

भुनभुनाकर सरफ़ू बोला, 'हम नईं करते आधी पे काम, जिसको करना हो करे, जिसको नईं करना हो नईं करे ।'

सरफ़ू यह कहकर चल दिया तो पिछाड़ी वालों में भी चलाचल मच गई । सब के सब भाईबंद पीरा को छोड़कर सरफ़ू के पीछे चले गये । अकेले बुंदू मियां बैठे रह गये ।

सुनसान खंडहर, गुमसुम पीरा, हारा हुआ हमदम, लदे हुए गधे और टिक्कड़ ठूंसते हुए गधे वाले ।

'छप्पड़ में मिलेंगे सांज को' कहकर बुंदू भी उठकर चला गया ।

पीरा बैठा रहा, बैठा रहा, मिट्टी-मलबे का ढेर ।

'लदान उतारें मिस्त्री ?' गधे वालों के मुक़द्दम की आवाज़ आई । पीरा चौंक पड़ा । जाग गया, फिर यकायक उठा, और बोला, 'हां-हां, उतारो !'

माल उतरने लगा । उतर गया, फिर गधे और गधेवाले भी चले गये ।

तन-तनहा, अकेला पीरा एक-एक ईंट उठाकर क़रीने से धांग लगाने लगा ।

तू अगर गिरा नहीं है, खड़ा हुआ है और अकेला है तो क्या हुआ ?

तू नहीं जानता, तू कितना ताक़तवर है । अकेला है तो क्या हुआ ?

तूने अगर अपने लिए ईमान चुना है तो और चुनने को क्या है ? ईमान वाले के साथ दुनिया नहीं होती, सिर्फ़ अल्ला होता है ।

अल्लाह भी अकेला है ।

अचानक पीरा को लगा जैसे कहीं से पुकार आई हो 'अलख अल्लाह !' यों भागा जैसे उसी का नाम अलख अल्लाह हो । सीढ़ियों की तरफ़ नहीं, जिधर से आवाज़ आई थी उधर । तकिये के पीछे से आती हुई पगडंडी की तरफ़—'अच्छे वक़्त पर आया । देख लेगा अपनी आंखों से । अपने आप संभालेगा अपने बखेड़े

को !'

झुरमुट से निकलकर झुटपुटे में नज़र जमाकर देखने लगा। दस-बारह दरवेशों का एक गिरोह तेज़ी से ऊपर आता हुआ दीखा। ज़रूर इनमें बाबा होगा। रुका नहीं गया तो पुकार लगाई, 'बाबा हो बाबा !'''बाबा हो ऽऽऽ बाबा ऽऽऽ !'

पर कोई जवाब नहीं मिला। थोड़े फ़ासले पर गिरोह रह गया तो चीख़कर बोला, 'मियां दरिया बाबा है क्या तुम में ?'

एक ने जवाब दिया, 'भाई हम तो खुद उनकी ज़ियारत (दर्शन) के लिए आये हैं।'

'यह क्या बात हुई ? मैंने तो बिलकुल साफ़ आवाज़ सुनी थी उसकी ! होगा, इनमें से ही बोला होगा कोई उस तरह !'

पीरा ने कहा, 'ह्यां कहां से आया वो, मैं तो आप उसकी बाट देख रया हूं। तुम उल्टे पांव चले जाओ, कईं मिल जाय तो कैना कि पीरा ने खबर भेजी है कि तेरा तकिया दूसरे छीन रहे हैं और व्हां म्हैल चिनाने वाले हैं। आने में देर करेगा तो पछतावेगा।'

फ़क़ीरों ने मिसमार तकिये की हड्डियां जहां-तहां बिखरी हुई देखीं। चौंतरा नेस्त-नाबूद देखा। ईंट-चूने, मलबे के ढेर पड़े हुए देखे। तकलीफ़ और ताज्जुब से उस बे-पीर की दरगाह के खंडहर को देखकर वह फ़ौरन वहां से उल्टे पांव लौट पड़े।

ग़ैर सरकारी बम्बे में ज़रूरी चिट्ठी डालकर जवाब के इन्तिज़ार में पीरा ने भी बगदार का रुख़ किया।

□□

उस दिन दुमंज़िले में गई रात तक रोशनी रही। सौदागर मियां के तकिये पर दिखाये गये दमख़म, भाई को लगाई गई फटकार और रौनक़-महल की अगले दिन बुनियाद पड़ने की ख़ुशी में बालाख़ाने में रतजगा हुआ। अपनी कामयाबी और मियां की दिलेरी पर बेगम लहलोट हो गईं। अफ़ीम के अमल और गांजे की चिलमों में पर लगाकर रौनक़ का कमरा बगदार के ऊपर उड़नखटोले की तरह उड़ने लगा। भविष्य की शानदार कल्पना में सब अपनी-अपनी रंगामेज़ी करने लगे। एक बड़ा-सा काग़ज़ कहीं से ढूंढ-ढांढकर निकाला, सौदागर को बग़ल में जगह दी, बंदे और सबरंग को सामने बिठाया और रौनक़ ख़ुद रौनक़-महल का नक़्शा खींचने लगीं। कहां खड़े होकर वह अपने रौनक़ाबाद को देखा करेंगी, कहां बैठकर रिआया का इन्साफ़ किया करेंगी, कहां से खिलअत (इनाम)

बांटा करेंगी और कहां से गुनाहगारों को सज़ा सुनाया करेंगी, कहां बुर्जियां होंगी, कहां मेहराबें, कहां झरोखे, कहां छज्जे, सब अपने हाथ से टेढ़े-सीधे निशान लगाने लगीं। सौदागर क्योंकि काबीना (केबिनेट) में इस हुनर के अकेले ही जानकार थे इसलिए बढ़-बढ़कर राय देने लगे। कौन-सा पत्थर बगदार की चौहद्दी का बेहतर है, कौन-सा आगरे का और कौन-सा मकराने का, रेती-रोड़ी बगदारी अच्छी है या बदरपुरी, इसका भेद तफ़सील से बेगम को समझाने लगे। ज़ुरूरी सामान हासिल करने के ठिकाने और कौन कारीगर किस काम का माहिर है इसकी मालूमात सौदागर साहब की कितनी बारीक है, यह देखकर रौनक़ समेत दोनों रिश्तेदार चकित हो गये। बीवी खुद ताज्जुब में आ गई तो मियां और चढ़े।—'यह बिसकर्माई हुनर सिखाने से थोड़े ही आता है किसी को, यह तो पैदायशी आता है, पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है। उनके अब्बा मियां फ़तहअली, जो कि फतेली मेमार के नाम से मशहूर थे—सफ़ेदी की हुई दीवार पर बीच की उंगली रखकर हकीम की तरह बता दिया करते थे कि इसे मर्ज़ क्या है और उम्र कितनी है। यानी कि दीवार के माल में मिलावट कितनी है और कब ढहेगी! यह बड़े नसीब की बात है कि उनके वंशज इस वक़्त जहां बैठे हुए उनका पुण्य-स्मरण कर रहे हैं वह दुमंज़िला भी उन्हीं के हाथों खड़ा किया गया है। बेगम ने अपने मरहूम ख़ुसर अलैहिस्सलाम के नाम पर फ़ातिहा पढ़ा तो सौदागर को दादाजान के लिए दुआ करने की तमन्ना पैदा हुई। उनके दादा मियां फिदाली, यानी फ़िदाअली का गुणवर्णन तो सम्भव ही नहीं है।— मशहूर बात है कि जाने कौन-सी रियासत में किसी राजा ठाकुर के यहां चिनाई के लिए गये थे कि उनके ज़नाने महल पर नज़र जो पड़ी तो चलते-चलते ठिठक गये। ऊपर से नीचे तक नज़र मारी। वह राजा या ठाकुर जो कोई भी थे पास ही खड़े थे। पूछा, 'क्या देखते हो फिदाली?' फिदाली ने गच पर कन्नी का कोना टिकाकर कहा, 'इकतालीस दिन के बाद यहां तरेड़ पड़नी शुरू होगी तो ऊपर जो कोई भी रहती हैं उनकी ख़ाबगाह तक पड़ती चली जायेगी।' राजा जी ने कहा, 'नहीं पड़ी तो इसी दीवार के नीचे क़ब्र बनवा देंगे।' दादा मियां ने मंज़ूर किया। फिदाली साहब तो बगदार लौट आये और बयालीसवें दिन रियासत का एक बर्क़ंदाज़ (हरकारा) बगदार के मुहाने पर जब ठीक उस टीले के नीचे आया जिस पर कल हमारे रौनक़महल की बुनियाद पड़ने वाली है तब इधर से सारी बगदार एक जनाज़ा लिए सीने कूटती हुई वहां पहुंची। बर्क़ंदाज़ ने पूछा कि मियां कौन मर गया? तब लोगों ने बताया कि फिदाली मेमार मर गया। बर्क़ंदाज़ रोने लगा कि अब हम वापिस जाकर क्या मुंह दिखायें, हम तो इन्हीं मियां को बुलाने आये थे!…भई क्यों?…तो बोला, कल, यानी कि इकतालीसवें दिन उस दीवार में तरेड़ पड़ गई और बेटी जी उस तरेड़ में से नज़र आने लगीं तो राजा जी ने हमें

दौड़ाया कि फ़िदाअली को बगदार से ले आओ, हम उससे अपनी इस बेटी की शादी करके यह महल उसी को दहेज में देंगे। पर होता वही है जो खुदा को मंजूर होता है। दादा मियां के मरने की खबर उधर पहुंची तो बेटी जी ने संखिया फांक लिया। दादा जान को तो गुलिस्तान में सुला दिया गया और बेटी जी को गुलिस्तान के बराबर वाले मसान में लाकर फूंक दिया गया। होतीं तो वह भी हमारी दादीजान होतीं। कैसे-कैसे हुनरमंद हो गये हमारे खानदान में !'

ये बेचारा किसी फिदाली राजा का पोता और फतेली का बेटा चरसी-गंजेड़ी नामर्द-सा मर्द, इसका चूना-मिट्टी लीपने-पोतने का धंधा है। यह ये जानता ही नहीं कि जिससे वास्ता है वह उस खानदान की जाई है जिसका पेशा ही लनत-रानियां फेंकना है। वह खुद अगर फेंकने पर आ जाय तो बगदारी मेमारों के दादा-परदादाओं के मुर्दे क़ब्रों से निकलकर चारों दिशाओं में भागते नज़र आयें। इसकी और इसके खानदान की ऐशबेगम की बेटी की नज़र में औक़ात क्या है ! मगर नहीं, आज यह बात नहीं है। मियां के खानदानी हुनर की इस कहानी से रौनक़ हैरत में है। कल रौनक़महल की बुनियाद रक्खी जाने वाली है। आज रौनक़ सौदागर की सब कुछ मंजूर कर लेने की नीयत में है। हसरत भरा एक लम्बा-सा सांस भरकर उसने कहा, 'ऐ काश वह होते तो रौनक़ महल की तामीर उन्हीं के हाथों हुई होती !'

रौनक की हसरत को हाथों-हाथ झेलकर सौदागर ने कहा, 'गमजा क्यों करती ओ बेगम जी, उनके सागिरद और तुमारे गुलाम हम तो बैठे ऐं तुमारे वास्ते। हम खुद आप देख-भाल करेंगे।'

यह कहते-कहते ही मीरा की नज़र बेगम के बदन से अलग होकर पाजामे के ऊपर सरककर आये हुए तावीज़ पर पड़ी।

रात के कोई तीन बजे होंगे जब रौनक़ की कमर में बंधे हुए तावीज़ को इज़ार के ऊपर से हटाकर मीरा ने इज़ार के अन्दर सरकाया। भाई और चचा उबासियां लेते हुए नीचे सोने चले गये—

क्या-क्या काली-धौली विद्या जानने वाले इस मुल्क हिन्दुस्तान में भरे पड़े हैं कि इकतालीस दिन तो क्या, पूरे-से इकतालीस घंटे भी गुज़रने न पाये थे कि तावीज़ ने करिश्मा कर दिखाया।

बची हुई रात के दो-तीन घंटों में ही नौची ने नथनी उतारकर हीरे की नलकी पहिन ली।

पर रौनक़ ग़च्चा खा गई।

□□

रौनक ग़च्चा खा गई।

नथ उतर गई पर अगले दिन रौनक़महल की बुनियाद नहीं पड़ी।

हुआ यह कि तकिए से सब कारीगरों के सरफ़ू के पीछे चले जाने के बाद पीरा से शाम को मिलने के लिए कहकर बुंदू मियां ने सबको छप्पर में इकट्ठा करके मामला लोकसभा में पेश किया तो मीरा की लगाई और सरफ़ू की सुलगाई हुई आधी-पूरी मजूरी की आग से मेमारों की सदियों पुरानी एकता में दरार पड़ गई। पूरी मज़दूरी सामने मौजूद होते हुए आधी मंजूर करने की नादानी के खिलाफ़ सरफ़ू ने भूखों को इतना भड़काया कि भड़कती ही चली गई। "जिससे पेट न भरे उस ईमान को लेकर चटाने से क्या फ़ायदा? हक़ जब बाल-बच्चों के तन ढंकने को भी पूरा न पड़े तो उसे ओढ़ने-बिछाने का क्या सवाल है? सारी के मिलते आधी खाकर पेट पीटते फिरने का मतलब क्या है? जुबान दे दी यानी काटकर तो नहीं दे दी, ऐसी जुबानें रात-दिन दी जाती हैं और रात-दिन ली जाती हैं। इस लेन-देन से ईमान-जुबान का कोई ताल्लुक नहीं है।" विरोधी पक्ष के इस असन्तुष्ट नेता ने ज़रूरतमंदों और ज़ाहिलों के सामने इतना प्रभावशाली व्याख्यान दे डाला कि ईमान और जुबान टके सेर के भाव से बिक गये। चित्रगुप्त की तरह बैठा हुआ नौ कम सौ का बुंडू मेमार पाप-पुण्य का हिसाब मांगता ही रह गया। रात तीन बजे के बाद तावीज़ के करिश्मे के साथ ही साथ लोकसभा की बैठक बहुमत से उखड़ गई।

नतीजा यह हुआ कि अगले दिन सौदागर के हुक्म की तामील नहीं हुइ। रौनक़महल की दाग़बेल पड़ने से रह गई। नलकी का हीरा कड़क बिजली की तरह चमकाती हुई रौनक़ बेगम ऊपर से नीचे, और नीचे से ऊपर, सुबह से शाम तक चक्कर मारती रहीं पर कोई कारीगर हवेली में नहीं आया।

रौनक़ चाल चूक गई। ऐसी चटाक चांटे-सी मात उसने ज़िंदगी में कभी नहीं खाई।

रौनक़ ग़च्चा खा गई।

□□

पर सौदागर शेर हो गया। साल भर से दुम टांगों में दबाये हुए हथेली की एक थपथपाहट के लिए कूं-कूं करने वाला ईमानी जानवर, पंजे छाती पर जमा-कर भों-भों करने का हौसला करने लगा। गर्माई हुई कटखनी बछेड़ी पर सवारी गांठने वाला सवार इसी हौसले से रानों में भींचकर उसकी कमर तोड़ डालता है।

जंगली शेरनी पर हंटर फटकारकर सरकस का रिंगमास्टर इसी हौसले से दर्शकों की तरफ़ देखता है। फुंकारती हुई नागन की दांत तोड़कर सपेरा इसी तरह गाल फुलाकर बीन बजाता है। हठीली औरत का गर्व खर्व करके ही मर्द मर्द कहलाने का अधिकारी होता है। औरत को जीते बिना सारी कायनात (दुनिया) जीत ली तो भी क्या हुआ ? ऐसे जीतने वाले सिर्फ़ झगड़ालू कहलाते हैं, विजेता नहीं।

जीत के मद से मतवाले मीरा को यह याद ही न रहा कि इस जीत का मुआवज़ा भी चुकाना है। आज कारीगरों को बुलाया था, आज रौनक़महल की बुनियाद रक्खी जाने वाली थी, आज लेने का देना भी है। बस, उचंग में एक ही ध्यान में बंधकर उछलने लगा कि वाह, क्या मैदान मारा। सर कर दिया क़िला। कमाल है, कैसी-कैसी जादुई करामात छुपाए बैठे हैं लोग कि तन से तावीज़ लगा नहीं कि पत्थर पिघलकर झरने की तरह छलछला उठा। मीरा आलीजान पर कुर्बान हो गया। दिल में आया कि इस यार को कुछ बख़्श डालूं आज। कम से कम घर बुलाकर इसे सीने से लगा लूं। उत्तेजित होकर छज्जे में से ही अलीजान को दहाड़कर आवाज लगाई।

रीढ़ टूटी हुई सांपन की तरह बेबस पड़ी हुई रौनक़ सौदागर के मुंह से अली-जान का नाम सुनते ही खड़बड़ाकर जाग पड़ी। अम्मीजान की सिखाई-पढ़ाई हुई सारी काली कुट्टनी विद्या, एक साधारण-सी बिना मतलब की बात से रौनक़ को याद आ गई। चाल चूकने के ग़म से आई हुई शर्मिन्दगी, पछतावा और झुंझलाहट उसने कछुए के अवयवों की तरह भीतर समेट ली। दम भर में हज़ार चालें सोच-कर वह महत्वाकांक्षिणी अपनी कूटनीति के जौहर दिखाने के लिए कमर बांधकर तैयार हो गई।

अलीजान दुमंज़िले में आया तो सौदागर के उस जिगरी यार से बग़लगीर होने से पहिले ही रौनक़ ने सौदागर की नंगी पीठ पर छिनाली सियासत का पहिला कोड़ा जो तड़ाक से मारा तो सौदागर बिलबिला उठा। अलीजान के घर में क़दम रखते ही रौनक़ ने उसे सीधा अपने कमरे में बुलाकर सौदागर को तो बाहर निकाल दिया और दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया। बिलकुल उसी तरह जिस तरह उस दिन अपनी दो उंगलियों में सौदागर की एक उंगली तिलचट्टे की तरह पकड़कर उसे अंदर ले जाकर बंद कर लिया था। एक सपाटे में सौदागर का पानी उतर गया।

यह क्या हुआ ? यह ग़ैर आदमी उसके ज़नाने में कैसे घुसा चला गया ?··· इस हरामी ने कहीं उसके जैसा ही तावीज़ अपने लिए भी तो नहीं बनवा लिया ?··· मार दिया !···लुट गया सौदागर !···

मर्द के बतौर उसे करना तो चाहिए था कि लात मारकर दरवाजा तोड़ डालता, अलीजान के बच्चे को धकियाकर निकाल देता और औरत का झोंटा

पकड़कर उससे इस नाजाइज़ हरकत का जवाब तलब करता। मगर नहीं, मर्द दिल दिए हुये है, औरत दिल लिये हुए है। यह सिर्फ़ मर्द नहीं है आशिक़ भी है, वह सिर्फ़ औरत नहीं है माशूक़ भी है। माशूक़ होने के लिए सब कुछ जाइज़ है और आशिक़ का वह शेवा नहीं होता जो मर्द का होता है।

आशिक़ेज़ार अमीरअली पूरे साठ मिनट तक दरे-जानां की तरफ़ खिसियाना-सा बैठा देखता रहा तब कहीं जाकर दरवाजा खुला। अलीजान भीतर से निकल-कर दायें-बायें नज़र डाले बग़ैर, बिना किसी से कुछ बोले-चाले सीधा का सीधा निकलकर चला गया।

□□

उसी रात पंसारी के पेंटागोन से ऐलान आया हुआ कि 'बगदारी मेमारों को इत्तिला दी जाती है कि जो मेमार रौनक़महल की तामीर पर पूरी नक़द मज़दूरी लेकर काम करने के खाहिशमंद हों वह सात दिन के अंदर सौदागर की दुमंज़िली हवेली पर हाज़िर होकर इक़रार करें। ऐसा न होने की हालत में वह अपने ऐमाल और उसके नतीजे के लिए खुद ज़िम्मेदार होंगे।"

यह ऐलान इस नमक-मिर्च के साथ बगदार में फैला कि 'रौनक़महल की तामीर के लिए बगदारी कारीगर अगर नहीं आये तो बेगम विलायत से उन कारी-गरों को बुलवायेंगी जिन्होंने लाहौर हाथ से निकल जाने के बाद मुल्क हिन्दुस्तान के इलाक़ा पंजाब में शहर चंडीगढ़ तामीर किया था। उन कारीगरों को बसाने के लिए रौनक़ बेगम बगदार का नाम रौनक़ाबाद रखेंगी और सारी बस्ती को नई बनवाने के लिए तमाम बगदारी मेमारों के घरों पर गधों का हल चलवा देंगी।'

रौनक़ और रौनक़महल, रौनक़ और रौनक़ाबाद—सात दिन में तो अभी दो दिन बाक़ी हैं—पांच दिन के अन्दर ही जन-जन बच्चे की ज़ुबान पर आम हो गये। किसी को कुछ पता नहीं कि क्या होने वाला है, पर कुछ न कुछ होने वाला ज़रूर है। बस आया आया, महमूद आया, सुल्तान आया, जग्गा आया, रूपा आया, होशियार! ख़बरदार!

अफ़वाहों ने ही रौनक़ को रौनक़ाबाद की बेगम बनाकर बिठा दिया।

पांच दिन हो गये, रोज़ सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक अली-जान की दूकान के आगे ठठ तो लग जाते हैं, पर घबराहट, बौखलाहट, फूट और डांवाडोल मनोदशा के कारण कोई कारीगर हुक्मनामे के मुताबिक़ दुमंज़िले में पहुंचा नहीं है। तनाव बढ़ता चला जा रहा है।

इस तनाव-बनाव से नितान्त उदासीन कोल्हू का बैल पागल पीरअली मेमार अपने लक्ष्य पर दृष्टि जमाये अपने आप में सतर्क है। छप्पर में जाता नहीं क्योंकि वायदे के मुताबिक़ कोई कारीगर आधी मज़दूरी पर काम करने के लिए आता नहीं। बुंदू कुछ कर नहीं सकता, अलीजान से कोई वास्ता नहीं है। लिहाज़ा उसके लिए जो सबसे जरूरी काम रह गया है उसमें पूरी तरह मुस्तैद है। दिन निकलते ही उठकर बिना खाये-पिये तकिये पर जाता है और ग़ैर सरकारी बम्बे में डाली हुई चिट्ठी के जवाब का इंतजार करता हुआ चौकन्ना होकर तकिये की चौकी-दारी करता रहता है। गो कि मालताल में लगाने के बाद मज़दूरी के लिए बचाई हुई पोटली उसी की कमाई की है पर क्योंकि सरफ़ू की वजह से, यानी अपनी ग़लती की वजह से, दरियाशाह की अमानत में खयानत के लिए अपने आपको ज़िम्मे-दार समझता है इसलिए अपनी ही कमाई पर अपना अधिकार नहीं समझता। अकेला होने की वजह से काम नहीं होता सिर्फ़ चौकीदारी करता है, इसलिए मज़-दूरी आधी भी नहीं लेता। बची-खुची पोटली में से चौकीदारी की एक अठन्नी रोज़ की निकाल लेता है और शाम को दिन-भर की कमाई की पूरी की पूरी अठन्नी बीवी को ले जाकर दे देता है। भूखा रहता है, स्वेच्छा से; चौकन्ना रहता है, लक्ष्य के लिए। ऐसे को दुनिया कहां रखे और ऐसा दुनिया में कैसे रहे?

इस तरह इस कर्त्तव्यरत नाकारा आदमी को चौकी-पहरा देते-देते और इंत-जार करते-करते पांच दिन हो गए पर चिट्ठी का जवाब नहीं आया।

□□

पर चिट्ठी पहुंच गई।

वह क्या आवाज़ है, कैसी है, कहां से निकलती है, किस अनुभूति से लगाई जाती है और किस दूरानुभूति से सुनी जाती है, इस रहस्य से कुछ लेना-देना नहीं है। चेतना-उपचेतना का अगोचर मिलन कौन-से ज्ञान-विज्ञान के किस विधि-विधान से होता है प्रश्न यह नहीं है, यह है कि हो गया।

गुलिस्तान के उसी दरख़्त के साये में कई दिन से आत्म-विस्मृति की हालात में बैठे हुए दरियाशाह यकबयक पुकार उठे, 'अलख अल्लाह!' ऐसा लगा जैसे भटके हुए मुसाफ़िरों को पुकारा हो। कई दिन बाद मिलने वाले की तरह क़तरा-शाह ने कहा, 'अस्लाम अलेक!' आंखें मूंदे-मूंदे ही दरियाशाह बोले, 'देखना क़तराशाह, कौन है!'

कहां?···इधर-उधर देखा—यहां तो कोई नहीं है। उठकर गया और लम्बी-

चौड़ी कब्रगाह में दरियाशाह की तलाश में भटकते हुए दरवेशों को साथ लेकर काफ़ी देर बाद लौटा और आते ही बोला, मेरे हमसबक़ (साथी) हैं बंदनवाज़ ।'

दरियाशाह ने आंखें खोल दीं और सलाम के जवाब में मुस्कराकर बोले, 'अल्ला वाली है ! खुशआमदीद, सब का एक साथ दीदार कर रहा हूं !'

फ़क़ीरों ने देखा कि कभी दाढ़ी न रखने वाले औलिया की दाढ़ी ख़ूब लम्बी हो गई है । सर के बाल बहुत घने होकर धूल-धक्कड़ से भरकर उलझ गए हैं । अलफ़ी तार-तार हो रही है और चेहरे, हाथ, पांवों की चमड़ी खुश्क होकर मैली मलमल की तरह सुकड़ गई है । हर वक़्त साथ रहने वाला क़तराशाह भी यकायक देखता तो पहिचान नहीं पाता । उनकी इस हालत पर कुछ मलूल-से होकर फ़क़ीर लोग सर झुकाकर सामने बैठ गये । टोली के मुखिया ने कहा, 'सब मिलकर ज़ियारत के लिए बगदार शरीफ़ गये थे हुज़ूर, लेकिन वहां मालूम हुआ कि दरगाह की जगह कोई इमारत तामीर की जा रही है और सुना कि उसका मालिक कोई और ही है ।'

ख़बर सुनकर दरियाशाह इस तरह चौंक पड़े जैसे भरे बाजार में उनकी जेब कट गई हो । मुंह से सिर्फ़ 'ऐं !' कहकर मुंह फाड़े देखते रह गए । मुखिया ने कहा, 'यह तो हक़ की बात नहीं है मुर्शिद !'

दरियाशाह ने तसलीम किया, 'बेशक यह हक़ की बात नहीं है !...कौन है जो अपने को वहां का मालिक बतलाता है ?'

ग़ुस्से में भरकर क़तराशाह बीच में ही बोल पड़ा, 'उसके सिवा और कोई हो ही नहीं सकता जो वहां से चोरी करके ले गया है। आप अच्छी तरह जानते हैं।'

क़तरा से मुत्तफ़िक़ (सहमत) होकर दरियाशाह ने कहा, 'हो सकता है, मानता हूं, तुम्हारा ख़याल ठीक हो सकता है ।'

फ़क़ीर ने कहा, 'अगर ख़बर देनी ज़रूरी न होती तो जनाब को वहां न पाकर हम लौट ही जाते । हमलोग निहायत फ़िक्रमंदी से हुज़ूर को तलाश करते हुए आये हैं ।'

परेशान होकर शुक्रिया-सा अदा करते हुए दरियाशाह बोले, 'बहुत अच्छा किया मियां, बड़ी मेहरबानी की । आप लोग वक़्त से पहुंच गये तो ख़बर भी लग गई पर मुश्किल तो यह है कि हम करें क्या ?'

कतरा इस बार वाक़ई चिढ़ गया, 'हैरत है कि एक चोर सरासर दूसरे की जगह पर क़ब्जा कर रहा है और शाह फ़र्मा रहे हैं कि हम करें क्या ?'

फ़क़ीर ने भी क़तराशाह की ताईद करते हुए कहा, 'हुज़ूर किसी की चीज़ लेने वाले को सब चोरों से ज़्यादा खतावार कहा गया है, उसे सज़ा मिलनी चाहिए ।'

दुखी और लाचार होकर दरियाशाह ने कहा, 'शहज़ादो, हम तो बेचारे फ़क़ीर

हैं। न तहरीरी-तक़रीरी दावा कर सकते हैं, न उसके साथ दस्तदराज़ी (हाथापाई) कर सकते हैं। सज़ावार करने का हमें हक़ हासिल नहीं, हम करें तो क्या करें ?'

सब अदब-आदाब छोड़कर झुंझलाकर क़तराशाह ने फ़क़ीरों से दरियाशाह की शिकायत की, 'मैंने बारहा लोगों की हरकतों और इरादों से इन्हें आगाह किया पर मेरी बात पर कभी ख़याल ही नहीं दिया गया।'

पछतावे के मारे दरियाशाह एकदम विलाप-सा कर उठे, 'ठीक बात है मियां, यह क़तराशाह बिल्कुल सच कह रहे हैं। सब क़ुसूर मेरा ही है, मुझे क़ुसूर की सज़ा मिल रही है। मैंने कितने साल वहां बैठ कर शुक्र किया था, आज मैं ख़ाना-बदोश हो गया। दरवेश तो था ही, बे-सरो-सामान और हो गया।'

पीरो-मुर्शिद को यों रोते-बिलखते हुए देखकर सारे मुरीदों के दिलों में अलग-अलग हलचल मच गई। किसी को उनके साथ हमदर्दी हुई, किसी को उन पर गुस्सा आया और किसी को उनकी वली-उल्लाही (सिद्धता) पर ही शुबहा होने लगा। बात थी भी ऐसी ही। यह शख़्स जिसे दूर-दूर के फ़क़ीर फ़क़ीरों को सरताज कहते हैं, जिसकी रूह अपने त्याग और तप की ताक़त से हर घड़ी फ़रिश्तों की सोहबतों सैर करने वाली रूह के नाम से मशहूर है, जो अपनी नज़र के एक इशारे से मिट्टी को सोना और सोने को मिट्टी कर देने का वस्फ़ (गुण) रखता है, वह सरो-सामानी के लिए रो रहा है। दरवेश ख़ानाबदोशी का ग़म मना रहा है ? नाचारगी और मजबूरी की तकलीफ़ से कराह रहा है ? शुबहा न हो तो क्यों न हो ? हमदर्दी भी न हो तो क्यों न हो, और गुस्सा भी क्यों न आये ?

दरियाशाह ने एक आह-सी भरी, 'हाय मेरा तकिया !'

वली के रोने का राज़ किसने पहिचाना है ? वली के हँसने की वजह किसने जानी है ? वली के सोने को सोना समझना एक वहम है और जागने को जागना समझना एक भरम है। वली के खाने का वक़्त ढूंढना नादानी है और प्यास बुझाने का चश्मा तलाश करना बचपना है। वली की मस्लेहत का मतलब किसने जाना है ? अल्लाह की मर्ज़ी का मतलब किसने जाना है ?

दरियाशाह की आहोज़ारी से फ़क़ीरों के घंटिया बंधे हुए डंडे-झोले ठनठना उठे जैसे जंग के लिए बंदूकें खटखटाई हों। फ़क़ीरों के मुखिया ने सख़्त पड़कर कहा, 'यह सरासर नाइंसाफ़ी और ज़्यादती है।'

भड़ककर क़तराशाह बोला, 'इतना ही नहीं, इस ज़्यादती को बरदाश्त करना भी नाइंसाफ़ी है।

दरियाशाह ने पशेमान होकर कहा, 'हां मियां अपनी ग़लती ही दूसरों की ज़्यादती और नाइंसाफ़ी बरदाश्त करने के लिए मजबूर करती है।'

क़तरा आपे से बाहर हो गया, 'अपनी ग़लतियों पर नादिम होने से पहिले आप यह बतलाइए कि क्या कोई चारा नहीं है जिससे हक़ हासिल हो जाय ?'

बेबस दरियाशाह ने कहा, 'चारा हर मुश्किल का होता है तो इसका भी कुछ होगा, पर मुझ बूढ़े लाचार आदमी के बस का नहीं है !'

क़तरा ने कहा, 'आप कुछ फ़रमाइये तो सही बंदानवाज़ !'

फ़क़ीरों के मुखिया ने लाचार दरियाशाह को उनके दर्जे और क़ुव्वत की याद दिलाई, 'आप शाहंशाह हैं और हम फ़र्माबरदार हैं ।'

और सचमुच ही इतने सारे पृष्ठ-पोषकों का सहारा पाकर पश्चाताप पीड़ित दरियाशाह की शाहंशाही शक्ति जैसे जाग पड़ी । पेड़ का सहारा छोड़ दिया और कमर सीधी करते हुए बोले, 'तो फिर शहज़ादो यह बात है तो झोली ख़ाली करके आज का हिस्सा पेट में डालकर नाम-गांव, फ़िरक़े-तबक़े (वर्ग-संप्रदाय), नफ़े-नुक़सान से बेनियाज़ (मुक्त) हो लो तो फिर सोचें !'

□□

पांच दिन की हैस-बैस के बाद गुनाहगारों की पेशी के बक़ाया दो दिन भी सुकड़-सुकड़ाकर आख़िर फ़ैसले का सातवां दिन आ गया । सातवें दिन पूरी मज़दूरी के लालच की जंज़ीरों में जकड़ा हुआ विरोधी दल सरफ़ू के नेतृत्व में ग़ुलामों के ग़ोल की तरह दुम दबाकर दुमंजिले में आया सो आया, पेट हथेली पर रखकर ईमान और ज़ुबान के मारे दो-चार आधी वाले भी आये बिना न रह सके । नामुमकिन है अकेला रहना । ग़ोल बांधकर जीना इन्सानों ने जंगली जानवरों से सीखा है ।

शान से दरबार लगाये रईसे रौनक़ाबाद सौदागर अमीरअली, जहांगीर की तरह मसनद पर रौनक़-अफ़रोज़ (शोभायमान) थे और ज़ीने के ऊपर वाले दरवाज़े की चिलमन (पर्दे) के पीछे से नूरजहां की तरह रौनक़ बेगम दीवाने आम की कार्रवाई मुलाहिज़ा फ़रमा रही थीं । अमीरअली की अग़ल-बग़ल अल्लाबंदे, भाई सबरंग बेग, इन्तिज़ामुद्दौला अलीजान पंसारी रौब से तने हुए बैठे थे । मसनद के करीब सबसे आगे सरफ़ुद्दीन मेमार और सबसे पीछे गुज़री हुई कल हाकिम और आज के मुजरिम की तरह नौ कम सौ का बुंदू मिस्त्री दीवार से लगा बैठा था । उसके आस-पास उसके ही जैसे और दो-चार मुंह-सा पिटवाये बैठे थे । बैठक मेमारों से ठसाठस भरी हुई थी और ड्योढ़ी पर चलते-फिरते राहगीर ठमके हुए थे ।

अमीरअली की मसनद और मेमारों के बीच में अदब के लिहाज़ से जो थोड़ी-सी जगह ख़ाली थी उसमें नथ-नलकी की रंगीन रात को बेगम के मुबारिक हाथों से खुद खींचे हुए रौनक़महल के नक़्शे का काग़ज़ फैला हुआ था । पहिले काग़ज़ और फिर कारीगरों पर नज़र डालकर अमीरअली ने फ़र्माया, 'खिड़की-

दरवज्जे सब देख-समझ लो। नाप-तोल सब बात पै नजर माल्लो। ऐन-मन ऐसेई इमारत उठनी चैये जैसी बेगम साब नैं लैन मारी है।'

काग़ज़ पर उंगली फेरते हुए सबरंग बोले, 'ये हां से हां तलक का छज्जा है, तीन मेहराबें लिये हुए।'

पर्दे के पीछे से आवाज़ आई, 'दोनों सिरों पर गुमटियां हैं संगेमरमर की।'

जो देख सकते थे वह नज़रें झुकाकर आवाज़ के निशाने पर उचककर देखने लगे। अल्लाबंदे ऊपर की पलकों में पुतलियां चढ़ाकर बलबलाये, 'बस ताजबीबी का रोज़ा समझ लो न आगरे का।'

सरफ़ू ने इस तरह नक़्शा बीच में से उठाया जैसे बना-बनाया रौनक़महल हथेली पर उठाया हो। जमात की जमात इस तरह उस पर झुकी कि अंदेशा हुआ कि इमारत कहीं बनाने वालों के नीचे ही न दब जाये। हाथ के इशारे से सब को पीछे हटाकर विचक्षण विश्वकर्मा सरफ़ू ने एक भेदक दृष्टि डालकर काग़ज़ नीचे रख दिया और बोला, 'बन जाएगा, सौदागर, ऐंन-मैंन ऐसेई बन जाएगा। सब तुम्हारे घर के आदमी हैं।'

घर का आदमी बनकर स्वार्थी सरफ़ू सबल पक्ष में घुस जाना चाहता है पर यह नहीं जानता कि जो कौवा सामने मसनद पर बैठा है उसने खुद भी मोर के पंख लगा रक्खे हैं। वह अब कांव-कांव नहीं करता, पीहू, पीहू बोलता है। कांव-कांव करने वाला अब उसके घर का तो क्या, ज़ात का भी नहीं है।

सरफ़ू मीरा के इतना क़रीब बैठा हुआ था कि इस 'घर के आदमी' की बदतमीज़ी पर मीरा उसके मुंह पर कसकर तमाचा मार देता तो सरफ़ू बेहोश नहीं होता तो बत्तीसी तो तुड़वा ही बैठता। मीरा के दिल में आया कि जड़ दे एक थपेड़ा, पर उसी वक़्त एक गड़बड़ हो गई।

पीरा आ गया।

सच का चेहरा ऐसा ही होता है जैसा पीरा का। सच का भेस भी ऐसा ही फटा-पुराना चिथड़े-चिथड़े होता है जैसा पीरा का। सच की छाती चौड़ी होती है, पर पेट कमर से लगा हुआ होता है। भूखा रहने के कारण सच का मुंह कुम्हलाया रहता है, और सदा तरुण रहने का वरदान प्राप्त होते हुए भी सच के मुखड़े पर जरा (बुढ़ापे) की सरवटें पड़ी रहती हैं। आंखें ज़रूर प्रकाशमान होती हैं पर कंकाल की चमकदार आंखें कदापि आकर्षक नहीं कही जा सकतीं। यह बात ग़लत है कि सच सुंदर होता है। सच सुन्दर होता तो मीरा पीरा की ओर से मुंह क्यों फेर लेता?

किसी को भी इस वक़्त पीरा का आना अच्छा नहीं लगा। सुसरा न जाने कहां चलते काम में भांजी मार दे। इस मनहूस को यहां बुलाया किसने? देवताओं की पंक्ति में इस राहु को यहां आने ही क्यों दिया गया? द्वार पर ही इस पापग्रह

का सिर क्यों न काट लिया किसी ने ? मीरा ने सोचा, सिर नहीं तो नाक तो इसकी कट ही गई है । इसके सब भूखे-नंगे साथी इसकी आधी छोड़कर पूरी पर नाक रगड़ने के एि मेरे दरवाज़े पर बैठे हैं, यह भी माथा रगड़ने के लिए ही आया होगा । अच्छा ही हुआ अक्ल ठिकाने आ गई, बेकार फ़ितना खड़ा करता फिरता है, इसे पेल देना ही अच्छा ।

दो-चार को उलांघ-फलांगकर पीरा बुंदू मियां के पास जाकर चुपचाप बैठ गया।

सौदागर ने सरफ़ू से कहा, 'बस तो हम माल का आडर देते हैं ।'

सरफ़ू ने सुघड़-भलाई ली, 'कुछ तो माल पड़ा ई है वां पे ।'

उस माल का नाम सुनकर सौदागर चिढ़कर बोला, 'उस माल सुसरे को उठाके फेंक दे ऊपर से नीचे को । उससे क्या कबर बनेगी वां पे ।'

सीधे सुभाव में सरफ़ू ने जवाब दिया, 'अजी कबर बनवा लो चाय महल की चिनाई में लगवा दो सौदागर सब, एकी बात है । हम से तो जैसे कौगे वैसे कर देंगे ।'

सौदागर भड़का, 'अबे तो कै तो रये हैं कि फेंक दे नीचे को । और कैसे कहवावेगा ?'

सरफ़ू ने कहा 'हां-हां तो फेंक देंगे, हमने तो फिकवाई बचाने की ई जुगत बताई थी ।'

अलीजान ने दखल दिया, 'अड़े तो तुजे क्या लग ड़ई है फिकवाई उठवाई की···तुम आडड़-फाडड़ की फिकड़ मत कड़ो सौदागड़, अलीजान आधी ड़ात माल हाजड़ कड़ देगा ।'

मीरा ने सरफ़ू को हुक्म दिया, 'जब तलक तुम बुन्याद लगाओ ।'

होठों ही होठों में सरफ़ू पुटपुटाया, बुन्याद का क्या है, जब कौगे जभी लग जाएगी बुन्याद ।'

सौदागर ने अलीजान की तरफ़ देखकर कहा, 'देखो जी अलीजान भाई, और कैसे कैं इस्से ?'

हिचकता हुआ सरफ़ू बोला, 'ना, और कैसे कौगे, कह तो दी, पर मजूरी और ठरा देते ।'

झौंझियाकर अलीजान ने कहा, 'अबे ठड़ा क्या देते, जो धाड़ा वो मजूड़ी ।'

सरफ़ू ने समझाया, 'अजी मैं अपनी नईं कैता ऊं अलीजान भाई, मैं तो तुमरा ई ऊं, पर मैं इकेला थोड़े ई ऊं ? ये इतने जने और बैठे एं, इनके सामने कह देते तो दिलजमई हो जाती ।'

'हां-हां', तो कड़ लो दिलजमई । पूड़ी मजूड़ी मिलेगी, ड़ोज की ड़ोज मिलेगी, चिनाई पर नईं मिलेगी, अलीजान की दुकान पे मिलेगी, नगद मिलेगी, औड़ क्या

चैये ? क्यों जी सौदागड़ ?

सौदागर के कुछ कहने से पहिले ही सब की तरफ़ देखकर सरफ़ू ने कहा, बोल पड़ो भाई इस बखत, किसी को कोई उजर हो तो ।'

नये नेता ने बेउज्री के इक़रार के लिए जब आवाज़ लगाई तो पहिले तो झुकी-झुकी नज़रों से एक-एक ने एक-दूसरे को देखा और फिर सब मिलकर पुराने नेता की ओर ताकने लगे । बुतपरस्त न होते हुए भी इन लोगों का ईमान पत्थरों से बाबस्ता है, और सौ बरस का पत्थर पौराणिक महत्त्व का नहीं तो ऐतिहासिक महत्त्व का तो होता ही है । जमात को अपनी तरफ़ ताकते हुए देखकर बुंदू मियां ने पीरा से कहा, 'बोल भई पीरा, तेरा भाई है सौदागर, तू बी तो कुछ बोल ।'

पीरा बोला जैसे मन-मन भर का एक-एक बोल बोल रहा हो, 'चचा, हम तो बोल चुके जो बोलना था । भाई हो चाय कोई हो, हक हक्क है और नाहक तो नाहक्क ई है ।'

यों कहकर पीरा जैसे आकर बैठा था वैसे ही उठकर चला गया ।

मरतैलिया-सा आदमी भीड़ की भीड़ के थूथड़ों पर एक-एक जूती मारकर चला जाय तो कैसा लगे ?

जनानखाने के दरवाजे पर पड़ा हुआ पर्दा इतने ज़ोर से फड़फड़ाया कि उछलकर सबरंग एकदम से खड़ा हो गया और बुंदू मियां की तरफ़ भौंकक र बोला, 'म्यां तुम्हें किसी से क्या है, तुम अपनी कहो न, लो इमान से···'

बुंदू मियां ने कहा, 'तो इमान से तो ये है कि हमारा जी तो मानता नईं । मुकद्दर में होगी तो मजूरी मादरचोद और कईं मिल जायगी, अल्ला और देगा ।'

अपनी कान तक की पतली-सी लाठी उठाकर बुंदू मियां भी पीरा के पीछे चले गये । उनके जाते ही एक और उठा और बोला, 'बस तो फिर तो जो एक को देगा वोई सब को देगा ।'

वह भी बुंदू मिया के पीछे चला गया ।

और इसके बाद जो चला-चली का लग्गा लगा तो देखते-देखते बैठक ख़ाली हो गई । हक़-पसंद पीरशाह कुछ इस तरह हक़-आगाही की पीपनी बजाकर चले गये कि सारी भीड़ पीपनी वाले के पीछे लगी चली गई । अपने आप को अकेला देखकर सरफ़ू माथा ठोककर बोला, 'एका नईं सुसरा मेमार की जात में । अब बोलो मैं इकेला क्या कल्लूंगा !'

सरफ़ू भी पांव पीटता हुआ चला गया ।

आज तो बेड़ा ही मंझधार में डूब गया । इतने दिन की करी-कराई धूल में मिल गई वह अलग, और भरे दरबार में रईसे-बगदार और बेगम बगदार की आबरू का धेला हो गया सो अलग । ऐलान अलग, नतीजा अलग । समा जाने के लिए अब्बाजान का जमाया हुआ बैठकखाने का फ़र्श नहीं फटता वह अलग, और

छाती पर चिक फड़फड़ा रही है सो अलग। गधे से बस नहीं चला तो सौदागर गधी के कान ऐंठने लगा, 'ये क्या इंजाम बांधा जी अलीजान?'

अलीजान ने कहा, 'अब जन-जन बच्चा तो तुमाड़े दड़वज्जे पे ला खड़ा कड़ा, अलीजान का कुछ कसूड़ हो तो जूती माड़ो! क्यों चचा?'

चाचा ने नाराज़ी जाहिर की, 'कसम से यह क्या हरकत है इन बेहूदों की!'

इस हरकत के बाद हो सकने वाली तिक्का-बोटी के डर से अपनी बेक़ुसूर-वारी साबित करने के लिए ज़नाने तक आवाज़ चढ़ाकर मीरा ज़ोर-ज़ोर से ख़ामख़ाह ऊरान-तूरान बकने लगा, 'चचा, तुम नईं जानते ओ बगदार के राजों को। ये तो वो हैं कि मेरे बाप को नाज ना मिल जाय मुजे ईंधन को भेजेगा। कमनसीब बे-रुजगारे फिरते रैंगे पर ये किसी की बढ़ती नईं देख सकते जलन के मारे।'

अब यह थोड़े ही है कि इंसान चाहे और मुसीबत टल जाय। वह तो आनी होती है तो आप चाहे जितने ज़ोर से बोलें, आती ही है।

फाड़ से पर्दा फाड़कर रौनक़ बाहर निकल आई और धाड़-धाड़ सीढ़ियां उतरती हुई बोली, 'ऐ तुम अपने उस भाई को कुछ नहीं कहोगे जिसने कारीगरों को भड़काया है? सबसे ज़्यादा तो वह है जो हमारी बढती नहीं देखना चाहता।'

इसी बात से डर रहा था। इस कम्बख़्त भाई का नाम ही मीरा टालना चाहता है पर टाले नहीं टलता। इसके नाम के साथ ही बात में से बात निकल पड़ती है। कहीं न कहीं ये सनीचर टपक ही पड़ता है बीच में। टालटूल करने को उतरता हुआ-सा बोला, 'भाई इकेले की क्या चलती है इस पल्टन के आगे!'

रौनक़ फट पड़ी, 'क्या कहा तुमने? नहीं भड़काया उसने कारीगरों को?'

मीरा ने फ़ौरन हथियार डाल दिये, 'अब तुम अक्कलबंद हो। हमें बताओ कि हम कैसे करें?'

मरखनी कटिया की तरह गर्दन हिलाकर और शुंकारा देकर रौनक़ ने कहा, 'हमें भी ज़िद पड़ गई है अब! मुए कारीगर चाहे लंधन से बुलाने पड़ें पर रौनक़-महल बने पर बने। ऐ मुर्ग़ न होगा तो क्या दिन न निकलेगा?'

आज चमत्कारों का दिन है। आज अनहोनी होने का दिन है। बगदारी कारीगर सरकारी हुकुम की हेठी करके चले गये पर असल में आज बगदारियों की हेठी का दिन है। हक़ का झण्डा गाड़कर पीरा चला गया, पर आज हक़ की पराजय का दिन है। रौनक़बेगम का हर अरमान आज पूरा होकर रहेगा, आज उसका सितारा बुलंदी पर है।

सौदागर घुप अंधेरे में लंधन का रास्ता ढूंढ ही रहे थे कि बग़ैर मुर्ग़ के ही दिन निकल आया। बाहर से आवाज़ आई, 'अस्सलाम अलेकुम!' और साथ ही साथ बहुत से आदमियों को बाहर छोड़कर अच्छी-ख़ासी भारी-भरकम दाढ़ी वाला एक

क़द्दावर-सा आदमी बैठक में दाखिल हुआ। अल्लाबंदा, सबरंग, अलीजान, सब के सब ताज्जुब से इस अनजान मेहमान को देखने लगे। बेगम अचानक एक अजनबी को घर में घुसा देखकर दो कुलांचों में ज़ीना चढ़कर फटे हुए पर्दे में हो गईं। सर पकड़कर बैठे हुए सौदागर ने तंग होकर कहा, 'कौन हो मियां, क्या चैये ?'

दाढ़ी वाले ने कहा, 'राज-मिस्त्री हैं हुज़ूर। हमने सुना है कि आपके पास कुछ काम है ?'

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है ? अल्लाबंदे के मुंह से निकला, 'सुब्हान तेरी क़ुदरत !'

सबरंग ने आवभगत की, 'आओ-आओ बैठो, काम है हमारे पास।'

दाढ़ीवाला राज बैठ गया तो सौदागर ने पूछा, 'कुछ पैले बी बनाया है तुम लोगों ने ?'

हँसकर दाढ़ीवाले ने कहा, 'ज़िंदगी भर बनाते-बिगाड़ते ही रहे हैं सरकार।'

सौदागर ने कहा, 'मियां किसी मक्कान-वक्कान का अता-पता बताओ जो तुमने बनाया हो।'

सबरंग बोले, 'फेंसी काम है मियां, इमान से कभी महल का मक़बरा बना दो।'

अजनबी ने कहा, 'अब यह तो जनाब को बनने के बाद ही मालूम होगा, लेकिन कभी ठहरने का इत्तिफ़ाक़ हुआ हो तो नमूने के लिए एक ऐशबेगम की सराय है—वह हमारे ही बच्चों ने बनाई थी।'

'एल्लो, ऐ यह तो अपने ही निकले', कहती हुई रौनक़ सीने पर रुपट्टा उलझाती हुई फटे हुए पर्दे के फटाव में से ही बाहर को फट पड़ीं।

अल्लाबंदे ने पीक भरा मुंह ऊपर को उठाकर लनतरानी सुनाई, 'कसम से इन्होंने हमें पहिचाना नहीं, मगर हम तो इन्हें फ़ौरन ही पहिचान गये थे।'

दुमंज़िले की बैठक इस नये नाखुदा (खेवनहार) के आ जाने से नूह की किश्ती की तरह उभरकर उठ आई। नक़्शा दाढ़ीवाले के सामने बिछाकर सबरंग ने कहा, 'लो देखो यह इमारत बनेगी।'

माहिर नब्बाज़ (नाड़ी विशेषज्ञ) मर्ज़ की तशख़ीस के लिए मरीज़ की नब्ज़ देखते-देखते जिस तरह मह्व (तल्लीन) हो जाता है उसी तरह हुनरमंद कारीगर की नज़र नक़्शे पर अटककर बेख़ुद हो गई। बहुत देर तक जब वह कुछ बोला ही नहीं तो रौनक़ ने कहा, 'बस मुजताज़ महल समझो आगरे का !'

महवियत से जागकर मेमार बोला, 'बन जायगी बेगम, इंशाअल्लाह ऐसी बन जायगी कि अपने तसव्वुर में नहीं आई होगी।'

अब सौदागर का काम आया। हिल-हिलाकर बोला, 'बोलो तो मजूरी-अजूरी का क्या हिसाब रैगा ?'

कारीगर ने कहा, 'हुजूर हम तो महीन काम करने वाले लोग हैं, यहां वालों से चौगुनी मज़दूरी पड़ेगी।'

सौदागर सनाका खा गया। शौक़ के लिए मुट्ठियां भर-भरकर अशर्फ़ियां लुटाने वाला मीरा मज़दूरी के नाम चौगुनी सुनकर चीख़कर बोला, 'चौगनी?'

मज़दूर मज़दूर है, मालिक मालिक ही है। मीरा आज मज़दूर नहीं है, मज़दूरों की ज़्यादतियों का पूरी तरह जानकार मालिक है। मज़दूर जब ख़ुद मालिक हो जाता है तब रुपया क़ीमती हो जाता है। और रुपया? कमाल है कि चोरी-जारी करके पाया हुआ रुपया खो जाने पर भी आदमी नुक़सान अपना ही समझता है। चंगुल से में फंसकर मीरा ने पुकारा, 'अलीजान भाई।'

तेलची की पुकार पर मशालची ने नये कारीगर से झोंझ मारी, 'मियां कोई लुट्टस पड़ ड़ई है क्या सुमड़ी? चौगनी मजूड़ी का क्या मतलब?'

आधी-पूरी के झंझट में यह चौगुनी का नया अड़ंगा न खड़ा हो जाय बीच में। माथे में आंखें चढ़ाकर अल्लाबंदे ने कहा, 'कसम से कुछ भी नहीं मांगी इन्होंने, महीन काम के करने वाले हैं।'

सबरंग ने दून की हांकी, 'महीन काम की कद्र तो कुछ हमारे नव्वाब लोग ही जानते थे। इमान से उजरत का तो सवाल ही क्या, इमारत की इमारत बख़्श देते थे उठाके।'

आख़िर रौनक़ बेगम ने बात न बढ़ाकर सूली का हुक्म सुना दिया, 'चौगनी मांगोगे तो चौगनी देंगे। यह नक़्शा देखकर बतलाओ कि इमारत के पूरा होने में कितने दिन लगेंगे?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'देख लिया बेगम, बिस्मिल्लाह से गिन के कम से कम नौ-दस महीने लगेंगे।'

खटका दबाते ही जैसे खटाक मे खिलौने का मुंह खुल पड़ता है ऐसे ही बंदे, सबरंग, रौनक़ और मीरा का मुंह खुल पड़ा, 'एं?'

बंदेमियां बोले, 'कसम से वा रे जशनशाह!'

सबरंग ने कहा, 'इमान से कमाल हो गया।'

सौदागर ने रस भरे नैनों से बेगम की तरफ़ देखा।

और बेगम इस बार दरअसल लाल होकर चामन-चामन चलकर फटे पर्दे के पीछे छुप गईं।

अलीजान इस अंदर की बात का भेद न पहिचान कर यके-बाद-दीगरे टक-टकाने लगा।

पर्दे के पीछे से लाड़-लड़ीली आवाज़ आई, 'मियां जी, इन्हें एक़-एक़ रोज़ की चौगनी मज़दूरी पेशगी दे दीजिए।'

भीतर की जेब से कपड़े का बटुआ निकालकर मियां जी ने दाड़ीवाले से

कहा, 'लो मियां, रुपये गिनो और कमेरे गिनवाओ।'

□□

सौदागर की बैठक से हक़ की दुहाई देकर पीरा जब घर लौटकर आया तो बच्चा तो झटोली में पड़ा रीं-रीं कर रहा था और भूखी-प्यासी अमीना एक खाट के पाये से खड्डी में कहीं धाड़-धाड़ पच्चर ठोक रही थी, जैसे तक़दीर का सर फोड़ रही हो। तकिये पर आज पीरा क्योंकि चौकी-पहरे के लिए भी नहीं जा सका था इसलिए घर में घुसकर आज उसने अठन्नी भी उसे नहीं दिखाई, न बच्चे के रोने पर ध्यान दिया। आते ही कहा, 'हमारा भाई दिमाना हो गया!'

अब इसकी बात अच्छी नहीं लगती। आवाज़ भी अच्छी नहीं लगती। दिल तो नहीं था कि बोले, पर रहा नहीं गया। झुंझलाकर अमीना बोली, 'वो काय से दिमाना लगा तुमें ?'

पीरा ने कहा, 'अरी दूसरे की धरती पे म्हैल चिनवाने की जिद्द बांधे बैठा है, ये तो पूरे खपकानीपने की बात है।'

खाट का पाया अमीना ने धड़ाम से धरती पर पटक दिया और फूटे घड़े की तरह बिखर पड़ी, 'खपकानीपन की बात ये है कि वो तो म्हैल चिनवाये और तुम उसपे मजूरी भी ना करो। बरस-बरस भर परदेसों में जा भटके, वां से दमड़ी नहीं भेजी, कमाई करके लाये तो उसमें से टुकड़े तक को छदाम नईं लिकालते। खाने को मूं फट गये एक छोड़ तीन—नईं निकालते नईं सई, कर्जा ही चुका देते तो पेट में नईं तो कलेजे में तो ठंडक पड़ जाती !'

बेफ़िक्री से या बेफ़िक्र करने के लिए पीरा बोला, 'अरी तू करज-मरज का क्या गमजा लिए बैठी है बेकूप, हम जो बैठेऐं तेरे मियां !'

अमीना सिसक पड़ी, 'मियां मेरा कलेजा छिला पड़ा है। वो छिनाल औरत हमें अपनी जरखरीद गुलाम कैती है बीच बजार में। तुम क्या जानों इस पैनी छुरी के घाव को !'

भूख से रीं-रीं करता हुआ बच्चा और ज़ोर से बिलबिला पड़ा तो बात को टालकर पीरा ने कहा, 'जा उसे उठा ले।'

पीरा के कहने से बच्चे के रोने की तरफ़ अमीना का ध्यान गया तो लपककर खटिया से उठाकर उसे छाती से लगा लिया। मुंह फेरकर दूध उसके मुंह में दे दिया और फूट-फूटकर रो पड़ी, 'ऐसे बखत गुड़-घी के लाले पड़ गये। मेरे बच्चे के बट का दूध भी सोख लिया अल्लाताला ने !'

क्या ईमान इसी को कहते हैं कि बीवी-बच्चे भूख से बिलबिलाते रहें और आदमी अंटी में रक़म बांधे बैठा देखता रहे। न खुद खाये न कुनबे को खाने दे ?

अपने ही रुपयों से झोली भरी रहे और बच्चे की मां की छातियों का दूध ग़िज़ा की कमी से ख़ुश्क़ हो जाय ? आदमी जान से प्यारी बीवी को बे-हुरमत होते हुए देखता रहे और क़र्ज़ा न चुकाये ?

सुनते आये हैं कि ईमान इसी को कहते हैं। पर अगर ईमान यही है तो दुनिया वालों पर इस क़िस्म के ईमान की पाबंदी आयद करना सरासर ज़्यादती है।

पर सच तो यह है कि कौन किस पर पाबंदियां लगाने के लिए आता है। इंसान अपनी ही अक़्ल, अपनी तमीज़ और अपने ही ज़र्फ़ (पात्रता) के मुताबिक़ अपने ऊपर पाबंदियां आयद कर लेता है, या पाबंदियां तोड़ डालता है। पीरा क्या अपनी औरत को चाहता नहीं है ? या बच्चे से मुहब्बत नहीं करता है ? या खुद उसकी जठराग्नि बुझ गई है ? नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ है। उसके ज़रीये दूसरे की अमानत में ख़यानत हुई है। अपनी कमाई की पोटली से जब तक वह उसे पूरा नहीं कर देगा, कौड़ी उसमें से नहीं लेगा। ईमान किस चिड़िया का नाम है यह तो वह जानता भी नहीं, उसकी आशनाई सिर्फ़ ज़मीर से है। अंत:करण में वह अपने आप आसना मारे बैठा है।

दरियाशाह पीरा को पीरशाह कहते हैं और पहिले चिलम देते हैं।

कहते रहें दरियाशाह ! पीता रहे वह पहिले चिलम ! तमाखू पीने से कहीं पेट भरे हैं किसी के !

रोती हुई अमीना को दिलासा देकर पीरा ने कहा, 'अरी काम ले रक्खा है तेरे नसीब का, पैसे ई पैसे आ जायेंगे। रोना छांड़ के रोटी खुला दे भूख लग रही है।'

'रोटी ?'

हाय ये भूखा है !

कल मैंने नहीं खाई तो इसने भी नहीं खाई—सुबह भी यों ही चला गया था—कल शाम का भूखा है—हाय जाने कब से आधे पेट खा रहा है !

रोना भूल गई, आंसू सूख गये, दुनिया की देनदारी भूल गई, अपनों से लेन-दारी भूल गई। जिसकी न सूरत अच्छी लगती थी, न बात, न आवाज़, उसकी भूख से बिलबिला उठी। आधे की इस सम्पूर्ण उदारता की महिमा कौन से शब्दों में गाई जाय ?

रोते बच्चे को धरती पर लिटाकर भीतर को भागी पर दो ही क़दम उठाकर ठिठक गई। 'हाय चून तो है ही नहीं घर में—शायद हो थोड़ा बहुत—' फिर चली, फिर रुक गई। 'नहीं, नहीं है। हंडिया ख़ाली है !···हाय ये भूखा है, रोटी मांग रहा है, कहां से खिलाऊं ?' एकदम से पलटकर बोली, 'वो पोटली कां है ?'

बची हुई पोटली अंटी में थी। बोला, 'ये रई, क्यों ?'

'टके लिकालो इसमें से ।'

'अरी इसमें से नईं लिकाल सकता भागवान ।'

लिकालो जल्दी से, आटा नईं अै घर में ।'

मुस्कुराकर पीरा ने कहा, 'अब तू तो हमें चरका मत दे अल्ला की बंदी ।'

दुख से गिड़गिड़ाकर और उसके दोनों हाथ थामकर अमीना ने कहा, 'अरे एक चुटकी भर भी नईं अै मलंग, पुटलिया निकाल ।'

अमीना ने पीरा की अंटी पर हाथ डाला तो पीरा उछलकर खड़ा हो गया और हँसता हुआ बोला, 'इसमें से नईं दूंगा एक कौड़ी भी ।'

इसी पर बात बढ़ गई ।

'देखूं कैसे नईं दोगे' कहकर अमीना खीझकर पीरा के ऊपर टूट पड़ी । दोनों हाथों से अंटी कसकर खिलखिलाता हुआ पीरा इधर से उधर भागने लगा । आख़िर अमीना ने दांव साध लिया । पोटली झपटकर वह तेज़ी से दरवाज़े की तरफ़ चली । पोटली हाथ से निकली देखकर पीरा के होश हाथों से उड़ गये । अभी तक वह अमीना के मरण को हँसी-खेल ही समझ रहा था पर हँसी-हँसी में खंसी हुई देखकर यकायक उसके चेहरे की नसें तन गईं । पुकारकर बोला, 'पोटली उल्टी दे दे अमीना ।'

जाते-जाते ही अमीना ने कहा, 'नईं देती, आटा लाना है मुजे ।'

चीख़कर पीरा ने कहा, 'आटा गया भाड़ में, पोटली दे दे तू ।'

रुककर और ताव से तमतमाकर अमीना ने कहा, 'नईं दूंगी, नईं दूंगी, नईं दूंगी ।'

दरवाज़े के बाहर क़दम रखने ही वाली थी कि चिल्लाकर पीरा ने अमीना की कोख में फ़ौलाद का घूंसा मारा, 'तुजे रमजानी की कसम है जो पोटली ना लौटा दे फौरन ।'

धक्का खाकर अमीना के हाथ से पोटली छूट पड़ी । छाती पर गोली खाकर सिपाही के हाथ से बन्दूक इसी तरह उछटकर छूट पड़ती होगी । अंतड़ियां इमठ-उमठकर जेबड़ी की तरह बट गईं । बड़ी मुश्किल से पलटकर अमीना ने पीरा की तरफ़ देखा । सांप मारकर बच्चे की रक्षा करने वाले ईमानदार नेवले ने दम तोड़ते हुए ऐसी ही आंखों से मालिक की तरफ़ देखा होगा । जूड़ी के ताप की तरह थर-थर कांपने लगी । होंठ फड़फड़ा उठे । आंखों से आंसुओं की धार उबल पड़ी । घुटने पकड़कर वहां की वहीं बैठती चली गई ।

पीरा ने आगे बढ़कर पोटली उठा ली । अंटी में बांधी और फिर अपनी जगह आकर टिक गया जैसे कुछ हुआ ही न हो ।

दहलीज़ में अमीना, चौक में दीवार से बैठा हुआ पीरा, धरती पर हाथ-पांव पटककर छाती फाड़कर रोता हुआ बच्चा ।

जवान मौत नहीं थी, पर स्यापा ऐसा ही था।

ऐसी-तैसी ऐसी पोटली की।

अचानक बत्तीसी भींचकर अमीना उठी और वापिस लौटकर कोने में रक्खे हुए पीरा के औजारों के थैले के पास गई। भीगी हुई लकड़ी-सी अकड़ी कमर दिक़्क़त से झुकाई और बाक़ी बचा हुआ सारा ज़ोर लगाकर औज़ारों का भारी-भरकम थैला दोनों हाथों में जकड़कर उठाया, घुटनों पर टिकाया, फिर छीबे की तरह सर पर रक्खा और चुपचाप बाहर को चल दी। पीरा ने पुकारा, 'औजार कहां ले चली दिन मुंदे !···ओ बेकूप !···ओ अमीना !'

पर अमीना नहीं रुकी।

□□

परदेसी कारीगरों की चौगुनी मज़दूरी पर कुढ़ता हुआ मशालची अलीजान जब दुमंज़िले से लौटकर आया तब दूकान के आगे देसियों का अखाड़ा जमा हुआ था। इतना हंगामा था कि गुल-गपाड़े में यह पता ही नहीं लगता था कि हक़ के नाम पर रोज़ी की क़ुरबानी देकर आये हुए इन दीनदारों में कौन तो अभी तक हक़ पर डटा हुआ है और कौन रोज़ी छोड़ने के लिए पछता रहा है। सरफ़ू बहुत भड़का हुआ था। सारा खेल बखेड़ा कर देने का इलज़ाम बुंदू मियां के सर थोप-कर सरफ़ू जब उनके साथ भी हमरी-तुमरी पर उतर आया तब बुजुर्ग की बेइज़्ज़ती का नतीजा यह ज़ुरूर निकला कि जमात की जमात यहां भी उसके ख़िलाफ़ हो गई। बुंदू के सौ बरस पुराने पिटारे में से निकली हुई नंगी-उघड़ी गालियों से जब सरफ़ू का थूथड़ा पिटने लगा तो झींककर सरफ़ू ने कहा, 'गाली चैये जित्ती दे लो पर मैंने तो इत्ती बात कही है कि सौदागर काम का बड़ा आदमी है, कल को चाय जिसका काम पड़ेगा—'

बीच में ही उस बड़े आदमी को मां की गाली फटकारकर बुंदू ने कहा, 'दूसरे की धरती पै कब्जा करने वाले बेईमान के वास्ते जो काम करे वो बेईमान, जिसका काम पड़े वो बेईमान, उसका बाप बेईमान, उसकी सात पीढ़ी बेईमान।'

सात-सात पीढ़ियों की बेईमानी के बोझ से सरफ़ू की गर्दन झुकते ही दुमंज़िले की तरफ़ से कुछ अजनबी आदमियों की टोली को आते हुए देखकर सबका ध्यान उनकी ओर चला गया। भारी-भरकम दाढ़ी वाले आदमी के पीछे-पीछे इतने अनजाने आदमियों को डाकुओं के गिरोह की तरह दनदनाकर आते देखकर सबके सब चौकन्ने होकर ताकने लगे। चौक से टोली गुज़रने लगी तो बुंदू मियां ने आवाज़ लगाई, 'सलामालेकम भाई, साब, कहां मुकाम है ?'

दाढ़ी वाले ने कहा, 'वालेकुमअस्सलाम मियां जी, मुकाम-उक़ाम काहे का,

मुसाफ़िर हैं।'

एक ने पूछा, 'कौन लोग हो ?'

जवाब मिला, 'राज-मिस्त्री हैं। अमीरअली सौदागर का काम ले लिया है पर रहने को जगह नहीं है।'

ऐसे लग गई जैसे भुस में लग जाय ! पर बुझाई कैसे जा सकती थी ? बुंदू ने घुमसकर कहा, 'जिसका काम लिया है उसी से जगै भी ले लो। भौत जगै है उसके पास, नवाब का बच्चा है वो तो !'

किसी से रहा नहीं गया तो बोला, 'हमारी ई तो तुमने रोज़ी छीनी, हमीं तुमें जगै बतावें ? मियां जात-बिरादरी का नईं तो धंदे-पैसे का ई लिहाज करते !'

दाढ़ीवाले के साथी ने कहा, 'भई हम तो परदेसी लोग हैं और···'

दाढ़ीवाले ने साथी की बात पूरी की, 'और तुमने काम छोड़ दिया तब हमने लिया है।'

जलकर बुंदू ने कहा, 'लिया है तो पूरा करके दिखाना।'

'इन्शाअल्लाह !' कहकर परदेसियों ने रास्ता पकड़ा तो सरफ़ू चढ़ बैठा, 'अब उसे क्यों नईं दी गाली ? उसे देते तो जानते ! न अपनी छोड़ी ना दूसरे की, मरवा दिया सारों को।'

दूकान के पटरे पर खड़े अलीजान ने ज्ञान बघारा, 'ये तो सुसड़ी बोई बात हुई कि ना खाऊं ना खाने दूं, कुत्ते को ई डालूंगा ! स्पाना कौवा हड़हमेस गादला पीता है।'

सबके दिल में चोर बैठ गया कि मारे गये इस हक़-नाहक़ के फेर में।

□□

दिल और पेट की कशमकश में मात खाकर रोती-बिसूरती अमीना, सर पर रोज़ी का ज़रिया, यानी मियां के औज़ार उठाये अलीजान के यहां गिरवीं रखकर पेट भरने का सामान लाने के लिए जिस वक़्त गली में आई, ठीक उसी वक़्त रहने के लिए जगह की तलाश में भटकते हुए परदेसी कारीगर उसे तिगलिये का मोड़ घूमते ही सामने से आते हुए मिल गये। ग़ैरों से आंसू छुपाने के लिए फटी ओढ़नी का पल्ला दायें हाथ से खींचकर उसने पर्दा कर लिया और उन्हें रास्ता देने के लिए खुद रास्ता छोड़कर एक तरफ़ को सिमट गई। दाढ़ीवाला मेमार भी जब रुककर उसकी तरफ़ देखने लगा तो औरत की तरफ़ ताकते हुए देखकर ताज्जुब से सबके सब साथी बड़े मियां की तरफ़ देखने लगे। मालूम नहीं कि बड़े मियां औरत की फटी हुई ओढ़नी देख रहे थे या फटी ओढ़नी के नीचे गठे हुए गरेबान में फटा हुआ दिल देख रहे थे या कुरती के नीचे कमर से लगा हुआ ख़ाली पेट देख रहे

थे। बहरहाल देखे चले जा रहे थे। एक साथी ने शायद होशियार करने की ग़रज़ से आगे बढ़कर उनसे पूछा, 'बड़े मियां क्या देख रहे हैं ?'

बड़े मियां ने अपने साथी से फुसफुसाकर कहा, 'देखो-देखो, औरत है औरत !'

बड़े मियां की इस हरकत को उनके साथी ने कैसे लिया और क्या समझा यह तो वही जाने, पर इस कानाफूसी से भीतर ही भीतर अमीना का पसीना छूट पड़ा, बच-बचाकर आगे बढ़ने के लिए वह अपनी जगह से हिली तो हिलते ही उसे आवाज़ आई, 'क्या बेच रही हो बीबी ?'

जले पर नमक की तरह राहगीर का यह सवाल सुनकर हालात की सताई हुई अमीना का पर्दा हाथ से छूट गया, आंखों के रिसते हुए बांध टूट पड़े। हिलकियों जैसे बोल सुनाई पड़े, 'अपने मियां के हाथ-पांव बेच रई ऊं, लोगे ?'

परदेसी ने न उसके पर्दे पर ध्यान दिया, न बे-पर्दगी पर। न हिलकियों पर न आंसुओं पर। मालदार ख़रीदार की तरह बोला, 'दिखाओ तो सही कैसे हैं, पसंद आ गये तो ले लेंगे।'

थैला धड़ाम से अमीना ने ज़मीन पर पटक दिया और बोली, 'लो कल्लो पसंद।'

खनखनाकर औज़ार थैले से निकलकर बिखर गये तो दाढ़ी वाले ने अपने साथी कारीगर से कहा, 'देखा भई, फ़ौलाद के हैं इसके मियां के हाथ-पांव।'

साथी ने कहा, 'सुब्हानअल्लाह, है तो सही।'

ज़मीन पर बैठकर औज़ार इकट्ठा करके फिर से थैले में भरता हुआ साथी बोला, 'यह तो हमारे काम की चीज़ें हैं बड़े मियां।'

बड़े मियां ने कहा, 'हां काम की तो हैं ही—मेरे पास औज़ार थे भी नहीं।' फिर अमीना से पूछा, 'बोलो बीबी, क्या लोगी इनका ?'

ताज्जुब से ही अमीना ने राहगीर का सवाल सुना! —'यह खूब रही, घर के दरवाज़े पर ही गाहक खड़ा मिल गया! अलीजान के यहां गिरवीं रखने जा रही थीं! क्या होगा गिरवीं रखकर ? रोज़-रोज़ मुनाफ़ा ही और चढ़ेगा साहूकार का! कोठे वाली का तकाज़ा तो है ही, पर पंसारी का और हो जायगा!··· बेच दूं ?···फिर औज़ारों के बिना वह काम काहे से करेगा।···काम वह करता ही कहां है निकम्मा!···बेचे ही डालती हूं।' मालूम नहीं पीरा के मुंह पर एक बदले का तड़ाका जड़ देने के ख़याल से या शाम को चूल्हा जलाने के ख़याल से, अमीना बोली, 'लेने हों तो जो जी में आये वो दे दो जल्दी से।'

हिचकिचाकर दाढ़ी वाले ने कहा, 'इन्हें ख़रीदने लायक तो रक़म हमारे पास है नहीं।'

अमीना के दिल में आया पकड़कर इस दढ़ियल की दाढ़ी नोंच ले! गुस्से में भरकर बोली, 'तो फिर पूछा ई क्यों था बड़ा मूं करके कि क्या लोगी इनका ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'उधार देती हो तो दे दो।'

खिजलाकर अमीना ने कहा, 'मियां क्यों रस्ता खोटा करते हो दुखियारी का ? मैं कोई बोहरन नईं, साऊकारन नईं; उधार दे दूं तो पेट कम्मखत का गड्ढा कैसे भरूंगी आज की आज, अभी की अभी !'

दाढ़ीवाले ने रास्ता सुझाया, 'तो किराये पर दे दो। हर रोज़ एक आदमी की मज़दूरी तुम्हें दे दिया करेंगे।'

'यह आदमी कह क्या रहा है ? सिर्फ़ औज़ारों के किराये में एक आदमी की मज़दूरी रोज़ दे दिया करेगा ?···अल्ला यह बात तो बड़ी अच्छी है। कम से कम रोटी-टुकड़ें से तो बेफ़िक्र हो जाऊंगी दोनों वक़्त !···' जान में जान-सी आई लेकिन फिर दुनियादारी ने शुबहे में डाला, 'क्या खबर, दोगे कि नईं दोगे। मैं औरत जात रोज की रोज कहां ढूंढती फिरूंगी तुमें ?'

दाढ़ीवाले ने शुबहा दूर कर दिया, 'तुम क्यों, हम तुम्हें ढूंढ लेंगे। हमने अमीरअली सौदागर का काम लिया है, अभी महीनों चलेगा, कहीं भाग थोड़े ही जायेंगे हम।'

गो कि इस किराये के सौदे से अमीना के मसले का हल निकलकर बैठे-बिठाये सामने आ गया था पर अमीरअली सौदागर के काम का नाम सुनकर उसे कोठे वाली की याद आ गई। मियां के औज़ारों का किराया भी उस रंडी के महल की चुनाई में से ही आकर उसका पेट भरेगा ? अल्लाह की मेहरबानी में छुपे हुए इस तीखे तन्ज़ (क्रूर व्यंग्य) से दिल के नासूर में सूआ-सा चुभ गया। गाली देने को दिल चाहा पर फ़ैसला नहीं कर सकी कि अपने मुक़द्दर को दे, सौदागर को दे, सौदागरनी को दे, काम छोड़े हुए बगदारी मेमारों को दे या छीनने वाले पर-देसियों को दे। जो ज़ुबान पर आया सो बोल पड़ी, 'इत्ती-इत्ती बड़ी दाढ़ी-मूंछें रखाये फिरते हो, तुमें सरम नईं आई दूसरों की रोजी खसोटते ? अल्ला देखता है भला।'

दाढ़ीवाले ने बात का सिर्फ़ आख़री हिस्सा सुना। बोला, 'हां बीबी, अल्ला तो देखता ही है। लो यह एक मज़दूरी तो ले लो, कल की कल देखी जायेगी।'

साफ़े के सिरे में बंधी हुई गांठ खोलकर परदेसी ने अपनी एक दिन की मजदूरी अमीना की फैली हुई हथेली पर रख दी। योग-याग सब धोखा है, पैसे से ज़्यादा अहं को नष्ट करने वाली और कोई चीज़ नहीं है। बहुत सारे रुपये देखकर चौंक तो पड़ी, पर अपनेपन की मुस्कुराहट से बोली, 'ये इत्ती सारी एक मजूरी है ? मियां ऐसे तुम कौन से बावले गांव के हो जो तुम्हें पैसे गिनने नईं आते ?'

हँसकर परदेसी के साथी ने कहा, 'बड़े मियां, इस माई की ज़ुबान तो सख़्त है लेकिन यह है ईमानदार···'

फिर अमीना से बोला, 'यह हमारी एक ही मज़दूरी है माई।'

चिलचिलाती हुई धूप से तपा हुआ गुलाब का फूल पानी का छींटा लगते ही तरोताज़ा हो गया । फटी हुई ओढ़नी के साबुत से पल्ले में रुपये बांधते हुए बोली, 'मुझे क्या है. अल्ला तुमें जादा दे । तुमें जादा मिलेगा तो मुजे बी जादा मिलेगा ।'

साथी मेमार ने औज़ारों का थैला उठाकर कंधे पर डाला । अमीना को लगा जैसे उसके लूले-लंगड़े मियां का जनाज़ा लोग कंधा लगाकर ले चले । पेट में से एक गोले ने उठकर ऊपर को धक्का-सा मारा तो डबडबाने को हुई आंखों पर पर्दा करके उधर को मुंह और इधर को उंगली उठाकर घुटे हुए गले से बोली, 'वो गली के नुक्कड़ पे है मेरा घर, तुमारा इमान तुमारे साथ ।'

शरीफ़ लेकिन मजबूर औरत की तरह शर्म से गर्दन नीचे करके अमीना ने जल्दी-जल्दी अलीजान की दूकान की तरफ़ क़दम बढ़ा दिये ।

चलते-चलते दाढ़ीवाले ने अपने साथी से कहा, 'इनका हिसाब साफ़ रखना मियां, ईमान उठवा गई है ।'

साथी ने पूछा, 'कहां क़याम कीजियेगा ?'

'देखें, उस सामने वाले घर में देखें, जगह मिल जाय शायद !'

□□

दिन मुंद गया था लेकिन पीरा के घर में ढिबरी नहीं जली थी । रमज़ानी को चुप करने के लिए सर से ऊंचा उठाये हुए पीरा, 'न कोई दोस्त न कोई यार, दुस्मन सारा सदर बाजार' गा-गाकर चौक में बैताल की तरह उछल-कूद कर रहा था कि दाढ़ीवाले ने दहलीज़ में से पुकारा, 'अस्सलामअलैकुम !'

नाच बंद करके पलटकर पीरा ने जवाब दिया, 'वालैकम सलाम ।'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'हम परदेसी लोग हैं मियां ।'

पीरा ने कहा, 'आओ तो आओ, तमाखू पियो, है थोड़ा-सा मेरे पास ।'

अतिथि है तो स्वागत है । रोटी नहीं है, पर तम्बाकू तो एक चिलम है ही ।

सब अंदर आकर खड़े हो गये । इतनी सारी भीड़ को देखकर रमज़ानी और ज़ोर से किकिया उठा तो पीरा बोला, 'इस लौंडे की मां बाहर गईं है । नईं तो इसे देके मैं चिलम भर देता—बैठो तुम, आती होगी ।'

बैठते-बैठते दाढ़ीवाले ने कहा, 'तुम इसे हमें दे दो, हम खिलाते रहेंगे ।'

बच्चे को लेने के लिए दाढ़ीवाले ने अपनी लम्बी-लम्बी बांहें फैला दीं । पीरा ने कहा, 'अरे मियां, इसे रैन दो । धार-वार मार देगा, अमीना का है ये ।'

हँसकर दाढ़ीवाले ने कहा, 'देखें तो सही, क्या-क्या मारेगा यह !···लाओ, तुम चिलम भरो । बड़ी देर हो गई तमाखू पिये ।'

परदेसी मेमार की गोद में जाते ही बच्चा उसकी दाढ़ी से खेलने लगा तो

ज़ोर-ज़ोर से हँसकर पीरा बोला, 'हमको बी डाढ़ी रखनी पड़ेगी अमीनुद्दीन के मारे।'

सब हँसते हुए इधर-उधर ज़मीन पर बैठ गये और पीरा चिलम के लिए चूल्हे में चिनगारी ढूंढने लगा। चूल्हे में चिनगारी थी ही कहां किसी तरह बचा-खुचा तम्बाकू भरकर सुलगा-सुलगू कर लाया तो रमज़ानी तब तक सो गया था। चिलम दाढ़ीवाले को देते हुए बोला, 'लाओ इसे मुजे दे दो, तुम दम लगाओ।'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'पहिले तुम लगाओ।'

पीरा ने कहा, 'ना पैले तुम।'

'नहीं पहिले मेज़बान।'

'ना, पैले मैमान।'

'नहीं, पहिले बुज़ुर्ग।'

'बस तो बुजरग तो तुमीं हो।'

'नहीं मियां, तुम हो, इसीलिए कह रहे हैं।'

'लाओ तो मुजे क्या ऐ।'

पीरा ने चिलम ले ली पर दम लगाता-लगाता अचानक रुक गया।

'यह क्या बात ?···यह तो दरियाबाबा की तरह बोलता है !···वह भी इसी तरह हुज्जत करता था !···यह वही तो नहीं है ?···आवाज़ तो वैसी ही है !···पर डाढ़ी-वाढ़ी तो थी नहीं उसकी।' अंधेरे में आंखें फाड़कर दाढ़ीवाले की तरफ़ ग़ौर से देखने लगा। ··ना, वह नहीं है !···वह क्यों आता यहां ?···उसका यहां क्या काम ?'

पीरा को अपनी तरफ़ ताकते हुए देखकर दाढ़ीवाले ने पूछा, 'क्या देख रहे हो ?'

पीरा ने कहा, 'कुछ नईं, हमारा एक आदमी खो गया है भौत दिन से।'

'कौन ?'

'था एक मलंग, तुम क्या जानो ? पर था ऐसाई जैसे तुम हो !'

परदेसी के साथी ने कहा, 'मियां हम तो परदेसी लोग हैं, मेमार हैं···'

पीरा ने कहा, 'एक ई बात है, हम बी मेमार हैं।'

दाढ़ीवाला बोला, 'हमने तुम्हारे अमीरअली सौदागर का काम ले लिया है, पर रहने को जगह नहीं है, सबके सब फ़िक्र में पड़े हुए हैं। तुम कुछ दिन के लिए जगह दे सको तो बड़ी मेहरबानी हो !'

अमीरअली का काम ? उस बेईमान का काम जो ज़बरदस्ती दूसरे की जगह पर क़ब्जा करना चाहता है ? उस जगह का काम जिसका कि वह ख़ुद मुतज़िम है ? वह काम जो उसका अपना काम है और जिसके लिए उसने अपनी सारी बिरादरी को सिर्फ़ आधी मज़दूरी पर राज़ी कर रक्खा था ? वह काम जिसके लिए

साल भर तक देश-विदेश में पापड़ पीटकर उसने अपनी सारी कमाई दांव पर लगा दी है ? वह काम जिसकी वजह से न वह अपना क़र्ज़ चुकाता है न औरत को ज़रख़रीदी जैसी फ़ुहश गालियों से बचा पाता है ? वह काम जिसकी वजह से न वह ख़ुद पेट भरकर खाता है न बीवी-बच्चे को खाने देता है ?

ये मेमार हैं। इन मेमारों ने वह काम लिया है जिसकी वजह से बिरादरी वाले मेमार बेरोज़गार हो जायेंगे !

ये दरियाशाह के तक़िये पर रौनक़महल बनायेंगे !

ये दुश्मन हैं !

पर ये दुश्मन क्यों होते ? इनका क्या क़ुसूर है ? काम किसे नहीं चाहिए ? इन्हें चाहिए था, उसने दे दिया, इन्होंने ले लिया। कोई काम देता है तो कोई लेगा ही। ये दुश्मन नहीं हैं। परदेसी हैं, लाचार हैं बेचारे। जगह नहीं है सर छुपाने के लिए, फ़िक्र सच्ची है !

विवेक भी सदा सीधा ही रास्ता दिखलाता है, इसमें संदेह है।

दम मारकर चिलम पीरा ने दाढ़ीवाले के हाथ में थमा दी। बच्चा ले लिया और धुआं छोड़ते हुए बोला, 'तो फिकर की क्या बात ऐ···'

मकान के मीरा वाले हिस्से की तरफ़ इशारा करके कहने लगा, 'ये कोठा पड़ा है, इसमें रओ सबके सब।'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'सोच-समझकर कहना बादशाह, तुम बाल-बच्चेदार आदमी हो और हमें तुम्हारी बिरादरी वाले अच्छा नहीं समझते।'

पीरा ने कहा, 'अजी बिरादरी हमारी है, हम जानें, हमारी बिरादरी जाने, तुम परदेसियों को तकलीफ़ नई होनी चैये !'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'ठीक है, तो तुम जानो !'

साथी ने पूछा, 'तुम हमारे साथ काम तो करोगे न ?'

'काम ?'

काम कहकर पीरा ने बच्चा गोद में से धरती पर लिटा दिया और फिर जमकर बोला, 'काम मैं करता तो सई पर करूंगा नई।'

'क्यों ?'

'बस है कुछ बात !'

दाढ़ीवाले ने लालच दिया, 'मज़दूरी चौगुनी मिलेगी।'

ताज्जुब से पीरा ने पूछा, 'चौगुनी ?'

दाढ़ीवाले के साथी ने चौगुनी को चार सौ गुनी लम्बा कर कहा, 'हां, चौगुनी।'

पीरा हं[illegible]ड़ा, 'चौगुनी हो चाय अठगुनी, ये काम नई करूंगा।'

'आख़िर क्यों ?'

'बस है कुछ बात !'

'ऐसी भी क्या बात है ?'

'बस है कुछ !'

दाढ़ीवाले ने अपने साथी से कहा, 'ख़ैर जी होगी कुछ, हमें उससे क्या है, हम तो काम करके अपना रास्ता लेंगे।'

फिर पीरा से बोला, 'तो भैया, तुम हमसे इस कोठे का किराया क्या लोगे ?'

पागल पीरा ने कहा, 'किराया-भाड़ा तुमसे क्या लेंगे बड़े मियां, काम बी सौदागर का है, कोठा बी सौदागर है, हम बी सौदागर के हैं, हमारा तो भाई है वो।'

चौंककर एक कारीगर ने पूछा, 'भाई ? सौदागर तुम्हारे भाई हैं ?'

गर्व से पीरा बोला, 'भाई, सगा, बड़ा।'

कारीगर ने कहा, 'तब तो मियां कोई ख़ास ही बात होगी जो चौगुनी पर भी भाई का काम करने को तैयार नहीं हो।'

'बस है कुछ ऐसी ई। जो आपस की, वोई बिरादरी की, वोई खास, वोई बेखास।'

बात बढ़ने से रोकर दाढ़ीवाले ने सौदे पर आख़री सिक्का मारा, 'सोच लो भई, हमारी वजह से तुम्हारा झगड़ा-टंटा न हो किसी से।'

पीरा बोला, 'अजी हमारा किसी से झगड़ा-टंटा नईं होता। जाओ तुम डेरा जमाओ कोठे में। दिया-बत्ती कुछ नईं है सो तुम जानो।'

परदेसियों की जमात कोठे में घुसकर बिना दीये के ही ठीया जमाने में लग गई और बच्चे को उढ़ा-लपेटकर पीरा उसे खटिया पर सुलाने में लग गया।

कई गठड़ी-मुठड़ी बांधने के बाद बची हुई ओढ़नी से सर ढंके हुए अमीना, ख़ासा अंधेरा हुए घर लौटी। आहट सुनकर पीरा ने कहा, 'आ गई ? हमने बी देख इत्ती देर मे ऐसा काम कर दिया है कि बस घर गुलजार हुआ रैगा।'

गठड़ियां ज़मीन पर पटककर सिर्फ़ कुरती से ढंके धड़ को सीधा करके, जहां थी वहीं से अमीना ने ताना मारा, 'हां, तुम तो बैठे-बैठे फुलवाड़ी खिलाओगे खंडर में !'

पीरा ने कहा, 'अरी फुलवाड़ी क्या चीज होती है बेकूप, हमने आदमी बसा लिये हैं घर में।'

आदमी ? कंगले घर में और कौन निठल्ले बसा लिए इसने ! चिढ़कर बोली, 'अरे आदमी और कौन बसा लिए दूला ?'

पीरा ने बताया, 'किराया देने को कै रये थे, पर किराया भला हम क्या लेते ?'

अमीना और भड़की, 'मियां किसी दिन तुम्हें बांध के ना डालना पड़े तो सई !'

पीरा हँस पड़ा, 'क्यों, ऐसे क्यों ?'

अमीना का धीरज छूट गया । तड़पकर सामने आई और बोली, 'अकल के अंधे, फूटी कौड़ी का तो आसरा नईं, कन्नी-बसूली दे के जौ-चने लाई ऊं और तुम खातरदारी पे उतरे पड़ रये ओ ?'

पीरा भारी हो आया, 'कन्नी-बसूली देके ?···अरी तू राज की औरत हो के औज़ार किसे दियाई सितमगर ? अब हम मजूरी काय से करेंगे?'

क्या ग़लत है ? औज़ार बिना कारीगर किस काम का ? पर औज़ार थे, तभी कौन-से महल चुन रहा था यह ? नहीं भी चुन रहा था तो यह मतलब थोड़े ही है कि हाथ में काम नहीं है तो हाथ ही काट देने चाहियें । कही चूक चुभने लगी तो रुआंसी होकर बोली, 'फायदा क्या है तुमारी मजूरी से ? तुम परदेसों तक में मजूरियां करके आए तबी क्या बकस दिया मुजे ?'

पीरा ने कहा, 'अरी पर अब तो तूने हमें बकसने लायक ई नईं छोड़ा । तू तो हमारे हाथ-पांव ई ले जाके फेंकियाई ?'

दुखते फोड़े में ठेस लग गई । औज़ार दे आने का उसे ख़ुद क्या कुछ कम दुख था ? वह क्या औज़ार, भंगार समझकर थोड़े ही बेचने ले गई थी ? ख़ुद तो पेट में घुटने दिए पड़ी भी रहती, पीरा की ही भूख से तड़पकर चल दी थी न ? जो उसने किया वह ज़रूरी था, जो पीरा कह रहा है वह सच है। ऐसा कैसे हो कि बात सच भी हो और घाव न करे ? ज़ोर-ज़ोर से रो पड़ी, 'पैसों की पोटली पे औलाद की कसम खवा दी मुजे; औज़ार न रखती तो हांडी कैसे चढ़ती चूल्हे पे ! आज तो कैई दिन हो गए ?'

पीरा सचाई को मनवाता ही नहीं है, मानता भी है । रोती हुई अमीना उसे रोती हुई सचाई की तरह नज़र आई । पीरा पिघल गया ।

पिघलकर भी पागल ने जो बात कही वह सच तो थी, पर पुचकार नहीं थी । धीरे से बोला, 'आज चढ़ जाएगी, पर कल को बी तो चढ़ावेगी किसी तरों ।'

जवाब में जो बात कही गयी वह भी सच ही थी, पर थी फुंकार-सी, 'तुम्हें कल्ल की फिकर होती तो कोठा बिना किराए के दे देते किसी को ?'

यह रोना-धोना सुनकर सामने के कोठे में से दाढ़ीवाला परदेसी मेमार बाहर निकल आया । अन्धेरे में किसी के आने की आहट पाकर बिना ओढ़नी के नंगे सर खड़ी रोती हुई अमीना लपककर आड़ में हो गई । दाढ़ीवाले ने पूछा, 'माई क्यों रो रही है ।'

पीरा हँसकर बोला, 'कुछ बात तो है नईं । मैंने तुमसे कोठे का किराया नईं लिया, इस बात पे रो रई है ।'

'ठीक रो रई है ।' अन्धेरे की तरफ़ मुंह उठाकर दाढ़ीवाले ने कहा, 'लो बीबी, तुम हम से एक मज़दूरी रोज़ का रोज़ किराया नक़द ले लिया करो···'

फिर ज़मीन पर रुपये रखकर बोला, 'लो आज का यह रक्खा, ले जाओ।'

सूरत नहीं दीखती, अन्धेरा है। पर आवाज़ वही है !·· वही है क्या? उसी को जगह दी है क्या इसने?···

भीतर से खड़खड़ाहट सुनी तो इजाज़त मांगने का इशारा समझकर पीरा ने हँसकर कहा, 'ले जा, ले जा, किराया ले के तो खुश हो जा औरत !'

मालिक और किरायेदार दोनों हँस पड़े। शायद पीरा का कोई कुरता या फटा-पुराना तहमद सर पर डाले झुकी-झुकी-सी अमीना बाहर आई और बिलकुल झुककर किराया उसने ज़मीन से उठाया···

'ऐं?···इतना? यह तो उतना ही है, औज़ारों के किराये जितना ! ढेर का ढेर—परदेसी की एक मज़दूरी।' अन्धेरे में उचटती-सी नजर डालकर देखा—वही है। पीठ फेरकर पीरा से बोली, 'औजार मैंने इनीं को किराये पे दिए हैं। तुम्हें ना देने हों तो ले लो उल्टे !'

पीरा ने कहा, 'अरी बेकूप, जो बात तू ठरा चुकी वो हम कैसे काट दें? तू औरत है हमारी।'

भागकर अमीना कोठे में घुस गई।

'हाय, मैं जिसकी औरत हूं वह मेरी बात नहीं काटता। कैसा मीठा-मीठा है मेरा आदमी। बोलता है तो चमेली के फूल झड़ते हैं। क्या झूठ कहता था हीरा कि पैसे ही पैसे हो जाएंगे तेरे नसीब के। बैठे ही बैठे घर गुलज़ार कर लिया इसने। है कैसा बेशरम, चाहे जिसके सामने कह देता है कि तू औरत है हमारी !'

तेल तो था नहीं जो ढिबरी जलाकर रोशनी करती ! जल्दी-जल्दी अमीना ने छेपटी-बंछटीं, घास-फूंस, मूंज-बान, उपले-कंडे जो मिला चूल्हे में जलाकर ज़ोर से धधकाया। आंसुओं में घुलकर सांवला-सलोना चेहरा लाल-लाल लपटों से मंजे हुए तांबे के मुखौटे-सा दमकने लगा। बहुत दिन बात उसके चूल्हे में जन्नती रोशनी की लौ इस तरह उट्ठी कि मालिकों के कोठे से किरायेदारों का दालान तक रोशन हो गया।

□□

इन परदेसी मेमारों ने आसमान से टपककर बगदार में एक फ़ित्ना खड़ा कर दिया। संजोग से अकेली पीरअली की बीवी का भीतर ही भीतर जो भला हुआ वह हुआ, पर बगदारियों का इन्होंने निवाला मुंह से निकाल लिया। मान लिया कि काम उन्होंने ख़ुद ही छोड़ा, तो क्या इसलिए थोड़े ही छोड़ा था कि बिल्लियों के झगड़े में बंदर बीच में घुसकर सारा माल उड़ा ले जाय? जुल्म की बात है कि जिसके लिए यह आत्मघाती गृहयुद्ध हुआ उसी ने परदेसी दुश्मनों को अपने घर में

टिका लिया। आख़िर यह कौन-सी शराफ़त, इन्सानियत या अक़्लमंदी की बात है कि जिसके लिए उन्होंने आधी मंज़ूर की, सौदागर जैसे बड़े आदमी के काम पर लात मारकर उससे दुश्मनी मोल ली, वही दग़ाबाज़ अपनों को तो खाई में धकेल दे और बेगानों को घर में बसा ले ? सरफ़ू की बन आई। यह आग सरफ़ू ने इतनी भड़काई कि दावानल हो गई। जो ख़िलाफ़ थे वह तो थे ही, जो तरफ़दार थे वह भी पीरा से उलट पड़े। पीरा ने दाढ़ीवाले से कह तो दिया कि हम जानें हमारी बिरादरी जानें पर उसने तो बिरादरी को नहीं जाना, बिरादरी उसे जान गई।

पीरा की तलबी हुई। चार आदमी उसे सोते से जगाकर रातों-रात पकड़-कर छप्पर में लाये और बीच में बिठाकर तानों और गालियों की इतनी जूतियां उस पर बरसाईं कि पीरा की खोपड़ी पर एक बाल नहीं बचा।

बहुत सोचने पर भी पीरा की समझ में न आया कि उसका क़ुसूर क्या है और यह तूफ़ान क्या है। आधी की तजवीज़ उसने रक्खी, उन्होंने मानी। न मानते तो कोई ज़बरदस्ती थोड़े ही थी ? सौदागर का काम उसने छोड़ा, किसी ने छोड़ने को कहा थोड़े ही था ? न छोड़ते ! रही बात परदेसी कारीगरों की, सो उनसे क्या दुश्मनी है ? हमने काम छोड़ दिया, उन्होंने ले लिया। बेचारों को सर छुपाने के लिए छत चाहिए थी, उसके पास थी, उन्होंने मांगी, उसने दे दी। इसमें इतना बावैला मचाने की बात क्या है ?

अक़्ले-सलीम, (सुद्बुद्धि) अल्ला मेहरबान हो तो, किसी को न दे ?

दरियाशाह ग़लत कहते थे कि दुनिया में ऐसी अक़्ल वाले का दम ग़नीमत है।

क़तराशाह सच कहते थे कि यह अक़्ल पीरशाह की परेशानी का बाइस हो सकती है।

परदेसियों को घर में रखने की वजह से तो पीरा परेशान नहीं हुआ। उसके दिमाग़ में जो बवंडर उठा वह यह कि उसकी चौकीदारी में इन परदेसी कारी-गरों के ज़रिये तकिये पर जो यह दिन-दहाड़े डाका पड़ने वाला है इसे वह कैसे रोके ? मालिक होता तो अपनी मर्ज़ी से कुछ भी करता पर उसकी ग़ैरहाज़िरी में यह ईमानदार कुत्ता क्या चोरों को चुपचाप घर में घुस आने दे ? न घुसने दे तो आख़िर वह अकेला क्या करे ?

कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के पाटों में भिचकर पीरा की खोपड़ी भनभना उठी।

□□

अगले दिन गजरदम सौदागर अमीरअली, ख़ानसाहिब अल्लाबंदा ख़ान और भाई सबरंग बेग, तमाम परदेसी मेमारों को साथ लेकर दरियाशाह के तकिये पर

जा धमके। अलीजान पंसारी को बचपन से ही यह जगह कुछ अजीब हैबतनाक (डरावनी) सी लगती आई है इसलिये वह कभी यहां आते-जाते नहीं, पर क्योंकि एक तो माल-ताल का ठेका उन्हीं का है, दूसरे जानी-जिगरी सौदागर का काम ! मजबूरन उन्हें आना पड़ा। उनके पीछे-पीछे सरफ़ू भी हड्डी-बोटी के लालच में दुम हिलाता चला आया, और कोई बगदारी मेमार नहीं आया। यहां तक कि पीरअली चौकीदार भी नहीं आया। मैदान बिलकुल साफ़ मिल गया। काम बनने का वक़्त आता है तो यों ही बन जाता है।

तक़दीरों की लकीरों की तरह रौनक़बेगम का खींचा हुआ रौनक़महल का खाका कारीगरों के सामने फैला दिया गया। अलीजान की दूकान से नये-नकोर कफ़न के थान से उतारी हुई आगरे के ताजमहल की एक पुरानी-सी तसवीर नमूने के बतौर पिपलिया नीम की छाती में लोहे की कील से ठोक दी गई। गुमटी, बुर्जी, छज्जे, दरवाज़े, खिड़कियां, मेहराबें कारीगरों को समझाई गईं। खेत खाने वाली बाड़ की तरह, सबरंग साहब को तामीर का मीर मुंशी क़रार देकर, इमारत के आकार के मुताबिक़, धरती की नाप-तोल करके, चोर के भाई अलीजान ठेकेदार को माल का अंदाज़ा-तख़मीना बतलाया गया और अख़ीर में उस सरफ़ू को भी बाज़ारी कुत्ते की तरह एक बोट डाली गई। नये कारीगरों ने उसे अपनी जमात में तो शामिल नहीं किया, पर राज को मज़दूर के बतौर मुक़ामी पूरी दर पर काम मिल गया। मलवा साफ़ करके फेंक दिया गया। नये नक़्शे के मुताबिक़ चूना बुरककर खुदाई का दाग़ डाल दिया गया।

इस तरह यह शाही क़ब्र खोदने का इंतिज़ाम करते-करते सुबह से शाम हो गई। दिन ढले बेलचे-कुदालें लेकर परदेसी कारीगर सफ़ में खड़े हुए। मुखिया ने नारा-ए-तकबीर की तरह किर्दगार को पुकारा और रौनक़महल की बुनियाद खोदने के लिए पीरा के खोपड़े में मारने की तरह पहिला कुल्हाड़ा धरती में मारा। एक-एक चोट मारकर सबने औज़ार छोड़कर दिन भर की मेहनत के मुआविज़े के लिये मीर मुंशी के आगे हाथ फैला दिये। इन कारीगरों पर अलीजान की दूकान से मज़दूरी लेने की शर्त लागू नहीं हैं, सो गुड़ के साथ-साथ मीर मुंशी ने वहां की वहीं चौगुनी मज़दूरी बांटी।

बहुत देर हो गई। सौदागर आज बेगम से सुबह का बिछड़ा हुआ है। माशूक़ का सबसे बड़ा अरमान आज आशिक़ ने पूरा कर दिया है, आज बड़ी भूख लग रही है ! सबको छोड़-छाड़कर सौदागर अकेला ही दुमंज़िले को भाग चला।

□□

दिन छिपे दाढ़ीवाले ने डेरे पर जाकर दो चौगुनी मज़दूरियों के रुपये अमीना

के सामने रख दिये और अमीना रुपये उठाकर कोठे में चली गई ।

पीरा देखता रहा ।

और फिर देखता ही रह गया । रोज़ यही होने लगा । रोज़ शाम होती है, किरायेदार काम से लौट आते हैं, बीबी को पुकारकर दो चौगुनी मज़दूरियां ज़मीन पर रख देते हैं, आवाज़ सुनने की बाट में बैठी हुई बीबी अंदर से जल्दी-जल्दी आती है, रुपये उठाती हैं और वापिस कोठे में चली जाती है । पीरा देखता रहता है ।

करतबी पुरुष जब परिस्थितियों के जाल में फंसकर चौकड़ी भूलता हैं तब बेगानों के साथ मिलकर अपने भी उसकी खिल्ली उड़ाने लगते हैं । इस खिल्ली से चिढ़कर जो चीख़ने-पुकारने लगता हैं वह उन्मादी कहलाता है, जो चुप हो जाता हैं वह निठल्ला ।

पीरा चुप हो गया है—निरुपाय, जड़, बेकार, लाचार, अकेला ! उसकी गाड़ी उल्हड़ गई है और उसका नाम उल्लू पड़ गया है । डैने टूटे हुए उल्लू की तरह घर-आंगन के एक कोने में सिमटा हुआ वह हर समय स्तब्ध बैठा रहता है । अमीना को भी अब उसकी पोटली-ओटली की जरूरत नहीं है । इस बेकार आदमी के औज़ार काम कर रहे हैं और चौगुना माल घर में ला रहे हैं । बिना हाथों के चलते हुए औज़ारों के जादू से घर के झगड़े-टंटे, रोना-धोना तो शांत हो गया है, पर इधर बेकार पीरा के हाथ-पांव ऐंठते जा रहे हैं और उधर उसकी चुप्पी और अहदीपन के कारण औरत उससे लापर्वाह होती जा रही है । मर्द अगर कमाऊ नहीं है तो औरत की नज़र में कुछ भी नहीं है । औरत का प्यार मर्द के पसीने से निचुड़कर निकलता है । बेकार मर्द औरत की नज़र में नपुंसक है । नपुंसक प्यार का अधिकारी नहीं है ।

या तो बिरादरी का ही निदान ठीक है कि पीरा पागल हो गया है, या वह हराम की कमाई खाने का आदी हो गया है, या किसी व्यर्थ समस्या का समाधान खोजने के लिए अंतर्मुख हो गया है । दुनिया के लिए न पागल काम का, न हरामी, न अंतर्मुख ।

काम का हो या न हो, पर दुनिया छोड़कर आदमी कहां जाय ! सो कई दिन की निर्विकल्प समाधि से जागकर पीरा पागल एक रात अचानक बहिर्मुख हो गया ।

□□

न मालूम कौन-सी मनहूस घड़ी में ऐशबेगम ने अपनी बेटी के दिल में रौनक़-महल की तामीर का ख़याल डाला, कौन-से राहुकाल में चार सौ बरस पुराने जश्न-शाह ने रौनक़महल की पेशीनगोई की, कौन-सी अशुभ घड़ी में रौनक़ ने महल के

लिए यह ख़ुशनुमा जगह पसंद की और कौन-सी सत्यानासी घड़ी थी जब मीरा की ज़ुबान से यह निकला था कि जगह मेरी ही है। ज़रूरत उस वक़्त अल्लावालों से सताई जाकर होनी इन लोगों की ज़ुबानों पर क़याम करने आई होगी !

रौनक़महल की बुनियाद कई तरफ़ से भरी जा चुकी थी और जा-बजा तीन-तीन चार-चार हाथ दीवारें उठ चुकी थीं। शाम को हर रोज़ की तरह सबरंग ने काम का मुआयना किया, मज़दूरी बांटी और रब्बे में बैठकर घर चले गये। एक कापी-सी बग़ल में दाबकर दोनों वक़्त उन्हें यहां आना पड़ता है, सुबह हाज़िरी लेने और शाम को मज़दूरी बांटने।

अगली सुबह रब्बा दौड़ाते हुए काम जुड़ने के वक़्त जब यह तकिये पर तशरीफ़ लाये तो देखते क्या हैं कि चुनाई तो सारी टूटी पड़ी है और कारीगर लोग मलबे के बीच में जहां-तहां खड़े हुए पैदा होते ही मरे हुए बच्चे की तरह उसे देख रहे हैं। ताज्जुब से सबरंग ने पूछा, 'यह हां पे क्या हुआ पड़ा है इमान से?'

दाढ़ीवाला ख़ुद ही नहीं जानता था तो बतलाता क्या? बोला, 'अब क्या बतलायें, कल शाम आप खुद देखकर गये हैं !'

ग़ुस्से से सबरंग ने कहा, 'क्या देखकर गए हैं, यह देखकर गए थे हम ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'यह नहीं, मैंने अर्ज़ किया कि आप ख़ुद चुनाई देखकर गए हैं।'

सबरंग ने झुंझलाकर कहा, 'मियां, कोई आंधी नहीं, पानी नहीं, यह कैसे हो सकता है कि चुनाई अपने आप गिर पड़े !'

'आपके आने से पहिले हम ख़ुद आपस में यही चर्चा कर रहे थे।'

'तुम्हारी बुनियाद में ही ऐब होगा इमान से, चर्चा क्या कर रहे थे ?'

'बुनियादें तो जनाब हमारी आलम में मशहूर हैं। हमने ऐसी पुख़्ता बुनियाद रक्खी है कि कोई क्या रक्खेगा !'

'तो फिर यह कैसे हुआ ?'

'हम तो ख़ुद ताज्जुब में हैं !'

'हद है मियां, चुनाई ढई पड़ी है और आप सिर्फ़ ताज्जुब कर रहे हैं ?'

'इसके सिवा जो आप फ़र्मायें वह किया जाए।'

इसके सिवा जो किया जा सकता था वह सबरंग ने किया। घूमघामकर तोड़-तोड़ पर नज़र डालकर कारीगरों को धमकाकर बोला, 'आगे के लिए ख़बरदार किये देता हूं इमान से, इस तरह काम नहीं चलेगा !'

'आप बिलकुल ठीक कहते हैं, इस तरह चल ही नहीं सकता।'

सबरंग ने हुक्म दिया, अब क्यों वक़्त जाया करते हो, चलो, काम लगाओ !'

हुक्म के साथ दाढ़ीवाले ने फिर किर्दगार को पुकारा, साथियों ने साथ दिया और तेज़ी से काम शुरू हो गया। सबरंग घर लौट गए।

शाम को रब्बा झमझमाता हुआ आया । सबरंग ने ऊपर आकर देखा, बेशक बहुत तेज़ी से काम करके कारीगरों ने फिर से चुनाई खड़ी कर दी थी । तोड़-फोड़ का कहीं निशान नहीं था । दाढ़ीवाले ने कहा, 'अब अच्छी तरह देख लीजिए दारोग़ा जी, फिर हमारा काम कच्चा न बतलाइयेगा !'

सबरंग इस वक़्त अच्छे मिज़ाज में थे । बोले, 'म्यां, हम क्यों कच्चा बतलाते इमान से, तुम कोई हमारे लिए नये थोड़े ही हो, हमारे-तुम्हारे तो पीढ़ियों पुराने मरासिम (संबंध) हैं !'

झटझट उन्होंने मज़दूरी बांटी । कारीगर चले गए और सबरंग अकेला रह गया तो हाथ की छड़ी लगाकर उसने यहां-वहां की चुनाई नापी, इधर-उधर से अपनी ताक़त भर हिला-हिलाकर देखी और ख़ातिर जमा करके चला गया ।

□□

अगले दिन काम चालू होने के वक़्त सबरंग जब तकियें पर आया तो उसकी हैरत ही हद से गुज़र गई जब उसने चुनाई की फिर वही हालत और उसी हालत में खड़े हुए कारीगरों को वहां देखा । दम भर में पीढ़ियों के मरासिम बिगड़ गये । ग़ुस्से में छड़ी हवा में घुमाकर उसने मलबे पर पटपटाई और बोला, 'इसकी वजह बतानी पड़ेगी मियां दाढ़ीवाले !'

अफ़सोस में दाढ़ीवाले ने कहा, 'क्या वजह बताई जा सकती है ? चुनाई तो कल शाम ख़ुद देखकर गए हैं ।'

ताव में आकर उखड़ी हुई गुम्मा ईंट में सबरंग ने छड़ी जो मारी तो छड़ी का पोला टूट गया । चिल्लाकर बोला, 'फिर वही बात !'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'जब हादिसा वही है तो बात और क्या हो सकती है ?'

जवाब से झुंझलाकर सबरंग ने कहा, 'हम यह पूछते हैं कि माल में कुछ मिलावट तो नहीं है ?'

'मुमकिन है, लेकिन इसकी तहक़ीक़ तो आप ही कर सकते हैं ?'

'अमां, तुम कैसे कारीगर हो जो तुम्हें पहिचान नहीं है असली-नक़ली की ?'

'हम से बेहतर तो वही जान सकते हैं जो आपके ठेकेदार हैं, अलीजान पंसारी !'

'इमान से लाहौलवला, अलीजान भाई हमारे हमदर्द हैं, वह रेत-मिट्टी में मिलावट कर सकते हैं ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'मैंने तो उन पर इलज़ाम लगाया नहीं जनाब, आपने ही शुबहा ज़ाहिर किया था ।'

ताज्जुब से सबरंग के गले से बारीक होकर आवाज़ निकली, तौबा है भई, कैसे

आदमी हो जी तुम ! शुबहा भी न करें ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'आपको अख़तियार है, खूब कीजिये, लेकिन हमारी समझ में तो आ नहीं रहा है कि यह क्या तिलिस्म है।'

सख़्त से सख़्त चेहरा करके, बड़ी से बड़ी आँखें दिखाकर, टूटी हुई छड़ी सड़ासड़ हवा में हिलाता हुआ गुर्राकर सबरंग बोला, 'मैं समझाऊंगा तुम्हें तिलिस्म ! अभी जानते नहीं हो हमें ! मज़दूरी लेते हो चौचंद और काम करते हो ऐसा काग़ज़ी कि रात-भर भी न टिके·· ख़बरदार अगर आइंदा ऐसा हुआ तो कहे देते हैं कि हम सीधे आदमी नहीं हैं !'

'बेशक, वजह भी क्या है नवाबज़ादे ! काम लगाओ भाइयो' कहकर इस मुसीबत से छूटने के लिए दाढ़ीवाले ने फिर किर्दगार को पुकार लगाई और फिर काम ने ज़ोर पकड़ा।'

दम दे-दिलाकर, टूटी हुई छड़ी और फाड़ी हुई आंखें दिखाकर सबरंग चल तो दिया, लेकिन इस रोज़-रोज़ की तोड़-फोड़ से एक खुटका उसके दिल में पैदा हो गया—यह है क्या क़िस्सा कि अच्छी-ख़ासी चिनाई रातों-रात मिसमार हो जाती है ? कारीगरों का कोई क़सूर नज़र नहीं आता। माल अलीजान भाई खुद जांच-परखकर भिजवाते हैं, सरफ़ू गवाह मौजूद है, फिर यह इंदरजाल क्या है ? कहीं वही तो बात नहीं है जो इस जगह के बारे में सुन रक्खी है, जिसकी वजह से अलीजान भाई यहां नहीं आते हैं ?···'या अली !'

उस रोज़ तकिये की सीढ़ियों से उतरा तो क़दम असली थे। यानी छोटे-छोटे, घुटनों के नीचे ही नीचे हिलते-डुलते, लपचकने से, हसमे-सहमे, कांपते हुए।

शाम को मज़दूरी बांटने आया तो दिन छुपे से दो घड़ी पहिले ही आया। टूटी हुई छड़ी पर मज़बूती से पंजा कसे हुए, तना हुआ, गोया चौगुनी मज़दूरी लेने वाले कारीगरों की आज चमड़ी ही उधेड़ डालेगा। पर बिना किसी से कुछ बोले-चाले, चुनाई-बंधाई पर उचटती-सी नज़र डालकर जल्दी-जल्दी, वक़्त से पहिले ही, उसने मज़दूरी बांटी और चल दिया। दाढ़ीवाले ने बार-बार कहा कि काम को ठोक-बजाकर देख लें ताकि कारीगरों को तिलिस्मि समझाने की ज़हमत न उठानी पड़े और आपको चौगुनी मज़दूरी न खटके, पर मीर मुंशी जल्दी में थे, चले ही गए।

□□

अगली सुबह झमझमाता हुआ रब्बा तकिये से आकर लगा। डर, ख़तरे या जान जाने का कोई इमकान नहीं था पर कहते हैं न कि शेर का डर क्या, डर तो टपके का है !···हाज़िरी-हिसाब की कापी बग़ल में दबाकर और वही पोला टूटी

हुई छड़ी हाथ में लेकर सबरंग रब्बे से ऐसे उतरा जैसे फिसल पड़ा हो। एक-एक पांव सीढ़ियां चढ़ता हुआ जैसे ही ऊपर पहुंचा तो फिर वही मटियामेट !··· दीवारें सपाट पड़ी हैं, साबुत ईंटों की रोड़ी हो गई है, बुनियाद तक जहां-तहां उखड़ी पड़ी है और कारीगर उसी तरह मुंह फाड़े हुए इस विनाश-लीला पर आश्चर्य से चकित होकर अपने-अपने क़यास लड़ा रहे हैं।

कारीगरों की सलाम-बंदगी का कोई जवाब न देकर खिसियाना बिल्ला सबरंग बेग डर के धक्के से मलबे के एक ऊंचे से ढेर पर उछलकर चढ़ गया और टूटी हुई छड़ी को इकनाली रफ़ल की तरह तानकर कारीगरों पर बरस पड़ा, 'इधर-उधर क्या देखते हो, नामुमकिन है हमारी नज़र से बचना ! तीन दिन से हमदर्दी के मारे हम मुंह में क़ुफ़्ल लगाए तुम्हारी हरक़तें देख रहे हैं, पर अब नहीं देखेंगे ! बेगम साहिबा से शिकायत करके एक-एक को इमान से, चूने की चक्की में जुतवाकर न छोड़ें तो कहना।'

दाढ़ीवाले ने विनम्र होकर कहा, 'आप चाहे बेगम साहिबा से शिक़ायत करें चाहे नवाब से करें, हमारी तो कुछ ख़ता है नहीं इसमें !'

दिल ही दिल सबरंग महसूस करता है कि वह वाक़ई कारीगरों की ख़ता नहीं है। उसका शुबहा नब्बे फ़ीसदी इस यक़ीन में बदल चुका है कि यह काली करतूत सुसरी उनकी है जिसका नाम लेते हुए भी अलीजान भाई डरते हैं।— वह ख़ुद इतना डर चुका है कि बस मरा नहीं है, और इंसान जब तक मर न जाए तब तक कुछ न कुछ अपनी-सी करने से कैसे बाज़ आ जाय ? भभककर बोला, 'ख़ता नहीं है तो इमान से, समझाओ इस उठा-पटक का भेद !'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'अब छोड़िये भी दारोग़ा जी, उठा-पटक का भेद तो बड़े-बड़े पहलवान नहीं समझ सके, हम क्या समझायेंगे और आप क्या समझेंगे !'

इस जाने-पहचाने हज़ारों बार के सुने-सुनाये पैराये पर उठा-पटक के भेद का जवाब सुनकर सबरंग चलता-चलता यकबयक रास्ता भूल गया। चुनाई-ढहाई ने तो होश ख़ता कर ही रक्खे थे, उठा-पटक के इस जवाब की हैसबैस में और पड़ गया। 'यह कौवा कोयल की नकल कैसे करता है? यह दढ़ियल अम्मीजान की बोली कैसे बोलता है ? यह कहीं कोई हमारी नवाबी ख़ानदा-नियत का राज़दार तो नहीं है ?'···कई बार तुतला-हकलाकर 'इमान से-इमान से, इमान से-इमान से' के सिवा वह कुछ बोल ही नहीं सका तो दाढ़ीवाले ने सबरंग से पूछा, 'फ़र्माइये, आज काम लगायें या नहीं ?'

काम का नाम सुनकर पांवों के नीचे गिरी हुई चुनाई पर नज़र गई तो असल मुद्दआ सामने आ गया। फटे बांस की-सी आवाज़ सबरंग ने गले से निकाली, 'मां, फ़ायदा क्या है काम लगने से ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'न सही, तो लाइये फिर मज़दूरी दे दीजिए आज की !'

सबरंग चिढ़ गया, 'खैरात बंट रही है यहां ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'जी नहीं, ऐसा तो नहीं है, पर हमारा दिन ग़ारत हो रहा है ।'

आखिर मजबूरी से दांत किटकिटाकर सबरंग चिल्लाया, 'लगाओ काम, मैं देख लूंगा एक-एक को ।'

हुक्म के साथ फिर किर्दगार की पुकार मची और फिर रौनक़महल की चुनाई का काम तेजी से जारी हो गया ।

□□

परिन्दों के ही पर होते हों यह बात नहीं, बात के भी पर होते हैं । गली-गली और घर-घर में शोर मच गया । किसी ने कहा, 'आसेब का फेरा है', किसी ने कहा, 'जिन्नात का साया है', किसी ने कहा, 'पिपलिया पर चुड़ैलों का बसेरा है ।' औरतें कौसने-काटने करने लगीं कि जब से यह कोठे वाली कहीं से आकर चौक में बसी है तब से गांव पर मुसीबत ही मुसीबत आ रही है । किसी जानकार ने तब असली बात यों बतलाई कि 'ये और कुछ नहीं है, फ़क़ीर की बद-दुआ है । मीरा की करनी का फल जन-जन बच्चों को भोगना पड़ेगा ।' तब बुंदू मिया ने अपनी कान तक की लम्बी लाठी ठन से पत्थर पर देकर मारी और पोपले मुंह से सबके मुंह पर थूकते हुए कहा कि 'जन-जन बच्चा क्यों भोगेगा, हराम का जना जो करेगा सो भोगेगा ! भड़ आ मीरा भोगेगा, कोठे वाली उसकी नटनी-सी औरत भोगेगी, भंडेले से उसके रिश्तेदार भोगेंगे, मां के खसम उसके संगी-साथी भोगेंगे, जन-जन बच्चा सुसरा क्यों भोगता !' अलीजान ने सोचा, 'अलीजान का क्या वास्ता है, जो कड़ेगा सो भड़ेगा !'

जिन्नात का करिश्मा सुनकर उस दिन अमीना भी अपने घर में बहुत बेचैनी से किरायेदारों का इंतिज़ार कर रही थी । बार-बार दुआयें कर रही थी कि 'अल्ला कहीं ऐसा न हो कि रौनक़महल का काम बंद हो जाय और मैं फिर वैसी की वैसी हो जाऊं !'—क्या भूलभुलैयां का तमाशा है कि वह औरत जो क़र्ज़ की फिटकार से बेहुरमत होकर आठ-आठ आंसू बहाकर कल तक जिसकी खटिया मच-मचाते हुए देखने के कोसने कोस रही थी, वह आज उसके महल-दुमहलों की ख़ैर मना रही है !

शाम को जब परदेसी मेमार लौटकर डेरे पहुंचे तो दाढ़ीवाले ने बीबी को आवाज़ देकर कहा कि आज का किराया वह कल देंगे क्योंकि मीर मुंशी आज मज़-दूरी बांटने के लिये किसी वजह से मदद पर पहुंच नहीं पाये, तो अपने अंदेशे की सचाई की पहिली ठोकर अमीना ने खाई । परेशान होकर बोली, 'बड़ेमियां ये

बात जो फैल रई है वो सच्ची है क्या ?'

बड़ेमियां ने कहा, 'हां बीबी सच्ची तो है ।'

फ़िक्रमंद होकर बोली, 'जिन्नात ऐसेई चिनाई ढाते रये तो काम कैसे बढ़ेगा ?'

'नहीं बढ़ेगा ।'

'तो फिर कैसे होगी ?'

बड़ेमियां यह कहकर अपने कोठे में चले गये कि 'बीबी जैसे होनी होगी वैसे होगी, मैं भी और क्या बताऊं ।'

अमीना के मुंह से आह की तरह निकल पड़ा—'या अल्लाह !'

□□

होश तकिये पर छोड़ बगटुट भागा हुआ सबरंग घर में आया और ज़नानख़ाने के बंद दरवाज़े में उसने सीधी टक्कर मारी। झुंझलाकर झटके से रौनक़ ने दरवाज़ा खोला तो हांफता हुआ सबरंग पीछे से लात मारे हुए की तरह रौनक़ से जा टकराया। थरथराते हुए सीने को भींचकर रौनक ने कहा, 'अल्ला ख़ैर तो है सबरंग भाई ?'

वहशत में सबरंग भाई सिर्फ़ इमान उठाकर रह गये। यानी बोले कि 'इमान से'—और फिर हांफने लगे। रौनक़ ने कहा, 'ऐ सिर्फ़ इमान ही उठाना था तो नीचू ही उठा लेते ! मुई कुछ तुक हुई कि मियां के आराम में ख़लल डाल दिया ले के !'

सबरंग ने फिर ईमान से ही बात शुरू की, 'इमान से मुश्किल ही है'—फिर चुप हो गये तो रौनक़ नाराज़ हुई, 'मियां क्या मुश्किल है इमान से कुछ कहोगे भी या पहेलियां ही बुझाते रहोगे ?'

जरा क़रार पाकर सबरंग ने मुश्किल बयान की, 'कई दिन से लगातार ऐसा हो रहा है कि इमान से जित्ती चिनाई शाम को देख के आते हैं उत्ती की उत्ती सुभू को ढई हुई पाती है। राज-मज़दूरों की कोई ख़ता दिखाई नहीं देती और भेद कुछ समझ में नहीं आता !'

रेशमी लुंगी की गांठ कसता हुआ सौदागर लद-फद पलंग से उतरा। एकदम डर गया—'ज़रूर कोई मोज़िज़ा (चमत्कार) है···उस फ़क़ीर की करामात है··· उसे ख़ज़ाने की चोरी का पता चल गया···उसने जान लिया कि मैं उसके तकिये पर महल चुनवा रहा हूं···अब मारे गये ! अब नहीं छोड़ेगा !' धक्का खाकर वह धम्म से धरती पर बैठ गया। शहतीर लड़खड़ाता हुआ देखकर रौनक़ ने पूछा—'क्या है मियां ?'

इस जंजाल से जान बचाने की तरकीब लपककर मीरा के दिमाग में आई।

उसने अपनी दानिशमंदी को टिटकारा, 'देखो, ये बात थी वो !'

'कौन-सी ?'

'हम जो तुम से इस जगै को मनै करते थे वो ये बात थी । हमने आपी इत्ते दिन से खाली छोड़ रक्खी थी !'

तिरछी गर्दन करके रौनक़ ने पूछा, 'क्यों मना करते थे, क्या बात थी, क्यों खाली छोड़ रक्खी थी, कुछ मालूम भी तो हो ?'

मीरा ने कहा, 'तुमारा दिल रखने को कैना नईं सोचा हमने, 'वो तो अड्डा है जिन्नातों का !'

मुंह चिढ़ाकर रौनक़ बोली, 'ऐ रहने भी दो सौदागर ! किसी और को डराना जिन्नातों से !'

मीरा ने चढ़ने की कोशिश की, 'अब ये क्या कै रयै हैं तुमारे सगे भाई ?'

इतनी देर से ज़ीने के नीचे से ऊपर के दरवाज़े तक कान लम्बे करके बंदे-मियां मामले तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे । जिन्नात का चर्चा सुना तो आहिस्ता-आहिस्ता ज़ीना चढ़ते हुए अफ़यूनी लहजे में बोले, 'कोई जिन्नाती मसला हो तो कसम से हमें बतलाओ, हम उनसे सारंगी पर लहरा बजवा के दिखायें तुम्हें ।'

तेवर तरेरकर रौनक़ ने कहा, 'चचाजान, यह जिन्नाती नहीं ज़ुरूर कोई इंसानी साज़िश है । सौदागर साहब को अभी मालूम नहीं कि हमसे और इनसे बग़दाद की सारी रैयत जलती हैं । ऐ यह कौन चाहता है कि हमारा महल बने और हमारी गोद में औलाद खेले !'

तेवर के ख़म से ही मीरा को सबक याद आ गया । नसीब की अनमिट लकीर है कि शाहेजहां के हाथों यह रौनक़महल बनेगा और रौनक़ की खींची हुई लकीर है कि जहां खींची है वह वहीं बनेगा !

रौनक़महल बनने के बाद रौनक़ के पेट से शाह का नामलेवा पैदा होगा, होकर रहेगा !—नसीब के चक्कर में फंसा हुआ मीरा बोला, 'अब तुम जैसे कौ वैसे करैं हम !'

झिड़ककर रौनक़ ने कहा, 'ऐ करते क्या, कुछ पहरा-चौकी बिठाओ वहां !'

फ़ौरन ही अल्लाबंदे ने होशियार किया, 'और इस बग़दाद का आदमी होना नहीं चाहिये पहरे पर !'

यह होशियारी ही अल्लाबंदे को ले मरी ! रौनक़ ने हुक्म दिया, 'चचा तुम और सबरंग साहब, दोनों जा के बैठो वहां रात को !'

दोनों उछले, 'एं ?'

रौनक़ ने कहा, 'हां और क्या ! रात-भर में भेद खुल पड़ेगा कि कौन से जिन्नात हैं और कैसी चुड़ैलें हैं !'

सबरंग के दिल में तो आया कि यह अल्लाबंदे का बच्चा चाहे उस्ताद हो, चाहे उस मशकूक (संदिग्ध) रिश्ते से बाप हो चाहे चचा, तबले मार-मारकर इसका हांडी-सा सर फोड़ डाले। पर सवाल सबरंग के दिल का नहीं था, रौनक़महल का था। चुपचाप नादिरी हुक्म की तामील के सिवा और कोई रास्ता नहीं था। अपने साथ-साथ ही सबरंग को लेकर सवाब के बदले में नमाज़ का फंदा गर्दन में डलवाकर, अल्लाबंदा दख़लअंदाज़ी के अज़ाब में पड़ गया।

□□

पाजामों के कमरबंदों में दोहरी गांठें लगाकर, वही पोला टूटी हुई छड़ी और एक हवलदार की कमर-पेटी से लटका हुआ-सा डंडा लेकर, करे-धरे की याद करते हुए दोनों यतीम जब तामीर पर पहुंचे तो एक पहर रात जा चुकी थी। बिल्कुल अंधेरा नहीं था, छठी-सातवीं की हल्के-हल्के बादलों से झांकती हुई मद्धम-सी उजाली थी। आज की चुनाई ज्यों की त्यों खड़ी हुई थी, पेड़-पौधे सब साकित थे। कोई ख़ास ख़तरे की बात नज़र नहीं आ रही थी। आसमान में अधर लटका हुआ टीला, उस पर ऊंचे-ऊंचे पेड़, पेड़ों के बीच में रौनक़महल की ऊंची-नीची चुनाई खामख़ाह एक अज़ीब मनहूस और ख़ौफनाक-सा माहौल पैदा किये हुए थी। लड़ाई के मैदान में जवान जैसे टिरंचों में घुसकर दुश्मन का मुक़ाबिला करते हैं उसी तरह यह दोनों चचा-भतीजे महल की एक गहरी खुदी हुई बुनियाद की ख़ंदक में उतर गये और दोनों मुंह आमने-सामने करके एक-दूसरे के घुटनों में घुटने फंसाकर पहरा देने लगे।

आधी रात तक कोई विपरीत घटना घटित नहीं हुई। अचानक आसमान पर काले-काले हाथी से बादलों का गिरोह का गिरोह सूंडें उठाकर बेख़तर घूमने के लिए निकल पड़ा। चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा छा गया। आंधी-सी हवा इस तरह घों-घों करके घूमने लगी जैसे बुनियाद समेत अधूरी दीवारों को अभी उखाड़ कर फेंक देगी। अजीब-अजीब अनजानी, अन-पहिचानी हौलनाक आवाज़ें चारों तरफ़ से आने लगीं, गोया सरकटों की बारात जनवासे के क़रीब आ पहुंची हो।

तस्बीह (माला) ऐसे वक़्त काम देती, वह थी नहीं! होती तो भी शायद उड़े हुए होश इन्हें अल्ला-अल्ला न करने देते। यों भी पहरा-चौकी लगाने के लिए कोइ तस्बीह साथ लाता है? टूटी हुई छड़ी और हवलदारी डंडा था, वह डर के मारे हाथों से अंधेरे में छूट पड़ा था। न छूटता तो शायद एक-दूसरे पर ही इस्ते-माल हो जाता। मेंढों की तरह सर से सर जोड़ कर दोनों लाचारों ने सृष्टि के भयानक तांडव की यह जान-लेवा घड़ियां किसी तरह लाहौल-लाहौल पढ़कर ही गुज़ारीं, या यों कहो कि गुज़र गईं। ज़रा सुकून-सा हुआ तो सर से सर छुड़ाकर

अल्लाबंदे ने कसमसाकर कहा, 'चिलम ही सुलगा लेते, लाये तो हैं हम !'

घबराकर सबरंग ने कहा, 'मियां इमान से किसी सरकटे ने दम मारने को मांग ली तो ?'

इमकान तो था ही। अल्लाबंदा भुनभुनाकर रह गया कि, 'कसम से ज़रा वक़्त आसान हो जाता।'

बात ख़त्म हो गई। फिर चुप्पी नागवार हुई तो सबरंग ने कहा, 'चचा !'

'हूं।'

'तुमने देखी है कभी चुड़ैल ?'

दुम सीधी हो गई तो कुत्ते की क्या हुई ? अल्लाबंदे ने कहा, 'अमां तुम एक चुड़ैल को कह रहे हो, हमने देखे हैं चुड़ैलों के तायफ़े (दल) !'

वहां का वहीं चचा का घुटना अपने घुटनों के शिकंजे में कसकर सबरंग बोला, 'इमान से ?'

फुसफुसाकर बंदे ने अपना तजुर्बा यों बयान किया—'एक दिन ऐसा हुआ कि हम एक देहाती रईस के हां संगत करके चले आ रहे थे। सारंगी कांधे पे लटक रही है, हाथ में लालटेन है लेकिन बुझी हुई है। आते-आते हो गई शाम, फिर रात ! अंधेरी है—ना, ज़रा-ज़रा चांदनी है। इत्ते में होता क्या है कि कहीं से घुंघरू बजने की आवाज़ आती है ··'

कांपकर सबरंग ने कहा 'इमान से ?'

बंदा कहता रहा, 'कसम से बिल्कुल सोलह मात्रा का तोड़ा ! मैदान है चारों तरफ़। हम नज़र फिरा के जो देखते हैं तो चिड़िया का पूत नहीं !'

बर्फ़ की डली सबरंग की रीढ़ पर ऊपर से नीचे तक लुढ़कती चली गई। झुरझुरी-सी लेकर बोला', 'हूं !'

बंदे पर चिलम की बजाय सनसनी का नशा सवार हुआ, 'और आवाज़ है कि बरब्बर आ रही है—ना-धी-धी-ना-ना-धी-धीना, ता-ती-तीना, ना-धी-धीना···'

यह तिताले का ठेका जमते न जमते ख़ंदक के मुंह पर ठीक उनकी खोपड़ियों के ऊपर खड़े होकर एक भूखे-भटके गीदड़ ने बिलंपत में एक लम्बा-सा आलाप लिया---हुंआंऽऽ—हुंआंऽऽऽ !

सबरंग डर के मारे उछला और उछलकर वापिस गिरा तो गीदड़ तो गया भाग, लेकिन न जाने कहां-कहां से सैकड़ों हुंआं-हुंआं की आवाज़ों से टीला गूंज उठा। थोड़ी देर बाद जब हुंआं-हुंआं पूरी तरह बंद हो गई तब घुटनों में सर दिये-दिये ही झींकता हुआ सबरंग बोला, 'यार इमान से, अपना गाने-बजाने का काम है, यह बड़चो किस तवालत में आन फंसे !'

यह अल्लाबंदा भी न जाने सबरंग से कब-कब की दुश्मनी निकालेगा आज !

उसके कान से मुंह लगाकर बोला, 'यह गीदड़ नहीं था, यह भी वही था ! शक्लें बदलते हैं यह लोग ! छलावा कहते हैं इसे !'

थरथराकर सबरंग का रोआं-रोआं सतर हो गया। पहले टांगों में कंपकंपा-हट-सी हुई, फिर टांगें भी ठहर गईं। नसों का खून जम गया। बर्फ़ के पहाड़ों में आदमी यों ही जाम हो जाता होगा।

इसी ग़फ़लत की हालत में सरकारी हुक्म की तामील का वक़्त आ गया।

धाड़ ! धाड़ ! धाड़ ! धाड़ ! ईंटों पर चोट पड़ने की और फिर अर्रर्रर्र कर के अर्राकर गिरने की आवाज़ आई। कोई शक बाकी नहीं रहा कि हुंआं-हुंआं करने वालों ने शक्लें बदलकर चुनाई ढहानी शुरू कर दी है। कुरते-पाजामे तर-बतर हो गये। कमरबंदों की गांठें भींगकर कस गईं। अच्छा ही हुआ कि दोहरी लगा दी थी ! दोनों ने अंधेरे में एक-दूसरे की आखों में आंखें घुसाकर देखा। दोनों ने दोनों के दोनों कंधे, दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिये। अफ़ीम के अमल में अल्लाबंदे अल्ला-ताला से गुनाह बख़्शवाने के लिये रात-बिरात में जिस तरह नीचे से ऊपर को उठा करते हैं, बिलकुल उसी तरह आहिस्ता-आहिस्ता दोनों ने ऊपर को उठाकर कछुए की तरह गर्दनें ख़ंदक के ऊपर निकालीं। और ख़ंदक की सतह से ज़रा ऊंचाई की तरफ़। जो कुछ उन्हें नज़र आया वह यों था—

एक देव का देव मादरज़ाद नंगा आदमी, सर पर जिसके गेंडे की तरह एक सींग है, सर से पांव तक सफ़ेद-बुर्राक़ जिसका रंग है, कुदाल हाथ में लिये शैतान की तरह धड़ाधड़ चुनाई गिराये चला जा रहा है।

दोनों ने जुगलबंदी में एक निहायत बेसुरी चीख़ मारी और दोनों गलबहियां डाले ही डाले तमाला खाकर ख़ंदक में गिर पड़े। मरे हुए बैल की तरह आंखें चौड़ गईं, पुतलियां चढ़कर अटक गईं और दम बंद हो गया !

□ ⁊

सवेरा हुआ तो मुंह अंधेरे ही खुल जाने वाली अलीजान की दूकान में देर तक ताला ठुका देखकर चौक का चौक आदमियों से और अंदेशे से भर गया। पहरेदार वापिस नहीं आये। जैसे-जैसे वापिसी में देर होती जाती थी वैसे ही वैसे सनसनी बढ़ती जाती थी। सनसनी को दोबाला करती हुई, भीड़ में घुड़सवार सिपाहियों की तरह धड़धड़ाती हुई परदेसी मेमारों की टोली चौक से गुज़रकर पिछले दिन की मज़दूरी की वसूलयाबी के लिए सौदागर के दरवाज़े पर जा धमकी।

अलीजान का दामन पकड़े हुए अमीरअली उस वक़्त चचाजान और जोरू के भाइ के इंतिज़ार में बेचैन होकर फड़क रहे थे और जोरू बार-बार पर्दे के पीछे

से झांक-झांककर देखती थीं और फिर दरपर्दा हो जाती थीं। इसी तरद्दुद (चिन्ता) में सुबह-ही-सुबह दरवाज़े पर तक़ाज़गीरों को देखकर अमीरअली आपे से बाहर होकर झल्ला पड़ा—'नईं मिलेगी मजूरी ! दोनों दिन की मजूरी सांज को मदत पैई मिलेगी जहां मिलने का कायदा है, भाग जाओ दरवज्जे पे से !' लेकिन दाढ़ीवाले ने अर्ज़ की, 'हुजूर, मज़दूरों का काम घंटे भर का उधार करके भी नहीं चल सकता, चौबीस घंटे तो बहुत होते हैं। आप तो इससे अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं, लिहाज़ा पहिले कल की रोज़नदारी चुकाने की मेहरबानी करें।' अलीजान ने भी कारीगड़ों से ख़ूब तेज़ा-तुर्शी की, 'सौदागड़ साब इस बखत अपने ड़िस्तेदारों की फिकड़ में हैं, मजूड़ी क्या माड़ी जाती है तुमाड़ी'—लेकिन उन्होंने नहीं माना। आख़िर सौदागर को मज़दूरी चुकानी पड़ी। इस लेन-देन के झंझट में काफ़ी दिन चढ़ गया और रात के पहरेदार तब भी वापिस नहीं लौटे तो पर्दा उठ गया। बेगम साहिबा ने हुक्म फ़र्माया कि सौदागर ख़ुद तामीर पर जाकर हालात का अंदाज़ा लें और फ़ौरन उन्हें इत्तिला दें। फ़र्मान के साथ कारीगरों को साथ लेकर सौदागर मौक़े की जाँच के लिए चल खड़े हुए और मजबूरन अलीजान को भी इस ओखली में सर देना पड़ा। सौदागर, अलीजान और परदेसियों को तकिये की तरफ़ जाते देखा तो बुंदू के पीछे-पीछे बगदारियों की टोली भी उनके पीछे लग गई।

□□

देसी-परदेसियों का यह जमघटा ख़ूब दिन चढ़े जब तकिये पर पहुंचा तो फिर सारी चुनाई का सत्यानाश पड़ा देखकर हौल के मारे दहल उठा—सारी चुनाई मिसमार, न कहीं कोई पहरेदार, न चौकीदार !

अलीजान फुसफुसाकर बोला, 'मियां सौदागड़, ये मामला चक्कड़ का है।'

घबराये हुए मीरा ने कहा, 'जरूर-बेजरूर चक्कर का है। हमारे चचाजान और सबरंग भाई का बी पता नईं अँ यां पे !'

किसी ने कहा, 'अक्कल सुसरी का बी टोटा ही टोटा है—मियां, जिन्नातों पे बी पैरा-चौकी आज तलक लगाया है किसी ने।'

तुतलाकर अलीजान के मुंह से निकला, 'ख़ुदा खैड़ कड़े, याड़ कुछ पढ़वाओ किसी को बुलवा के !'

मीरा घिघिया उठा, 'अब मक्कान में से हमें फाड़ के खा जायेंगी और वां पे बचाने तलक को कोई नईं होने का !'

कहीं से सरफ़ू की पुकार सुनाई दी, 'मियां सौदागर जरा हां आना लपक के !'

सौदागर उधर लपका तो अलीजान भी लपके, फिर भीड़ भी लपकी।

एक दरख़्त के नीचे अल्लाबंदे और सबरंग बेग की लाशें इस तरह आराम से रक्खी हुई थीं जिस तरह पुलिस की गोलियों से हलाक हुए डाकुओं की लाशें शनाख़्त के लिए कोतवाली में रक्खी रहती हैं। सनाका-सा निकल गया। मीरा हिलकियां भर-भरकर रोने लगा। अलीजान मुंह ढककर साथ निभाने लगा।

यह रोना-धोना सुनकर एक गुंजान से पेड़ के साये में घोड़े बेचकर सोये हुए एक जिन्न की अचानक नींद उचट गई। वह उठा और उठकर हाथ भर का मुंह फाड़कर हो-हो-हो-हो करके उसने एक जंभाई ली। एक साथ सब ने चौंककर देखा। जिन्न ने हथेलियों से कसकर आंखें रगड़ीं और फिर भीड़ की तरफ़ देख-कर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वह पेड़ के नीचे से निकलकर बाहर आया।

ऊपर का दम ऊपर, और नीचे का नीचे रोककर सबने पहिचाना कि वह जिन्न नहीं है बल्कि पीरअली है।

मीरा पर नज़र पड़ते ही, सबकी उत्तेजना पर धिक्कार की तरह शांतिपूर्वक पीरा ने कहा—'अरे सौदागर, अच्छा हुआ तू आ गया। जरा देख तो सई इनें क्या हो गया!'

पीरा की इस सहजता से खीझकर सौदागर ने कहा, 'अबे तू बता क्या हो गया?'

पीरा ने बताया, 'वैसे ये मरे तो हैं नईं!'

अलीजान ने जिरह की, 'मड़े नईंयें तो ऐसे क्यों नईं उठ बैठे जैसे तू उठ बैठा?'

इस बात को कुछ समझकर, कुछ और ज़्यादा समझने के लिए पीरा अली-जान की तरफ़ देखने लगा तो अधीर होकर मीरा ने कहा, 'अरे जल्दी बता दे, हम मरे जा रये हैं फिकर के मारे!'

लापरवाही से पीरा बोला, 'कुछ बी नईं, खौप खा गये हैं दोनों!'

झुंझलाकर मीरा ने पूछा, 'अबे किसका खौप खा गये हैं, एक दफै में क्यों नईं बोलता?'

मुस्कुराकर पीरा ने कहा, 'मेरा, और किसका!'

मीरा ने दांत भींचे, 'तू क्यों आया था ह्यां?'

पागल ने उल्टा ही सवाल किया, 'तूई बता दे ये यां क्यों आये थे?'

गांव की दर से ही सही, सरफ़ू मीरा से पूरी मज़दूरी पाता है। बोला, 'इस ऐमक से कां तलक झक मारोगे, इनें उठाके पोंचवाओ जल्दी से!'

बात ठीक भी थी। मीरा ने गिड़गिड़ाकर अलीजान से कहा, 'अलीजान भाई, तुम ले जाओ इनें गाड़ी-वाड़ी में लदवा के! हकीम को बुलवाना लुकमान को! हम अबी आते एं पीछे-पीछे।'

गाड़ी तो आज थी नहीं। हुक्म के साथ सौदागर बैठे-बैठे उठे चले आये थे,

सो बगदारियों ने भाईबंदी निभाई। अलीजान के साथ-साथ चार-आठ आदमी किसी तरह रिश्तेदारों को लाद-लूदकर ले गये।

लाशें जब उठ गईं तो मीरा ने दोनों हाथों से पीरा को पकड़कर अपनी तरफ़ खींचा और फिर उसके दोनों कंधे ज़ोर से नीचे को दबाकर उसे अपने सामने बिठा लिया। बंदर और बाज़ीगर के चारों तरफ़ घेरा डालकर तमाशाई डंट गये और खुलता हुआ भेद देखने के लिए एक पर एक उकसकर झांकने लगे। मीरा ने कड़ककर कहा, 'पीरा, साप-साप बता क्या हुआ!'

जो हुआ उसका ख़याल करके पीरा की हँसी छूट पड़ी। बोला, 'बड़ी दिल्लगी हुई यार! मैं तो उधर काम ढा रया था और ये ख़बर नईं क्या समजे, तेरा साला और सुसरा दोनों घिघ्घ्या पड़े। जाके देखूं तो दोनों एक में एक लिपटे पड़े हैं। मैंने भौत पानी-वानी छिड़का पर इनोंने हिल केई नईं दिया। फिर मैंने इनें ऐसे छोड़ के जाना ठीक नईं समझा। कबी कोई गीदड़-बीदड़ बुकटा ना भल्ले, इस मारे पैरा देता रया! फिर मुजे नींद आ गई।'

बात इतनी सचाई से सीधी करके कही जा सकती है, यह आदमी शायद जानता ही नहीं। इतने सीधे सपाट जवाब के बाद क्या सवाल आ सकता है इतनी जानकारी मीरा मेमार को अमीरअली सौदागर बनने के बाद भी नहीं हो पाई थी। सरफ़ू ने सौदागर से कहा, 'अजी तुम इससे यों पूछो कि ये आया क्यों काम ढाने!'

सिलसिला मिलते ही मीरा बोला, 'अरे पीरा कमबखत, तू क्यों हमसे दुस्मनाई ठानता अै?'

पीरा ने हाथ हिलाकर कहा, 'बस इस बात का नाम मत ले! दुसमनाई तो मैं करता ई नईं!'

'फिर तू क्यों हमारी दिवालें ढाता है रोज की रोज?'

बहुत नरम बोल रहा है मीरा!—सरफ़ू को बहुत नुकसान पहुंचाया है पीरा ने! झोंपड़ी बिना शकूरन को नीम-कीकरों के नीचे सुलाता फिर रहा है।—सरफ़ू ने छाती पीटी, 'हजारों का नुकसान कर दिया खप्ती ने, सौदागर चौगना रोजीना दे रये हैं कारीगरों को!···तुम पकड़वाते क्यों नईं इस पगले को!'

मुस्कुराकर पीरा बोला, 'पकड़ा-धकड़ी से तो मैं डरता नईं ऊं, पर बात वोई है कि चिनाई मीरा की मैं ह्यां लगने नईं दूंगा!'

खोंखियाकर मीरा ने पूछा, 'क्यों नईं लगने देगा भई!'

पीरा ने वजह बतलाई, 'ये जगै तेरी नईं है, दरियाबाबा की है।'

फिर वही बात! चार आदमियों के सामने भरम की बात खोलता है और ऊपर से कहता है कि 'दुस्मनाई' नहीं करता हूं? ताब के मारे मीरा चिल्लाकर बोला, 'अबे तो तू कौन है दरियाबाबा का?'

वह, जिनकी लाशें ले जाई गई हैं, वह नक़ली थे। पीरा ने असली रिश्ता बतलाया, 'मैं चौकीदार हूं ह्यां का ! दरियाबाबा मुजे जुम्मेवारी सौंप कै गया है।'

मीरा चीख़ पड़ा, 'तू बदमाश है, लुच्चा है, लफंगा है ! हम नईं मानते इस बात को ! तू जलता है हमसे !—'

अब बुंदू के लिए चुप रहना मुश्किल हो गया। आगे को सरककर बोला, 'अरे ये क्या कोई कुल्हिया का गुड़ है कि नईं मानते इस बात को ! हम सब ने काम करा है यां पे, इस पीरा के हात से मजूरी ली है, सारी दुनिया जानती है ! ये क्या कोई झूठ बोलता है ?'

हिमायत की पीरा को जुरूरत नहीं है पर सच्चे की हिमायत से सचाई की आबरू बढ़ती है और सचाई की हिमायत से सच्चे की हिम्मत बढ़ती है। पीरा ने कहा, 'तुमीं कओ चचा, जब खास मेरा सगा भाई दूसरे की जगै पे कब्जा जमावे तो मैं कैसे जमा लेन दूंगा ?'

बांस की तरह लम्बा बुंदू मेमार पीरा की खुदा लगती बात पर कान तक की लाठी सर से ऊंची उठाकर नाच उठा, 'वाव्वा, वाव्वा बे पीरअली, वाव्वा है तेरी जनती पे ! जो तुजे पागल कै वो आप पागल, उसका बाप पागल, उसका गाम पागल, उसका देस पागल !'

फिर मीरा की तरफ़ लाठी ठनकाकर बुंदू ने कहा, 'डूब मर बे बेईमान इस पागल के पिसाब में !'

इस तरह धड़ल्ले से किरकिरी हो जाने की वजह से उसे ख़ुदरौ (स्वयंभू) नवाब का चेहरा जलकर काला ठिक्कर पड़ गया। कुछ कहने की कोशिश की तो बोल न पाने की वजह से सिर्फ़ तुत्तुत करके रह गया। इस बेहूदा-सी हालत में चमगादड़ की मौत बीच में आ गई। जाने किन-किन बातों से बुंदू का दुखाया हुआ सरफ़ू मीरा की हिमायत में मिनमिना उठा, 'तुम क्यों नईं कौगे ? तुम तो होई उसकी पाल्टी में !'

बुंदू का पारा चढ़ गया। दांत मिसमिसाकर बोला, 'सूअरजाद, कमीने, नाअैल ! ऐसी जूतियां लगाऊंगा कै हसर (प्रलय) तक हाथ फेरता फिरेगा गंजी खोपड़ी पे ! तू कौन है साले दोनों भाइयों के बीच में बोलने वाला !'

बात का बतंगड़ होता देखकर चार समझदार फ़ौरन सरफ़ू को क़ायल-माक़ूल करके वहां से हटाकर ले गये। सरफ़ू तो सामने से हट गया पर बुंदू का सुर जो लगा तो लगा ही रह गया, सिर्फ़ रुख़ मीरा की तरफ़ हो गया, 'और तू मीरा के बच्चे, तेरे पास इत्ती दौलत भरी पड़ी है जने कां की, तू बज्जात, फकीर की धरती पे दांत रक्खे तो नालत है तेरी पैदा करने वाली पे !'

मीरा की शामत ने उसे बोलने के लिए धक्का मारा, 'नालस्ती कल्लो चाय जित्ती पर जो तुमने सरफ़ू से कई अै वोई हम तुम से कैंगे ! ये हमारा और फ़क़ीर

का मामला है, तुम बिच में बोलने वाले कौन हो ?'

नौ कम सौ बरस का बुंदू मियां का ढांचा कनपटी तक की लाठी समेत दन से छूटकर मीरा की छाती पर जा लगा, 'हम तेरे बाप हैं हरामी ! तू हमको पछानता नईं ?'

पीरा समेत दो-चार ने लपककर तीन तरफ़ से बुंदू को धर लिया और कौली भरकर अधर उठाकर वापिस जगह पर लाते हुए बोले, 'चचा गम खाओ, जरा गम खाओ !'

रुआंसा होकर मीरा ने हर ख़ासो-आम से फ़रियाद की, 'हम तो इसकी इत्ती म्हौबत मानते ऐं कि इसका लौंडा गोद बिठाने वाले थे और ये हमें इस तरै करता अै ! ये इस्से तो कुछ नईं कैते !'

हर ख़ासो-आम से कही हुई बात का पीरा ने हर ख़ासो-आम को ही जवाब दिया कि, 'म्हौबत को और लौंडे को हम कुछ कैते ई नईं, हम तो अपनी कैते हैं। हम फकीर के चौकीदार हैं और जरूर हैं ! मक्कान इसका हम ह्यां बनने नईं देंगे !'

मीरा ने कहा, 'जब हम कै चुके कि ये हमारे और फकीर के बिच की बात है. हमारी उसकी तै हो चुकी है !'

पीरा ने कहा, 'अपने उसके बिच की तुम जानो पर हमारी उसकी बी तै हो चुकी है ।'

बुंदू मियां अब तक थोड़ा-बहुत ग़म खा चुके थे । दोनों की तय में से तीसरी तय निकालकर मीरा से बोले, 'तो तू ई गम खा जा फकीर के आने तक, फिर फकीर जाने !···क्यों बे पीरअली ?'

पीरा ने कहा, 'ये बात सौदागर से कौ चचा ।'

बुंदू ने कहा, 'क्यों जी सौदागर अमीरअली साब ?'

आख़िर किसी तरह आज की मौत कल पर टालने की नीयत से सौदागर पिन्न-पिन्न करके बोला, 'आजान दो फकीर को ।'

बुंदू मियां उठकर खड़े हो गये, 'चलो खतम झगड़ा ! जा, अब उन मुर्दों की कफ्फन-काठी का इन्जाम कर कुछ ।'

नितांत तटस्थ भाव से यह तमाशा देखता और अपनी टोली को दिखाता हुआ परदेसी कारीगरों का दाढ़ीवाला अगुआ, सौदागर को जाने की तैयारी में देखकर पिपलिया नीम के नीचे से उठकर आगे आया और बोला, 'हमारे लिए क्या हुक्म होता है सौदागर साहब ?'

कीली हुई नापाक रूहों की तरह हर वक़्त स्याने के ही सर पर सवार रहने वाली इस भूतों की टोली से चिढ़कर मीरा ने कहा, 'हवेली पै आकै बात करना !'

'तो फिर आज की मज़दूरी ?'

मीरा झल्लाया, 'मियां कै तो दिया।'

दाढ़ीवाले ने अर्ज़ की, 'हुज़ूर ने सुबह फ़र्माया था कि मज़दूरी यहीं देने का क़ायदा है इसलिए अर्ज़ की थी।'

दुखिया कर मीरा ने कहा, 'भई कै तो दिया हवेली पे आ के बात करना!'

'जैसा हुक्म, जो इरशाद।'

बिच्छुओं के बिल में हाथ डालकर चिनचिनाता हुआ, तकिये पर महल चुनवाने के इरादे की घड़ी को मन ही मन कोसता हुआ मीरा अगले मोर्चे की हौल खाकर चींटी की चाल गांव की तरफ़ सरका।

□□

अल्लाबंदे और सबरंग के पीछे-पीछे तकिये की भूतिया हवा जब चलकर बगदार में आई तो हल्ला मच गया कि जिन्नात की जगह सौदागर की चुनाई गिराता हुआ पीरअली पकड़ा गया है। दो-चार पड़ौसनों के साथ करीमन दौड़ी-दौड़ी अमीना के घर पहुंची और सर पर घन मारने की तरह यह निराली ख़बर उसने अमीना को सुनाई। एक कौंधा-सा अमीना की खोपड़ी में चमका कि क्यों वह दिन भर सोता था, क्यों रातों को फेर-फटका मारने जाता था और कहां से गई-रातों आनकर चुपचाप सो जाता था। कल रात जब वह रोज़ के वक़्त भी नहीं लौटा तभी से अमीना चकरघिन्नी बनी घर में चक्कर काटती फिर रही थी। करीमन की ज़ुबानी यह दोनों जहान से न्यारी ख़बर सुनकर बेचारी पेट पकड़कर बिल्ला उठी---'हाय अल्ला, मैंने कौन-से गुनाह किये थे जो मेरे मरद का भेजा तूने बिलकुल ही पल्टा के धर दिया!' पर रोने-बिल्लाने का वक़्त नहीं था। उसे डर हुआ कि लोगों ने कहीं उसे ज़ंज़ीरों से न कस दिया हो, उसे डले मार-मारकर न मार डालें, उसे घसीटकर न ला रहे हों! ··ओढ़नी सर पर डाली न डाली, घूंघट खींचा न खींचा, बच्चा गोद में उठाया और बेतहाशा तकिये की तरफ़ दौड़ पड़ी।

अमीना को बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। दुमंज़िले से ज़रा आगे मुड़ते ही उसने देखा कि बहुत से लोगों के आगे-आगे दंगल मारे हुए पहलवान की तरह पीरअली तना हुआ चला आ रहा है। ढोल तो नहीं बज रहा है पर पीछे-पीछे बहुत सारे पट्ठे हँसते-खिलखिलाते हुए मुजाहिद की तरह उसे घेरे हुए ला रहे हैं। वह किस डर से दौड़ी हुई आई थी और क्या तमाशा देख रही है, कुछ समझ में नहीं आया। पहिले तो वह रास्ते से हटकर एक तरफ़ को सिमटी फिर यकायक आगे को आई और पीरा का हाथ पकड़कर उसे घसीटती हुई घर की तरफ़ दौड़ पड़ी। नौ कम सौ के बुज़ुर्ग बुंदू समेत सब ने ताली पीटकर हल्ला मचा दिया, 'पकड़ा गया बे,

धर लिया बे ! मारा जायगा बे, पिटेगा बे !'

चौक से घर के दरवाज़े तक पीरा को भगाकर ले जाती हुई अमीना सोचती तो रही पर इस गुत्थी को सुलझा नहीं सकी कि दूसरों के घर ढाने वालों को मारा-पीटा जाता है या उसका जुलूस निकाला जाता है ! उलझन में पड़ी हुई पीरा को खचेड़कर सीधी कोठे में ले गई, दबोचकर सामने बिठा लिया और बोली, 'सच-सच बता, यह मामला क्या है ?' हीं-हीं-हीं-हीं नहीं करके हिनहिनाने के बाद पीरा ने अपने चुनाई ढाने की वजह से साले-सुसरे की ग़लतफ़हमी और ग़लतफ़हमी के ख़राब नतीजे का सारा क़िस्सा थोड़े में बयान कर दिया। आदमी को भूत समझकर कोठे वाली के रिश्तेदारों के ग़श खा जाने का हाल सुनकर बेसाख़्ता अमीना की हँसी छूटने को हुई पर उसने छूटने नहीं दी। वह कम्बख़्त हौल के मारे जान से मर जाते तो भी शायद उसे सब्र ही होता, पर इस पहेली में किसी की दीवारें फोड़ने में वह अपने मर्द के साथ शामिल न हो सकी; साथ ही उस पर नाराज़ भी न हो सकी, समझाने लगी—'देखो, सारा गाम तुम्हारी बुराई कर रया अै कि ये हीरा मिस्त्री दिमाना हो गया अै।'

पीरा हँस पड़ा।

अपने होश ठिकाने हों तो इस दीवाने की हँसी बहुत मीठी लगती है। मिठास की चाट में अमीना ने उसे ज़नानी तरह से समझाया, 'मियां, ये कोई बात हुई कि मुजे सोती छोड़के तुम रातों को दूसरों की दीवालें ढाते फिरो !'

पीरा फिर हँस पड़ा !

अमीना फिर बोली, 'अल्ला जानता अै मुजे म्हौल्ले में मूं दिखाना भारी पड़ गया अै !'

दोनों हाथों के पस्सों में अमीना का सलोना मुंह भरकर पीरा ने कहा, 'तेरा मूं देखना मेरे सिवाय और कौन जानता है !'—ले, ये खास खमीरी तमाखू ले जा और चिलम भर दे। कै दिन से नईं पी तेरे हाथ की भरी !'

अमीना चिलम भरती-भरती सोचने लगी, 'कैसे समझाऊं इसे, कैसे इसका दिल फेरूं ! इससे तो यह फिर कुछ दिन के लिए कहीं चला जाता तो इस झंझटबाज़ी से इसका मन हट जाता।'—हुक़्क़ा ताज़ा करके चिलम हुक़्क़े पर रक्खी और उसके सामने रखकर बोली, 'अब तुम कईं मजूरी करने चले जाओ कुद्दिन के वास्ते, अपने काम से काम रक्खो !'

पीरा ने कहा, 'काम से काम है जब तो मैं कईं जाई नईं सकता।'

झूंझल-सी में बोली, 'क्यों नईं जा सकता ? क्या काम अै तुमें ?'

पीरा ने काम बताया, 'अरी अब तो मुजे वो सौदागर की उखड़ी-उखड़ाई, चिनाई-पिनाई, साप-सूप करके फिर से तकिये की दिवाल जमानी पड़ेगी। अबी तो फैसल्ला करके आया ऊं !'

'वो आधी मजूरी वाला काम ?'

'हां-हां वोई, खबर तो है तुजे !'

'फूट गये नसीब ! कर आया दीखता है यह फ़ैसला ! महल की चुनाई बंद हो गई दीखती है । अब चले जायेंगे परदेसी ! कोठे का किराया बंद ! औज़ार वापिस ! फिर वही फ़ाक़े !' अमीना चिल्ला पड़ी, 'अरे इस तकिये की आधी मजूरी से पेट कैसे भरेंगे औघड़ ?'

फक से धुआं छोड़कर पीरा ने कहा, 'तू जने क्या फिकर-फाका लिये बैठी है ? आधी मजूरी मिलेगी आधी सई ! आधी कुछ कमती है ?'

चौथाई पेट रहने को जो फ़ाक़ा नहीं समझता, चौगुनी पर जो हक नहीं मानता, पूरी की जिसे ज़रूरत नहीं है, आधी को जो ऐयाशी समझता है, दुनिया जिसे दीवानगी कहती है वह जिसकी दानाई है और उस दानाई को ही जो ईमान कहता है, ऐसे ईमान वाले को कोई क्या रास्ता दिखलाये ? पर ऐसा ईमानदार ख़ुद आधे पेट खाय, चौथाई पेट खाय, या भूखा पर जाय, उसे बीवी-बच्चों को फ़ाक़े कराने का क्या अधिकार है ? औरत के लिए शर्त है कि मर्द का ईमान ही उसका ईमान है, मर्द का दीन ही औरत का दीन है ! अमीना उस क़लंदर मर्द से शायद यही पूछती कि 'अगर तू पागल नहीं है तो मुझे वह तरक़ीब बता कि मिट्टी के झोंपड़े में लपट उठती हुई हो तो दीन और दुनिया की यह शर्तें कैसे निभाऊं ?' पर पूछ न सकी ।

सुबह के दंगल में वाहवाही करने वाले कुछ संगी-साथी हँसते-पुकारते हुए यह देखने के लिए घर में घुसे कि जोरू जब पीरा को रास्ते में भगाकर ले आई तो उसकी क्या गत बनी ।

खुश होकर पीरा ने पुकारा, 'आओ मियां आओ, बैठो सब भाई, चिलम एक दम टंच है ।'

अमीना पर्दा करके हट गई । उसे वहां से हटते देखकर एक ने पूछा, 'अभी तलक पिट रया था ये लुगाई से ?'

ज़ोर का क़हक़हा पड़ा । ज़िन्दगी के चिलचिलाते हुए रास्ते में यह क़हक़हे भी कैसे ठंडे साये हैं । भीतर ही भीतर मुस्कराकर अमीना कछुए की तरह सिमट गई ।

बाहर आता हुआ पीरा बोला, 'यार वां से जो लेके भागी हमें तो सीधा ह्यां ला के बिठा दिया···जब के व्हई बैठे हैं ।'

फिर ठहाका पड़ा । अमीना के दिल में हुआ, 'कैसा बेसरम है, अपनी ई औरत को कै रया है कि भगा लाई !'

हुक़्क़ा गरजने लगा तो बात फिर अपने ठिकाने पर आ गई । एक ने कहा, 'स्याबास है भई पीरा तुजे, कमाल कर दिया तैंने रातों-रात चिनाई गिरा के !'

भीतर को देखकर पीरा ने कहा, 'तुम तो ऐसा कैते ओ, औरत हमें पागल बताती है।'

दूसरा बोला, 'औरत जात को क्या खबर अै दुनिया-जहान की !'

तीसरे ने कहा, 'भई बढ़िया बात ये हुई कि ये परदेसी कारीगर बगदार से नीचा देख के जायेंगे।'

एक बोला, 'नई तो ये चौगनी मजूरी ले-ले के यां बस जाते, फिर इनके बाल-बच्चे आ जाते और हम तुम 'जो दे उसका बी भला, ना दे उसका बी भला' करते फिरते !'

दूसरा बोला, 'बुला तो गया अै सौदागर हवेली पे, चुकता करके सलाम हो जायगी आज !'

कइयों ने कहा, 'बस अब तू काम जुड़वा दे तकिये पे गरदम ! आधी मजूरी तो आधी !'

इस तरह बाहर तो सब के सब काम जुड़वाने की सलाह करने के लिए सर जोड़कर बैठ गए और अंदर अमीना अपनी आधी और परदेसियों की चौगुनी के फेर में उलझ गई।

□□

दोनों पहरेदारों का स्यापा दरअसल मौत से पहले ही हो गया, वह जान से नहीं मरे थे।

रास्ते भर बेगम की अदालत में जवाबदेही के लिए जुमले बनाता-सोचता, तोड़ता-जोड़ता हुआ अमीरअली सौदागर नौ दिन में अढ़ाई कोस की चाल से चलकर जब अपनी बैठक में पहुंचा तब अल्लाबंदा और सबरंग गो कि होश में आ चुके थे पर हादिसे से पूरी तरह उभर नहीं पाए थे। कफ़न-सी सफ़ेद चादरों में सर से एड़ी तक लिपटे हुए मसनद पर बराबर-बराबर चादरों के अंदर भी आंखें मूंदे हुए चित्त पड़े थे। रौनक़ बेगम सरौती से कटी-कटाई छालियों को पीरा का सर समझकर बुरादा किए डाल रही थीं। दरवाज़े में दाख़िल होने से लेकर दीवार से लगकर सौदागर के बैठने तक रौनक़ की नज़र उसके साथ-साथ घूमती चली गई। मीरा उस नज़र से घबराकर रास्ते में सोचा हुआ सब बयान भूल गया। जो बोला वह यह, 'देखो लो, क्या नतीजा निकला है पैरा-चौकी बिठाने का ! चपेट खाए पड़े हैं सबरंग और चचा मियां !'

रौनक़ ने मंजूर किया, 'पड़े तो हैं।'

मीरा ने हिम्मत बांधी, 'इस जगै पे मक्कान चिनवाने का ख्याल ई छोड़ देना चैये !'

रौनक ने कहा, 'छोड़ दो ।'

अचानक अपनी राय से रौनक़ को यों इत्तिफ़ाक़ करते देखकर मीरा ने समझा कि भाई और चचा की झपेट-चपेट देखकर बेगम ख़ौफ़ खा गईं। मौक़े को नादिर समझकर हुमक कर बोला, 'सारी बगदार थर्रा उठी साब जिन्नात से !'

मालूम नहीं इस बुद्धू मेमार की औलाद के हिस्से में रत्ती-माशों के हिसाब से भी अक़्ल आई है या नहीं। अपनी आंखों से वाक़आ देखकर बगदार का भोंपा अलीजान पंमारी ख़ुद इन लाशों को हां डालकर गया है, उससे भी कुछ बातें बेगम की हुई होंगी। घड़े से शैतान के बरामद होने का घर-घर में शोर मचा हुआ है और यह गधे का बच्चा अभी तक यही समझ रहा है कि बेगम हादिसे की असलियत से वाक़िफ़ ही नहीं हैं। कमाल है !

बेगम बोलीं, 'थर्रा उठी होगी ।'

नाक छेदकर मीरा ने रौनक़ के मुंह में बताशा डाला, 'अल्ला अब बाल-बच्चा तो तुमें देई देगा !'

रौनक़ ने कहा, 'न भी दे ।'

मीरा बोला, 'नईं देगा तो लौंडा हम तुमें पीरा का लेकै दे देंगे !'

इस बार रौनक़ ने यह नहीं कहा कि 'दे देना !' इतनी तेज़ मिठास जो ज़हर की कड़वांस की तरह थुकथुकाकर रौनक़ ने सबरंग की तरफ़ मुंह करके कहा, 'सबरंग भाई, ज़रा उठके बैठे होना, जैसे हो वैसे ही !'

पता नहीं फ़रेब किए पड़ा था या क्या। 'इमान से' कहकर सबरंग ने कफ़न से गर्दन बाहर निकाल दी।

बंदेमियां की तरफ़ रुख़ करके रौनक़ बोली, 'चचा एक काग़ज़ निकालना कहीं से सफ़ेद !'

'या अल्लाह' की तरह 'कसम से' कहकर अल्लाबंदे भी उट्ठे से हुए।

तब मियां की तरफ़ मुख़ातिब होकर रौनक़ ने कहा, 'सौदागर साहब, एक क़लम दवात मंगवायेंगे ज़रा अलीजान पंसारी के यहां से !'

मुस्तैदी से मीरा ने कहा, 'हां-हां, क्यों ?'

'तुमसे अंगूठा लगवायेंगे उस पर !'

पेच में पड़कर मीरा ने पूछा, 'अंगूठा ? काय पै ?'

कोड़े की तरह सनसनाती हुई आवाज़ फटकारकर रौनक ने कहा, 'अल्ला-अल्ला ख़ैरसल्ला पे !'

कुछ न समझकर उल्लू के हूत्कार की तरह एक आवाज़ मीरा के मुंह से निकली जिसका मतलब था शायद 'ऐं ?' इस ऐं पर जो रौनक़ फट के पड़ी तो ऐं समेत सौदागर को ले बैठी, 'ऐ वह हराम की औलाद हमारी गोदियों खेलेगी ? तुम्हें शर्म नहीं आती हम से यह बात कहते हुए ? तुमसे कित्ता समझा दिया हमने

कि वह लड़का तुम्हारे उस भाई सफ़रदाई (साजिदा) का नहीं है, नहीं है, मगर तुम ऐसे ख़च्चर हो कि वहां के वहीं अड़े हुए हो !'

कहीं मनों बोझ के नीचे दबी हुई-सी मीरा की आवाज़ आई, 'चाय तुम खिच्चड़ कओ चाय कुछ कओ !'

फ़ुर्राने की कोशिश करते हुए ख़च्चर की थूथन पर सड़ाक से दूसरा चाबुक मारकर रौनक़ बोली, 'मियां हमें गरज़ पड़ी है तुमसे कुछ कहने-सुनने की ? तुम तो वह बेहया मर्दुए हो जो ख़ास अपनी मनकूहा (पत्नी) पर ज़िनाकारी (व्यभिचार) की औलाद को मुतबन्ना (गोद) लेने की ज़बरदस्ती कर रहे हो ! राज-मज़दूरों के घरों का क़ायदा होगा यह ! हमें तुमने समझा क्या है ?'

फ़ौरन पलटकर अल्लाबंदे को हुक्म दिया, 'उठो जी चचा !'

चुटीली नागन की तरह फुंकारकर जिस्म से एक ज़ेवर उतारकर उसने मीरा के मुंह पर मारा और बोली, 'यह गिरों रखकर हमारे सफ़र ख़र्च का इंतिज़ाम करो इसी दम ! हमें नहीं चाहिए तुम्हारा ज़ेवर-गहना और महले-दुमहले ! हम जाते हैं ऐशमंज़िल, हमें तलाक़ लिख के दो इसी वक़्त !'

पांव तले से धरती ज़लज़लों में खिसकती है, सो ज़लज़ला आ गया ! धरती फट गई और मीरा नीचे, नीचे कहीं पाताल में धंसता चला गया । रौनक़ देखते-देखते आंखों से ओझल हो गई । रौनक़ नहीं है तो फिर अमीरअली कहां है ?

हाय रे कमज़र्फ़ इश्क़ ! अल्लाह करे कि ज़लील से ज़लील और जानी से जानी दुश्मन भी इस लानत से बचा रहे ! आमीन ! !

आदमी से आदमी के दुमहले-चौमहले बनाने वाले दोनों हाथ आजिज़ी से उठ कर आपस में जुड़ गए । दीनता से गिड़गिड़ाकर मीरा ने कहा, 'गुस्सा थूक दो बेगम, हम तुमारे ताबेदार अैं ! तुम तल्लाक-मल्लाक का नाम तो लो मत, तुम हमारे उप्पर हुक्म चलाओ ! हमारी जान हाजर अै तुमारे वास्ते !'

जाने कहां से रौनक़ की आंखों में आंसू छलछला आये । गर्म पानी में पुतलियां मछलियों की तरह तड़फड़ाने लगीं । भर्राई हुई आवाज़ में बोली, 'मियां यह क्या ताबेदारी है और क्या जान की हाज़िरी है कि जिस महल की तामीर में हमारा नसीब उलझा हुआ है, हमारी जान उलझी हुई है, हमारी औलाद उलझी हुई है, उसी के लिए बार-बार तुम हमसे कहने के लिए आ जाते हो कि 'न बनवाओ, ख़याल छोड़ दो, जिन्नात का साया है, ख़बीसों का अड्डा है !' हम सब जानते हैं कि न जिन हैं, न ख़बीस हैं, तुम्हारी बिरादरी है, तुम्हारा भाई है जो हमसे दुश्मनी निकाल रहा है और तुम हो कि उनकी तरफ़दारी किये जा रहे हो !'

'एक-एक बात सच है । बेशक यह घुन्ना पीरा अपनी जलन के मारे उसके घर में आग लगा देना चाहता है । यह भाई नहीं है, बैरी है ! यह कमबख़्त लुगाई का ग़ुलाम किकरौली वाली के सिखाये-पढ़ाये में आकर उस दिन के झगड़े का बदला

चुकाने के लिए बेगम का सत्यानाश करने पर उतारू हो गया है। बेगम बिलकुल सच कह रही हैं !" मीरा का दिल हिल गया। 'रौनक़ के साथ बड़ी ज़्यादती हुई !'—उसके आंसू पोंछने के लिए पीठ के पीछे से साफ़े का सिरा पकड़कर आगे को लाया ही था कि बाहर से आवाज़ आई, 'सौदागर साहब !'

आवाज़ सुनकर मीरा ज्यों ही उठकर बाहर गया कि रौनक़ के तेवरों ने बल बदले। बड़ा कठिन है इतने लचकीले तेवरों के अंदाज़ समझ लेना। आंखों के आंसू न जाने कहां जज़्ब हो गये और उनकी जगह दहकते हुए अंगारे चमकने लगे। धू-धू करती हुई-सी बोली, 'सबरंग, इधर आओ यकलख़्त !'

सबरंग इस आवाज़ को पहिचानता है। मुर्दा हो तो भी इस आवाज़ को सुनकर आदमी को उठ जाना चाहिए। चादर में लिपटा हुआ ही लंगूर की तरह कुलांच भरकर आगे को आया। न जाने रौनक़ ने क्या उसके कान में फूंक मारी कि बैठा-बैठा ही सबरंग बुत की तरह वहां का वहीं जाम हो गया।

बाहर थे परदेसी मेमार—लठबंद लेनदारों की तरह मुस्तैद। सौदागर खड़ा था सामने—मजबूर, देनदार की तरह दीन और झुंझलाया हुआ। रोज़ की चौगुनी मज़दूरी की गिनी-गिनाई बंद थैली झम्म से दाढ़ीवाले के सामने पटककर बोला, 'लो मियां, ये लो आज की मजूरी। काम सुसरा लगे चाय न लगे !'

थैली उठाकर दाढ़ीवाले ने कहा, 'आगे के लिए क्या हुक्म होता है ?'

आगे के लिए ? मीरा को याद आया कि आगे के लिए तो वह सबके सामने फ़क़ीर के आने तक ग़म खाने का वायदा करके आया है; फिर फ़ौरन ही याद आया कि आने के बाद अंदर हाथ जोड़कर हुकम चलाते ही जान हाज़िर करने का इक़रार करके बाहर आया है ! अब यहां से कहां जाकर किससे इंकार-इक़रार करे ! क़ैंची के दांव में गला फंसवाकर घुटा हुआ-सा बोला, 'आगे के लिए क्या ?'

परदेसी कारीगरों का यह दढ़ियल सरदार कोई बहुत ही अक्खड़, हिसाबी और बेलिहाज़ आदमी मालूम होता है। सौदागर को हिचर-मिचर करते देखकर बोला, 'आपको हमसे काम न लेना हो तो दस महीने की मज़दूरी चुका दीजिये, हम चले जायेंगे।'

तकिये पर लोगों से किये गये अपने वायदे से मीरा साफ़ मुकर गया। साफ़े के सिरे से माशूक़ के आंसू नहीं पोंछ सका था, सो भीतर को मुंह फेरकर बाहर को ज़ोर से बोला, 'काम नईं लेने का क्या मतलब अै जी ! कायदे से काम लगाओ, कल हम आप आवेंगे पड़ताल करने।'

'बेहतर है, ज़ुरूर आइये !'

कारीगरों के पीठ फेरते ही अंदर आते हुए मीरा की बाहर की बातें सुनती हुई रौनक़ ने जान-बूझकर पूछा, 'कौन था ?'

'कारीगर थे।'

'क्यों आये थे ?'

'हमने जरा ताकीद को बुलाया था। सबरंग का जी अच्छा नईं है ना, सो कईं काम में ढील न दे दें !'

गुलाब के हारों-सी दोनों बांहें मीरा के गले में पहनाकर और एक सिसकारी-सी भरकर रौनक़ ने कहा, 'दूल्हा तुम गुदगुदी में नाखून मारते हो !'

पिघलकर दूल्हा बोले, कैसे, कैसे, हमने कब मारे ?'

मुंह फुलाकर रौनक़ ने निशान दिखाये, 'हमसे तो कहा ख़याल छोड़ दो और खुद कारीगरों को ताकीद के लिये बुला लाये !'

मीरा ने खरोंचें मारने का गुनाह मंजूर कर लिया, 'वो तो जरा हमने अपनी माशूक़ को छेड़ा था !'

खरोंचें देखने के लिए अपने गरेबान में फ़िसलती-सी नज़र डालकर छिड़े हुए माशूक़ ने कहा, 'बड़े मसख़रे हो !'

रेशाख़त्मी (एक चिपकदार दवा) होकर मीरा ने कहा, 'तुमें हम मसकरे लगे ?'

सीने से नज़र हटाकर और झटके से दोनों बांहें खींचकर रौनक़ ने कहा, 'अल्ला यह हमसे न पूछो कि तुम हमें कैसे लगे !'—फिर मुंह फेरकर नकियाईं, 'आज सुभू से बिछड़े रहे। ज़रा देर के लिये भी ओझल हो जाते हो तो हमें गुस्सा आ जाता है···देखो कितना आया था।'

सौदागर ने कहा, 'तुमारा हुकम हो तो हम तुमारे सामने ई बैठे रैं हर बखत—कल जरा हमें तुमारे म्हैल की चिनाई पे तो जाना है !'

रौनक़ मचल पड़ी, 'हम भी चलेंगे, तुम्हारे साथ।'

मुंह फेरकर मचलती हुई महबूबा को पीछे से ही बांहों में समेटते हुए मीरा ने कहा, 'अजी हम तुमें गोदी में ले के चलेंगे !'

बांहों की बीच में से नीचे को फिसलकर फुसफुसाते हुए रौनक़ शर्मिंदा हुई, 'ऐ चचा लेटे हुए हैं, सबरंग जागे हुए है, अंधेरा-उजाला तो देखा करो !'

यों ग़ज़ब ढाकर वह सुर में मिला हुआ साज़ झनझनाता हुआ कोठे का ज़ीना चढ़कर पर्दे में हो गया। चादर में लिपटे हुए अल्लाबंदे के मुर्दे ने बेसुरी अलापी, 'या अल्ला माफ कर खता—' सबरंग ने ताल नहीं दी, वह न जाने रौनक़ की कान में कही हुई कौन-सी बात से बर्फ़ की तरह जमा बैठा था।

□□

अमीरअली सौदागर से अगले दिन फिर काम चालू करने का हुक्म लेकर जब अमीना के किरायेदार कारीगरों का जत्था घर पहुंचा तब भी पीरा मेमार

अपने साथियों से गजरदम तकिए पर काम जोड़ने की सलाह-मस्लेहत कर ही रहा था। घर में घुसते ही उन्हें मिस्कौट करते देखकर दाढ़ीवाले ने कहा, 'देखो भई, जो बात तुम पक्की करो वह हमें भी बतला दो, नहीं तो कल फिर हम लोगों में भेद पड़ेगा और लोग तमाशा देखेंगे !'

पीरा ने कहा, 'बात ये हो रई है कि कल तकिये पे हमारा काम चलेगा।'

हँसकर दाढ़ीवाला बोला, 'लो भेद तो यहीं से शुरू हो गया। तकिये पर तो हमारा काम लगेगा !'

ताज्जुब से पीरा ने कहा, 'ये क्या बात बड़े मियां ? तुमारे सामने ई तो हमारा फैसल्ला हुआ है सौदागर से !'

बड़े मियां ने कहा, 'हुआ तो था हर हमें उन्होंने हवेली पर बुलाकर हुक्म दिया है कि काम चालू रहे।'

सब पीरा का मुंह ताकने लगे। पीरा आप ही आप बोला, 'कईं ना कईं कुछ पेच जरूर है—फिर मिलना पड़ेगा सौदागर से !'

पीरा फ़ौरन जाने के लिये खड़ा हो गया। दो-चार क़दम चला फिर रुक गया। फिर कुछ सोचकर लौटा और अपनी जगह पर आ बैठा।

एक ने कहा, 'जा तो, बैठ क्यों गया ?'

तंग-सा होकर पीरा बोला, 'यार घर पे तो सौदागर से बात नईं होती। भाबी बीच में हँसी-मजाख मारने लगती है, सौदागर इकेला मिले तो बात हो।'

किसी ने कहा, 'अब इकेला मिलना तो उसका जरा मुसकल ई अै !'

दाढ़ीवाले ने मुश्किल आसान की, 'कल सुबह तुम हमारे साथ चलना, कल वह चुनाई पर आने वाले हैं, वहीं बात कर लेना।'

पीरा को बात जंच गई। बोला, 'बस तो, ऐसेई करूंगा।'

एक ने कहा, 'चल तो जरा बुड्ढे के पास हो आवें।'

सब बुंदू से मिलने के लिए उठकर चल दिये। उनके जाने के बाद दाढ़ीवाले ने एक छोटी-सी पोटली निकालकर कोठे की चौखट पर रख दी और पुकारकर बोला, 'लो बीबी यह दोनों दिन का किराया उठा लो।'

आधी-चौगुनी के फेर में पड़ी हुई अमीना पर्दा करके आगे को सरकी और पोटली उठाकर घूंघट के अंदर ही अंदर मुस्कराकर बोली, 'बड़े मियां मैंने तो समजा था कि तुमारे हात का दाना-पानी हमें मिल चुका !'

ग़म और ख़ुशी के बीच की लकीर भी कितनी बारीक है ! फ़िक्र और बेफ़िक्री की अपनी-अपनी वजूहात भी कितनी अजीब हैं ! जिन औरत-मर्दों के जी-जान एक-दूसरे से इस तरह नत्थी हैं कि एक के बग़ैर दूसरे की ज़िंदगी कोई मतलब नहीं रखती, उनके भी जीने के रंग-ढंग, रंज-फ़िक्र, तौर-तरीक़े और नज़रिये एक-दूसरे से इतने जुदा हैं कि एक ही बात एक के लिये दाना-पानी और दूसरे के लिये

मौत है ।

दाढ़ीवाले ने कहा, 'क़ुदरत है बीबी, हमारा काम तो अब पहिले से भी पक्का लग गया !'

अमीना ने पूछा, 'तुमें कोठे में कोई तखलीप तो नई अै बड़े मियां ?'

बड़े मियां बोले, 'कोठे में तो नहीं पर तक़लीफ़ यह है कि रोटी हमारे इतने साथियों में से किसी को ठीक-ठाक पकानी नहीं आती।'

हमदर्दी से अमीना ने कहा, 'तो मैं पका दिया करूंगी मियां जी ।'

अहसानमंद होकर दाढ़ीवाले ने कहा, 'खुदा तुम्हारा भला करे ! पकाकर मदद पर बांट भी आया करो तो हम तुम्हें सामान की कीमत के अलावा एक मज़दूरी रोज़ और दे दिया करेंगे।'

अमीना ने भीतर ही भीतर खुदा का शुक्रिया अदा किया कि तू देने पर आता है तो हज़ारों हाथों से दे डालता है । ज़ाहिरा बोली, 'अब दो तो ना दो तो, रोटियां मैं पौंचा दिया करूंगी ।'

हँसकर दाढ़ीवाले ने अपने साथियों से कहा, 'देखा मियां, ऐसे बन जाती हैं बनने वाली बातें ।'

उस जवान से साथी से कहा, 'जी हां वह बात भी पूछ लीजिये, अगर मानें तो !'

सुनकर अमीना ने पूछा, 'क्या ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'बात यह है कि हमारे पास अपने पैसे रखने को जगह नहीं है। हम यह सोच रहे थे कि जो है वह, और जो मिले वह सब तुम्हारे ही पास रखते जायें, जब यहां से जायें तब ले जायें ।'

अमीना बोली, 'ऐल्लो, इसमें पूछना क्या था !'

दाढ़ीवाले ने बेफ़िक्र होकर अपने साथी से कहा, 'चलो इससे भी बेफ़िक्री हुई ! वह अब तक ही जमा इन्हें दे दो मियां ।'

साथी ने मज़दूरी के रुपयों की एक बड़ी-सी पोटली अंदर से लाकर अमीना के आगे रख दी और अमीना उसे उठाकर अपने कोठे में चली गई ।

□□

बड़ा खिंचा, तना हुआ-सा दिन निकला । रेगिस्तान-सा आकाश, बादल का एक चिथड़ा तक नहीं । पौ फटते ही से पहर चढ़े की धूप चटख़ पड़ी । सवेरा दोपहरी-सा मनहूस लग रहा था ।

इधर से दाढ़ीवाले के साथ परदेसियों की टोली रौनक़महल की तामीर के लिये चली, उधर से पीरा के साथ बगदारियों का जत्था सौदागर के कल का

फ़ैसला तब्दील करने की जवाब-तलबी के लिये चला। आपस में तनाज़ा कोई नहीं है पर पक्ष दो हैं। परदेसियों के लिये सवाल पेट का होगा पर देसियों के लिये बात का बन गया है। बात के आगे पेट की क्या औक़ात?

तकिये पर पहुंचकर पीरा ने देखा कि सौदागर अभी तक नहीं आया है। वह और उसके साथी जहां-तहां बैठकर चिलम-तमाखू पी-पिलाकर वक़्त गुज़ारने लगे।

परदेसियों के सामने काम है और उनके लिये बेकार वक़्त गुज़ारने की कोई वजह भी नहीं है। उनके सरदार ने मोर्चे संभालकर उजड़ा-उखड़ा, टूटा-फूटा काम फ़ौरन जमाना शुरू कर दिया। ईंट-चूना, पत्थर-मिट्टी, पानी, कन्नी-बसूली, कुदाल-फावड़ों की ठक-ठक-ठक-ठक से तकिये पर मारू बाजा बज उठा।

आंखों के सामने ही छाती पर बजते हुए धौंसे के धूम-धड़ाके को लूली-लंगड़ी टुकड़ी के निहत्थे सिपहसालार की तरह पीरा लाचार होकर देखने लगा। बगदार से आते हुए रास्ते पर सौदागर के रब्बे को बार-बार उचक-उचककर ताकने लगा। कान उसने बैलों की घंटियां सुनने के लिए गधे की तरह खड़े कर लिये…

पर कान खड़े हो गये, वह उचकता रह गया, सौदागर नहीं आया।

आई अमीना!—गोद में बच्चा, सर पर रोटियों का टोकरा; चेहरा घूंघट में, घूंघट पसीने में।

किराये पर कोठे और औज़ारों के लेन-देन के सिवा अमीना के तीसरे सौदे का हाल पीरा को मालूम नहीं था सो भरी दोपहरी में तकिये पर उसे देखकर पहले तो पीरा उसे मुंह फाड़े देखता रहा, फिर यह सोचकर उठा कि सबके लिये रोटियां लेकर आई है शायद! फिर झिझककर अकेले में जा बैठा कि पास आयेगी तो इतनी सारी रोटियां कहां से ले आई यह पूछूंगा।

अमीना को देखकर दाढ़ीवाले ने आवाज़ लगा दी, 'बंदो रिजक़ हासिल करो!'—कमेरों ने काम छोड़ दिया।

अपने ही हाथों खोदी हुई एक ख़ंदक़ के करीब एक पेड़ के नीचे अकेले बैठे हुए पीरा के पास अमीना आई। सर पर टोकरा साधकर एक कपड़ा जमीन पर डाला, गोद में सोता हुआ बच्चा उस पर लिटा दिया और बोली, 'जरा देखते रैना मिस्त्री जी, मैं रोटी खुला आऊँ कमेरों को!'

और रोटियों का टोकरा लिये हुए वह परदेसियों की तरफ़ चली गई, पीरा उससे कुछ नहीं पूछ सका। जो रोटियां पैदा नहीं कर सकता वह खा भी नहीं सकता, रोटियों की बात भी नहीं कर सकता।

सबसे पहिले अमीना ने बड़े मियां को रोटियां दी। बड़े मियां पल्ले में रोटी-चटनी लेकर दुआयें देते हुए खाने के लिए एक तरफ़ चले गये तो अमीना उनके दूसरे साथियों को बांटने खिलाने में मसरूफ़ हो गई।

इसी वक़्त रब्बे के बैलों की घंटियां सुनाई पड़ीं।

पीरा उठकर भागा।

गुलाबी बदन पर नूरजहांनी वज़ा-क़ता का ऊपर से नीचे तक गुलाबी लिबास पहिने, आशिक़ेज़ार के दीनों-दुनिया की राखनहार नव्वाब रौनक़ बेगम साहिबा—तेज़ धूप और गर्म हवा से इस गुलपोश का गुल-सा बदन मुरझा न जाय इसलिए गुंजान पेड़ों के साये में भी उसके सर पर छत्री ताने हुए खास-ख़वास की तरह रईसे-बगदार सौदागर अमीरअली साहब और उनके पीछे मर-मरकर ज़िंदा हुए मुसाहिबे आला अल्लाबंदा ख़ां और मुल्ला-दो-प्याज़ा सबरंग बेग—इस तरह क़दम-ब-क़दम यह सवारी तकिये की सीढ़ियों के ऊपर नमूदार हुई।

तभी एक हलचल हुई।

सिपाहियों का घेरा तोड़कर सवारी रोकने वाले सरकश सिविल नाफ़र्मान की तरह कूदकर पीरा सामने आया और मीरा की बांह पकड़कर बोला, 'सौदागर, मुजे तुस्से कुछ बात करनी है इकेले में। तड़के से बाट देख रया हूं, इधर को आ!'

पीरा छत्री समेत मीरा को खींचकर ले गया। बॉडी-गार्ड की तरह अल्लाबंदा छत्री की छाया के साथ-साथ ही सरका चला गया।

तकिये की सबसे ऊपर की सीढ़ी पर क़दम रखते ही कारीगरों के बीच में रोटियां लिए खड़ी हुई अमीना को रौनक़ ने दूर से ही देख लिया था। उसके कारीगरों को खाना खिलाने के लिए यह काली नागन यहां क्यों आई है यह अंदाज़ा तो वह न लगा सकी, पर यह आई है और इसका नाग भी यहां मौजूद है तो इनका संपोला भी ज़ुरूर यहीं होगा इस ख़याल से उसने खट-खट इधर-उधर नज़र फेंकी तो फेंक-फांक का रंग सबरंग ने भांप लिया। ख़ंदक़ के पास पेड़ के नीचे अकेले सोये हुए अमीना के 'हरामी' बच्चे पर रौनक़ और सबरंग की नज़र एक साथ पड़ी। रौनक़ दोज़ख़ी भट्टी की तरह सुलग उठी। मीरा को बदमस्त कर डालने वाली शरबती आंखों में शोले जलाकर सबरंग को पीछे आने का इशारा करके वह लपककर ख़ंदक़ के पास गई और चैन की नींद सोते हुए फूल से बच्चे को फ़ुटबाल की तरह एक ज़ोर की ठोकर से बुनियाद की ख़ंदक़ में धकेलकर आगे बढ़ गई। पीछे-पीछे वह गोरकन (क़ब्र खोदने वाला) था ही! एक फावड़ा उठाकर चूना-मिट्टी, रेती-सिमेंट जो कुछ भी था सब तोप-तापकर उसने ख़ंदक़ को जितना पाट सका उतना पाट दिया और टहलता हुआ आज के काम का मुआइना करता हुआ आगे बढ़ गया।—देसी मीरा से उलझते रहे, परदेसी पेट भरते रहे। न तकिया हिला, न पिपलिया नीम टूटकर गिरा, न धरती फटी, न आसमान रोया, न फ़रिश्तों ने सर धुना, न जिन्नात ने फ़साद खड़ा किया। सब काम ऐसी आसानी से हो गया जैसे कि करना ही नहीं था।

जिसे बच्चा सुपुर्द किया गया था वह इस निर्मम हत्याकांड से बिलकुल बे-

ख़बर अपनी ही धुन में मीरा को पकड़े बैठा था और एक ही रट लगाये जा रहा था कि, 'जब चार आदमियों के बीच में कल्ल ये तै हो गया कि फकीर के आने तक तेरी चिनाई नईं लगेगी तो तैंने मदद क्यों भेजी ?'

मीरा के हलक़ में आदमी की ज़ुबान नहीं शायद सुअर के गोश्त का टुकड़ा लटका हुआ है। साफ़ मुकर गया कि उसने कोई ऐसा तय-मुआहदा किया था। मारते का हाथ होता तो बुंदू मियां दूर की दूर अपनी छः फुटी लाठी से उसकी कलाई तोड़ सकते थे पर जंगली सुअर के दांतों में महफ़ूज़ इस बदलती हुई ज़ुबान को तालुवे से तोड़कर कैसे निकालें ?

जो लफ़्ज़ पीरा जानता ही नहीं था वह ज़ुबान पर आ गया। दुखी होकर बोला, 'सौदागर झूठ मत बोल !'

मीरा ने उसे धमकाकर कहा, 'अबे बेकूप जब तुजे कुछ मलूम नईं अै तो तू हमारी बात क्यों नईं मानता ?'

अल्लाबंदे ने भुस पर लिपाई की, 'कसम से बात माना करते हैं पीरअली, सौदागर तुमसे बड़े हैं।'

बड़े ने बड़प्पन से बड़ी-सी आवाज़ में सबको सुनाकर कहा, 'हम हजार दफै कै चुके कि जब हम परदेस में थे तब दरियाबाबा हमें मिला था, उसने व्हईं हमारे हाथ बेच दिया था तकिया। ढेरों रकम चुकाई अै हमने !'

दुविधा-सी में पड़कर पीरा के मुंह से निकला, 'अच्छा ?'

पीरा की दुविधा का पूरंपूर फ़ायदा मीरा ने उठा लेना चाहा। ढीठता से बोला, 'नईं तो बो आ नईं जाता अब तलक पलट के ? या हम कोई बावले अैं जो ह्यां काम लगवाते ?'

पीरा की बोली से कोई ख़ुद ही दुविधा में पड़ जाय तो पड़ जाय पर पीरा किसी दुविधा में नहीं है। बात उसने कसौटी पर कस दी, 'ये बात होती तो वो तकिया बनाने को हमें क्यों लगाता ? उसी दिन तो वो दूसरी पोटली दे के गया है हमें ज़िद्दिन तू आया है भाबी को ले के !'

मीरा ने आसमान की तरफ़ थूक दिया, 'ये हम नईं जानते ! लड़वाना चाहता अै हमें। छांकटा अै वो फकीट्टा, डाकू अै पक्का !'

आसमान से गिरकर मीरा का थूक फ़क़ीर के मुरीदों से चेहरे पर आ पड़ा। असमंजस में हथेली रगड़कर सब अपने चेहरे पोंछने लगे।

इसी वक़्त काम की देखभाल से परेशान होकर रौनक़ वहां आई और आते ही मीरा से बोली, 'ऐ तुम इस दीवाने से यहां क्या चख़-चख़ कर रहे हो इत्ती गर्मी में ? चलो जल्दी, हमारी तबीअत मालिश कर रही है !'

हुकुम के ग़ुलाम की तरह उठकर मीरा रौनक़ के पीछे चल दिया और पीरा इससे आगे की सोचने के लिए सर पकड़कर बैठ गया।

रोटियां बांट-बूंटकर बच्चे को लेने अमीना जब उस पेड़ के नीचे आई तो उसे वहां न बच्चा मिला, न बच्चे का बाप। 'मिस्त्री-मिस्त्री' पुकारकर मिस्त्री को इधर-उधर ढूंढती हुई इधर को आई तो सर पकड़कर बैठे हुए पीरा की गोद में बच्चा न देखकर बोली, 'मियां रमजू कां है?'

पीरा जैसे बेहोशी से जागा, 'रमजू ?···व्हईं पे होगा पेड़ तले !'

घबराकर अमीना ने कहा, 'अरे वां नईं है कलंदर !'

'तो किसी ने उठा लिया होगा, भाबी आई है उससे पूछ।'

बेचारी ने सर के बल दौड़कर जाती हुई रौनक़ को जा पकड़ा। देख रही थी कि बच्चा उसके पास नहीं है फिर भी पूछा, 'बी मेरा बच्चा लिया है तुमने वां से ?'

वाहवा रे ऐशबेगम की जाई ! भोली बनकर बोली, 'बच्चा ?···ऐ लो, मैं तो ख़ुद तुमसे पूछने को थी कि लड़का कहां है !···कहां था ?'

रुआंसी होकर अमीना ने कहा, 'उस पेड़ तले लिटाया था मैंने।'

रौनक़ सौदागर से बोली, 'ऐ पूछो-पूछो, किसी ने खिलाने को ले लिया होगा !'

मीरा चिल्लाया, 'भई पीरा का बच्चा लिया अै किसी ने ?—भई पीरा का बच्चा देखा अै किसी ने ?'

भूखे उठकर दौड़ पड़े, अघायों का आलस झड़ गया। चारों तरफ़ बच्चे ही बच्चे की पुकार मच गई। चौकड़ी भूलकर सबरंग को बगलें झांकते हुए देखकर रौनक़ ने चिल्लाकर उसे होशियार किया, 'ऐ सबरंग भाई ज़रा बच्चा ढुंढवाओ न पीरअली का !'

चौंककर सबरंग टेंटुआ ऊपर-तले करके यों चीख़ पड़ा जैसे मेलों में वालंटियर चीख़ते हैं, 'जिस भाई ने पीरअली का बच्चा लिया हो वह हमारे पास पहुंचा दे !'

अल्लाबंदे भी दायें-बायें झांककर क़स्में उठाने लगे।

औंचक-भौंचक होकर पीरा पुकार उठा, 'भई किसी ने बच्चा लिया है हमारा ?'

बच्चा ! बच्चा !! बच्चा !!! गुम्बद की तरह तकिये पर आवाज़ें गूंज उठीं —बच्चा ! बच्चा !! बच्चा !!! पिपलिया नीम जड़ समेत हिलकर चरचरा उठा —बच्चा ! बच्चा !! बच्चा !!! परिंदे आसमान में उड़कर चांव-चांव कर उठे —बच्चा ! बच्चा !! बच्चा !!! पर बच्चा नहीं मिला।

अमीना का पर्दा हट गया, आब उतर गई, बाल बिखर गये, आंखों की सीपियां फूट गईं, धारों-धार आंसू निकल पड़े, हिलकियां बंध गईं। छाती में दुहत्तड़ मारकर चीख़ पड़ी, 'अल्लाह, मेरा बच्चा !··मेरा बच्चा !!···मेरा

बच्चा !!!…'

अज़दहे ने भी आंखों से आंसू बहाकर मुंह से फुंकार मारी, 'ऐ ख़्वाजा मैं लुट गई ! मैं तो उसे गोद बिठाने वाली थी ! ऐ कोई हमारा लाल ढूंढ दो, हम उसे माला-माल कर देंगे !'

मलबे के ढेर में, ईंटों की धांग में, सिमेंट की बोरियों में, पेड़ों की खखोड़लों 'मेरा बच्चा, मेरा बच्चा' पुकार-पुकारकर अमीना पागलों की तरह टक्कर मारने लगी। किसी का हियाब नहीं पड़ा कि उसे चुप करे, पकड़े या रोके। अमीना की आहोज़ारी से दरियाशाह का तकिया थरथरा उठा।

दाढ़ीवाले हरदेसी ने आगे बढ़कर उससे कहा, 'बीबी, सब्र न छोड़ो, दिल मज़बूत करो। तुम घर जाओ, तुम्हारा बच्चा सब ढूंढ रहे हैं जिसे मिल जायगा वह पहुंचा देगा।'

पर इस तरह पेट की औलाद खोकर सब्र का दामन पकड़ा जा सकता है क्या ? चूर-चूर हो जाने के बाद दिल मज़बूत रह सकता है क्या ? सर्वस्व लुटवाकर भी घर बाक़ी रहता है क्या ?

बुनियाद की खुदाई से निकले हुए एक पत्थर पर पटककर अमीना ने सर फोड़ लिया। लहू का फ़व्वारा छूट पड़ा। दाढ़ीवाले ने पीरा से कहा, 'भैया पीर-अली, इस बेचारी को घर ले जाओ जल्दी !'

पीरअली का नाम कान पर पड़ते ही अमीना ने चोट खाई हुई शेरनी की तरह दहाड़ मारी, 'इसी करमफूटे को सौंपा था मैंने रमजानी ! येई मेरा दुश्मन है जो उसे छोड़ के चला गया !'

ख़ून टपकता हुआ विकराल चेहरा तानकर अमीना ने पीरा की तरफ़ देखा। ऐसा लगा कि अभी पीरा पर झपटकर पंजों से उसका गला फाड़कर वह गटागट उसका ख़ून पी जायगी कि तभी लपककर रौनक़ ने उसे पकड़ लिया और रोती हुई बोली, 'बी चलो, हम-तुम दोनों घर बैठकर रोयेंगे। यहां तो जो है वह नसीहत ही देने वाला है, तुम्हारा-हमारा दिल देखने वाला कौन है !'

अमीना को अपनी तरफ़ खींचकर रोती हुई रौनक़ चीख़कर अपने मियां से बोली, 'सौदागर अगर मेरा बच्चा न पाया तो मैं दुहाई देकर कुएं में कूद पड़ूंगी !'

इस हमदर्दी से अमीना के आंसुओं का बांध फिर ढह पड़ा। छाती कूटती हुई पीरा से मुख़ातिब हुई, 'मैंने तुजे दिया था अपना लाल, तुजी से लेके छोडूंगी अपना बच्चा ! लेके नईं आया तो जीते जिनगानी मूं नईं देखूंगी तेरा !'

रौनक़, सबरंग और सौदागर छाती पीटती हुई अमीना को खींचकर ले गये और किसी तरह रब्बे में सवार कराके रब्बा गांव की तरफ़ दौड़ा दिया।

यों किसी का पेट भरने के लिए आई हुई अमीना अपने पेट का गोला गंवाकर स्यापा करती हुई वापिस लौट गई।

हाथ झाड़कर एक पेड़ के सहारे टिकते हुए दाढ़वाले ने अपने साथी से पूछा, 'औरत देखी मियां ?'

एक लम्बी सांस भरकर साथी ने कहा, 'देखी बड़े मियां !'

बड़े मियां बोले, 'यह मुक़ाम इबरत (शिक्षाप्रद) का है। जिसने औरत को यहां नहीं समझा वह कहीं नहीं समझेगा !'

साथी ने सर यों झुका लिया जैसे सिजदे में झुका लेते हैं।

एक-एक करके हाय-हाय करते हुए सब बगदारी चले गये। अकेला पीरा शून्य संज्ञाहीन होकर बैठा हुआ उजड़े-उखड़े बने-अधबने रौनक़महल की ओर अंधा-सा ताकता रह गया। वह वहां क्यों आया था ? आया था तब अकेला आया था या बहुत से आदमी उसके साथ थे; अब कोई है या कोई भी नहीं है ? मीरा से उसने क्या कहा, मीरा ने उसे क्या जवाब दिया; उसके साथ क्या होने वाला है ? उसकी बीवी क्यों रो रही थी और रोते-रोते उससे क्या कहकर चली गई ? उसका कोई बच्चा था, था तो यहां क्यों आया था, आया था तो कहां गया ? वह ख़ुद यहां क्यों बैठा है, या बैठा भी है या नहीं, इसका उसे कोई ज्ञान नहीं रहा। पीरा नितांत निष्क्रिय हो गया।

दाढ़ीवाले ने उसके पास जाकर कहा, 'भैया घर जाओ न पीरअली, यहां क्यों बैठे हो ?'

पीरा ने नहीं सुना।

दाढ़ीवाले ने फिर दोहराया, 'घर जाओ न यहां क्यों बैठे हो ?'

चौंककर उस लक्ष्यवेधी का बाण छूटा, 'मैं चौकीदार ऊं ह्यां का।'

तमाम साथियों के मुंह से एक साथ निकल पड़ा, 'सुब्हान अल्ला !'

□□

रौनक़ ने एक ढेले से दो शिकार मार दिये। बच्चे की बलि देकर शास्त्रीय विधि से रौनक़महल की बुनियाद पुख़्ता कर दी और अमीना से बदला लेकर गोद लेने का सवाल ही जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। रहता रह गया यह कम्बख़्त मियां का भाई जो बार-बार उसके रास्ते में रोड़े अटकाने के लिए अरने भैंसे की तरह सामने आकर खड़ा हो जाता है सो अब इस शैतान के सींग तोड़ने के लिए वह कोई कारगर हर्बा तलाश करने लगी।

अमीना को अपनी सवारी में बिठाकर दुनिया की सुघड़-भलाई लूटती हुई रौनक़ उसे उसके घर भेजकर जब तक अपनी हवेली में पहुंची, तब तक उसके दिमाग़ में वह कारगर तरकीब स्पष्ट से स्पष्टतर होकर प्रकट हो चुकी थी।

भाई के बच्चे के इस तरह गुम हो जाने की वजह से दुखी होकर मीरा मसनद

पर टूटकर बैठ गया और एक हाय-सी भर बोला, 'है-है मुजे जुल दे गया कौन, है-है मेरा गुल ले गया कौन !···हम ये सोच-सोच के मरे जा रये अैं कि इत्तों के बिच में से बच्चा गया तो कहां गया ?··चचा कुछ कओ तो सई !'

अनासक्त की तरह तटस्थ भाव से अल्लाबंदे ने धीरे-धीरे कहा, 'कसम से ग़ैब की क़ुदरत में इन्सान क्या कहे !'

सबरंग बोला, 'मियां जंगल है बियाबान, इमान से, यह भी तो हो सकता है कि कोई भेड़िया उठा ले गया हो !'

रौनक़ ने अपना नाज़ुक क़दम रखने के लिए धरती की धूल पर फूंक मारी, 'ऐ न ग़ैब की क़ुदरत है, न भेड़िया उठा ले गया है, जो हम कहती हैं उसके सिवा और कोई बात नहीं है।'

उत्सुक होकर मीरा ने पूछा, 'क्या ?'

रौनक़ ने कहा, 'हम कह चुके हैं कि यह बच्चा तुम्हारे भाई का था ही नहीं !'

बेमौक़े की रगड़ खाकर मीरा कहीं से छिलकर बोला, 'अजी वो बात छोड़ो, हम गुम्म होने की बात पूछ रये अैं।'

रौनक़ ने कहा, 'तो हम और क्या बतला रहे हैं ? तुम्हारा भाई अपनी बदनामी की शर्म से उसे ख़त्म करने का दांव लगा रहा था !'

मीरा रौनक़ की तरफ़ साकित होकर देखने लगा। दूसरा घिस्सा देने का बेहतर मौक़ा भांपकर रौनक़ बोली, 'तुम बुरा मानो या भला मानो, जो सच है वह कहने से हम हरगिज़ बाज़ नहीं आयेंगे ! तुम्हारे भाई से हमें क्या है, हमें तो तुम्हारे बुरे-भले का ख़याल है। बच्चा ज़ुरूर तुम्हारे भाई ने खपाया है !'

माथे में आंखें चढ़ाकर अल्लाबंदे ने मीरा की तरफ़ मुंह करके कहा, 'कसम से मुमकिन तो है ही !'

अभी ज़रा देर पहले जो शख़्स ईमान उठाकर भेड़िये पर इलज़ाम लगा रहा था वह ईमान बदलकर बोला, 'ईमान से, कारीगरों का भब्बड़ था, कोई चील थोड़े ही ले जा सकती है उड़ाकर !'

बेगम का अंदाज़ा अक्सर ठीक होता है। मीरा के दिल में लुक-लुक करके शक की चिनगारी चमकी—'हो सकता है कि सच हो ! हो सकता है कि बच्चा पीरा का न हो ! हो सकता है कि उसने अपनी औरत से बदला लिया हो !'

अस्थिर मति मनुष्य का मार्ग अनिश्चित है, भटकाव निश्चित है। संशयात्मा का उद्धार अनिश्चित है, विनाश निश्चित है। विनाश की युक्तियां अनिश्चित हैं, समय निश्चित है !

भ्रमित होकर चिनगारी में फूंक मारता हुआ मीरा चुपचाप उठकर बाहर चला गया।

उसके जाने के बाद थके-टूटे अल्लाबंदे और सबरंग जब आराम के लिए

उठने लगे तो रौनक ने कहा, 'ऐ जरा बैठो ऊपर चलकर, बातचीत करेंगे। मुआ दिन भर तो परेशानी में कट गया।'

ऊपर जाकर दरवाज़ा बंद करके तीनों ने जो साज़िश की उसका नतीजा अगले दिन ही दुमंज़िले से उतरकर चौराहे पर आ गया।

□□

तजवीज़ पर अमल करने के लिए सरकार की ओर से मियां सबरंगखां फ़ैंसी लिबास में सजकर रेशमी चादर में ख़ामख़ाह लिपटे हुए अलीजान की दूकान की सबसे आबरूदार जगह पर बैठे हुए सिगरेट पी रहे थे, और बिक्री-बट्टा क़तई ठप होने की वजह से ख़ाली तराज़ू हाथ में पकड़े इंसाफ़ के देवता की तरह अलीजान आंखें मूंदे बैठे थे। भीड़ लगी हुई थी। आगे वाले उनका मुंह ताक रहे थे और पीछे वाले उचक-उचककर देख रहे थे।

आख़िर भीड़ के सब्र का काफ़ी-सा इम्तिहान लेकर बच्चा गुम हो जाने के सिलसिले में सबरंग ने जो बात मुंह से निकाली उसे सुनकर देहातियों में एकदम खलबली पड़ गई।

बुंदू मियां चिल्लाये, 'तोबा कर, तोबा कर ! तोबा कर बंदे तोबा कर !'

दम किये हुए लोबान की धुएंदानी की तरह सिगरेट घुमाकर सबरंग बोला, 'इमान से तोबा का क्या है, दिन-रात में चौबीस मर्तबा कर लो, मगर बात वही है जो हम कह रहे हैं !'

दो-चार आदमी एक साथ सबरंग की बात पर उज्र कर उठे तो रिश्वत खाये हुए गवाह की तरह अलीजान ने तराज़ू को ऊपर उठाकर लोगों से कहा, 'बात सुनो जी, बात सुना कड़ते हैं।'

फिर तराज़ू पटककर तमाशाइयों में खड़े हुए बाज़ीगर के दोस्त की तरह सबरंग के ऊपर ही उलटकर बोला, 'क्यों जी सबड़ंगखां, तुम ये बात किस साबूत से कहते हो ?'

उचककर सबरंग ने कहा, 'इस सबूत से कहते हैं कि पीरअली यह चाहता ही नहीं कि हमारी इमारत बन के पूरी हो। तुम सबको मालूम है कि हमने तामीर कराई और उसने गिराई ! ख़ुद हमने और हमारे चचा ने कितनी जिस्मानी तकलीफ़ उठाई है इस वजह से !'

नुक्ता पकड़कर बुंदू मियां ने जिरह की, 'इस बात से बच्चे का क्या मेल पड़ता है जी ?'

आवाज़ चढ़ाकर सबरंग ने कहा, 'मियां यह मेल पड़ता है कि जब उन हरकतों से हमारा मकान उसने नहीं रुकता देखा तो अपना बच्चा बुनियाद में दबा दिया।'

दो-चार की तरफ़ देखकर बुंदू ने कहा, 'देखो जी क्या कै रा है ये नवाबजादे का जना। इससे पूछो कोई जिंदा बच्चे जमीन में दफनाने के लिए होते हैं।'

रौला-सा उठा। उठते हुए रौले को दबाने के लिए सबरंग उछलकर बोला, 'कमाल है जो सौ बरस के होकर भी दूसरों से हसद रखने वाले लोगों के टोटकों से नावाक़िफ़ हैं आप ! इमान से हमारी हमशीरा तो इसी नन्हीं-सी उम्र में अब तक ऐसे तेरह वाक़आत तो ख़ुद अपनी आंखों से देख चुकी हैं !'

चिढ़कर बुंदू ने बात पर बात चढ़ाई—'हम ये पूछते हैं कि तेरी नन्हीं-सी हमसीरा ने ये बाका भी देखा है क्या अपनी आंखों से ?'

सरफ़ू बोल पड़ा, 'देखा ई होगा जब वो कह रये हैं तो। ताजब भी क्या है, फ़कीर-फ़ुकरों के पास पीरा की उट्ठक-बैठक तो है ई !'

जाग पड़ जाने पर जैसे चोर को देखकर चोर-चोर की गुहार मचती है उसी तरह लाठी ठनकारकर बुंदू चिल्ला पड़ा, 'मारो, मारो साले को ! जो इस खुन्नास के सिर पे जूती ना मारे वो कमअसल का !'

हंगामा मच गया। जिनके पांवों में जूतियां थीं उनके हाथों में आ गईं। जिनके नहीं थीं उन्होंने दूसरों के दूसरे पांव की ले लीं। सरफ़ू को लेने के देने पड़ गये। इतनी सारी जूतियों की मार से एक ज़ुरूरी सर बचाने के लिए अलीजान ने थले पर खड़े होकर थाली की तरह तराज़ू की डंडी से खड़-खड़ करके पलड़ा बजाना शुरू कर दिया तो जूती वालों का ध्यान सरफ़ू की खोपड़ी से हट गया। पुकारकर अलीजान बोला, 'बात सुनें, सब भाई अलीजान की बात सुनें ! सब झगड़े का फ़ैसला ये है कि सौदागड़ अपनी बेगम को ले के दड़ियाबाबा के तकिये पे चलें औड़ बुन्याद खोद के देख ली जाय !···क्यों जी सगड़ंग साब ?'

जाने कौन-सी नाक़िस घड़ी से इस रौनक़महल की बुनियाद पड़ी है कि एक न एक झंझट निकलता ही चला जाता है। महल सुसरा न ऊपर को उठता है न नीचे को जाता है। बार-बार जितना उठता है उतना ही बैठ जाता है।

सबरंग साहब ने अलीजान की ज़ुबानी निकला हुआ जन-जनार्दन का इंसाफ़ मंज़ूर कर लिया कि, 'है तो यह नुक़सान की बात, पर सचाई मालूम करनी हो तो इमान से हम तैयार हैं यह ग़च्चा खाने के लिए !'

और हाय रे, कहां धोखा खाया है सौ बरस के तजरुबेकार आदमी ने सचाई के नाम पर। ताल ठोककर बुंदू ने ललकार मंज़ूर कर ली। बोला, 'मंज़ूर है। हम बिना मज़ूरी खोदेंगे। जो बच्चा वां पा गया तो हम उसी बुन्याद में वां की वईं अपने हात से पीरा की कबर चिन देंगे !···'

सबकी तरफ़ देखकर पोपले मुंह से बुंदू चिल्लाया, 'क्यों जी ?'

सब पीरा की क़ब्र खोदने के लिए तैयार हो गये।

उठकर सबरंग खड़ा हो गया, 'हम अभी सौदागर से और उनसे कहते हैं।'

इस तरह सरकारी योजना के एक भाग की सफलता का समाचार हाई कमान को सुनाने के लिए सबरंग घुटनों से नीचे ही लुढ़कता हुआ दुमंज़िले की तरफ़ चला गया ।

□□

बच्चे की ख़ुशी में नाचने के लिए बुलावे के बावजूद रौनक़ न आ सकी पर उसमी ग़मी में तो बिना बुलाए ही शामिल होना फ़र्ज़ था ?

बाल बखेरे, बेहाल अमीना आंगन में उजड़ी पड़ी थी—टूटी हुई सूखी शाख़ की तरह ठूंठ जली हुई चिता के बचे हुए लक्कड़ की तरह बुझी हुई। यह क्या हो गया इस बेचारी के साथ ! देवरानी को इस ख़स्ताहाली में देखकर जेठानी की हिलकियां बंध गईं। करीमन को भी रोना आ गया तो और सब भी रो उठीं। महल्ले में रोआराट की आवाज़ पहुंची तो एक-एक जनी अपना-अपना फ़र्ज़ निभाने के लिए पीरा के घर आने लगीं और रोने में मदद करने लगीं।

असली और नक़ली मोतियों के रिले-मिले ढेर के ढेर में से असली-असली छांट लेना मुमकिन है पर औरत के असली-नक़ली आंसुओं की पहिचान मुमकिन नहीं है ।

रौनक़ मुबक उठी, 'मैं नसीबों जली तो रमज़ानी को गोद बिठाने वाली थी । हाय अल्ला मुझे जैसा का तैसा कर दिया—मैं लुट गई ।'

अमीना तो अपने ग़म में होश खोये पड़ी थी पर रौनक़ की इस आहोज़ारी से चौकन्नी होकर करीमन कनखियों से ताककर इस हैस-बैस में पड़ गई कि अल्ला यह कोठे वाली की ममता अमीना के लिए यकलख़्त कैसे उमड़ पड़ी ? किसी ने कुछ नहीं कहा तो आप ही आप रौनक़ बोली, 'और अब कोई पूछे या न पूछे, बात क्या कोई छुपी वी थोड़े ही रह गई है !'

करीमन के कान खड़े हुए । बोली, 'क्या ?'

अमीना सुनने से वंचित न रह जाय, इतनी आहिस्ता से फुसफुसाकर रौनक़ ने कहा, 'यही कि यह करतूत ख़ुद इनके मर्द की है ! मुए के दिल में यह ख़याल था कि यह बच्चा मेरा नहीं है ।'

पट से अमीना ने आंखें खोल दीं।

करीमन ने कहा, 'ऐ तुम कै क्या रई ओ ? कीड़े पड़ें कैने वालों के मूं में !'

रौनक़ पल्ला झाड़कर बोली, 'बी मैं कौन हूं कहने-सुनने वाली ? बग़दाद का जन-जन बच्चा कह रहा है कि जब पीरअली साल भर से घर में थे ही नहीं तो उनकी औरत के बच्चा हुआ कैसे ?'

औरतों ने 'हाय अल्ला' कह कर फटे हुए मुंह उंगलियों से ढंक लिए।

ज़मीन पर आंखें फाड़े पड़ी हुई अमीना यों उठकर बैठी हो गई जैसे आमिल ने मामूल (जादूगर ने माध्यम को) को हाथ के इशारे से उठाकर बिठा दिया हो।

रौनक़ ने कहना जारी रक्खा, 'ऐ जो सुना उस पर ख़ाक डालो, पर हमने अपने छज्जे से ख़ुद देखा कि लोग उन्हें आते-जाते को छेड़ते थे। पीरअली को यह यक़ीन था कि बच्चा हराम का है !'

गले हुए गर्म सीसे की तरह धधकते हुए यह बोल अमीना के कानों में घुसते चले गए।

कानों की लवें पकड़कर करीमन बोली, 'लाहौल पढ़ो, लाहौल पढ़ो !'

रौनक़ ने आगे बात बढ़ाई, 'हमें यक़ीन हो या न हो, मगर रैयत को इसमें बिलकुल शुबहा नहीं है कि इस ज़ालिम ने ख़ुनस के मारे बच्चा ज़मीन में दबा दिया !'

औरतों ने सीना कूट लिया, 'हये-हये, हये-हये !'

खाट की पट्टी से उठकर रौनक़ ने आख़री छुरा मारा, 'पब्लिक कह रही है कि मेरे महल की बुनियाद उखाड़कर देखेंगे। मैंने कहा देख लो, जहां इत्ता नुक़सान हुआ है वहां और सही ! झूठ-सच तो सामने आ जाएगा···'

फिर अमीना को पुचकारकर बोली, 'तुम बैठी रहो बीबी घर में चैन से। मैं एक-एक ईंट उखड़वा दूंगी अपने मकान की। अगर बच्चे का कहीं निशान भी पा गया तो देखना पीरअली की वहां क़ब्र न बनवा दूं तो कहना !'

रमज़ानी का स्यापा करने को आई हुई रौनक़, अमीना को जिंदा जलाकर तेज़ी से चली गई।

सारे बगदार में दोज़ख़ की आग धधक उठी। घर-घर में आर्त्तनाद और शोरो-शर बरपा हो गया। बस्ती का यह कोलाहल, आहोज़ारी, लानत-मलामत, और छी-थू की धिक्कारें पीरा के सुनसान क़ब्रिस्तान जैसे अंधेरे घर की दीवारों को छेदकर अकेली अमीना के सर पर बरस पड़ी।

'क्या यह सच है !···क्या वाक़ई मिस्त्री मुझे बदचलन समझता है ? ··क्या रमज़ानी को वह मेरी हरामकारी की औलाद समझता है ?···क्या इसी शुबहे में उसने बच्चा बुनियाद में दबा दिया ?'

दीवारों ने चीख़कर जवाब दिया—'हां यह सच है !'

'क्या लोग बुनियाद खोदकर मुद्दआ निकालेंगे ?'

दीवारों से गूंज उठी—'हां निकालेंगे।'

'फिर औलाद की बराबर में मेरा सुहाग भी दबा देंगे !'

दरो-दीवार, ज़मीन और छत में से सारी बगदार के लोग-लुगाइयों के तमतमाये हुए चेहरे एक साथ चिल्ला उठे—'हां, कल दिन निकलते ही तेरी उस हराम की औलाद के बराबर में ही तेरे मियां को दफ़न करके तेरे सलोने चेहरे

पर रंडापे की सियाह-फ़ाम कालिख पोत देंगे !'

अमीना ने इतने ज़ोर की चीख़ मारी कि दरियाशाह का तकिया थर्रा उठा !

☐ ☐

तकिये पर किसी औलिया के उर्स की तरह भीड़ उमड़ पड़ी ।

परदेसी कारीगरों का जत्था, देसियों की धकापेल, सौदागर, बेगम, सबरंग, अल्लाबंदा, अलीजान । पीरा पागल तो तभी से वहां पड़ा हुआ चौकीदारी कर ही रहा था । अपने बच्चे की तलाश में उसने रही-सही चुनाई तोड़-फोड़कर फेंक दी थी, ईंट, चूने, रेती-रोड़ी के ढेर इधर-उधर सारे तकिये पर छितरा दिए थे; तकिये के इर्द-गिर्द का इलाक़ा खूंद मारा था और आख़िर मजबूर होकर ताज्जुब करने के लिए संयोग से वह उसी जगह थक-हारकर बैठ गया था जहां बच्चा दबा हुआ था ।

पीरा को यह तो मालूम था ही नहीं कि यह सारा गांव का गांव उसकी मौत का परवाना लेकर टीले पर इकट्ठा हुआ है । बेचारे ने समझा कि ये सब हमदर्द उसका बच्चा ढुंढवाने आये हैं । जान के गाहक भाईबंदों को हमदर्द समझकर दीन दृष्टि से पागलों की तरह मुंह बा कर देखने लगा ।

अलीजान ने कहा, 'पीड़ा, अपने आप ही बता दे बच्चा कहां गया !'

एक बहुत गहरी सांस भरकर पीरा ने कहा, 'सारे में ढूंढ लिया, कईं मिला ई नंईं !'

ज़ोर से धमकाकर अलीजान ने कहा, 'अड़े हम कह ड़ये हैं कि अब भी बता दे बच्चा कहां गया !'

धमकी से हैरान होकर सीधे स्वभाव पीरा बोला, 'अरे मुझे खबर होती तो मैं बता ना देता ?'

पीरा की गुस्ताख़ी से चिढ़कर रौनक़ ने कहा, 'ऐ क्या सभी अक़्ल के दुश्मन हो ? ऐसे कौन बतला देगा !'

सबरंग ने कहा, 'जब हमने देखा तो इमान से यह यहीं बैठा था और बच्चा इसके पास यहां इधर में लेटा हुआ था ।'

रौनक़ चीख़ पड़ी, 'देखो रे लोगो, ग़ज़ब देखो, ग़ज़ब देखो ! कम्बख़्त अपने ही हाथों अपना ज़िन्दा बच्चा दफ़नाकर उसकी क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ने के लिए बैठा है !'

अब कुंदज़हन (निर्बुद्धि) पीरा की समझ में आया कि यह समझ रहे हैं कि रमज़ानी को मैंने दबाया है । हक्का-बक्का होकर हमदर्दों के मुंह ताकने लगा ।

तुरुप की बेगम ने दांव मारा, 'यहीं खोदकर देखो जी !'

और फ़ौरन ही बुंदू मियां की करारी हड्डियों के फ़ौलादी हाथों की चोटों से तकिया हिलने लगा ।

आलम खुदाई पर झुक पड़ा—सब के दम बंद, ऊपर के ऊपर, नीचे के नीचे ! सन्नाटा—सिर्फ़ फावड़े की खस-खस, खस-खस और कुछ नहीं ।

दाढ़ीवाले ने अपने साथी के कान में कहा, 'नज़र रखना मियां ।'

कि फावड़े की खसखसाहट के ऊपर ग़ालिब होकर रौनक़ के एकदम ज़ोर से बैन करने की आवाज़ सुनाई दी, 'ऐ ख़्वाजा मेरी गोद वीरान कर दी । ऐ मैं उस बच्चे को गोद बिठाने वाली थी—ऐ मैं लुट गई लोगो ! मेरे दुश्मन को पकड़ो या मुझे भी इसी में दबा दो !'

स्यापे से कलेजे दहलाकर अचानक रौनक़ खुदाई में कूदने के लिए बेतहाशा दौड़ पड़ी । सौदागर, बंदे और सबरंग तीनों ने लपककर उसे पकड़ लिया । वह छूटने के लिए छटपटाकर चिल्लाई, 'छोड़ दो, छोड़ दो मुझे ! मर जाने दो, दफ़ना दो मुझे अपने बच्चे के साथ !'

सौदागर ने रौनक़ की कौली भरकर रोनी-सी पुकार लगाई, 'बेगम क्यों हमें तबा कर रई ओ !'

सबरंग ने रोक लगाई, 'इमान से तुम्हें अम्मीजान की क़सम है ।'

अल्लाबंदे ने समझाया, 'कसम से पहिले देख तो लो क्या निकलता है ज़मीन से !'

इस क़स्मा-धर्मी से मजबूर होकर रौनक़ तो रुक गई पर झल्लाये हुए बुंदू का सच-झूठ का न्याय करने वाला फावड़ा नहीं रुका । वह दबादब-दबादब ख़ंदक़ की मिट्टी खोदकर फेंके जा रहा था । ख़ंदक गहरी होती चली जा रही थी और भीड़ उस पर झुकी पड़ रही थी कि यकायक भूकम्प आया ।

भीड़ को तितर-बितर करता हुआ, आंधी की तरह लोगों की आंखों में धूल झोंकता हुआ एक बवंडर-सा आया और खुदती हुई ख़ंदक के ऊपर फैलकर उसने अपने तमाम फैलाव और ताक़त से बुंदू का उट्ठा हुआ फावड़ा ऊपर का ऊपर झेल लिया । उस घटाटोप में से एक चीर डालने वाली चीख़ सबको सुनाई दी, 'दुहाई है अल्लाह की, मुजे बच्चा नईं चैये !'

भीड़ के पीछे से दाढ़ीवाले के साथी ने आगे को उचककर देखा तो दाढ़ीवाले ने पूछा, 'दीख रहा है न ?'

साथी ने कहा, 'जी हां दीख रहा है ।'

और तब लोगों ने देखा कि बाल बखेरे, कपड़े फाड़े, तन-बदन की सुध खोये, बुंदू का फावड़ा दोनों हाथों में रोके हुए वह पीरा की औरत अमीना का बवंडर है ।

पहचानकर बुंदू ने कहा, 'हट जा बीबी, खुल जान दे सच-झूठ !'

अमीना चिल्लाई, 'मुजे नईं चैये सच-झूठ, मुजे नईं चैये सबूत, मुजे नईं चैये

बच्चा, मुजे कुछ नईं चैये !'

अमीना की चिल्लाहट के ऊपर चढ़कर रौनक़ की चिल्लाहट आई, 'लोगो जल्दी खोदो, मेरे दिल में आग लगी हुई है, शोले उठ रहे हैं !'

अमीना की पकड़ से फ़ावड़ा खींचते हुए बुंदू चीखा, 'लड़की, हट जा बीच में से !'

अमीना ने फावड़ा और कसकर पकड़ लिया और वह गला फाड़कर रंभा उठी, 'मुजे मार डालो, मुजे काट डालो, मुजे रौंद डालो, मैं नईं हटूंगी, मैं नईं खोदने दूंगी, मुजे नईं चैये बच्चा !'

अमीना की इस डकराहट ने लोगों की समझ-बूझ छीन ली। सकते में आकर 'आगे क्या हो' इस गुत्थी का सुलझाव ढूंढने के लिए सब बेवकूफ़ की तरह एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। झड़प मारते हुए हैवानों को यकायक चौकड़ी भूला देखकर करीमन ने पुकारा, 'जब मां-बाप को ई अपनी औलाद का अता-पता नईं चैये तब दुनिया कोई मुजाम (ज़िम्मेदार) नईं अैं किसी की !'

बात ने बिजली का-सा असर किया। बुंदू ने फावड़ा छोड़ दिया। भीड़ का कसाव ढीला पड़ गया। करीमन की ललकार ने जमे हुए मोर्चे में दरार डाल दी—विचार की दिशा पलट गई। एक मर्मराहट-सी फैली कि 'ठीक तो है, जब खुद मां-बाप को ही ग़म नहीं है तो और किसी को क्या पड़ी है फटे में पांव फंसाने की !—बच्चा किसी ने किसी को दबाते हुए देखा तो है नहीं। यह भी तो हो ही सकता है कि नज़र बचते ही कोई जीव-जिनावर, लुच्चा-लफंगा ही उठाकर ले गया। यह बेकार का बावैला मचाने से और एक-दूसरे पर तोहमत लगाने से फ़ायदा क्या !'

अकस्मात् बाज़ी पलटती हुई देखकर रौनक़ के पांव उखड़े। क़दम जमाने के लिए समतल धरती की ताक-झांक में उसने अपने लालदेव और कालेदेव की तरफ़ देखा। अल्लाबंदे ने ठेका दिया, 'क़सम से कुछ भेद ही समझ में नहीं आता। इसी का बच्चा ढूंढ रहे हैं और यही अड़ांस लगा रही है !'

सबरंग ने ताज्जुब ज़ाहिर किया, 'इमान से ऐसा तो कभी देखा न सुना !'

अलीजान बड़बड़ाए, 'ये मुसड़ा साड़ा गाम ही सिड़फिड़ों का है !'

उखड़ते हुए मजमे में किसी ने सुना, किसी ने नहीं सुना। तीनों एक-दूसरे से शिकायत-सी करके रह गए। लेकिन इतनी देर में उस बर्क़ीदमाग़ (तीव्रबुद्धि) ने पांव जमा लिये—बदलता हुआ जनमत देखकर रौनक़ ने सफ़ाई से पैंतरा पलटा। झपटकर सौदागर के कंधे से जा लगी और मुस-मुसाकर रोती हुई बोली, 'ऐ मैं समझ गई इस जंजाल को। यह तुम्हारे भाई ने और उसकी जोरू ने मिल के टोटका किया है हमारे ऊपर ! इनकी कोशिश यह है कि मकान किसी तरह बन-कर पूरा न हो और हमारी जान मुश्किल में पड़ जाय !···ऐ यह तो सांसत हो गई

हमारी जान को···कहीं इसी हालत में मौत न आ जाय हमें···सबरंग भाई जल्दी चलो, हमें मितली आ रही है।'

सारी बात को कुछ समझा, कुछ नहीं समझा पर मितली की बात पर चौंककर सौदागर बोला, 'मिचली ?'

सबरंग ने कहा, 'आपको तो दूल्हा भाई फ़ुर्सत ही नहीं है बानो की तरफ़ देखने की। इमान से उन्हें तो उसी दिन से मितली आ रही है जिस दिन से बुनियाद खुदनी शुरू हुई है ! इस खोद-खाद उठा-पटक से तो इमान से अब बानो की जान को ही ख़तरा है, आगे आप मुख़्तार हैं।'

इस खुशख़बरी से घबराकर सौदागर अपने कारीगरों पर फट पड़ा, 'मियां तुमने काम क्यों थाम रक्खा है, तुम मरवाओगे क्या हमें ?'

हुक्म की देर थी कि दाढ़ी वाले ने किर्दगार को आवाज़ लगा दी। साथियों ने नारा बुलन्द किया और फ़ौरन रौनक़महल की चुनाई में फिर लग्गा लगा दिया।

सौदागर अपनी बेगम के क़दमों में पलकें बिछाकर ऊंची-नीची धरती से उन्हें अधर ही अधर उठाकर तकिए की ऊबड़-खाबड़ सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे।

उछीड़ हो जाने के बाद अमीना ने आपा संभाला। घुटनों पर हाथ टेककर टूटी हुई-सी जुड़कर उठी, उघड़े बदन पर फटे कपड़े सरकाये, बिखरे बाल धूल भरी ओढ़नी से ढंके, ज़बरदस्ती आंसुओं का बांध बांधा, और इतनी तैयारी के बाद मियां की मौत को टाला देकर वह आहिस्ता-आहिस्ता चलकर पत्थर की तरह गुमसुम बैठे हुए पीरा के पास गई और उसके घुटने में उंगली छुआकर धीरे से बोली, 'चल !'

पर पीरा में जुम्बिश नहीं आई।

अमीना ने उसका हाथ खींचा, 'चल खड़ा हो जा !'

पीरा में हरकत नहीं हुई।

अमीना घुटने मोड़कर उसके सामने बैठ गई और मुश्किल से रुलाई पर क़ाबू करके बच्चे की तरह उसे बहलाती हुई बोली, 'हीरा, जो हो गया सो हो गया, तू घर चल। तू डर मत, मैं किसी को तुस्से आंख बी नईं मिलाने दूंगी। तू मजूरी कर या मत कर, चल के घर में बैठ। चल, मैं तुजे अपना रोना भी कबी नईं सुनाऊंगी—चल, उठ !'

पीरा की सीपियां छलक पड़ीं। गोया आसमान रो पड़ा। गोया फ़रिश्ता रो पड़ा, गोया इन्सान रो पड़ा, गोया ईमान रो पड़ा ! बहुत हँसना भी अच्छा नहीं होता।

भर्राये हुए गले से जो कुछ उसने कहा, उसका मतलब था कि 'अमीना मैंने रमजू को नहीं दबाया—मुझे मलूम नईं कि वह कहां गया।'

अमीना उसके घुटनों में मुंह देकर फूट पड़ी। ज़बरदस्ती रोके हुए आंसुओं में सैलाब आ गया। डोंगी डांवांडोल हो गई।

सुबकियों से हिलते हुए अमीना के नंगे सर को सहलाते हुए पीरा ने कहा, 'रो मत !'

अमीना बोली, 'तू घर चल !'

आह-सी सांस लेकर पीरा ने कहा, 'घर कैसे चलूं अमीना, मेरी चौकीदारी में चोरी हो रई है !'

अमीना ने आंसुओं से धुला हुआ चेहरा पीरा की तरफ़ उठाया, 'पीरा, तू कैसे पकड़ेगा चोर को, वो सैजोर अै, तू कमजोर अै !'

ज़बरदस्ती ही सही, पर पीरा ने ज़रा हँसकर कहा, 'अरी इस बात का क्या डर ! चोर तो चोर ई है !'

'अरे तो कौन चोर अै, कौन साह अै, इस बात का फ़ैसला कौन करेगा मियां ?'

पागल के मुंह से निष्ठा बोल पड़ी, 'वोई करेगा जिन्ने हमको जुम्मेवारी दी है।'

फिर कुछ सोचकर बोला, 'अब तो उसी को ढूंढ़ कै लाऊं तो फैसला हो !'

'यह फिर कहीं जाने की सोच रहा है क्या ? जाने कहां जायगा ? कब तक ढूंढेगा, कहां ढूंढेगा, कब आयेगा, किस हाल में आयेगा, चारों तरफ़ दुश्मन ही दुश्मन लगे हुए हैं, आयेगा भी या'— घबराकर अमीना ने कहा, 'कहां ढूंढेगा ? फकीरों का क्या ठिकाना ? तेरा रमजू तो गया, अब तू बी नई होगा तो कैसे रऊंगी मैं ? पीरा, तू घर चल, कंई मत ढूंढ किसी को !'

फिर रोने को हुई तो पीरा बोला, 'देख अमीना, तू रोयेगी तो मुजे भौत दुख पौंचेगा। रमजू की बात तो ये है कि मेरी कुछ खता नई है, बस और क्या कऊं ? घर की बात ये है कि घर तो मैं अब दरियाबाबा को ढूंढ लूंगा जभी आऊंगा। इस बात को पत्थर की लकचीर समझ ले। बस, जा तू !'

इतना कहकर भूखा प्यासा पीरा पागल अपनी जान से प्यारी बीबी को रोती-कलपती छोड़कर तकिये के पीछे वाली पगडंडी की तरफ़—उस पगडंडी की तरफ़ जिससे दरियाशाह पीरा को दूसरी पोटली देने के लिए आये थे—जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाकर चल दिया।

पुकारती हुई अमीना उसके पीछे दौड़ी तो पीछे से करीमन ने आकर उसे पकड़ लिया और बोली, 'घर चल किकरौली वाली, सबर करके पर्दे में बैठ। मरद की असल नई जानी तो तू औरत काय की है ! वो नकली जात का नई है, उसे बदलने की कोशिश मत कर, उसकी असल की खैर मना ! चल, तमासा बनेगी तो दुनिया जुड़ जायगी। चल, अल्ला उसे अकूप (बुद्धि) देगा तो आ जायगा।'

पीरा ने पीछे फिरकर नहीं देखा।

प्रेम से मोह को काटकर छुड़ाने के लिये कर्त्तव्य बड़ा पैना हथियार है।

जो कर्त्तव्य के खांडे-दुधारे बांधना जानता है उसके लिये मोह कच्चे धागों का बंधन है।

और कर्त्तव्यनिष्ठ के लिये तो प्रेम ही प्रेम है, प्रेम के सिवा और कहीं कुछ नहीं है।

इस प्रेमी को कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर होते देखकर साथी ने दाढ़ीवाले मेमार से कहा, 'बड़े मियां वह पीरअली कहीं जा रहे हैं, उन्हें रोकूं ?'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'कोशिश करके देख लो।'

साथी ने पुकारा, 'मां पीरअली !'

पीरा रुका और लौटकर दाढ़ीवाले के साथी से बोला, 'मुझे अवाज मारी क्या मिस्त्री जी ?'

'मैंने कहा उधर कहां चले, घर नहीं गये ?'

'घर तो मियां अब पीछे जाऊंगा, पैले एक आदमी को ढूंढ के लाना है।'

'अजी जिसको आना होगा वह यहीं आ जायगा, तुम इस हालत में औरत को छोड़कर क्यों परदेसों में हैरान होते हो ?'

पीरा ने कहा, 'अजी परदेस की हिरियानी तो झेल लूंगा मिस्त्री जी, हिरियानी तो ससुरी ह्यां की जबरजस्त है ! जाता हूँ, ढूंढे बिना अब काम चलने वाला नईं है।'

पीरा ने फिर जंगल की तरफ़ डग बढ़ा दिये।

दाढ़ीवाला साथी की तरफ़ देखकर हँस पड़ा, 'मियां ये बहुत दूर पहुंचे हुए लोग हैं ! ये दुनिया के नहीं, ज़मीर के इशारे पर चलने वालों में से हैं, इनकी रोकथाम काम नहीं देती, तुम काम लगाओ।'

□ □

पीरा चला गया। कहां ढूंढेगा ? गली-कूचों में जन-जन के चेहरों में उसका चेहरा ढूंढेगा, जंगलों की ख़ाक छानेगा, ख़ानकाहें (धर्मशालायें) खूंदेगा, दरगाहें देखेगा, मस्जिदों में तलाश करेगा, उर्सों में भटकेगा, मज़ारों पर पूछेगा, जो दिल में है उसे दुनिया में तलाश करेगा। मिल जाय तो मिल भी जाय, कौन जानता है कि किस को कहां मिल जाय !

ज़ियारत (तीर्थयात्रा) कराने के भी कैसे-कैसे बहाने हैं !

पीरा चला गया। मीरा का रास्ता साफ़ हो गया। और किसी को तो फ़क़ीर से या उसकी जगह-ज़मीन से कोई वास्ता ही नहीं था। सब यह सोचकर बैठ गये

कि मीरा जाने पीरा जाने, फ़क़ीर जाने उसका तकिया जाने, किसी को नागहानी बला मोल लेने की ज़ुरूरत क्या है । बस, फिर क्या था, मैदान खाली देखा तो ग़नीम की फ़ौजें मंज़िल-दर मंज़िल मोर्चा मारने लगीं । जिस ज़मीन पर दीवारों को सर उठाने के लाले पड़ रहे थे उस पर इतनी तेज़ी से तामीर शुरू हुई कि रौनक़महल का ढांचा राहगीरों को कोसों दूर से दिखाई देने लगा ।

खुदा की क़ुदरत है कि रौनक़महल की बुनियाद रखते ही रौनक़बेगम का हैज़ (मासिक) बन्द हो गया । कई रोज़ तक जिन्नात की खोद-खाद और उखाड़-पछाड़ से उनके पेड़ू में दर्द होने लगा था । चुनाई की ढहाई के साथ-साथ हमल ज़ाया होने का ही अंदेशा खड़ा हो गया था, पर वह तो खैर हुई कि टोटका करता हुआ बदज़ात पीरा पकड़ा गया नहीं तो उसी दिन उनकी जान पर बन आई थी जिस दिन महल के अहाते में मितली आई थी ।

इन हालात में यह बहुत ज़रूरी समझा गया कि दुआओं का दिया हुआ पहलौठी का पेट होने की वजह से मर्द का—यानी शौहर का—साया बीवी पर न पड़ने दिया जाय । लिहाज़ा ज़नानखाने में सौदागर की आवाजाही पर सख़्त पाबन्दी लगा दी गई । तब से इधर तो पर्दे के बाहर ही बाहर से माशूक़ की आवाज़ सुन-सुनकर किसी तरह आशिक़ जी रहा है, और पर्दे के अन्दर ही अन्दर महल के साथ-साथ महल वाली का पेट बढ़ रहा है ।

सोने पर सुहागे की तरह रौनक़ के चोचले शुरू हुए । रौनक़ के दोहदों ने रौनक़ाबाद में डोंडी पीट दी की "अल्लाह के करम से बेगम उम्मीद से हैं, रैयत वलीअहद की आमद का इन्तिज़ार करें !" अल्ला देने पर आता है तो यों देता है जैसे रौनक़ को दिया, और लेने पर आता है तो यों ले लेता है जैसे अमीना से ले लिया ।

उस दिन क्या हुआ कि रौनक़ ज़रा ज्यादा ही बेचैनी महसूस करने लगीं । घर में सिर्फ़ चचाबंदे और दूल्हा मियां ही थे । दूल्हा मियां क्योंकि अन्दर जा नहीं सकते थे सो चचाबंदे ही कभी अन्दर, कभी बाहर चक्कर पर चक्कर काट रहे थे । अन्दर रौनक़ लगातार चीखे-पुकारे जा रही थीं । घबराहट में जब और कुछ न सूझा तो चिलम औंधी करके जैसे नंग-धड़ंग बैठे थे वैसे के वैसे ही उठकर लुंगी लपेटते हुए सौदागर खुद हकीम लुक़मान को बुलाने के लिए दौड़ पड़े । बगदारियों के पैदाइश से दफ़न तक के ऐमाल के लिए ज़िम्मेदार, बुंदू मेमार से उम्र में अट्ठारह साल बड़े, यानी नौ ऊपर सौ साल के गांव भर में एक लुक़मान साहिब ही तजरुबेकार और खानदानी तबीब थे, सो लदफद इन्हीं लुकमान साहिब को ग़ालिबन कंधों पर बिठाकर जब सौदागर वापिस दुमंज़िले में लौटे, तब भी अन्दर से लगातार हाथ-पांव पटकने और चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं ।'

मीरा ने हांफती हुई पुकार लगाई, 'चचा हकीम जी आ गये अैं ।'

अन्दर से कराहट आई, 'ऐ हम नहीं करायेंगे बग़दादी हकीम का इलाज !'

मीरा ने नीचे से ही ऊंची आवाज़ में मिन्नत की, 'अजी मा न जाओ कैना। नबज़ दिखा लो, हक़ीम जी बड़े हुस्यार हैं।'

अन्दर से मजबूरी सुनाई दी, 'ऐ हम किसी ग़ैर के हाथ में हाथ कैसे दे सकते हैं !'

मीरा ने कहा, 'अजी लुक़मान जी कोई ग़ैर आदमी नईं अैं।'

ऊपर से फ़ैसला सुनाया गया, 'ऐ चाहे हमारी जान चली जाय हम हाथ ग़ैर के हाथ में नहीं देंगे !'

अब क्या हो ? लुक़मान साहब अपनी एक सद नौ बरस की हिनाई दाढ़ी में काफ़िरों से धूल झुकवाकर कोफ़्त में पड़ गये।

मजबूर होकर मीरा हकीम जी से बोला, 'वो तो मानती नईं, तुम अन्दाज से ही कुछ दवादारू दे दो !'

झल्लाकर हकीम जी ने कहा, 'म्यां कुछ मर्ज़ भी तो मालूम हो, दवादारू क्या सरसाम की दे दें ? मरीज़ की सूरत-शक्ल तो देख लें !'

मीरा ने कहा, 'अजी सूरत क्या दिखावेंगी जब नबज ई नईं दिखा रईं अैं ? और, मरज तो ये अै कि महीने चढ़े हुए हैं !'

'कितने ?'

'ये ई कोई चार-पांच-छः होंगे !'

दरवाज़े की तरफ़ लौटते हुए हकीम साहब ने कहा, 'तो अभी से हायतौबा मचाने की क्या बात है भले आदमी ?'

तभी ऊपर से एक 'हाऽऽय' सुनाई दी। मीरा झपटकर जाते हुए हकीम जी से लिपट गया और गिड़गिड़ाकर बोला, 'अजी वो तो बड़ी तड़फड़ा रई अैं हकीम जी !'

मीरा की लपेट से अपने आपको रिहा करते हुए हकीम साहब ने राय दी कि, 'ज़रा समझा दो कि यह काम तो ऐसे ही ले-दे-से हुआ करते हैं, कुदरत की खेल हैं', और चले गये। मीरा फिर यतीम-सा खड़ा रह गया। ऊपर से लगातार हाय-पुकार जारी है। शौहर है, पर शौहर का साया तक मम्नूअ (निषिद्ध) है—करे तो क्या करे ? इसी सोच में था कि ऊपर बहुत ज़ोर की उल्टी होने की आवाज़ आई तो एक साथ चीख़ पड़ा, 'चचाऽऽ !'

चचा ने पर्दे से झांका तो बोला, 'अलीजान के ह्यां से जिलेबी लाऊं ताजी ?'

पर्दे के अन्दर मुंह डालकर बंदे मियां ने पूछा, 'बी जलेबी अलीजान की—'

कराहत-सी सुनाई पड़ी, 'हम नहीं खायेंगे बग़दाद की जलेबी, पेठा मंगवाओ आगरे का !'

बंदे ने पर्दे से मुंह निकालकर कहा, 'मियां आगरे से पेठा मंगवाओ !'

बेगम को सभी चीज़ें आगरे की चाहिए, महल भी, पेठा भी। मुमताज़ बेगम की रूह से बहुत क़रीबी रिश्ता मालूम होता है। रिश्ता होगा, पर पेठा कहां से आये? फ़िक्रमन्द होकर आप ही आप बुदबुदा उठा, 'आगरे का पेठा?'

कि फिर वही कलेजा फाड़ आवाज़ आई और आकर सीधी मीरा के तन से लग गई। घबराकर पुकारा, 'चचा नींबू लाऊं कंई से?'

बंदे ने पर्दे में मुंह डालकर पूछा, 'नीबू मंगवायें?'

बेगम चिल्लाईं, 'ऐ हम नहीं चूसेंगे बग़दादी नीमू! संतरा मंगवाओ नागपुर का।'

बाहर को झांककर बंदे मियां बोले, 'मियां नागपुर के संतरे को कह रही हैं!'

नागपुर का संतरा?—नागपुर का रास्ता किधर से है? जुग्राफ़िया मालूम नहीं। संतरा तो दौड़-धूप करके कहीं का मिल भी जाय पर नागपुर का कैसे मिलेगा?—किसी और आसान चीज़ पर नीयत लाने की ग़रज़ से बोला, 'चचा गुड़ के सेव...'

बंदे ने उनसे कहा, 'बी गुड़ के सेव...'

थुकथुकाई-सी आवाज़ आई, 'ऐ हम नहीं चक्खेंगे बग़दादी गुड़ के सेब, रेवड़ियां मंगवाओ मेरठ की!'

बंदे ने हुक्म तामील कर दिया, 'मियां रेवड़ियां मंगवाओ मेरठ की। घंटाघर से आगे बढ़ के गली के नुक्कड़ पे ही बैठता है होटल के सामने।'

लाचार मीरा मेरठ जाने वाले किसी मुसाफ़िर की तलाश में दरवाज़े की तरफ़ चला तो अचानक ऊपर से आवाज़ें आनी यकायक बंद हो गईं। ठिठककर ऊपर की मंज़िल को कुतुब साहब की लाट की तरह ताकने लगा। अल्लाबंदे बिल्ली के पांव अचक-अचक उतर के नीचे आये और आहिस्ता से बोले, 'ज़रा आंखें लग गयी हैं।'

मीरा ने चैन की सांस ली और मसनद का सहारा लेकर ढह पड़ा। 'या अल्लाह' कहकर टिकते हुए बंदेमियां गलगलाकर बोले, 'कसम से हम उन जश्नशाह की एक-एक बात याद करके हैरान हैं। अब जिस दिन इमारत पूरी हो उसी दिन ज़चगी न हो तो हमारा कान तराश लेना!'

मुतमइन (आश्वस्त) होकर मीरा ने दूर की पूछी, 'चचा, क्या अंदाज है, क्या होगा?'

भवों में पुतलियां चढ़ाकर बंदे ने कहा, 'भई जाने क्या हो जाय। यह तो कसम से जब हो जाय तभी मालूम हो!'

कुछ होने-करने का सारा दारोमदार जैसे चचा पर ही हो, इसलिए ख़ुशामद-सी करते हुए मीरा बोला, 'चचा हमें बड़ा सहारा है तुमारा!'

शाम हो गई थी। मज़दूरी वग़ैरा चुकाकर मीर मुंशी की सवारी दरवाज़े

से आकर लगी। सबरंग बेग रब्बे से नीचे उतरे और अगले रोज़ के माल-ताल की ज़ुरूरियात का चिट्ठा फड़फड़ाते हुए सौदागर से बोले, 'लाइये भाई जान, रक़म दिलवाइये !'

पेठा, संतरा, रेवड़ी और गुड़ के सेव, मीरा सब भूल गया। कटी जेब में हाथ डालते ही आदमी जैसे चलता-चलता धक से रुक जाता है वैसे ही मुंह फाड़कर पीरा ने पूछा, 'वो सब खरच हो गये इत्ते सारे ?'

बियाबान जंगल में चलते हुए बैल जैसे ख़तरे की बू सूंघकर कान खड़े कर लेते हैं उसी तरह अल्लाबंदे ने कान खड़े किये। यह बात तो आज तक इस शख़्स के मुंह से कभी सुनी नहीं गई !

सीधी लीक में चलता-चलता पहिया सौदागर के सवाल से अचानक खड्डे में जा पड़ा तो सबरंग ने भी धचका खाया। ताज्जुब से 'ऐं' करके दोनों हाथों से कूल्हे पकड़कर बोला, 'सुना चचा, क्या कह रहे हैं भाईजान !' फिर भाईजान की आंखें-सी खोलकर कहने लगा, 'मियां उसके उप्पर तो पान सै कलदार मैं अपनी गिरह से ख़र्च कर चुका हूं इमान से।'

संभाला लेकर मीरा ने कहा, 'अच्छा तो और दे देंगे इसमें क्या अै ! तुम ज़रा उनके हाल-चाल तो देखो।'

सबरंग ज़ीने की तरफ़ चला तो पीछे से सौदागर बोले, 'आंख लग गई अै जरा, खुटका मत कन्ना !'

सबरंग आहिस्ता-आहिस्ता ज़ीना चढ़कर अंदर चला गया तो इफ़लास (कंगाली) और अरमान के पंजे में फंसे हुए मीरा ने हिलते हुए पर्दे को हसरत से देखकर अल्लाबंदे से कहा, 'वैसे हम भी ज़रा भीतर हुइयाते तो कुछ···'

चारों उंगलियों से अपना फटा हुआ मुंह फटाफट बंद कर बंदे ने कहा, 'यह हरकत न कर बैठना कहीं !'

सौदागर ने कहा, 'ज़रा सोती को ई देख लेते !'

ज़ालिम बंदा बोला, 'कसम से दीवाने हो सौदागर ! मियां पीर-फ़क़ीरों का दिया हुआ हमल है, शौहर का तो साया भी नहीं पड़ना चाहिए !'

दिल मसोसकर सौदागर उठे, 'अच्छा तो अच्छा जान दो !'

जैसे-जैसे आकाश में चांद चढ़ता है वैसे ही वैसे धरती का समुद्र उसकी ओर ठाठें मारता है। जितनी तेज़ी से इमारत ने सर उठाया उससे दस गुनी रफ़्तार से दुमंज़िले के तहख़ाने में दबा हुआ सोना उछाल मारकर तकिये की तरफ़ बढ़ चला। इस दौलत का दरिया उफनकर इतने वेग से अपने उगम की ओर बढ़ा कि बढ़ते-बढ़ते ख़तरे के निशान से जा टकराया। मीरा ने इस वेग की पोटली बांधने के लिए छाती अड़ाकर दोनों बांहें फैला दीं पर पानी में कहीं गांठ लगती है ?

मुमकिन है कि अलीजान पंसारी कुछ काम आ जाये ! सौदागर बोले, 'हम

अलीजान भाई के ह्यां हो के आते हैं, कुछ लेन-देन की बात करनी है। ज़रा देर में आवेंगे, दरवज्जा खुला रैन देना, नईं तो अवाज मारनी पड़ैगी—उनकी नींद उछट जायगी।'

□□

सौदागर के चले जाने के बाद तनहाई में अल्लाबंदे का ख़याल फिर वहीं से जुड़ गया जहां से टूटा था। यानी कि आज पहिली बार सौदागर के मुंह से यह सुनकर कि 'इत्ते सारे सब खरच हो गये' अल्लाबंदे को झरने की धार पतली पड़ती हुई नज़र आ गई। लालची चेलों का यह लोभी गुरु सोचने लगा—'ऐशबेगम और उसकी बेटी गई जहन्नुम में! उन्होंने तो बहुत बटोर लिया है, सबरंग हरामी माल-मज़दूरी में जेबें भर ही रहा है, यहां तो जो कुछ भी हाथ आया है वह लुभाव ही लुभाव में आया है। रौनक़महल पूरा होने तक खुदा मालूम इस आंख के अंधे और गांठ के पूरे मेमार की गांठ में कुछ रहता भी है या नहीं! माना कि जब तक हैं तब तक ऐशबेगम सही, रौनक़ सही, पर जब गज़ कांपने लगेगा और सुर कच्चे पड़ जायेंगे तब उस्ताद जी को कौन पूछेगा? बगदार की बेगम बनकर रौनकमहल में जा बैठेगी तब बूढ़े पहरेदार थोड़े ही बिठायेगी दरवाज़े पर? तौबा मेरी, दीन से जब वास्ता पड़ेगा तब पड़ेगा, पहिले दुनिया का बंदोबस्त न कर लेना सख़्त नादानी होगी।'

इंतिज़ाम के मुताबिक़ आज ऊपर सोने की सबरंग की बारी है, वह सो भी गया है। दरवाज़ा बंद हो चुका है। सौदागर गया है अलीजान के यहां, देर से आयेगा।

अल्लाताला से गुनाह बख़्शवाकर अल्लाबंदा उठा। जेब से डिबिया निकालकर अफ़ीम का गोला पानी में मसल-मसलाकर चढ़ाया, फिर एक तगड़ी-सी गांजे की चिलम जमाई और सूंडी तक दम खींचकर चिलम तसले में उलट दी। लटकन बुझाकर मसनद के नीचे की दरी का कोना उठाया, पत्थर की पटिया सरकाई और तहखाने में सरक गया। दोनों हाथ ऊपर को उठाकर पटिया खींचकर खांचे से मिला दी और नीचे उतरता चला गया।

दौलत साथ रखकर तो मिस्त्री लोग पिरामिडों में ज़िंदा भी रह सकते थे, मुर्दों को ही रखने की क्या ज़ुरूरत थी? दौलत सामने हो तो कब्रों में दम घुटने की कोई वजह तो है नहीं!

बंदे ने बास्कट की जेब से माचिस निकालकर जलाई तो देखा कि ताबूतों की तरह दो काठ के बड़े-बड़े संदूक रक्खे हुए हैं।

बंदे ने जल्दी-जल्दी एक ताबूत खोला और देखकर माथा ठोक लिया।—

ख़ाली संदूक का भारी-भरकम ढकना हाथों से छूट गया। धब्ब की आवाज़ से डरकर उछला तो नीची छत में इस ज़ोर से जाकर टकराया कि तुर्की टोपी से ढंका होने के बावजूद सर के बीचों-बीच अख़रोट के बराबर गोला उछल आया। गोला दाब-दूबकर फिर माचिस जलाई, दूसरा संदूक़ खोला—वह भी ख़ाली !

'या अल्लाह !'

यह नामुमकिन है कि बंदा दिल से अल्लाताला को पुकारे और वह रब्बुल-अर्बाब अपने बंदों की मदद को दौड़ा हुआ न आये। बंदेमियां की नज़र उस ताबूत के कोने में रक्खे हुए एक लोहे के संदूक़चे पर पड़ी। भारी-भरकम ढकने में खपोड़ी का चसकता हुआ अख़रोट अटकाकर संदूक़चा खोला—

अहाहा ! माचिस की तीली नूर चमकाकर बुझ गई।

मोहरें जितनी भी बच-खुच गई थीं, जो कि काफ़ी थीं, उनमें से जितनी भी तुर्की टोपी में समा सकीं उतनी भरकर पहिले लोहे का संदूक़चा, फिर काठ का संदूक़ झट-झट बंद करके ज्यों ही बंदे ने पल्टा लिया त्यों ही ऊपर से छत टूटी !—छत टूटी, यानी किसी के आने की आहट हुई।

'या अली ख़ैर !'—सर के बजाय पेट से तुर्की टोपी सटाकर अल्लाबंदा दीवार से चिपटकर कलामुल्लाह (क़ुरान) पढ़ने लगा।

उसी संदूक़ के पास मोमबत्ती की लौ टिमटिमाई। ख़ुद ख़जाने का मालिक अमीरअली सौदागर संदूक़ खोल रहा था। फूले हुए बिल्ले की तरह दीवार से रगड़ खाता हुआ अल्लाबंदा अधर-अधर सीढ़ियों की तरफ़ सरका और आख़िर बख़ैर सरज़मीन पर पहुंच गया।

अमीरअली ने संदूक़चा खोला और अपने छीजते हुए ख़ज़ाने पर नज़र डाली। अलीजान के पिलाये हुए गांजे के नशे में वह यह महसूस तक न कर सका कि गठड़ी में चोर लग गया है। सिर्फ़ एक उफ़-उफ़-सी करके रह गया कि 'यह कितना था और कितना रह गया है ? कहीं ऐसा न हो कि रौनक़महल का काम पूरा न हो और मेरा माशूक इल्लत में पड़ जाय !—या अल्ला !'

बड़ी पाक जगह मालूम होती है यह ! जिसको आता है यहीं अल्लाह याद आता है ! जिंदा लोग क़ब्रों में रहने लगें तो नीचे अल्लावालों की दुनिया बस जाय !

दो मुट्ठी मोहरें मीरा ने जेबों में डालीं और पेटियां हिफ़ाज़त से बंद करके ऊपर चला गया।

अल्लाबंदे गहरी नींद में सोये हुए थे।

□□

रात गुज़र गई। ऊपरवालों की मज़े में, नीचेवालों की नशे में। यों उतार सभी चीज़ों का बुरा, पर नशे का तो बहुत ही बुरा। आंखों की ऊपर की पलकें सूजी हुईं, नीचे की थैलियां फूली हुईं, चेहरे की झुर्रियां तनी हुईं, जबड़ा भिचा हुआ, जिस्म की हड्डी-हड्डी कुटी-पिटी, जुड़ा हुआ होते हुए भी मीरा बिखरा-सा पड़ा था। अल्लाबंदे रियाज़ी आदमी हैं। ज़र्दे की गिलौरी की जुगाली करते हुए उतार के खुमार को फिर से हरा करके, टूटे हुए तन को दुबारा जोड़ने के लिये ताज़ा चिलम जमा रहे थे कि मदद पर जाने के लिए तैयार होकर ऊपर से सबरंग को आते देखा तो छिछले पानी में पड़े हुए भैंसे की तरह औंधे से सीधा-सा होकर भरभरी-सी आवाज़ में मीरा ने पूछा, 'कैसा जी अै उनका ?'

सबरंग ने कहा, 'हैऽऽ ज़रा अच्छा, ज़रा मामूली।'

मीरा ने कहा, 'बैठो-बैठो।'

सबरंग बैठ गया। न साला कुछ बोला, न बहनोई। सुसर मियां तसले की राख में दबी हुई चिनगारी ढूंढने में लगे रहे। थोड़ी देर तक नशे के उतार की तरह ही माहौल अलकसाता रहा। आखिर मीरा ने कहा, 'सबरंग साब, इमारत में तो रकम भौत ई उठ गई !'

सबरंग साब ने कहा, 'इमान से भाईजान, हमने कौड़ी-कौड़ी दांत से पकड़कर छोड़ी है, अब इससे ज़्यादा क्या करें ?'

भाईजान ने समझाया, 'कारीगरों से यों कओ कै माल-ताल जरा कमती खपावें। हम तो जानते अैं, ये उनके हाथ की बात होती अै।'—फिर मुंह फेरकर कसकसाता हुआ बोला, 'एक तो इन कम्बखतों की मजूरी ई चौगनी अै !'

सबरंग ने कहा, 'मज़दूरी तो खैर महीन काम करने वालों की चौगुनी है तो कुछ ज़्यादा नहीं है, पर यह भी तो सोचिये की कमती माल से कारीगरों का क्या जायगा, हमारी ही इमारत कच्ची रहेगी !···इमान से यह क्या सलाह दी आपने ! ···क्यों चचा ?'

एक हाथ से खोपड़ी का गोला सहलाते हुए पान की पीक रोकने के लिए सौदागर के सर से ऊपर थूथड़ा उठाकर चचा बलबलाये, 'बरखुरदार इस इमारत का ताल्लुक़ तुम्हारी औलाद से है ! इमारत कच्ची रह गई तो कसम से बच्चा भी कमज़ोर रहेगा। ज़रा समझ से काम लिया करते हैं !'

हमदर्दी-भरी इस सच्ची-सीधी राय से क़ायल होकर मीरा ने जेब में हाथ डालकर एक छोटी-सी मुट्ठी भर मोहरें बाहर निकालीं और सबरंग को देते हुए कहा, 'लो फिर ये तो लो, बदलवा लो अलीजान से—' फिर झींककर बोला, 'बदलवाई बी काटेगा ई बक्काल का।'

थोड़ी-सी मोहरें देखकर सबरंग ने आंखें फाड़ीं, 'बस, यह इत्ती ही ? माल-मज़दूरी सब इसी में ?'

दुखियाकर मीरा ने कहा, 'मियां जरा हात खेंच के चलो, कै तो दिया !'

जैसे किसी और के हाथों लगी हो ऐसे ताज्जुब में पड़कर सबरंग बोला, 'ऐसी कित्ती रकम लग गई इमारत में !'

झुंझलाकर मीरा ने कहा, 'जाओ, इस बखत तो जाओ, फिर बात करेंगे !'

'इमान से बानो किसी दिक़्क़त में न पड़ जायें ।'—मिनमिनाता हुआ सबरंग उठकर चला गया तो बेकार की बातों से बचने के लिये अल्लाबंदे ने चिलम मीरा की तरफ़ बढ़ा दी । एक दम खींचकर खों-खों करके खांसते हुए मीरा की पोली छाती में से आवाज़ निकली, 'इस चिलम में माल कां अै सुसरा !'

ड्यूटी बदलने के लिये ऊपर जाते हुए अल्लाबंदे ने लापरवाही से मुंह फेरकर कहा, 'गांवठी माल है, क्या किया जाय !'

दौलत का चेहरा ही दिलकश होता है, उसकी पीठ पर कोढ़ के घाव होते हैं।

□□

बग़ल में हिसाब की पुरानी बही और हाथ में नई सोटी लिये जब सबरंग उस दिन काम का मुआइना करने मदद पर पहुंचा तो इमारत पर नज़र पड़ते ही सनाका खा गया। रोज़ ही देखता था, आज कोई नई बात नहीं थी, पर आज जो देखा तो ऐसा लगा जैसे बहुत दिन से न देखा हो ! सबरंग के मुंह से निकला, 'इमान से यह तो पूरा हो गया !'—वास्तव में इसमें घबराने की तो कोई बात थी नहीं, पूरा करने के लिये तो इसकी बुनियाद ही डाली गई थी । इसके लिए तो सारी खटापटी थी ही, इसमें सनाका खा जाने की क्या बात थी ?—लेकिन थी ?

जश्नशाह की भविष्यवाणी का पहिला भाग तो पूरा होने को आया । बुर्ज़ी की तरफ़ काने कौवे-सी गर्दन उठाये सबरंग सोचने लगा—'अब क्या होगा ?'

वसूलयाबी के लिये सत्यवादी के आगे चांडाल की तरह हाथ पसारे खड़े हुए दाढ़ीवाले ने खांस खखारकर कहा, 'दे दीजिये जनाब, दिन छुप रहा है ।'

बहिन के पेट से बच्चा पैदा करने की ज़िम्मेदारी परदेसी कारीगरों पर तो थी नहीं, पर अपने ही ग़म में पड़े हुए सबरंग उन्हीं से लड़ मरे । झुंझलाकर बोले, 'मियां चाहिये ही चाहिये, कुछ काम भी तो हो क़रीने का !'

साथी ने पूछा, 'क्या कमी रह गई जनाब ?'

एक दीवार पर आड़ी-टेढ़ी नज़र डालकर सबरंग ने पख़ निकाली, 'अमां यह दीवार तो टेढ़ी है !'

साथी बोला, 'गुनिया-डोरी डालकर देख लीजिये हुज़ूर !'

चिढ़कर सबरंग ने कहा, 'मां गुनिया-डोरी क्या होता है ? हमारी नज़र में गुनिया है। हमारे दुमंजिले तक से इसकी टेढ़ नज़र आती है, हम क्या यों ही कह रहे हैं ?—लो थामो।'

मज़दूरी की थैली लेते हुए दाढ़ीवाले ने कहा, 'आप बेफ़िक्र रहें दारोग़ाजी, कल शाम का काम ख़त्म होने के बाद हम रात में ही आकर इसकी जांच कर लेंगे। अगर टेढ़ी निकली तो आप यक़ीन रखिये, हम इसे कमर लगाकर सीधी कर देंगे। टेढ़-सीध देखना हमारा ज़िम्मा है, आप तो आगे के काम के लिये माल-ताल की तैयारी रखें, चलो भाइयो !'

कारीगर चले गये, पर सबरंग नहीं गया। घूम-घूमकर चारों तरफ़ चक्कर काटते-काटते सोचने लगा—'थोड़ा-सा ही तो काम बाक़ी है। यह कम्बख़्त मलकुल-मौत के नुमाइंदे न जाने कब पुकार उट्ठेंगे कि लो, हो गया पूरा !…फिर…?… फिर क्या होगा ?…गिरा दूं ?…दीवारें गिरानी तो मुमकिन नहीं हैं, रात-बिरात में आकर कोई बुर्जी ही गिरा दूं ! कुछ तो सोचने का वक़्त मिल ही जायेगा।'

काल की कैसी चमत्कारी लीला है। चुनाई ढहाने वाले पर पहरा-चौकी लगाने वाला आज खुद ही चुनाई ढहाने की चिन्ता से ग्रस्त है। उसने तो बुनियादें ही ढहाई थीं, यह बुर्जियां ढहाने की सोच रहा है !

पहिली ही सही, ज़चगी जिसे होगी वह जाने, खुदा मालूम इसे क्या ख़तरा है ?

रब्बे में नहीं बैठा। आगे-आगे रब्बा और पीछे-पीछे सबरंग—पैदल ही पैदल चला, जैसे बांधकर खचेड़ा जा रहा हो।

सबरंग आया और सूखे से मुंह से 'अभी तो महीनों का काम बाक़ी है' कहता हुआ मीरा को चारों ख़ाने चित्त पटककर ऊपर चला गया।

'महीनों का काम बाक़ी है ?—तो काम के लिये पैसा कहां से आयेगा ?' इसका तो साफ़ मतलब यह है कि रौनक़महल रौनक़ के पेट सी बुर्जियां उठाये अधूरा खड़ा रहेगा और महल की बुर्जी-सा पेट लिये रौनक़ यों ही आड़ी पड़ी हुई बिलबिलाती रहेंगी।

पर जब मौत की तरह इस अहम ज़िंदगी का एक दिन मअय्यन (निश्चित) है तो इस कम्बख़्त को नींद क्यों नहीं आती ? शायद इस डर से नहीं आती कि झिलमिली से झांकता यह वरदानी औतार अपनी इमारत के कंगूरे देखने के लिए कहीं वक़्त से पहिले ही न लपक पड़े !—इस हालत में तो इमारत को भी ख़तरा पैदा हो सकता है, बच्चे को भी, बच्चे की मां को भी !

पर इंशाअल्लाह ऐसा होगा नहीं। शाहजी की पेशीनगोई के मुताबिक़ पहिले इमारत के कंगूरे चमकेंगे तब चांद चमकेगा।

पर चांद तो तभी निकलेगा जब रोज़े ख़त्म हो जायेंगे !

और रोज़ा तो अब शुरू हुआ है !

रात भर गांजे की चिलमों से रोज़ा खोलते-खोलते मीरा मिस्त्री की खोपड़ी खोखली हो गई।

□□

मदद पर जाने के लिये तैयार होकर सबरंग सुबह ही सुबह बैठक में आया तो सर में पट्टी बांधे मीरा गुडमुड होकर मसनद पर पड़ा हुआ था। आते ही सबरंग बोला, 'आदाब अर्ज़ है भाईजान कैसी तबीअत है ?'

भड़के हुए से भाईजान बोले, 'अजी भाईजान की तबियत-फबियत पै रेती डालो तुम, वो कैसी अैं ये बताओ !'

भड़कन सुनी-अनसुनी करके सबरंग ने कहा, 'अब उनकी तो यह है कि इमारत पूरी हो तो जान छूटे !'

जवाब में मीरा ने सिर्फ़ अपने माथे की पट्टी कसी तो सबरंग बोले, 'अब तो इमान से मुबारिकबादियों के दिन आ रहे हैं, आप तबीअत संभाले रहिये अपनी ! उधर रौनक़महल पूरा होता आ रहा है, इधर इनको भी--लाइये रक़म दिलवाइये, चलूं मैं !'

फिर रक़म का नाम सुनते ही मीरा पूरी तरह भड़क उठा। कड़ी से निकले हुए फ़नर की तरह तड़ाक से सीधा होकर बोला, 'मियां तुमसे बीसियों दफ़ै कै दिया कि हाथ खेंच के खरच करो, तुम समझते ई नईं, और नईं तौ !'

यह इतनी करारी या फटकदार-सी आवाज़ सौदागर से सुनने का सबरंग का पहिला मौक़ा था। बुरा मानकर बोला, 'कमाल करते हैं आप, हमारी जगह कोई और होता तो इत्ती तो मुनीजरी वसूल कर लेता आपसे ! हम तो इमान से आपके लिहाज़ में भिच गये वर्ना हमें क्या ग़रज़ थी कि···और आप हैं कि—खैर—लाइये इस वक़्त तो निकालिये, वां काम रुक जाएगा वर्ना !'

झल्लाकर मीरा ने कहा, 'मियां हमारी जमा उधार में फंसी हुई है !'

क़मीज़ झटकाकर खड़ा होता हुआ सबरंग बोला, 'आप जानें। इमान से इस महल का मक़बरा न बन जाय कहीं !'

अंजाम की यह हैबतनाक तसवीर दिखलाकर बाहर जाने के बजाय सबरंग वापिस ऊपर लौट गया और फिर दरवाज़ा बंद कर लिया।

'अब यह चुग़लखोर का बच्चा दरवाज़ा बंद करके न जाने और क्या-क्या जड़ेगा उनसे ! तो खुद ही मौत के मुंह में धड़ भिचवाये पड़ी हैं, किसी सदमे से यह पूरा का पूरा हमल ज़ाया न हो जाय !' पट्टी बंधा हुआ सर दोनों हाथों

से पकड़कर झंझोड़ डाला। मुमकिन था कि चिलम या उगालदान उठाकर दुखते हुए खोपड़े में ठोक लेता पर तभी एक अनहोनी हो गई।

लम्बा-सा घूंघट निकाले, ऊपर से नीचे तक सस्ते-सुथरे मोटे-झोटे कपड़ों में ढंकी हुई एक औरत बैठक के दरवाज़े में दाखिल हुई। सर भींचे ही भींचे मीरा उसकी तरफ़ देखने लगा। कुछ समझ में नहीं आया कि कौन है। तंग होकर बोला—'क्या है भई, कौन हो ?'

औरत ने जवाब नहीं दिया। वह शायद सोच ही रही थी कि क्या जवाब दूं, कहां से बात शुरू करूं कि झल्लाकर मीरा चिल्लाया, 'कौन हो भई कुछ पूछ बी रये अैं कि नईं ?'

बंदूक की नाल से गिर्री खाकर निकलती हुई गोली की तरह घूंघट में से आवाज़ निकली, 'किकरौली वाले जुलाहे की बेटी हूं, तुमारे भाई की औरत ?'

'कौन, अमीना ?···अमीना यहां क्यों आई ?—कहीं ऊपर इसकी आवाज़ न सुन लें ! कोई बखेड़ा खड़ा हो गया तो और लेने के देने पड़ जायेंगे !···सब इसी वक़्त बदले लेंगे क्या···घबराकर कुछ कहने के लिये अमीना की तरफ़ मुंह उठाया और सिटपिटाकर बोला, 'अरे—अरी तू राजी-खुसी है ना ? कैसे आई ?'

अमीना ने इस बात का जवाब नहीं दिया। खड़े ही खड़े ओढ़नी के अन्दर से एक पोटली निकालकर उसके सामने रख दी और घूंघट में से ही बोली, 'ये ले लो अपने !

ताज्जुब से मीरा ने पूछा, 'ये क्या है ?'

पक्के पज़ावे (भट्टे) की गुम्मा ईंट की तरह बोल चुनते हुए अमीना बोली, 'ये वो है जो तुमारा करजा था तुमारे भाई के उप्पर। ये वो है जिसके वास्ते गलियों में खड़ी करके कहने वालों ने हमें जड़खरीद कहा और बड़े-बुजरग टुकुर-टुकुर हमारा तमासा देखते रये ! इसमें सूद के रुपये मिला दिये हैं, गिन लो, गिनना चाहो तो !'

मीरा के दर्द करते हुए सर पर भरे हुए घड़े फूट गये। चुल्लू भर ही बहुत हुआ करता है, पर मीरा के लिए शायद घड़े-के-घड़े भी कम ही थे ! ज़ुरूरत भी कैसी ज़लील शय है ! घड़ों पानी पड़ने के बावजूद मीरा शर्म से उसमें डूब नहीं मरा, बल्कि पोटली की तरफ़ देखकर जीभ लपलपाने लगा।—उसे चुप देखकर अमीना ने कहा, 'मूं से कै दो कि चुकता हुआ !'

आख़िर मीरा किसी तरह हैं-हैं-हैं-हैं करता हुआ बोला, 'अमीना, रुपिया तो मुल तैंने भौत मौके पै चुकाया है पर···पर···'

कुछ और भी कहना चाहिये, क्या कहे वह नहीं जानता। सो ख़ाम-ख़ाह 'पर पर' करने लगा तो अमीना ने पूछा, 'पर क्या ?'

बेशर्मी से ताज्जुब में मुस्कुराहट घोलकर बोला, 'तेरे यां तो कोई मजूरी

करने वाला बी नईं अैं, ये इत्ती सारी रकम कां से आ गई ?'

शायद इस बात का मतलब वह न हो जो निकल आया। मजूरी करने वाला न होते हुए औरत के पास रक़म होने का जो ज़रीया हुआ करता है उसका काला ठप्पा तो अमीना के नाम पर लग ही चुका था। सवाल की चुभन से तिल-मिलाकर उसने कहा, 'आ ई गई कईं से, तुमें इससे क्या अैं ?·· अब कैं देना अपने कुनबे वालों से कि अब हम से किसी ने टेढ़ी बात करी तो हम बी सूधे नईं अैं !'

मीरा दुतकारे हुए कुत्ते की तरह सिमट गया। अमीना चल दी तो पोटली उठाकर जाती हुई के पीछे दुम-सी हिलाकर बोला, 'अमीना, हमको बच्चे की भौत रंजस है—पीरा नईं आया अबी तक पलट के ?'

पीरा तो पलट के नहीं ही आया था पर अमीना ने पलट के पथराव किया, 'मियां बच्चा मेरा, खसम मेरा, मैं अकेली भौत ऊं उनका मातम करने को ! तुम क्यों हलकान होते हो ?'

और चली गई।

पथराव करके अमीना तो चली गई मगर मीरा का सर फूटना अभी बाक़ी था। सोच ही रहा था कि पीरा के क़र्ज़ की वसूलयाबी की खबर किसी तरह बेगम तक पहुंचा दूं कि तभी ऊपर से सितम-सा टूटा। धड़ाम से किसी के गिरने की आवाज़ आई। पोटली टेंट में उरसता हुआ बेतहाशा ज़ीने पर चढ़ता चला गया और पर्दे के पास खड़े होकर चिल्लाया, 'भई क्या हुआ ?'

इसका जवाब तो नहीं मिला, पर पट्टी बंधे हुए सर के निशाने पर अन्दर से पथराव शुरू हो गया। सबरंग कह रहे थे, 'इमान से यह तो रौनक़महल के बदले रौनक़ बीबी का रोज़ा ही बनता नज़र आता है !'

अल्लाबंदे समझा रहे थे, 'खुदा न ख़ास्ता मियां, तुम यह क्या कहने बैठ गये ? कसम से तुम्हारा तो सब्र ही डगमगा गया !'

रौनक़ की आहोज़ारी सुनाई दी, 'ऐ मुआ मकान न पूरा हुआ तो मैं क्या करूंगी। अल्ला मेरी जान अज़ाब में पड़ गई।···सबरंग भाऽऽय !'

सबरंग बोले, 'ऐ मैं तो यहीं हूं तुम्हारे पास, पर मकान के पूरा होने में तो अब अंदेशा ही है। इमान से हमने ऐसा संगदिल आदमी ही नहीं देखा कि इधर तो ख़ास अपनी बीवी तड़फड़ा रही है, उधर काम ठंडा पड़ा है और सौदागर हैं कि चुटकी ढीली नहीं करते !'

बाहर से ही घिघियाकर सौदागर ने कहा, 'ये बात नईं है भाईसाब, जो बात है वो हमने तुम से कै दी।'

रौनक़ के बैन सुनाई पड़े, 'ऐ मैं कहीं की न रही ! सबरंग मुझे उठाओ, चचा मुझे बचाओ ! मैं मरी, मैं मर गई। मैं मरी, मैं मर गई !'

पांव तले से धरती खिसकना बहुत लचर-बयानी है। जिस्म से जान निकलना बहुत आसान है। बबूल की झाड़ी पर शिफ़न की ओढ़नी डालकर खींचने से क्या होगा ? तार-तार खिचकर निकल आयेगा। 'मैं मरी, मैं मर गई, मैं मरी, मैं मर गई' सुनकर मीरा के सीने की रगें बबूल के शिफ़न की तरह खिचकर बाहर निकल पड़ीं। बिलबिलाकर बोला, 'तुम घबड़ाओ मत बेगम जी, सब काम हो जायेंगे। तब तलक कुछ अपनी ई रकम में से लिकाल के लगा दो, फिर हम तुमें दे देंगे !'

अन्त समय पर जैसे मरने वाले के कान के पास मुंह ले जाकर उसे सुनाने के लिये कुछ कहा करते हैं वैसी ही बंदेमियां की आवाज़ आई, 'बी कह रहे हैं अपनी ही रक़म में से लगा दो, फिर दे देंगे !'

पर जवाब अन्त समय की आवाज़ में नहीं था। बुझते दिये की लौ जैसे ज़ोर से लपक मारती है उसी तरह हामिला की लपक सुनाई दी, 'ऐ जैसे जमा कर दी हो मेरे पास रक़म ! जैसे-तैसे चुपचाप अम्मीजान से मंगवाकर मियां का घरुआ चला रही हूं, मुझ लाचार के पास रक़म कहां से आई ?'

बंदेमियां ने बहुत सुकून के साथ लाचारी ज़ाहिर की, 'अपने शहर में होते तो दम भर में कहीं से ले आते मगर यां देहात में तो कसम से मजबूरी है !'

पछतावे में ज़ार-ज़ार रोते हुए रौनक़ की नौहागरी (विलाप) सुनाई पड़ी, 'अल्ला जाने किस बुरे टैम में सौदागर ने निकाह पढ़वाया था ! ऐ यह मियां कैसा मुर्दा बिपार है जिसमें से एक दड़बे के लिये भी रकम निकल के नहीं आती ?'

फिर धब-धब छाती कूटने के बाद आख़री पुकार मीरा के कानों पर आई, 'चचाजान, अपनी में से एक अफ़ीम की गोली ख़ुला दो हमें, झंझट छूटे !'

दरवाज़े में दुहत्तड़ मारकर मीरा चिल्ला पड़ा, 'चचा ऐसा मत कन्ना, तुमें अल्लापाक की कसम है जो ऐसा करो ! सबरंग तुम बाहर आओ, हम रकम देते हैं तुमें !'

सर झुकाये हुए पल्ला भेड़कर सबरंग पर्दे से बाहर आया तो अमीना की दी हुई पोटली टेंट में से निकालकर उसे पकड़ाते हुए मीरा कुछ इस तरह बोला कि लो कफ़न-काठी का इंतजाम तो करो, चेहलुम (चालसवां) के लिये फिर कुछ करेंगे, 'लो अब काम तो चलाओ, फिर देखी जायगी।...जाओ भीतर जाओ, चचा से छीन के अफीम ना सटक लें वो !'

सबरंग पोटली लेकर अंदर चला गया और मीरा आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतरकर बाहर चला गया।

लानत है इश्क़ के इस कमीने पहलू पर।

मीरा के बिलकुल बाहर चले जाने की ख़ातिर-जमा करके सबरंग ने पर्दे वाला दरवाज़ा ज्यों ही बंद किया त्यों ही रौनक़ की बजाय खुद ही अफ़ीम की

गोली चढ़ाकर अल्लाबंदे बुदबुदाये, 'या अल्ला माफ़ कर ख़ता, मैं तेरा गुनहगार बंदा हूं !'

पलंगड़ी पर उचककर रौनक़ दीवार का ढासना लगाकर बैठ गई और मुस्कुराकर बोली, 'ऐ कहीं सचमुच ही इनके बिपार में से रक़म न निकली तो बड़ी दिलचस्पी पैदा होगी। यहां नौ महीने भरे हुए होंगे और वहां रौनक़महल अधूरा खड़ा होगा !'

कैसी जांबाज खिलाड़ी है ये ऐशबेगम की लौंडिया ! सबरंग तो सबरंग, अल्लाबंदे जैसे हौसलामंद उस्ताद के भी होश ख़ता होने लगे, कि ये लौंडिया उन्हीं के सिखाये हुए गुरों से कहीं अपने साथ उन्हें भी न ले डूबे !—जहांदीदा बंदेमियां संजीदा होकर बोले, 'बी, दिलचस्पी से यह भी सोच लो कि हम तीन हैं और बग-दारी बहुत हैं !'

रौनक़ और सबरंग बंदेमियां की इस तीन-तेरह से एकदम चौकने हो गये। बकर तानें मारती हुई रौनक़ को अचानक सम पर लाकर बंदे ने आगे कहा, 'कहीं ऐसा न हो कि मियां की नज़र किसी दिन तुम्हारी ज़ाती जमापूंजी पर पड़ जाय !'

सबरंग पोटली से सीना सेककर बोला, 'इमान से चचा, ये तो बड़ी दूरंदेशी की बात कह दी !'

चौकन्नी लोमड़ी की तरह चौकस होकर रौनक़ की फिसलती हुई नज़रें यकसू होकर जम गईं।—इसमें कोई शक नहीं कि यह औरत जिस्म के हरएक भूरे-भूरे रोयें में सोच सकने की अक़्ल रखती है !—बोली, 'तो जो हम कहते हैं वह करो !'

दोनों ने एक साथ पूछा, 'क्या ?'

'आधा हो या सालिम, वह नया मकान तो अब हमारा ही है'—रौनक़ ने कहा—'आज की आज, रातों-रात सारी जमाजथा को ले जाकर उस नये मकान में कहीं दबा आओ।'

कमाई हुई दौलत की हिफ़ाजत और निगरानी का यह बेहतरीन सुझाव सुन कर दोनों खुशी से उछल पड़े। रौनक़ ने जिस्म के ऊपर पड़ी हुई दुलाई एक तरफ़ फेंक दी और उठकर खड़ी हो गई। सिरहाने से पायताने से, तकिये के ग़िलाफ़ में से, दांतों के टांके उधेड़कर गद्दे की सिलाई में से, निवार की तहों में से, चटाइयों और दरियों के नीचे से, पायदान से, उगालदान से, ग़र्ज़ कि जहां-जहां भी रक्खी थीं वहां से, ऐशमंज़िल की 'तब तक की वसूलयाबी' समेत मोहरें ही मोहरें निकालकर रौनक ने बीचों-बीच ढेर लगा दिया। बंदा और सबरंग इस हर्राफ़ा के छुपाये हुए सोने के ढेर को देखकर सन्नाटे में आ गये। एक ज़्यादा वज़नी न हो जाय इसलिए छोटे-छो[illegible] ल[illegible]हे के दो संदूकचे कपड़ों से ख़ाली करके रौनक़ ने उनके सामने सरका दिये औ[illegible] [illegible]रतमारों ने झपा-झप मोहरें उन संदूकचों में भर दीं। कान-नाक की दो-[illegible] छोड़कर सारा ज़ेवर-गहना ऊपर से भरकर रौनक़ ने बाहर से ताले

जड़ दिए और दो-चार बार खड़खड़ाकर चाबियां चोली में सरका लीं।

क्या क़ुदरत है कि बूंद-बूंद का रुख़ समन्दर की ओर है !

□□

गधों की गोनियों की तरह ओढ़ी हुई चादरों के नीचे कर्मों के फल लादे, हांफते-कांपते हुए अल्लाबंदा और सबरंग जब तकिये पर पहुंचे तो रात कुछ बहुत नहीं गुज़री थी। रौनक़महल सन्नाटे में खड़ा हुआ भांय-भांय कर रहा था। हवा हल्की ही थी पर चारों ओर बंधी हुई बांस-बल्लियों की पाड़ें डोलते हुए जहाज़ के मस्तूलों की तरह रह-रहकर चरमरा उठती थीं। बुर्जियों और कंगूरों से टकराकर पिपलिया नीम की शाख़ें कभी-कभी दिल्लगी के लिये खड़खड़ा उठती थीं। ज़िन्दगी का ही सवाल सामने आनकर खड़ा हो गया इसलिए मजबूरन दोबारा बेवक़्त यहां आना पड़ गया, वर्ना—'जल्लहू जलालु हू, आई बला को टाल तू' करते हुए दोनों ने अपना-अपना वज़न मकान के चौक में ले जाकर रख दिया और चादरें उतारकर उस पर ढक दीं।'

चौक का फ़र्श अभी तक कच्चा ही था। पक्का करने के लिए सफ़ेद पत्थर की चौरस पटियों का ढेर लगा हुआ था। उसी की आड़ में, सदर दरवाज़े के अन्दर की दीवार के सहारे—यानी बिलकुल वहां, जहां कि कभी दरियाशाह के बैठने का चौतरा था—दोनों ने मिलकर अंधेरे में ही कुदालों से दबादब गढ़ा खोदना शुरू कर दिया। अपने तो कब्र खोदते ही हैं पर आप भी तो खोदी जाती है !

क़ुदरत भी कैसी दिल्लगीबाज़ है कि तबला-सारंगी जैसे बारीक साज़ वालों के हाथों में कुदाल-फावड़े थमा दिये। तगड़ी-तगड़ी गड्ढा खुद गया तो थकान से चूर होकर शराबियों की तरह लटपटाते हुए अपनी-अपनी चादर के नीचे से दोनों अपना-अपना संदूक़ उठाकर लाये और गड्ढे में सरका दिया। सबरंग तो तेज़ी से गाढ़ा पाटने लगा और अल्लाबंदे बिना कुछ कहे-सुने बोले-चाले सदर दरवाज़े के बाहर की दीवार के नीचे एक दूसरा गढ़ा खोदने में लग गये।

इस बेमौक़े यह बेतुकी हरकत देखकर सबरंग बहुत चकराया। किसी तरह गढ़ा पाट-पूटकर यह देखने के लिए बाहर आया कि ये मियां ज़िन्दगी से दुखियाकर कहीं अपने लिये ही तो गढ़ा नहीं खोदने लगे ? कहीं यह भी मुझे न भरना पड़ जाय !—हाथ छुआकर इशारे से पूछा तो बंदे ने हाथ झटक दिया और चुपचाप अंदर जाकर कफ़न लिपटे हुए बच्चे की तरह दोनों हाथों में अपनी चादर उठाकर लाये और गढ़े में रखने लगे तो बेसब्र होकर सबरंग ने झटका मारकर चादर खींच ली। उसके नीचे बच्चा-वच्चा कुछ नहीं था, उस्ताद अल्लाबंदे की सारंगी थी। हैरत में आकर बोल ही तो पड़ा कि, 'इमान से चचा यह क्या ?'

गुड़-गुड़ करके अल्लाबंदे ने कहा, 'कसम से बोलो नहीं इस वक़्त दफ़नाने दो चुपचाप !'

झटककर सबरंग ने सारंगी पकड़ ली और धमकाता हुआ-सा बोला, 'मियां ज़िन्दा साज़ है, दफनाने की कोई शरह (वजह) तो हो !'

इस छीन-झपट में मोहरों और रुपयों से भरी हुई सारंगी का भारीपन हाथों में महसूस करके ताज्जुब से सबरंग ने कहा, 'चचा, इसमें इत्ता वज़न कैसे ?'

अल्लाबंदे ने सारंगी सबरंग के हाथों से खींचकर छुड़ाई तो खरज से निखाद तक के उतरे पड़े हुए कनसुरे तार हलाल होते हुए बंद जानवर (सूअर) की तरह कराह उठे। कोफ्त से बंदे ने कहा, 'तुम तो कसम से अहमक़ हो।'

लेकिन सबरंग अहमक़ नहीं है। सुबूत देने के लिए बोला, 'मियां हम साफ़-साफ़ समझ गये, हम तो सिर्फ़ दफ़नाने की वजह पूछ रहे हैं !'

जब यह कुछ समझ ही गया है तो और अच्छी तरह समझाने के लिए बंदे ने सारंगी की तरह ही उतरकर कहा, 'जरा आड़े वक़्तों का मुंह फूंका है यार ! इस लौंडिया के मिज़ाज का कुछ भरोसा नहीं; न जाने किस घड़ी कह दे कि उस्ताद जी रास्ता लो अपना !'

चोर के साथी गिरहकट ने भी दिल खोलकर दिखा दिया, 'इमान से यही बात हम महसूस कर रहे हैं एक अर्से से, हालांकि हमारी बहन हैं यह रौनक़ बेग़म !'

बंदेमियां ने तजुर्बे और दुनियादारी की बात कही, 'बहन-वहन कोई किसी की नहीं होती है इन वक़्तों में ! कसम से कुछ सबील कर लो नहीं तो पछताओगे।'

यह पुरानी नस्ल अपनी नज़र में चाहे जितनी दानिशमंद हो और नई नस्ल को चाहे जितनी कूढ़ समझा करे, पर है यह इसकी ग़लतफ़हमी। नई नस्ल इन वक़्तों में पूरी तरह बेलिहाज़ होकर अपनी मां-बहिनों से पहिले ही अपनी सबील कर लेना पुरानी नस्ल से बहुत ज़्यादा जानती-समझती है।

अपनी चादर दोनों हाथों में समेटकर पेट से लगाकर सबरंग उठाकर लाया और उसके नीचे से धड़ियों पक्के वज़न की एक ढोलक और एक डग्गा, यानी बायां तबला निकालकर बोला, 'लो तो फिर हम भी अपनी जमा-पूंजी तुम्हारे ही बंक में टिकाये देते हैं ?'

तबला और ढोलक भी गढ़े में सारंगी के सिरहाने रख दिया गया। जल्दी-जल्दी मिट्टी दी जाने लगी तो सुनसान माहौल में अचानक क्या हुआ कि उन स[illegible]ज़ों की क़ब्र से बिजली की चमक का एक कौंधा-सा निकला और साथ ही साथ कि[illegible] के ठठाकर हँसने की आवाज़ आई। दोनों ने एक-दूसरे की तरफ़ न देखा, न त[illegible] पर पांव रखकर घोड़ा-पछाड़ धामन के जोड़े की तरह जो उन्होंने वहां से [illegible] दौड़ लगाई तो दुमंज़िले के दरवाजे पर पहुंचकर ही दम लिया।

क़ब्रें इंसानों की हों या साज़ों की, उनसे कोई बिजली की चमक निकला करती है ? या हँसी फूटा करती है ?—वह तो हाथ में लालटेन लिये दाढ़ीवाला और उसका साथी कारीगर दीवार का बांकपन जांचने के लिये सबरंगखां से किये हुए वायदे के मुताबिक़ रात में ही तामीर पर आये थे। खोद-खाद की आवाज़ सुनकर उन्हें शक हुआ कि कहीं पीरअली वापिस आकर तमाम इमारत की इमारत ही गिराने की कोशिश तो नहीं कर रहा है ? साथी ने लालटेन उठाकर देखा तो इन लोगों को तबला-सारंगी गढ़े में दबाते हुए देखकर उसे हँसी आ गई। बस इतनी-सी बात थी।

दाढ़ीवाले ने अपने साथी से कहा, 'ऐसे वक़्त तुम्हें हँसना नहीं चाहिये था। इनमें से डर के मारे किसी का दम निकल जाता तो ?'

शर्मिंदा-सा होकर साथी ने कहा, 'मैंने चाहा नहीं था बड़े मियां पर हँसी रोक नहीं सका।'

'क्यों भला, हँसने की क्या बात थी ?'

'क्या अर्ज़ करूं···यह तो रोज़ी का ज़रिया ही दफ़न कर गये !'

अंधेरे के आर-पार कहीं दूर देखते हुए संजीदा होकर दाढ़ीवाले ने कहा, 'हमारे उस्ताद बांध बनाने में बड़े माहिर थे। उनके बांधे हुए बांध तो ख़ैर कभी नहीं टूटे, मगर वह कहा करते थे कि चढ़ाव जब अपनी वाली पर आता है, तो दुनिया की कोई ताक़त उसे रोक नहीं सकती। रोज़ी, ज़रीया, जान, माल, तबला, सारंगी, सब, सब वह अपने साथ बहा लाता है। देखा तुमने, कितनी सच है यह बात ?'

'देख रहा हूं बड़े मियां।'

'यह दरिया इस वक़्त रवानी में है। इसे लौटकर समन्दर में मिलने से रोकना नामुमकिन है। हक़दारों की प्यास बुझाने के सिवा यह सब का सत्यानाश करता हुआ मचलकर निकले बिना नहीं रह सकता। यह निज़ामे-इलाही है।'

'बजा है !'

देर होती हुई देखकर दाढ़ीवाले ने बात छोड़ दी, 'लेकिन तुम्हें-हमें क्या है मियां, तुम अपने काम पर नज़र डालो।'

साथी ने कहा, 'काम तो बड़े मियां ठीक है। मैंने तो अर्ज़ किया था कि बेकार है इस वक़्त रात-बिरात में जाना ! दीवारें टेढ़ी हो ही कैसे सकती हैं, बिलकुल गुनिये-डोरी में हैं।'

'चलो तो फिर बेकार ही तकलीफ़ दी तुम्हें।'

दोनों आहिस्ता-आहिस्ता गांव को लौट गये।

□□

बंदे को ख़ुदा बनाकर यह माया ठगनी जब अचानक मुंह मोड़कर अपने रास्ते चल देती है तब आदमी के स्वाभिमान के बिस्तर को भी अपने साथ ही लपेटकर ले जाती है। स्वाभिमान का तोशा लुटवाकर आदमी रईसे-बगदार सौदागर अमीरअली नहीं रहता, सिर्फ़ मीरा ही मीरा रह जाता है—मिस्त्री भी नहीं।

अमीना के लौटाये हुए कर्ज़ की पोटली सबरंग को देकर कल का रईस, आज का कंगाल मीरा मेमार, माथे में पट्टी बांधे हुए दुर्दिनों के अकेले साथी अलीजान पंसारी की दूकान पर जा बैठा। इमारत और बेगम की गुत्थी सुलझाने के लिए उसे रक़म चाहिये।

दोस्त की डांवाडोल हालत देखकर अलीजान ने पूछा, 'कैसा जी है सौदागड़ साब ?'

जी का हाल पूछते ही मीरा बिखर पड़ा, 'अलीजान भाई, हम ऐसी मुसीपत में फंस गये अैं कै उसे तुमारे सिवाय और किसी से कै नईं सकते !'

अलीजान तो चौक में बगदारियों के दुख हरने को बैठा ही है, फिर मुसीबत सौदागर जैसे हमदम की ?···छाती पर हाथ रखकर बोला, 'बोलो, अलीजान की जान हाजड़ है दोस्तों के वास्ते !'

मीरा का ढाढस बंध गया। हिलकियों का घूंट सटककर बोला, 'हमारी इमारत तो अधबिच में खड़ी अै और जमा हमारी उधार में दब रई अै !'

'उधार में ?—इसकी कौन-सी खत्तियों की आढ़त है जो इसकी जमा उधार में दब रही है ?' खुली हुई जीभ देखते ही जिगर का मर्ज़ हाजी के पोते ने पहिचान लिया। चंदोवा फटी हुई टोपी के घेरे को बायें हाथ की हथेली पर झाड़ता हुआ बोला, 'अड़े याड़ अलीजान भी इसी बात को ड़ो ड़या है ड़ात दिन ! जो सौदा ले जाता है वो दाम नईं देता, औड़ जो नगदी ले जाता है वो पलट के नईं आता सुसड़ा।'

मीरा उसका झींकना सुनने नहीं आया था, अपना रोना रोने आया था। अनसुनी करके धीरे से बोला, 'तुम हमें कुछ रकम उधारी दे दो तो हम तुमें मुनापा अच्छा दे देंगे।'

मीरा नंगा हो गया। नंगे से मुंह फेर लेने का क़ायदा है, लज्जा तो ढंके हुए की ही ढंकी जाती है। जो अपनी लज्जा खुद नहीं रख सकता उसकी दुनिया क्या रखेगी ? फिर यह नंगा तो वह हेकड़ नंगा है जिसने दुमंज़िले के मुक़ाबिले में रौनक़महल जैसी इमारत खड़ी करके उसके दादेलाही कपड़े तक तन से झटककर उसे बेआबरू किया है ! इतने दिन छाती पर लोटते सांप की दुम आज उसकी चुटकी में आई है तो झटका मारकर उसकी रीढ़ तोड़े बिना ही छोड़ देगा क्या ?

देनदार की-सी दीनता से दांत दिखाकर दबे हुए लेनदार की तरह अलीजान ने कहा, 'सौदे-सुलफ के भी हजाड़ों चढ़ा लिये हैं साले साब ने, मकान का किड़ाया-भाड़ा भी ड़ुका पड़ा है तुमाड़ी तड़फ ! अलीजान तो आप ही तुमाड़े पास उघाई के वास्ते आने वाला था !'

मीरा घबराया, 'कईं ऐसा मत कर बैठना खुदा के वास्ते ! उनसे कै रक्खा अै कि दुमंजिला हमारे घर का ई अै, फिर उप्पर से उनका जी अच्छा नईं अै तुम···'

अलीजान ने बात काटी, 'बस यही सोच के ड़ुक गया अलीजान !'

मीरा गिड़गिड़ाया, 'हमें कोई रास्ता बताओ अलीजान भाई !'

खिज्र (मार्गदर्शक फ़रिश्ता) मिल जाते हैं जिसको रास्ता मिलता नहीं !—अलीजान ने रहनुमाई की, 'तुमें क्या फिकड़ है सौदागड़ ! तुमाड़ा तो दादेलाई घड़ मौजूद है, उसे बेच डालो ।'

इस असासे (संपत्ति) का तो मीरा को ध्यान ही नहीं था । तिनके का सहारा पाकर डूबते ने उछाल मारी । उठकर खड़ा हो गया और फ़ौरन चल पड़ा । अलीजान ने पुकारा, 'भाई अमीड़अली ।'

मीरा रुका तो माफ़ी के ख़्वास्तगार की तरह अलीजान कहने लगा, 'माफ़ कड़ना, पीठ-पीछे से आवाज़ माड़नी तो नईं चाहिए पड़···'

क्या है मियां बोलो बी तो सई ।'

'वो—वो साढ़े बाड़े ड़ुपिये औड़ एक चिलम माल बड़सों से तुमाड़े नाम उचंती में टंका हुआ है ।'

अमीरअली के बदन में आग लग गई । चिढ़कर बोला, 'पांच रुपिये नग के हिसाब से ढेरों का लेन-देन हो गया, वो उचंती सुसरी अधर ई लटक रई अै अबी ?'

हैं-हैं-हैं-हैं करके अलीजान ने कहा, 'हिसाब कौड़ी-कौड़ी का औड़ बकसीस हजाड़ों की भाईजान !'

दादेलाही घर ने मीरा के पांव धरती पर टिका दिये थे । अलीजान की टोपी की तरह माथे की पट्टी उतारता हुआ बोला, 'समजूंगा, हिसाब बी समझूंगा कबी फुर्संद में !'

दादेलाही घर का रास्ता दिखाकर मीरा को उचंती के बाद कुत्ते के मुंह से खोली हुई सदरी की याद दिलाने का मौक़ा अलीजान ने सही नहीं समझा । मीरा लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ गली की तरफ़ मुड़ गया ।

□□

औलाद के गुम हो जाने और औलादवाले के फ़क़ीर की तलाश में चले जाने का ग़म भुलाने के लिये अमीना के पास अब सबसे बड़ा एक ही काम था जिसमें सुबह से शाम तक वह अपने आपको तेली के बैल की तरह जोते रखती थी—परदेसियों की रोटी। दो की जगह इतनों की रोटियां ठेकते-ठेकते वह कभी तो अपने भाग्य को कोसती-कोसती रो पड़ती थी और कभी हँस पड़ती थी। रो तो यों पड़ती थी कि मर्द-सा मर्द होते हुए भी आज अनाथ बेवाओं की तरह उसे पेट भरने के लिये ग़ैरों की ख़िदमत करनी पड़ रही है, और हँस यों पड़ती थी कि अल्ला मेहरबान है जो उसने गोद उजाड़कर और मियां को घर से निकालकर भी पेट के लिये दर-दर की ठोकरें नहीं खिलवाईं। सुबह उठती, घर बुहारती, चूल्हा फूंकती, रोटियां पकाती, मदद पर पहुंचाती, थोड़ी देर रोती, फिर वापिस आकर नाज बीनती-फटकती, चक्की पीसती और फिर शाम का चूल्हा धधका देती। रात पड़ने तक थककर चूर हो जाती तो आड़ी होते ही ऐसी नींद आती कि न शुक्र करने की याद रहती, न सपने देखने की फ़ुर्सत। सूनी घड़ियों में बच्चे की याद भीतरी चोट की तरह कसक उठती थी और पुरवाई चलती थी तो पीरा के हाथों की तरह रोंगटे सहला जाती थी। सांय-सांय करती हुई रातों में कसकर आंखें मूंद लेती थी और औंधी होकर गुदड़ी के तकिये में मुंह घुसाकर पड़ जाती थी। इस तरह घुटते-घुटते अमीना का मिज़ाज खरैरा हो गया और कसाला करते-करते उसका सांवला-सलोना लचकीला बदन सूखे बांस की तरह सख़्त हो गया।

इन्हीं सख़्तियों के करम से बेलिहाज़ों का क़र्ज़ चुकाकर जब उस दिन वह घर में आई तो दहलीज़ में पांव रखते ही उसे पीरा की याद आ गई। याद आते ही अचानक सूखे बांस में लचक आ गई। बदन में एक झुरझुरी-सी हुई और पांव में थिरकन लौट आई। सलोनी जिल्द पर मरोड़ियां-सी उठकर चुभने लगीं। दौड़ी-दौड़ी कोठे में गई और ताक़ में रक्खे हुए आधी बालिश्त भर के आईने में मुखड़ा देखने लगी। धुंधले और चटखे हुए आईने में चेहरा बड़ा रूखा-रूखा-सा लगा।—हाय, पीरा होता तो यों कहता कि, 'तेरा मूं देखना मेरे सिवा और कौन जानता है?' फिर मालूम नहीं क्या करता! कोठे में ले जाकर पूछता कि 'अमीना'—अल्ला मेरा नाम उसके मुंह से कैसा अच्छा लगता है!—'तेरा मूं क्यों सूख गया अै? तेरे होठ क्यों सुकड़ गये अैं? तू क्यों मुरझा गई अै?' तो उसकी गोरी-गोरी, चौड़ी-चौड़ी छाती पर गाल सटाकर मैं उससे कहती कि 'पीरा, कोठे वाली का क़र्ज़ चुकाने के लिये मैंने बहुत पापड़ पीटे हैं!' क़र्ज़ चुक जाने की सुनकर कितना खुश होता!—भोले बच्चे की तरह हँस पड़ता! हाय, कैसी मीठी, कैसी भोली और कैसी पाक हँसी हँसता है पीरा, अल्ला उसे बद नज़र से बचाये!—न जाने

कहां ढूंढता फिरता होगा फ़क़ीर को? कहां खाता होगा, कहां सोता होगा, धूप है, छांव है, पानी है, न कोई पूछने वाला होगा न गछने वाला। इस बेईमान भाई की वजह से मेरा आदमी दुनियां में धक्के खाता फिर रहा है। खुदा करे इनका— पर मैं क्यों किसी का बुरा चेतूं? जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। फ़क़ीर कहीं न कहीं, कभी न कभी, मिल तो जायेगा ही। अपने आप हो जायगा झूठे-सच्चे का इंसाफ़। मैं ख़ुशनसीब हूं कि मेरा मियां ईमान पर क़ायम है, ईमान वाले का मुंह उजला!

बाहर आकर बाल्टी पर झुककर मुंह पर पानी के छपाके दिये तो शबनम से तर फूल की तरह ताज़ा होकर मुंह दमकने लगा। पोंछा भी नहीं था कि दहलीज़ में किसी के खांसने की आवाज़ आई। पलटकर देखा तो सौदागर!

सौदागर? यहां? इतने अर्से के बाद? यकायक?—देखते ही लचकते बांस में सख़्ती आ गई। तनकर अमीना ने पीठ फेरी, पर्दा किया, फिर पर्दे ही पर्दे में ताज्जुब किया कि आज ही तो सब नाता-रिश्ता तोड़कर आई हूं इनसे अब और क्या पुनछल्ला बाक़ी रह गया? बनैले जानवर से बचने के लिये ही आदमी ने पत्थर उठाना सीखा होगा! फटी-सी आवाज़ में अमीना बोली, 'नसीब की बात है कि मेरे अगले-पिछले में कोई तो है मेरी खबरगीरी रखने वाला!'

मीरा दिल ही दिल में कट गया। वह जिस मतलब से यहां आया है उससे इस बात का मेल कैसे बिठाये? या इसके जवाब में अपनी बात कैसे कह दे? इसी सोच-विचार में जब ओर-छोर हाथ नहीं आया तो बोला, 'तो पीरा की खबर नईं लगी कुछ?'

'पीरा नहीं आया···पीरा कहां गया···पीरा की कुछ ख़बर लगी···' इन विष बुझे प्रश्न-बाणों की प्राण-लेवा यातना अमीना ने बहुत झेली है। परित्यक्ता स्त्री से पति की चर्चा घायल सिंहनी को कोंचा मारने की तरह है। पर अमीना परित्यक्ता नहीं है। उसका पति उसके चरित्र पर संदेह करके नहीं गया, त्याग कर नहीं गया। उसका मर्द सीनासिपर करके जिहाद पर गया है, ईमान पर फ़िदा होकर गया है। उससे यह कह कर गया है कि 'अमीना तू रो मत, मैं ज़रूर आऊंगा।' उसे उस पर विश्वास है और विश्वास ने उसे एक ऐसा कवच पहिना दिया है कि अब यह बात न उसे चुभती है, न लगती है। न कचोटती है। अग्नि परीक्षा में तप-बुझकर वह अभेद्य हो गई है।

मीरा की बात सुनकर उसने सीधा-सा जवाब दिया, 'अजी है बी कौन खबर लगाने वाला! अल्ला अकूप देगा तो अपने आप ई आ जायगा।'

मीरा ने कहा, 'उसे इस झमेले में पड़ना ई नईं चैये था।'

यह बात झगड़े की है। उसको इस झमेले में नहीं पड़ना चाहिए था या मीरा को नहीं पड़ना चाहिए था, इसका ताना-बाना उधेड़ने लगी तो यह जुलाहे की

बेटी है, मीरा की मैली चदरिया के तार-तार बखेरकर धर देगी। पर इतने दिन बाद दरवाज़े पर आये हुए मियां के बड़े भाई से बात-बढ़ौवल करने की उसकी इच्छा नहीं हुई। हल्की-सी बोली, 'अजी उसको छोड़ो तुम—'तुम हमें ये बताओ कि अब दुमंजिले के आगे नौबत कद बजेगी ?'

हये-हये, क्या बात पूछी है औरत ने ! क्या बात पूछी है मां ने ! क्या बात पूछी है उजड़ी हुई ने !—दुमंजले के आगे नौबत कद बजेगी ?—वही तो पूछी है जिसकी फ़िक्र मीरा को यहां तक लेकर आई है ! उसी बात का ओर तो पकड़ाया है जिसका छोर मीरा को नहीं पा रहा था !

मकड़ी के जाले में फंसा हुआ मगर छटपटाकर बोला, 'अरी कद बजेगी और कैसे बजेगी, हम तो फिकर में मरे जा रये अैं !'

घूंघट में खुक् से हँसकर अमीना ने कहा, 'अल्ला इसमें तुमें क्या फिकर है ?'

मीरा ने कहा, 'अरी मैं उस फिकर की कद कै रा ऊं, व्हां तो सुसरा पेच ई दूसरा पड़ रा अै !'

ग़रीब की बेटी, ग़रीब की जोरू, बच्चा होने का 'पेच' क्या जाने ? ग़रीबों के बच्चे 'पेच' की तरह होते हो नहीं, वह तो कील की तरह सीधे ही होते हैं। सीधी-सी बात में न जाने इनको क्या पेच पड़ रहा है ? अमीना फिर खनक पड़ी, 'एल्लो, इसमें बी क्या दांव-पेच पड़ रया अै ?'

मीरा ने समझा, 'अरी व्हां किसी फकीर-फुकरे की आन लगी पड़ी अै कि जिद्दिन म्हैल चिनके पूरा हो उसी दिन औलाद पैदा हो !'

इस आन में भी अमीना को पेच नज़र नहीं आया। बोली, 'बस तो, म्हैल चिनवाओ जल्दी-जल्दी।'

झींककर मीरा ने कहा, 'चिनवावें कैसे ? उधर तो हमारी रकम टूट गई, और उधर वो हाय वैला मचा रई अैं ! सो, सो, सो हमने अब ये सोचा अै कि हम ये मक्कान बेच डालें !'

पेच खुल गया। मीरा के दहाने से दहकते हुए अंगारे उड़कर ठंडा-ठंडा बोलती हुई अमीना के ऊपर छा पड़े और वह होली की तरह धधक उठी। बेटा छीन लिया, मर्द छीन लिया, अब यह छप्पर भी छीनने आये हैं ! घूमकर रूबरू हो गई···मुट्ठियां बंध गईं·· कमर तन गई और गर्दन उठ गई—ऐसा लगा कि पर्दा-वर्दा छोड़-छाड़कर सामने बैठे हुए इस बनचर का टेंटुआ फाड़कर यह औरत आज ही सारा झंझट हमेशा के लिए खत्म कर देगी। पर यह वह कर नहीं सकती थी, जो करना चाहती थी वह कह सकती थी, सो उसने कहा, 'हूं ऽऽऽ हूं ! जबी तो मैं कऊं कि अल्ला, सौदागर मुज कंगली के दरवज्जे पे कैसे ?—मियां ये मत समझ बैठना कि अमीना की औलाद नईं रई है तो वो बेवा भी हो गई है। अल्ला म्हैरबान है, रमजानी का बाप जिंदा है और मकान में उसका बरब्बर का

हिस्सा है । मकान दादेलाई है, तुम इकेले कैसे खरीद-बेच कल्लोगे मकान को ? ये क्या कोई फकीर का तकिया समजा है तुमने ? हिस्सेदार लौट के आ जाय तो बेच दे या फूंक दे, जब तलक किसी ने इसपे तिरछी नजर डाली तो पुतलियां लिकाल के लीतड़ों से कुचल दूंगी, ये ध्यान रै !'

औरत की इस फटफटाती हुई फटकार से थूथड़ा पिटवाकर मीरा सुन्न हो गया । दिमाग़ी धचके से गई हुई सुर्त जब थोड़ी देर बाद लौटकर आई तो पहिले तो उसे एक सुबकी आई, फिर कुछ हिलकियां सुनाई दीं और फिर छोटे से बच्चे की तरह फूट-फूटकर ज़ोर से रो पड़ा ।

औरत ख़ुद तो सुबकियां भी ले सकती है, हिलकियां भी ले सकती है, धारों-धार भी रो सकती है पर किसी मर्द को इस हालत में देखना उसके बूते की बात नहीं है ।—मीरा को बच्चे की तरह रोता देखकर अमीना औसान भूल गई । खड़ी-खड़ी ऐसा महसूस करने लगी कि जो कुछ उसने कहा वह शायद उसे कहना नहीं चाहिए था ।

रोते-रोते मीरा आप ही आप जो कुछ बोला उन टूटे-फूटे बोलों के जोड़-तोड़ का मतलब यह था कि, 'बेगम के पूरे दिन चढ़े हुए हैं—जचगी का टैम आ गया—पैल का बखत है—चीख रई अैं गला फाड़ के—पीर-फकीरों की आन लगी हुई है—कौल पूरा करे बिना होगी नई—कुछ उल्टा-सीधा हो जायेगा तो मैं ज्हैर की पुड़िया खा के सो जाऊंगा !"

बांझ न जाने प्रसूति की पीड़ा । पर अमीना बांझ कहां है ? प्रसूति की दुख-दायी अनमोल घड़ी की जानलेवा वेदना से वह पूर्ण परिचित है । सच यह है कि औरत की इस हालत को औरत के सिवा और कोई नहीं जानता । रब्बुल आल-मीन ने रचना की यह करामात औरत को बख्शी है, तो कसक भी उसी को अता की है । यह फूलों के शिगूफ़े खिलाने का गुण उसे जान की ज़मानत पर इनायत किया गया है ।

मीरा के रोआराट ने रौनक़ की—रौनक़ की नहीं, अपनी ही जैसी एक औरत की—मछली की तरह तड़फड़ाती हुई तसवीर अमीना की आंखों के सामने लाकर खड़ी कर दी । पिंड धारण किये हुए ब्रह्मांड-सा फूला हुआ पेट, उस पेट में दहाड़ें मारता हुआ रमजानी-सा गोल-मटोल बच्चा, फट पड़ने के लिए तनी हुई दूध के एवज़ ख़ून की धारें, खिंची हुई नाड़ियां, रस्सी की तरह ऐंठते हुए हाथ-पांव, पल्टी हुई पुतलियां, बंजर धरती की तरह चटखे हुए होंठ, एड़ियां रगड़-रगड़कर आर्त-पुकार करती हुई— कौन ?···एक औरत !···एक मां !···

न जाने कैसी सुदुर्लभ घड़ी थी—फ़रिश्तों का गुज़र मीरा के आंगन से हो रहा था शायद ! अमीना को आदमी की न नीचता याद रही, न शत्रुता । उसकी अधमता याद न रही और अपनी सज्जनता भी याद न रही । अनुभूति का क्षण

ब्रह्म की तरह शून्य होता है।

शून्य होकर मीरा को हाथ के इशारे से बुलाकर अमीना अपने कोठे में ले गई और एक अंधेरे कोने में रक्खे हुए मिट्टी के दो हंडों की तरफ़ उंगली उठाकर बोली, 'इनें उघाड़ो।'

मीरा ने पूछा, 'क्या है?'

अमीना ने कहा, 'देख लो क्या है?'

मीरा ने हंडे उघाड़े—

आः! रुपया! रुपया!! रुपये से लबालब भरे हुए घड़े—मीरा के अरमानों का ढेर, रौनक़ की जान, रौनक़महल की तामीर, औलाद का मुंह, सौदागर की आबरू!—रुपया ही रुपया!!

कांपते हुए हाथ जोड़कर अमीना के पांवों में सर रखने के लिए झुका।—यह अलौकिक व्यंग्य देखने के लिये वहां दुनिया नहीं थी। कोई नहीं देख रहा था। रोम-रोम में आंखें रखने वाले की नज़र भी थी या नहीं, कौन जाने!

मीरा को क़दमों में झुकता हुआ देखकर अमीना तेजी से पीछे हटती हुई बोली, 'ले जाओ—ले जाओ!'

घूंघट में होने की वजह से अमीना का नूरानी चेहरा उसे नज़र नहीं आया। वह इस वक़्त बेपर्दा होती तो चकाचौंध से मीरा अंधा हो जाता। अंधेरे में उल्लू की तरह आंख फाड़कर वह कभी उस दौलत की तरफ़ और कभी 'ले जाओ' कहने वाले की तरफ़ देखने लगा। सर से एड़ी तक कपड़ों में ढंकी हुई अमीना उसे ऐसी लगी जैसे उसकी फ़रियाद सुनकर खुद नेकी दीवार फोड़कर उसे दफ़ीना देने के लिए निकल आई हो।—पूछा, 'कित्ते अैं?'

अमीना ने एक बात में सब बातें ख़त्म कर दीं, 'मुजे खबर नई कित्ते अैं। इमारत के वास्ते तुमारी बेगम अटकी पड़ी है, उसका तरस खाके दे रई ऊं। मेरे तुम्हारे बीच में अल्ला हाजर-नाजर है! जहां तलक हंडे भरे हुए हैं व्हईं तलक भर के लौटा देना, जल्दी से जल्दी! मेरे नई अैं ये, दूसरे के अैं।'

हाय रे हिसाब और हाय रे हिसाबी? एक को तो यह भी नहीं मालूम कि कितने हैं और एक अल्ला की हाज़िरी-नाज़िरी में भी हिसाब करता है। मीरा ने कहा, 'किकरौली वाली, हम तुजे दूना नफा देंगे इसका।'

किकरौली वाली ने जूता-सा मारा, 'मियां नफा देना ई हो तो मेरे आदमी के लिए अदावट निकाल देना दिल से, वो तुमारी करनी से घर छोड़ के गया है।'

रुलाई छूटने को हुई तो दोनों हाथों से मुंह दाबकर तीर की तरह कोठे से निकल गई।

विलक्षण घटना है—जिस धरती के कारण औरत अपना मर्द खो बैठी, औलाद से हाथ धो बैठी, चरित्र जैसी उजली चादर पर कलंक के धब्बे लगवा बैठी, उसी

धरती पर खड़े हुए अधूरे दुर्भाग्य-महल को पूरा करवाने के लिये बेईमान लोगों को किसी की अमानत के ढेर के ढेर रुपये पकड़ा बैठी !

बक़ौल दरियाबाबा ऐसी ही अक़्ल वाले का दम ग़नीमत है क्या ?

इसे ही अगर अक़्ले-सलीम (सद्‌बुद्धि) कहते हैं तो यह इंसानों के लिये मुआफ़िक़ नहीं है !

इसे ही अगर इंसानियत कहते हैं तो यह फ़रिश्तों के लिये बेहतर है।

इसे ही अगर हमदर्दी कहते हैं तो यह दुनिया वालों को रास आने वाली नहीं है।

इसे ही अगर शराफ़त कहते हैं तो यह रज़ीलों में ख़ैरात कर देनी चाहिए।

इसे ही अगर नेकी कहते हैं तो यह थोड़ी-थोड़ी भी बदों में बांटने के लिए बहुत है।

□□

फ़ेहरिस्त के मुताबिक़ माल का लदान लेकर सबरंग मदद पर पहुंचा और कारीगरों को माल संभलवाकर अमीना के घर से निकले हुए दरिया के कुछ क़तरे कारीगरों की प्यास बुझाने के लिये उसने उनके ओक में डाले तो वह दाढ़ीवाला मुक़द्दम रुपयों की तरफ़ गौर से देखकर बोला, 'रुपये की ग़ोल शक्ल दुनिया में सबसे बेहतर शक्ल है !'

हद हो गई !—तुनककर सबरंग ने कहा, 'लाहौलवला···मां रुपये लम्बे भी होते हैं क्या ?'

दाढ़ीवाले की तबियत आज हाज़िर थी। हँसकर बोला, 'होते तो नहीं दारोगा जी, लोग कर देते हैं।'

सबरंग तौहीन महसूस कर गया। तिनके समेत किसी की दाढ़ी पकड़ लेना कोई मज़ाक़ है क्या ? नाराज़ होकर बोला, 'इमान से बड़े गुस्ताख़ आदमी हो तुम !'

दाढ़ीवाले ने कहा, 'गुस्ताख़ी नहीं, सिर्फ़ यह अर्ज़ किया जनाब कि अब हमें माल-ताल और कुछ नहीं चाहिये। हफ़्ता-दस रोज़ का काम बाक़ी है, हवेली में ख़बर दे दीजिये। बस क़िस्सा ख़त्म—चलो भाइयो !'

सबरंग को ऐसा लगा जैसे फ़ौजदारी अदालत का दढ़ियल हाकिम हफ़्ता-दस रोज़ के बाद उसे सूली का फ़र्मान सुनाकर ज्यूरी के साथ अदालत से उठकर चला गया।

हफ़्ता-दस रोज़ ! हफ़्ता-दस रोज़ !! हफ़्ता-दस रोज़ !!!

जैसे ही सूली की मीयाद का ऐलान सबरंग ने घर में जाकर सुनाया वैसे ही हामला के दोहदों ने ज़ोर मारा। फिर दुमंज़िले में वावैला मचा और इस बार इतना मचा कि बगदार की चौहद्दी गूंज गई। उतना शोरोशर आज तक बगदार के किसी बच्चे ने कम से कम पेट के अन्दर से तो बरपा नहीं किया। पीर-फ़क़ीरों की दुआओं से पैदा होने वाले बच्चों की पैदाइश का राज़ कौन जान सकता है !

कैफ़ियत यह है कि एक टांग रिकाब में उलझाये हुए सौदागर फिर उल्टे लटके हुए हैं और अड़ी बछेड़ी फिर लगातार पिछाड़ी झाड़े जा रही है। चचा और भाई हस्बे-मामूल ऊपर ज़च्चाख़ाने में हैं और मियां बेचारे बैठक में बौखलाते हुए इधर से उधर, उधर से इधर, बेचैन ! किसी औंधे पीर की दुआ या बददुआ से सौदागर को खुद ही बच्चा जनना पड़ जाता तो इससे ज़्यदा बेचैनी और क्या होती !

नौ ऊपर सौ के ही सही, हकीम जी हैं ग़ैर, बगदारी दाई के हाथ होंगे खुरदरे ! घबराहट में पुकार कर मीरा ने पूछा, 'ऐसे बखत पीरा की बीबी को बुलवा दें क्या ?'

पहलौठी की नाजुक हामिला पर उजड़ी गोद की असैनी औरत का साया डालने वाली इस दुश्मनी-सी हमदर्दी की बात पर पहिले तो ऊपर से मियां के सर पर फिटकारों के जूते बरसे, और उनके पीछे ही पीछे रौनक़ की एक छतफाड़ चीख़ सुनाई दी।

चीख़ सुनते ही कमान से छूटे हुए तीर की तरह मीरा ज़ीने पर चढ़ा और सीधा पर्दे में घुसता चला गया। घेरा तोड़कर घुसते हुए फ़सादी को पर्दे के पीछे खड़े हुए दोनों हवलदारों ने चारों पांव जमा कर चारों हाथों से रोककर 'बाहर-बाहर-बाहर-बाहर' पुकारते हुए पीछे को धकेला जो मारा तो सीढ़ियों से लुढ़क-पुढ़क होता हुआ यह आदम नीचे आ लगा।

यह टूट-फूट तो जुड़-तुड़ जायगी पर हव्वा पर इसका मनहूस साया पड़ जाता तो लेने के देने पड़ जाते या नहीं ? वह तो ख़ैर हुई कि सबरंग और अल्लाबंदा उस वक़्त वहां तैनात थे वर्ना खुदा ही जाने कि रौनक़ पर क्या गुज़रती !

मार-मार किसी तरह ख़त्म हुई तो खिसियाकर मीरा बोला, 'हमसे चूक हो गई, माफ़ी मिलनी चैये ! पर हमारा कैना जरूर सुना जाय—हकीम जी नईं सई, दाई नईं सई, वो भी नईं सई, तो हम ये पूछते अैं कै तुमारी तड़फड़ाट कैसे रुकै !'

कराहती हुई रौनक़ की आवाज़ आई, 'सबरंग भाई अम्मीजान को बुलवाओ'

बाहर मुंह निकालकर सबरंग ने कहा, 'मियां अम्मीजान को कह रही हैं !'

अम्मीजान ! उस कुतुबमीनार और गोलगुम्बद का ख़याल करके पहिले तो

मीरा घबराया, लेकिन फिर यह सोचकर कि ठीक ही है, खुशदामन (सास) आ जायेंगी तो बेगम की ऐसे में देख-रेख ठीक हो जायगी—बोला, 'हां-हां, जरूर!'

रौनक़ की आवाज़ आई, 'ख़बरदार है सौदागर, हमारी ग्यारह की ग्यारह आपायें न आईं तो हम से बुरा कोई न देखा होगा !'

ग्याऽऽरह ? अरे बाप रे ! दो नहीं, चार नहीं, पांच नहीं, छः भी नहीं, पूरी ग्यारह ? ग्यारह की गुंजाइश दुमंज़िले में तो है ही नहीं, उसकी बालदार छाती पर भी कहां है ?—पर ग्यारह सालियां ? छाती के भीतर कहीं गुदगुदी-सी हुई तो पुचकारता हुआ बोला, 'अजी तुम बुरी क्यों बनती हो ऐसे में, ग्यारै की ग्यारै लो ! तुम पते बता दो हम लिखवा देंगे सबको ।'

इस मुसीबत को इस वक्त टालने की ग़रज़ से सबरंग ने कहा, 'आप जाइये भाईजान, हम खुद लिख देंगे । इमान से यह ख़ुतूत ख़ास तरह से लिखे जाते हैं ।'

टूटी हड्डियों को जोड़कर उठते हुए मीरा ने कहा, 'हम पोसकाट मंगवाये देते अैं कईं से, कलपरसों तक आ ई जायेंगे ।'

इस 'पोसकाट' की बात ने मीरा के जुड़ते-जुड़ते भी ग़ज़ब ढा ही दिया । माथा ठोककर रौनक़ ने कहा, 'हाय ख़्वाजा, बिजली कौंधे इनकी अक्ल पे !··· ऐ पोसकाट क्या कोने काटकर भेजने हैं ?···ऐ लिफ़ाफ़े मंगवाओ गुलाबी रंग के, बेलबूटेदार ?'

'अच्छा तो अच्छा, ऐसे ई सई' कहकर मीरा अपने घटियापन पर शर्मिंदा-सा होकर गुलाबी रंग के बेलबूटेदार लिफ़ाफ़े मंगवाने के लिए किसी सांडनी सवार की तलाश में चला गया ।

हफ़्ता-दस रोज़ !—अल्लाबंदे ने सबरंग की तरफ़ देखा ।

हफ़्ता-दस रोज़ !—सबरंग ने अल्लाबंदे की चढ़ी हुई आंखों पर नज़र डाली ।

हफ़्ता-दस रोज़ !—दोनों ने चीख़-पुकार से थककर आराम करती हुई रौनक़ की तरफ़ देखा ।

इन आंखों की तशवीश के जवाब में रौनक़ ने कहा, 'ऐ तुम ख़त तो लिखो अम्मां को !'

बिना बेलबूटों के ही ख़त लिख दिये गये ।

□□

सादे ख़तों ने ही हफ़्ता-दस रोज़ के अन्दर-ही-अन्दर डबल तारों का काम कर डाला ।

मरियल-ज़टियल टट्टू जुते हुए सात इक्के-तांगे, हर एक में तीन-तीन सवारियां—ग्यारह की ग्यारह रौनक़ की आपायें, बारहवीं अम्मीजान ख़ुद; छः उस्ताद

जी और तीन आपायें, बच्चा एक भी नहीं। इस तरह कुल मिलाकर यह इक्कीस सवारियां मय अपने-अपने पानदान, उगालदान, हुक़्के, छ: जोड़ी तबले, छ: सारंगियों के साथ दुमंज़िले के दरवाज़े पर, दुपहियों से अचक पांव रखती हुई इस भूड़ गांव की धूलिया धरती पर उतरीं।

बगदार के बूढ़े, बुढ़ियां, बच्चे, जवान, कुत्ते, बकरे, मुर्गे, मुर्ग़ियां तक घरों और दड़बों से निकल-निकलकर, सहमी हुई भेड़ों की तरह झुंड बनाकर, आसमान से बगदार के चौक में उतरे हुए इस हूरों के झुरमुट को चकित होकर घूरने लगे। कुत्तों ने इमान छोड़ दिया, भौंकना छोड़कर दुम दबाकर कूं-कूं करने लगे। बकरे अपनी जान की ख़ैर मनाने लगे। मुर्ग़ियां और चूज़े कुट-कुट कुच-कुच करके एक-दूसरे पर चोंच दबाकर तला ऊपर सिमट गये।

गैस भरे हुए गुब्बारे की तरह उछलता हुआ सबरंग दुमंज़िले से निकला और 'आदाब अर्ज़ है अम्मीजान, आदाब अर्ज़ है आपा, आदाब अर्ज़ है गुल्लो बी' करता हुआ उनके पानदान, उगालदान वग़ैरा उठाकर जल्दी-जल्दी बैठक में पहुंचाने लगा।

अलीजान पंसारी दम-दम दमकती हुई एक-एक आपा के गले, छाती, कान, कलाइयां और बाजू देख-देखकर थले पर खड़ा-खड़ा राल सुटकने लगा। इनके चेहरों-मोहरों तक तो उसक नज़र ही नहीं गई। नदीदा-सा इनके जिस्म पर लदे हुए ज़ेवरात देखकर ही भौंचक होकर भुच्च-सा खड़ा रह गया।

बेटी की दहक़ानी रैयत पर हिक़ारत की उचटती-सी नज़र डालकर हिरनियों के झुंड के आगे-आगे बारहसींगे की तरह गर्दन उठाकर ऐशबेगम ने दुमंज़िले की तरफ़ देखा। वाह री औरत तेरी शान! ऐशबेगम के बढ़ते ही ग्यारह की ग्यारह आपायें दोनों हाथों से पिंडलियों तक साड़ियां, पाजामे और ग़रारे उठाये हुए धूल से बच-बचकर सारस की तरह क़दम उठाती हुई इस तरह उनके पीछे-पीछे चलीं जैसे यहीं कोई विलायती नाच शुरू करके एक दो तीन, एक दो तीन करने लगेंगी।

गले में एक सोने की ज़ंजीर, हाथों में दो-एक अंगूठी-छल्ले, ऊँचा-सा पाजामा, नीचा-सा कुरता, उसके ऊपर छपे हुए नरमे की सुकड़ी हुई-सी वास्कट पहिने, सर पर ख़ूब लंबाई का सिलबिल्ला-सा साफ़ा बांधे, हाथ जोड़े दुमंज़िले के दरवाज़े में स्वागत के लिये खड़ा हुआ मीरा इन शाही मेहमानों के रौब-दाब से थर-थर कांप रहा था। ऐशबेगम ने उसके जुड़े हुए हाथों में चपत मारकर खट्टी-सी आवाज़ में कहा, 'ऐ हमने तो तुम्हें उस बग़दाद का सौदागर समझा था जिसे बग़दाद-शरीफ़ कहते हैं। तुम हमारी मुनियां को यहां कहां ले आये मुए वीराने में ?'

जवाब तो दे ही क्या सकता था ? मुंह का पसीना पोंछे बिना ही रास्ता छोड़कर, पेट अंदर को सूंत कर, चौखट से पीठ लगाकर खड़ा हो गया। ऐशबेगम

अंदर चली गईं तो पीछे-पीछे 'आदाब अर्ज़ है दूल्हा भाई—आदाब अर्ज़ है भाई-जान—आदाब अर्ज़ है सौदागर साहब' करती, कहती हुई एक के बाद एक आपा, खम्भे की तरह सतर खड़े हुए मीरा से ईरानी बिल्ली की तरह खसखसाती हुई अंदर दाखिल होने लगीं। बेचारा जहालत पौर कमतरी का मारा किसी की भी अर्ज़ मंजूर न कर सका। ग्यारह की लैनडोरी खत्म हो जाने की दिल-जमई हो जाने के बाद पसीना पोंछकर पीछे खड़े हुए सबरंग से बोला, 'यार सबरंग, इनके पास तो बिस्तरे भी नईं अैं!'

ग़ज़ब खुदा का कि यह बात सबसे पीछे वाली आपा, यानी साली ने सुन ली। वह शोख़ज़ुबां पीछे ही पीछे पलटकर वापिस आई और मीरा की खुंटीली ठुड्डी पर अपनी नाजुक-सी तर्ज़नी छुलाकर बोली, 'ऐ दूल्हा भाई, क्या परदेस में आकर भी हम अपने ही बिस्तरों पर सोयेंगे?'

इस फ़िक़रे पर अन्दर जो पीतल की घंटियां ठनठनाईं तो यकायक पीठ के पीछे बजी हुई बाईसिकल की घंटी सुनकर बेख़बर चलता हुआ आदमी जैसे उछल-कर दायें-बायें होकर फिर बीच में ही आकर पहिया टांगों में घुसवाकर चित्त हो जाता है और उठकर छिलन-खरोंचन देखे बिना ही जल्दी-जल्दी कपड़े झाड़ने लगता है, वह हालत मीरा की हो गई।

ऐशबेगम बालाखाने में पहुंच चुकी थीं। सौदागर की छिलन-खरोंचन देखने के लिए ऊपर से अल्लाबंदे उतर आये और अपनी उसी शिकरमी चाल में बल-बलाकर बोले, 'मियां सौदागर, हवेली में इत्ती सवारियां नहीं समायेंगी, ज़रा हिल-डोल के क़नात-शामियानों का इंतिज़ाम करो।'

क़नात-शामियाने? यहां क़नात-शामियाने कहां से आये?···या मालिक! मुश्किल घड़ी में मीरा को फिर अलीजान याद आया। डूबता हुआ आदमी जैसे कोई डोंगी देखकर 'बचाओ-बचाओ' पुकार उठता है वैसे ही दुकान की तरफ़ मुंह उठाकर मीरा पुकार उठा, 'अलीजान भाई, अलीजान भाई!'

डोंगी वाला तो ख़ुद ही सवाब लूटने के लिए उधार खाये खड़ा था। 'डरो मत-डरो मत' की तरह चिल्लाकर बोला, 'हाजड़ है, हाजड़ है अलीजान!'

मीरा ने पुकारकर कहा, 'जरा देखना चचा को क्या-क्या चैये!'

अलीजान ने जवाब दिया, 'किसी चीज की कमी नई है सौदागड़ साब, बे-फिकड़ ड़हो, भेज दो चाचा को!'

पर चचा अकेले नहीं गये, मीरा को साथ लेकर ही गये।

□□

सौदागर तो दुमंज़िले के बाहर कनात-शामयाने, खाट-खटोले, बिस्तर-कपड़े,

बर्तन-चूल्हे और खाने-पीने के इन्तिज़ाम में मसरूफ़ हो गये और उधर चलते-चलते दुमंज़िले में रात आ गई। आज की आज बाहर का बन्दोबस्त चूंकि पूरा नहीं हो सका था। इसलिए काफ़िले का पहिला पड़ाव बैठक में ही डालना बेहतर समझा गया।

दूल्हामियां की बैठक में छत के लटकन की धुंधली रोशनी में चौदहवीं का साबुत चांद टूटकर बिखर गया—यानी कि एक को छोड़कर बकाया दस आपायें और तीनों आपायें बेतकल्लुफ़ी से आड़ी-टेढ़ी होकर इधर-उधर पसर गईं। बुढ़िया के चर्खे के धब्बों की तरह साज़िंदे जहां-तहां बैठकर हुक़्क़े गुड़गुड़ाने लगे और दून की हांकने लगे। काकातुए, देसी मुर्ग़ियां और जंगली मैनाएं रस्सियों के एक ही जाल में डालकर लदान कर देने से जो कुछ रेल-गोदाम में होना मुमकिन है वह सौदागर की बैठक में होने लगा। किसी ने उस कोने से खमसे के बोल उड़ा दिये कि 'झांककर चिलमन उन्होंने डाल दी' तो किसी ने फ़ौरन ही इस कोने से हाथ की उंगलियों से दूसरे हाथ की मुट्ठी पर चटाख़-चटाख़ ताल देनी शुरू कर दी। फिर तो किसी ने दायां उठा लिया किसी ने बायां। धमा-चौकड़ी से दुमंज़िला गजबजा गया।

नीचे की इस धूम-धमार के वक़्त ऊपर के कमरे का बैठक में खुलता हुआ ज़ीने के ऊपर वाला दरवाज़ा तो बंद था ही, चौक की तरफ़ का छज्जेवाला दरवाज़ा भी बिल्कुल जाम था। अंदर रौनक़, सबरंग, अल्लाबंदा, ऐशबेगम ख़ुद और उसकी सबसे बड़ी और सबसे भरोसे की बेटी गुलशन, यानी गुल्लो बी के अलावा और कोई नहीं था।

इजलास की कार्रवाई शुरू हुई। बेटी की रुख़सती से लेकर आज तक के वाक़आत पर नज़रसानी की गई। फिर रौनक़महल के बचे-खुचे काम का जायज़ा लिया गया और फिर जश्नशाह की पेशेनगोई के अगले हिस्से, यानी सबसे अहम मसले पर ग़ौर किया गया। ऐशबेगम के ग़ौर और फ़ैसलों के दरमियान बिल्कुल गुंजाइश नहीं है। फ़ैसले के लिये लम्बी पेशियों में मुक़दमा डालने की न उन्हें आदत है, न यह तारीखें बदलने का मौक़ा है। लिहाज़ा ख़ून का फ़ैसला सुनाने वाले जज के टोपे की तरह साड़ी का पल्ला सर पर सरकाकर उन्होंने फ़ौरन फ़ैसला सुना दिया।

फ़ैसला सुनते ही यरक़ान (पीलिया) के मरीज की तरह सारा का सारा सबरंग एक साथ ज़र्द पड़ गया। लेकिन फ़ैसला सो फ़ैसला! लोगों की ज़र्दी-सफ़ेदियों पर फ़ैसला देने या बदलने मुनहसिर हों तो निज़ाम कैसे चले?

सबरंग की ज़र्दी पर सुर्ख़ तेवर चढ़ाकर ऐशबेगम ने फ़र्माया, 'ग़ौर के लिये हम तुम्हें सिर्फ़ दस मिनट की मोहलत देती हैं, सोच लो।'

फिर फ़ौरन ही पलंग पर लेटी हुई रौनक़ के सर पर दुलार का हाथ फेरकर

बोली, 'ऐ ज़रा खुश-खुश रहो बेटी ऐसे में, ग़म करके क्या ले लोगी !'

सुबकियां-सी भरकर रौनक़ ने कहा, 'अम्मीजान हमारे आख़री दिन बड़ी फ़िक्र में बीते हैं कि अल्ला जाने क्या होगा !'

ऐशबेगम ने कहा, 'ऐ हां-हां तो पहिला मौक़ा है, करते-करते ही से तो दिल खुलता है इन्सान का । अल्ला तुम्हारी उम्र लगाये, तुमने यहां आके जो किया है वह ख़ूब किया है । हमने देख लिया और दूसरों को दिखला दिया—क्यों गुल्लो ?'

पानों की रकाबी बंदेमियां के आगे सरकाकर गुल्लो ने कहा, 'और अभी उम्र ही क्या है, ख़ुदा ज़्यादा दे, कुछ ऊपर भी रक्खा ही होगा ।—क्यों उस्ताद ?'

पान की जुगाली करते हुए उस्ताद बलबलाये, 'कोई लाख बका करे गुल्लो बी, ईमानदार का दिया तो कसम से बुझा-सा ही पड़ा रहता है ।'

इस तरह प्यार-दुलार की कलाई घड़ी में पूरे दस मिनट गुज़र जाने के बाद ऐशबेगम ने कोने में पड़े हुए सबरंग के ज़र्द ढेर से कहा, 'जवाब दो !'

ढेर नहीं हिला ।—ऐशबेगम का सुर बदला, 'उठता क्यों नहीं मुए काहिल ?' —सबरंग नहीं उठा ।—ऐशबेगम ने ललकारा—'क्या कहा हमने !'

सबरंग बोला, 'उठ के कहां जाऊं ?'

ताज्जुब से ऐशबेगम ने कहा, 'लो और सुनो !—ऐ हम क्या बतलायें तुझ इत्ते बड़े को जहन्नुम में जा, कहीं जा, जहां सूझे वहां जा !'

सबरंग पुटपुटाया, 'इमान से हमसे नहीं होगा ।'

सख़्त पड़कर ऐशबेगम ने पूछा, 'तो और किससे होगा ? यह काम ग़ैरों के करने के हैं ?—क्यों गुल्लो ?'

गुल्लो ने समझाया, 'ऐ हां सबरंग भाई, सच तो है । सभी कुछ करना पड़ता है इस जहान में ! तुम्हारे अगाड़ू तो कुछ ऐसा काम नहीं है—क्यों उस्ताद ?'

उस्ताद ने छत की तरफ़ मुंह उठाकर गोल-गोल न जाने क्या कहा, कुछ समझ में नहीं आया ।

झुंझलाकर सबरंग ने कहा, 'ऐसी बलदार तरकीब इमान से सोची ही क्यों तुमने !'

इस नाचीज़ से लौंडे से अपनी तरकीब पर बलदारी की तोहमत लगवाकर ऐशबेगम का मिज़ाज गर्म हो गया । बिल्ली का गोश्त खाई हुई-सी आवाज़ निकालकर खांव-खांव करती हुई बोलीं, 'बलदार कामों के लिये बलदार तरकीबें सोचनी पड़ती हैं बे ! ज़रा वह हुनर तो दिखलाओ जिससे बड़ा बनना चाहते हो ? तुमसे तो कहरवे का ठेका भी जम के नहीं लगता !'

सबरंग ने अगले खुर जमाकर कहा, 'हमसे नहीं होगा ।'

ऐशबेगम भड़क उठीं, 'क्या कहा ? ज़रा फिर कहना !'

सबरंग ने फिर कह दिया, 'हमसे नहीं होगा ।'

बस ख़त्म । ताव-पेच खाकर ऐशबेगम अपनी जगह से उठीं और उन्होंने बढ़-कर सबरंग के गाल पर तड़ाक से इतने ज़ोर का तमाचा मारा कि कीली पर रक्खे हुए खिलौने की तरह सबरंग पूरा का पूरा घूम गया । पूरा चक्कर काटकर जब रूबरू हुआ तो उसके मुंह से निकला, 'इमान से'—

'इमान से' मुंह से निकलना था कि ऐशबेगम का मुंह, हाथ-पांव सब एक साथ चल पड़े ।—

यह सबरंग तो चीज़ क्या है, ऊंची से ऊंची नुकीली मूंछों वाले कितने ही लालखां ऐशमंज़िल के नीचे की बंद कोठरियों में उनका नाम सुनकर ख़ुद ब ख़ुद अपनी मूंछें झटक लेते हैं । पर वह तो यह है कि···

'ना-अहल !—ना ख़लफ़ !—ना हिंजार !—हरामकार !—बदज़ाद कुत्ते !' —सबरंग के ऊपर जो बेगम के तमाचे-घूंसे, लातें और जूतियां बरसी हैं तो मुट्ठी भर हड्डियों के तो परख़चे उड़े सो उड़े ही, रौनक़ और अल्लाबंदे के दिल तक दहल गये । गुल्लो भी लगातार छालियां काटने में मसरूफ़ रहीं इसलिए उनके दिल पर क्या बीती यह नहीं कहा जा सकता ।

नीचे की बैठक में तान-टप्पे उड़ रहे थे, लिहाज़ा माजरे के पीछे बजने वाले फ़िल्मी बाजे की धूम-धाम से माजरा तो सरगर्म रहा और किसी को कानों-कान सज़ाए-सख़्त की ख़बर नहीं लगी ।

□□

पर रात सबरंग जान से नहीं मरा ।—सुबूत यह है कि अगली सुबह बिखरी हुई हड्डियों को अपनी-अपनी जगह पट्टियों से बांध-बूंधकर, कांखते-कराहते हुए, दुमंज़िले के दरवाज़े से बाहर पड़ते हुए उसे सबने देखा । जैसे-तैसे जब अलीजान की दूकान से जाकर लगा तो ताज्जुब से अलीजान ने पूछा, 'म्यां ये क्या हुआ सबड़ंग साब ? कल तलक तो अच्छे भले थे ई !'

कराहकर सबरंग ने कहा, 'कुछ नहीं मियां, वह इन्तिज़ाम की भाग-दौड़ में सीढ़ियों पर पांव जरा इमान से बांका पड़ गया ।'

चच्-चच्-चच्-चच् करके अलीजान ने हमदर्दी जतलाई और पूछा, 'छुट्टन हज्जाम के बुलवावे अलीजान ? टूट-फूट का बड़ा जानकाड़ है खलीपा !'

'नहीं मियां रहने दो ।'

'मान लिया कड़ो अलीजान की । ऐसा माहिड़ है हज्जाम का कि बैल-बकड़ियों की टूटी हुई ड़ीढ़ तक एक झटके में जोड़ देता अै ।'

'नहीं मियां रहने दो ।'

'तो फिड़ कोई दवा-दाड़ू ?'

'दे दी थी चचा ने अपनी में से।'

सबरंग को आराम से बिठाकर अलीजान ने बात बदली, 'वा सबड़ंग साब वा, वल्ला सौदागड़ की ड़िस्तेदाड़ियों को देख के तो अलीजान की आंख फट गईं। माशाल्लासे एक-एक के ऊप्पड़ ढाई-ढाई सेड़ सोना तो लदा हुआ होगा ई ?'

दुखती हुई हड्डियों पर सिकाई-सी महसूस करके सबरंग तनकर बोला, 'म्यां सोना देखना हो तो हमारी बहनों के ऊपर क्या, इनके नीचे देखो !'

अलीजान के हाथ से तराजू छूट पड़ा। सबरंग के दोनों घुटने पकड़कर और दम साधकर उसने कहा, 'नीचे ?'

'हांऽ आंऽ नीचे !'

बेवक़ूफ़ की तरह माफ़ी-सी मांगते हुए अलीजान ने कहा, 'भाई साब अलीजान समजा नईं !'

सबरंग ने कहा, 'तौबा है अलीजान भाई, इमान से इनकी हवेलियों में मनों सोना दबा पड़ा है, हम क्या तुम से ग़लत कह रहे हैं ?'

रुका हुआ दम तोड़कर अलीजान बोला, 'हां-हां, ऐसे-ऐसे ! होगा, होगा—जब सेड़ों उप्पड़ ही दीख ड़या है तो नीचे मनों क्यों नईं होगा।—कैसा जी है बेगम साब का ?'

जी की बात सुनते ही वही रात वाली ज़र्दी सबरंग के चेहरे पर फिर उभर आई। अलीजान ने पूछा, 'किसी फिकड़ में हो क्या सबड़ंग भाई ?'

सबरंग ने कहा, 'कुछ नहीं मियां, ज़रा फ़िक्रमंद हैं अपनी बहिन की वजह से।'

हँसकर अलीजान ने कहा, 'लो खूब ड़ई, म्यां फिकड़ की क्या बात है, बच्चे तो इसी तड़ियों हुआ करते हैं !'

एक लम्बी-सी सांस छोड़कर सबरंग ने कहा, 'हुआ तो करते हैं अलीजान भाई, पर यह बच्चा उन मामूली तरह होने वालों में का नहीं है।'

सबरंग के कान में मुंह लगाकर अलीजान बोला, 'कोई तबीज-वबीज बनवाये क्या अलीजान ? है एक कड़ामाती अलीजान के पास।'

अलीजान सबरंग को 'कड़ामाती की कड़ामात' बतला ही रहा था कि तभी नौ ऊपर सौ के हकीम लुक़मान साहिब छड़ी खटखटाते हुए दूकान पर आये। उन्हें देखते ही पीछे को सरककर अलीजान ने कहा, 'सलामालेकम हकीम जी। अच्छे आये, जड़ा इनें समजाइये, हिकमत का मसला है।'

हकीम जी ने कहा, 'इन्हें हम क्या समझा सकते हैं, इनकी हमशीरा ने तो हमारी हिकमत पर लानत भेज दी ! ऐसी मुगहम (भेदभरी) हामला हमने कभी नहीं देखी एक सौ नौ साल की उम्र में।'

ऊपर-नीचे सोने से लदी हुई इतनी हूरों के इकलौते भाई, सबरंग के साथ सुबह ही सुबह यह बुड्ढा हकीम कुछ चों-चों न कर बैठे इसलिये जल्दी से बात

बदलकर हकीम से बोला, 'फड़माओ क्या हुकम है ?'

तवारीख़ी (ऐतिहासिक) अंगरखे की फ़र्सूदा (फटी-पुरानी) सी जेब से एक नुस्ख़ा निकालकर हकीम साहब ने पढ़ना शुरू किया, 'अजवायन क़िस्म अव्वल दो सेर, बज़बाज़ अढ़ाई पाव सेर, ज़ंजबील ख़ुश्क दो सेर, घी असली उम्तालीस सेर, गुड़ मरहटी कोल्हापुरी पांच भेली, ज़रा जल्दी से दे दो।'

यह बगदारी पंसारी कोई दिल्ली शहर के बल्लीमारान का अत्तार थोड़े ही है ? कुछ चीज़ों के नाम समझा, कुछ के नहीं समझा। जो समझा उसे चमककर बोला, 'क्या कोई भैंस ब्याई है मौलाना ?'

चिढ़कर लुक़मान साहिब ने कहा, 'मां हज़ार और दस हज़ार लानत तुम्हारी ज़ुबान पर, यहां मकान में से बच्चा हुआ है।'

अलीजान दस हज़ार लानतों से शर्मिन्दा होकर सामान निकालने के लिए अन्दर चला गया और सबरंग चौकन्ना होकर लुक़मान साहब की तरफ़ देखने लगा। ठीक इसी वक़्त दुमंज़िले के बाहर से हथेलियों की पटक-चटक के साथ एक फटी हुई-सी आवाज़ आई—'ऐ किसके हुआ बेऽऽटा !'

उचककर सबरंग ने दुमंज़िले की तरफ़ देखा।-- सौदागर से फिर आने की साई लेकर हिजड़ों की एक टोली कुडौल कूल्हे मटकाती हुई दूकान की तरफ़ चली आ रही थी।—उचका हुआ सबरंग फिर नीचे को हो गया।

हिजड़े दूकान के सामने आकर खड़े हो गये। हथेली फटकाकर एक ने पुकारा, 'ऐ मैं खड़ी हूं मैं खड़ा हूं, जिसे अल्ला ने दिया हो वह बता दे !'

अलीजान का ख़याल है कि इन लोगों को दूकान से ख़ाली लौटने से गल्ले में टोट आती है। सो हकीम साहब के गुड़ में से एक डली, एक के पल्ले में डालकर हाथ उठाकर बोला, 'इधड़ से जाकड़ बायें को मुड़कड़ लुकमान जी का घड़ पूछ लेना, उनके हुआ है।'

अलीजान की बताई हुई राह पर हिजड़े गाते हुए चले गये कि, 'बच्चे के गोरे-गोरे गाल, अल्ला गोरे-गोरे गाल, ऐ घूंघर वाले बाल, अल्ला घूंघर वाले बाल, ऐ हो गई मालामाल, अल्ला हो गई मालामाल, ज़च्चा नसीबों वाली, मुक़द्दर वाली, ऐ भागों वाली।'

बच्चा होने में अपनी बहिन की तकलीफ़ें और परेशानियां देख-देखकर आजकल सबरंग की सारी दुनिया की बहनों से एक ख़ास हमदर्दी पैदा हो गई है। हकीम साहिब की बीवी के तवालत से छूट जाने की ख़ुशी में वह अपनी सब तकलीफ़ें भूलकर उठा और दूकान के पटरे से उतरकर हकीम साहिब का हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर झुलाता हुआ बोला, 'इमान से मुबारिक हो, हकीम साहिब मुबारिक हो !'

हकीम साहिब ख़ुश हो गये, 'हमारी तरफ़ से तुम्हें भी पेशगी मुबारिक हो

मियां।'

'शुक्रिया हुज़ूर का, शुक्रिया ही शुक्रिया।'

'शान है किब्रियाई (परमात्मा की)!'

'बेशक बेशक, कैंवीं औलाद है माशा अल्ला?'

'पहिली मियां।'

'अगर पहिली ही है तो इमान से वाह!'

'अजी एक सौ नौ साल में पहिली ही है, और चौथी से है।'

सबरंग पूरा का पूरा उछल पड़ा।—'मरहबा, मरहबा! कुछ नाच-गाना तो कराइयेगा न?'

मजबूर-से होकर हकीम साहिब बोले, 'भई चाहते तो बहुत हैं पर यहां तो यह ज़नखे ही हैं जो इत्तिफ़ाक़ से कहीं से आ गये हैं और इन मियां ने घर भेज दिये हैं, वर्ना बगदार में जो हुनरमंद हस्ती है वह तो खुद ही—क्या नाम है—क्या कहते हैं कि...'

सबरंग ने कहा, 'कुछ भी नाम हो, कुछ भी कहते हों, जनाब कुछ भी कहें, मैं ख़ुद नाचूंगा।'

सबरंग की शराफ़त से दबकर हकीम साहिब ने कहा, 'भई क्यों शर्मिन्दा करते हो हमें? तुम...'

दायें हाथ की उंगलियों से उनका मुंह बंद करते हुए सबरंग ने कहा, 'बस चुप रहिये क़िब्ला, मैं मानने वाला नहीं हूं। यह तो जैसे आपकी ख़ुशी, वैसे हमारी ख़ुशी। एक सौ नौ साल बाद जनाब के हां तक़रीब हो और यहां मौजूद होते हुए हम शामिल न हों तो इमान से लानत है हम पर...'

अलीजान ने आवाज़ दी, 'ये गठड़ी तैयाड़ है हकीम जी। जो चीज इसमें ना हो उसका देसी नाम लिख के भेज देना। घी का एक कनस्तड़ है किसी लौंडे-वौंडे को भेज देना लेज ायगा, बाकी थोड़ा-थोड़ा ताजी पौंचाता ड़हेगा अलीजान।'

कीमत चुकाकर हकीम साहिब गठड़ी उठाने लगे तो लपककर सबरंग ने कहा, 'हमारी कमर पर लाद दीजिये।'

हकीम जी ने कहा, 'नहीं मियां हम ले जायेंगे।'

सबरंग बज़िद हुआ, 'नहीं हम ले चलेंगे।'

अहसान में गले तक उतरे हुए हकीम जी बोले, 'मियां हम ले जायेंगे यह वाजिब नहीं है हमारे लिए।'

सबरंग ने आख़री बात कह दी, 'यह तो हो ही नहीं सकता मोहतरिम, आख़िर हम और किस वक़्त काम आयेंगे।'

सामान की गठड़ी सबरंग पर धर दी गई और बूढ़े बंजारे के साथ पिटे हुए गधे की तरह लदा-लंगड़ाता हुआ सबरंगबेग हकीम साहिब के पीछे-पीछे हो गया।

□□

अलीजान की हिकमत-अमली से कहीं से टाट, कहीं से बोरियां, कहीं से पुराना-धुराना मारकीन, सड़ी-बुसी जाजमें, दरियें, गिरवीं रक्खी हुई चादरें, ओढ़नियां, बांस-बल्ली, रस्सी-सुतली जोड़-तोड़कर सौदागर के दरवाज़े पर क़नात लग गई, शामियाना तन गया। गली रुक गई। बादशाह पसन्द पर पानी भरने वाली औरतों का रास्ता बदल गया। आज यह हालत थी कि क़नात के अन्दर जगह-जगह बड़े-बड़े चूल्हे धधक रहे थे, देगें चढ़ी हुई थीं और हर देग के पास एक-एक दो-दो आपायें, आयायें और साज़िंदे उनकी देख-रेख में तैनात थे। प्याज़ के छिलके और मुर्ग़ियों के परों के ढेर के ढेर हवा में इधर-उधर फड़फड़ाते फिर रहे थे। ज़र्दे-पुलाव की ख़ुशबू सूंघते हुए बगदारी बच्चों को कौवों की तरह तीर-तीर करके उड़ाता हुआ अमीरअली पिंजरे के तोते की ट्यांव-ट्यांव सुनने के लिए बेक़रार होकर कान उठाये बैठा था।—उसे अन्दर आने की सख़्त मुमानियत कर दी गयी थी लिहाज़ा बेचारा कनात के बाहर मूंज की खर्रैरी खाट बिछाये बैठा है।

बार-बार छज्जे की तरफ़ देखता है-—'आई क्या आवाज़?···आई तो थी! ···हो गया क्या?'—ध्यान से सुनकर आप ही आप बोला, 'हो कैसे जायगा! पैंले इमारत की खबर तो आनी चैये।—ये कमबखत कारीगर जने अब क्यों देर लगा रये अैं!'

हफ़्ता-दस रोज़!—आज दसवां रोज़ ही तो है!—हां, दसवां ही है।

वह कौन आ रहा है? कारीगर हैं क्या? ना, हां, कारीगर ही हैं। आ गये! आ गये!

और दरअसल दाढ़ीवाला अपने साथियों समेत सौदागर के सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, 'सौदागर साहिब, इमारत तैयार है। पाड़ के बांस-बल्ली, तोड़े-सुतली और बचा-खुचा सब सामान करीने से लगा दिया है, संभलवा लीजिए। अब आप जब चाहें तब उसमें क़दम रंजा फ़र्मा सकते हैं।'

ऐसी बात नहीं है कि ग़म के धक्के से ही आदमी मरता हो, ख़ुशी के धक्के से भी मर जाता है। पर ख़ुशख़बरी का इतना भारी धक्का खाकर भी मीरा नहीं मरा। मरा नहीं पर शायद पागल हो गया। यानी पुतलियां ठहर गईं, पलकों की झपकन रुक गई। सांस का पता नहीं, कहां अटक गया कि जिस्म की हिलन-डुलन ही थम गई।

दाढ़ीवाले ने कहा, 'इजाज़त है?'

हिल-डुल-सी तो हुई पर जवाब कुछ नहीं था।

दाढ़ीवाले ने फिर कहा, 'मैंने कहा इजाज़त है सौदागर साहिब?'

कुछ इस तरह बोला कि, 'अच्छा जी—अच्छा जी—अच्छा जी तो अब?'

दाढ़ीवाले ने पूछा, 'और कोई ख़िदमत ?'

इस बार एक पूरी-सी बात कही, 'अब ऐसे में हम तुमसे क्या कैं मिस्त्री जी ?'

'कहना-सुनना क्या है जनाब, हमारी मज़दूरी हमें मिल चुकी और हम काम कर चुके...'

इतना कहकर साथियों की तरफ़ घूमकर दाढ़ीवाला बोला, 'अब आज़ाद हो प्यारे, अपना काम देखो, यह काम ख़त्म !'

आज़ादी मिलते ही सब ने फ़ौरन बस्ती छोड़कर जंगल का रास्ता पकड़ा। सिर्फ़ दाढ़ीवाला और उसका वह अकेला साथी अपना सामान वग़ैरा लेने के लिए पीरअली के घर की तरफ़ चल दिये।

पहिले तो मीरा उन्हें जाते हुए दूर तक देखता रहा। जब वह गली में घूमकर नज़र की आड़ हो गए तो खाली हो गया खाली। होते ही खयाल ने पलटा खाया। कूदकर खाट से नीचे उतरा और फिर खाट पर चढ़ गया। फिर नीचे उतरा और फिर चढ़ गया। और फिर चढ़े ही चढ़े एड़ी उचकाकर', अज़ान देने वाले मुल्ला की तरह दोनों हाथों से दोनों कान दबाकर छज्जे की तरफ़ मुंह करके ज़ोर से चिल्ला पड़ा, 'अजी म्हैल पूरा हो गया !'

वाहवा रे जश्नशाह !—मीरा की चिल्लाहट घर में पहुंचते ही अंदर से बच्चे की कुंआं-कुंआं के साथ ही साथ ढोलक-मंजीरों और बधाइयों की धूमधाम से बगदार दमदमा उठा। ज़ब्त खोकर मीरा बे अख़्तियार अंदर को दौड़ पड़ा।

ड्योढ़ी में घुसा ही था कि बेटियों की टुकड़ी के साथ अंदर से आती हुई ऐशबेगम दोनों हाथ फैलाकर संकड़ी गली में लम्बे-लम्बे सींगों वाली मोटी-ताज़ी भैंस की तरह उसके रास्ते में अड़ गईं। उसे अपनी बग़ल के नीचे से झुककर रसाई करने की कोशिश करते देखकर उन्होंने गुद्दी से वास्कट पकड़कर उसे ऊपर उठाया और चेहरा बिलकुल अपने सामने लाकर शोर की वजह से चीख़कर बोलीं, 'अबे हौलू, वहां ज़नाने में जाके क्या गुड्डी उड़ाओगे, अपनी सालियों को ज़ेवर-कपड़े बांटो !'

हाथ जोड़कर मीरा ने कहा, 'तुम जो-जो कौगी वोई-वोई करूंगा, पर कुछ अन्दर का भेद बताओ।'

नपे-तुले, जमे-सधे उसी मशहूर-मारूफ़ लहजे में ऐशबेगम ने फ़र्माया, 'अब जाओ भी, अन्दर का भेद तो बड़े-बड़े क़लंदर भी नहीं समझे, तुम चुक़ंदर क्या समझोगे और मैं क्या समझाऊंगी !'

यह लस्सानी फेंककर उन्होंने ज़रा करवट-सी दी कि ग्यारह की ग्यारह आपायें इस तरह मीरा पर टूटकर पड़ीं जिस तरह मरे बैल पर चीलें टूटती हैं।

एक ने कहा, 'मुबारिक हो दूल्हा भाई, लड़की हुई है !'

दूसरी ने कहा, 'लाओ क्या बख़्शते हो !'

तीसरी ने कहा, 'सौदागर, हमें क्या दोगे ?'

चौथी ने कहा, 'हमें तो गले की ज़ंजीर पसन्द है।'

पांचवीं ने कहा, 'हमें अंगूठियां दो अंगूठियां !'

छठी ने कहा, 'हम तो रेशमी जोड़े लेंगे पांच !'

गुल्लो बी ने कहा, 'चलो हमें कुछ अशर्फ़ियां ही दे दो।'

ग्यारह सालियों के बीच में से जब यह बेटी का बाप बचकर बाहर निकला तब उसकी शबाहत ऐसी मालूम हो रही थी जैसे अजमेर शरीफ़ के उर्स के किसी फ़साद में पिट-पिटाकर भागा हुआ आया हो। न गले में ज़ंजीर थी, न उंगलियों में अंगूठी-छल्ले थे, न कानों में मुरकियां थीं, न नरमे की वास्कट में चांदी के बटन बाक़ी थे। जेबें कट चुकी थीं, डोरिये के कुरते का गरेबां चाक हो गया था और रेशमी साफ़ा सालियों की पाज़ेबों में उलझ-उलझकर तार-तार हो चुका था। कुरते, गर्दन और झबरीले सीने पर जगह-जगह मिस्सी-कत्थे के होंठों के छापे लगे हुए थे।

खिसियाये हुए मीरा ने कुछ कहना चाहा, 'उनकी अम्मां…'

उनकी अम्मां ने बात काटकर कहा, 'ऐ अब यहां खड़े क्यों किसी की अम्माओं को बखान रहे हो ! रैयत में मुनादी करो कि जुमे के रोज़ मलिका-ए-रौनक़ाबाद उर्फ़ बगदार, रौनक़ बेगम रौनक़महल में बैठेंगी। नौबत बजवाओ ड्योढ़ी पर।'

□□

सौदागर की ड्योढ़ी पर नौबत बजी तो आवाज़ अमीना के घर पहुंची। नफ़ीरी की टिनटिनाहट बढ़ई के बर्मे की तरह अमीना की कोख को भीतर तक कुरेदती हुई चली गई। बेचारी कोने में मुंह देकर आठ-आठ आंसू रो पड़ी—'हाय अल्ला, मैंने क्या गुनाह किये थे जो मेरी गोद तूने इस नामालूम तरह से उजाड़ दी कि मुझे पता भी न लगने पाया कि यह कैसे उजड़ गई। तू अंधा नहीं, बहरा नहीं, तेरी ज़र्रे-ज़र्रे में आंखें हैं, ज़र्रे-ज़र्रे में कान हैं, तुझे तो मालूम ही होगा कि मैंने कभी किसी की औलाद का बुरा नहीं चेता, फिर मेरी औलाद पर यह सितम तूने क्यों तोड़ दिया ?'

हैरत है कि अभी उस रोज़ जिसने मियां के भाई से ख़ुद यह जानना चाहा था कि 'दरवज्जे पे नौबत कद बजेगी' वह आज उसी नौबत की आवाज़ सुनकर ज़ारोक़तार रो रही है !

और क़ज़राशाह की समझ में न आई तो कोई अजब नहीं, औरत के दिल और पेट के बीच में दो ध्रुवों का फ़ासला है।

आते ही दाढ़ीवाले ने पूछा, 'क्यों रो रही हो बीबी, क्या बात है ?'

दुख ख़ुद कहने से घटता है दूसरों के पूछने से बढ़ता है। रोती हुई अमीना बोली, 'तुमें खबर नईं अै क्यों रो रईं हूं ? पेट का बच्चा चिड़िया लेके उड़ गई, बैरी

फकीट्टे को ढूंढने घरबार छोड़ के खसम चला गया, ना रोने की क्या बात अै ?'

साथी ने कहा, 'ठीक कहती हो। औरत ज़ात के लिये इन दो चीज़ों से ज़्यादा और क्या है दुनिया में।'

बहुत बेमौक़े दाढ़ीवाला एक उल्टी-सी बात कह उठा, 'अरे मियां वह पीर-अली के भाई की जोरू के बच्चा पैदा हुआ है न ?'

'सुना तो है।'

'यह उसकी पैदाइश के सोग में रो रही है।'

फिर सुई की नोंक-सी चुभोकर अमीना से बोला, 'भलीमानस, दूसरों की खुशी में खुश होकर भी तो देख, बड़ी बरकत होगी इन्शा अल्लाह ?'

हद हो गई। दूसरों की खुशी में खुश होकर ही तो उसके आंसुओं में यह बरकत हुई है। वह सौदागरनी के बच्चे के सोग में रो रही है या अपनी कोख की ज्वाला में झुलसकर माथा पीट रही है ? इस इतनी चुभनी बात से अमीना का कलेजा छिदकर छलनी हो गया। चिढ़कर बोली, 'समजाने वाले तो एक से एक काजी-मुल्ले पड़े अैं दुनिया में पर जिसके तन से लगती अै वोई जानता है मियां, तुमें क्या है, तुम अपना काम देखो !'

बड़े मियां बोले, 'अपना काम देखें ? अच्छी बात है—हमारा काम तो खत्म हो गया। लो ये तुम्हारे मर्द के हाथ-पांव रक्खे हैं, संभाल लो।'

पीरा के औज़ारों का थैला उन्होंने अमीना के सामने रख दिया और फिर रूखे-से बोले, 'हमारी अमानत की रक़म जो तुम्हारे पास है वह लौटा तो, हम जाते हैं !'

अमीना को काटो तो ख़ून नहीं ! आंसू सूख गये जैसे सोख़्ता लगा दिया हो। पुतलियां पथरा गईं। निश्चेष्ट, निस्पंद हो गई।

दाढ़ीवाले ने कहा, 'हमें जाना है।'

आवाज़ से चौंककर खड़ी हो गई। ओढ़नी सर से सरक पड़ी, बेपर्दा हो गई। नंगा शरीर राख लपेटकर भी ढंका जा सकता है पर नंगी आबरू ?—दौड़कर कोठे में घुस गई और फिर बाहर नहीं आई। दाढ़ीवाले ने जिस खरखरी आवाज़ से पुकारा उससे साथी भी चौंक पड़ा, 'देर मत करो, हमें जाना है !'

अमीना सर ढके हुए, दोनों हाथों में पल्ला पकड़कर दामन-सा फैलाये हुए आहिस्ता-आहिस्ता चलकर अन्दर से आई और सर झुकाकर चुपचाप उसके सामने खड़ी हो गई। ईमान बेज़ुबान होता है।

दाढ़ीवाले ने पूछा, 'लाईं नहीं ?'

घूंघट में से सुबकी-सी आई, 'बड़े मियां···'

शक में पड़कर दाढ़ीवाले ने पूछा, 'क्या बात है ?'

जैसे-तैसे अमीना बोली, 'बड़े मियां मैंने ये बात नईं सोची थी कि तुम इत्ती

जल्दी मांग बैठोगे।'

भवें चढ़ाकर बड़े मियां ने कहा, 'क्या मतलब ?'

डर और शर्म के मारे खोखले पुतले में से आवाज़ निकली, 'मैंने वो रकम सौदागर को उधार दे दी।'

बड़े मियां धक्का खा गये, 'सौदागर को ?'

'हां।'

'क्यों ?'

'उनें चुनाई में कम पड़ गये थे।'

ग़ुस्से के मारे बड़े मियां की दाढ़ी फड़फड़ा उठी—'जिसका आदमी चुनाई को ढहाते-ढहाते आदमियों की नस्ल से निकलकर जिन्नात में शामिल हो गया। और जिस चुनाई को रोकने के लिए आज वह भूखा-प्यासा दर-दर भटकता फिर रहा है उसके लिये उसकी औरत ने घर में से रक़म निकालकर पकड़ा दी! ऐसी औरत को उसका नाम लेकर रोने की वजह ?'

अमीना फफककर रो पड़ी, 'मैंने रकम चुनाई के वास्ते नईं दी। चुनाई के मारे उनकी बेगम का जापा अटका हुआ था! मुज पे हमलवाली का दुख सुना नईं गया, मैंने इस मारे दे दी।'

बड़े मियां पूरे के पूरे अपने साथी की तरफ़ घूम गए, 'देखा जी, देखा तुमने इस औरत को, सुना यह क्या कह रही है ?'

साथी ने कहा, 'जी।'

बड़े मियां ने फिर अमीना को ताना, 'हम नहीं जानते जी जापे-स्यापे को! हम यह पूछते हैं कि किसी की अमानत किसी को उधार देने का तुम्हें क्या अख़तियार था ?'

अमीना घुटनों के बल बैठ गई, 'मुस्से खता हो गई बड़े मियां।'

साथी रहम से पिघल गया, 'मगर क्या करता ? रक़म का मामला और बड़े मियां का यह पठानी ग़ुस्सा !—'तुम जानो तुम्हारी ख़ता जाने। हमारी इतने आदमियों की साल-भर की कमाई है, हज़ारों की रक़म है। घुटने टेकने से कहीं रक़म निकलती है ? अब कौन देगा हमें ?'

हाथ जोड़कर अमीना ने कहा, 'मैं ई दूंगी मियां जी—'

'तुम कहां से दोगी ? जाओ मांग के लाओ इसी वक़्त !'

शरीफ़ के हिस्से में ज़मीर न ही आया होता तो अच्छा होता। भर रास्तों में रोक-रोककर जिन्होंने दुनिया जहान के सामने तक़ाज़ों पर तक़ाज़े करके जिसकी आबरू का धेला कर दिया, दुराचार और व्यभिचार की कीच उछालकर जिसके मुंह पर पोत दी, ठीक उसकी ज़चगी के वक़्त भी जो उससे तक़ाज़ा करने से बाज़ न आये, उन्हीं के लिए यह शरीफ़ की बेटी और शरीफ़ की औरत गिड़गिड़ाकर

कहती है कि, 'बड़े जी, इस घड़ी उनके सगे उतरे हुए हैं दुमंजले में; उनकी खुसी का बखत है, मैं कैसे तगादा लगाऊं उन पे ?'

तंग होकर साथी से बोले, 'हद है भई, यह दुनिया से न्यारी ख़ुदा मालूम किस औंधी अक़्ल की औरत है। तुम सुन भी रहे हो या नहीं ?'

साथी ने कहा, 'सुन रहा हूं बड़े मियां, ग़ौर से सुन रहा हूं।'

बड़े मियां झुंझलाकर बोले, 'उनसे नहीं ला सकती हो तो अपना ज़ेवर-गहना गिरवी रखकर लाओ कहीं से !'

अमीना रो पड़ी, 'मियां जी ज़ेवर-गौंना मुज गरीबनी के पास कां से आया !'

साथी से अब न रहा गया। बोला, 'बड़े मियां···'

पर बड़े मियां ने बोलने न दिया, 'यह तो बड़ा उलझाव पैदा कर दिया इसने। अब तो बिना काम के यहां ठहरना और कोठे का किराया देना भी बहुत मुश्किल है, अब हम जायेंगे कैसे ?'

अमीना ने कहा, 'तुम हंईं ठैरे रओ बड़े मियां, मुझे किराया-विराया कुछ नईं चैये। सौदागर से लेके दे दूंगी, तब चले जाना।'

दाढ़ीवाले को यह तजवीज़ बिलकुल पसंद नहीं आई, उसने आख़री हुक्म दे दिया, 'हम न बिना किराये के रहेंगे, न सौदागर के लिए ठहरेंगे, न बिना लिये जायेंगे। सौदागर के बच्चे की छठी के दिन—यानी जुमे के दिन—रक़म लेकर तुम उस इमारत पर आ जाना जो हमने बनाई है। हममें से कोई न कोई तुम्हें वहां मिल जायगा, उसे दे देना। तब तक तुम्हारे मियां के हाथ-पांव हम तुम्हें नहीं लौटा-येंगे, तुम्हारी ज़मानत के बतौर अपने पास रक्खेंगे।—उठो लो मियां यह थैला !'

यह कहकर दाढ़ीवाला पांव पीटता हुआ वहां से चल दिया। मजबूर, परे-शान, दुखी और चिढ़ा हुआ-सा उसका साथी थैला लेकर आहिस्ता-आहिस्ता सर झुकाये हुए उसके पीछे-पीछे चला गया।

सब दुख पड़ चुके थे। सब इलज़ाम लग चुके थे।—बदचलनी का, बद-कारी का, हरामकारी का, टोने का, टोटके का, हत्या का, अपनी ही औलाद को खा जाने का, यह एक अमानत में ख़यानत का बाक़ी था, सो यह भी लग गया। मालूम नहीं और क्या-क्या इम्तिहान बाक़ी हैं !

□□

सारी गली और सारा गांव पार करने के बाद मुहाने से मुड़ते ही साथी तकरार-सी करते हुए बोला, 'बड़े मियां बहुत सख़्त तक़ाज़ा किया आपने !'

बड़े मियां ने कहा, 'फिर ? करते नहीं ? रक़म का मामला है, छोड़ दें क्या ?'

'छोड़ न दें तो आयेगी भी कैसे !'

'आयेगी कैसे नहीं ?'

यक़ीन है तो इतना सख़्त तक़ाज़ा बिलकुल ही ग़ैर मुनासिब था। वह बेचारी कितनी फ़िक्र में पड़ गई !'

बड़े मियां हँस पड़े, 'तकाज़ा किये बिना तो वह औलाद की फ़िक्र में ही रो-रो कर ढेर हो जाती !'

साथी बेवक़ूफ़ की तरह उनका मुंह देखने लगा।

बड़े मियां ने कहा, 'मियां यह दुनिया है। यहां इसी तरह एक फ़िक्र दूसरी फ़िक्र को दबाये रहती है और आदमी उसे मिटाने के लिये ख़ुद को ज़िम्मेदार समझकर जूझता रहता है। इस वक़्त उसे न अपने शौहर का ग़म है, न बच्चे का रंज है, सौदागरनी से हसद है, सिर्फ़ अमानत की फ़िक्र है। इस तक़ाज़े की बरकत से जुमे के दिन तक तो उसे हसद नहीं सता सकता।'

बहुत ख़ामोश जंगल था, पांवों की आहट भी नहीं थी।

□□

कहते हैं कि क़यामत आयेगी तो जुमे के दिन आयेगी।

जुमे के रोज़ पौ फटने से पहिले ही ऐशबेगम अपने सवाबों का बहीखाता बग़ल में दबाकर गवाहों और हिमायतियों की पलटन सजाकर दरगाह में जाने के लिये तैयार हो गई।

जुलूस की तैयारी शुरू हुई।

हरावल (अग्रभाग) में एक बैलों का ठेला, जिसमें नफ़ीरी-नक़्क़ारे वालों के साथ विजेता फ़ौज के जंडैल की तरह उस्ताद अल्लाबंदे तोप-तमंचे की जगह अपना पानदान और अफ़ीम की डिबिया लेकर सवार हुए।

उसके पीछे ग्यारह की ग्यारह आपायें, चिपके-चिपके पांयचों के पाजामों पर गोरे-गोरे पांवों में घुंघरू बांधकर दो-दो तीन-तीन की जुगलबंदी में थोड़े-थोड़े फ़ासले से नाच के पैंतरे साधकर खड़ी हुईं। पेट से सारंगी-तबले बांधकर साज़िंदों ने इनकी पीठ पर मोर्चा बांधा।

इनके पीछे घड़ों में से निकाले हुए सफ़ेद कुरते-पाजामे पहिनकर काले-काले हब्शियों जैसे आठ कहार मालिका-ए-रौनक़ाबाद उर्फ़ बगदार, रौनक़ बेगम का जनाज़े-सा डोला उठाने को तैयार हुए।

ज़र्क़-बर्क़ जेवरों से लदकर सूरती और बनारसी कलाबत्तू के सुर्ख़ जोड़े में सजी हुई, फूलों से भरी हुई गोद में फूल-सा बच्चा लेकर क़ुलूबतरा (क्लियोपेट्रा) की तरह रौनक़ बेगम उसमें रौनक़ अफ़रोज (शोभायमान) हुईं।

ख़्वाजा सराओं (ज़नखे सेवक) की कमान की कमांडर की तरह ऐशबेगम ने

रौनक़ के एक डोले की दाईं बाज़ू संभाली । तोपख़ाने की तरह फ़र्शी हुक़्क़ा हाथ में लेकर एक आया उनके साये में पनाह लेकर खड़ी हुई ।

और बाईं बाज़ू ?

हाय ! सौदागर के पास अब कपड़ों का एक ही मुसा-कुसा जोड़ा रह गया था। जिन कपड़ों में वह ऐशमंज़िल में दाखिल हुआ था उन्हीं से सजकर वह रोज़ों का मारा हुआ मुसलमान दस महीने के घुप अंधेरे के बाद डोले में उगे हुए ईद के चांद को मुंह उठा-उठाकर ताकने के लिये डोले की बाईं बाज़ू संभालकर खड़ा हुआ ।

उसके पीछे रसद की कुमक की तरह पानी में भरी मश्कें, कटोरे, बदने लिये हुए पांच-सात सक़्के ।

इस तमाम के ऊपर हेलीकॉप्टर की तरह निगरानी करते हुए मीर मुंशी दारोग़ा सबरंग बेग।

और इस सब की पिछाड़ी में···

रैयत, रैयत, रैयत ! बगदार की भी और आनगांव की भी। झड़झड़ के जन-जन बच्चा । यहां तक कि अल्लामियां की बेइन्साफ़ी के फ़रियादी, क़ुदरत के तामाशाई नौ कम सौ के बुंदू मियां भी ।

नफ़ीरी वाले ने सपेरे की तरह गाल फुलाकर पीं-पीं करके नफ़ीरी बजाई ।

नक़्क़ारा कड़म-धड़म करके खड़का ।

तायफ़ों ने अलग-अलग अपनी-अपनी ताकधिन्ना छेड़ी ।

अल्लाबंदे ने अफ़ीम की पिनक में हाथ उठाकर मार्च बोला ।

और महत्वाकांक्षाओं के दुर्ग पर झंडा फहराने के लिए यह जुलूस नारायें-तकबीर बोलकर चौक से सूए मंज़िल रवाना हो गया ।

धूल, धूल, धूल ! इतनी धूल उड़ी कि बगदारियों की आंखें फूट गई और पेट धूल से भर गये ।

अन्याय करने वाले धूल चटाते ही हैं। अन्याय सहने वाले धूल चाटते ही हैं ।

□

पर परदेसी मेमारों के दाढ़ी वाले मुखिया के उस जवान साथी से यह धूल नहीं चाटी गई । इस अनैतिक अतिक्रमण से क्रुद्ध होकर भीड़ को ठेलकर पांव पटकता हुआ वह एकांत में शांत बैठे हुए बड़े मियां के पास जाकर बोला, 'बैठे हैं आप !'

बड़े मियां ने कहा, 'हां, बैठा हूं । तुम्हारे इंतिज़ार में । देख आये तमाशा ?'

झल्लाकर साथी ने कहा, 'देख आया ।'

'क्या देखा ?'

साथी ने तमतमाकर मुंह फेर लिया तो बड़े मियां बोले, 'मियां, मैंने यह पूछा

कि क्या देखा ?'

साथी का क्रोध फूटकर उबल पड़ा, 'बदी का उजला और नेकी का मैला चेहरा देखा। नाइंसाफ़ी का बोलबाला हो रहा है। ग़लत आदमी ग़लत काम के सही होने का ढंढोरा पीट रहे हैं। सही सोचने और सही काम करने वाले लाचारी से जाबिरों का मुंह ताक रहे हैं। यहां तक कि बड़े-बड़े पहुंचे हुए औलिया भी !'

मजबूर-से होकर बड़े मियां बोले, 'औलियाओं की भी तो लाचारियां हो ही सकती हैं। मगर यह मानता हूं कि नाइंसाफ़ी का मुकाबिला ज़ुरूर होना चाहिए। तुम दाना आदमी हो, बताओ ऐसे में कोई क्या करे !'

'करे क्या, थाने में रपट लिखवा दे ?'

'थाने में ?' बड़े मियां हँस पड़े।

'इसमें हँसने की क्या बात है ?'

'मियां थाना-चौकी यहां कहां है ? फिर असर रुसूख़ वालों के मुक़ाबिले में भूखे-नंगों की रपट सुनेगा ही कौन ?'

साथी झल्ला पड़ा, 'तो क्या इन्सानियत का मुंह पिटते हुए देखते रहें चुप-चाप ? हक़ हासिल करने का कोई चारा ही नहीं है दुनिया में ?'

'चारा क्यों नहीं है ? चारा न रहे तो ज़ालिमों के ख़िलाफ मज़लूमों को ख़म ठोक देने चाहियें।'

दांत पीसकर साथी ने कहा, 'कमज़ोर, बेबस और लाचार लोग ख़म ठोकने की जुरअत कर सकते तो कर न देते अब तक ?'

इस व्यंग्य की चुभन से मुस्कुराकर बड़े मियां ने कहा, 'लाचारों की ताक़त हालत के थपेड़ों से बेहोश तो हो जाती है पर मर थोड़े ही जाती है। एक ईमानदार के ईमान की ताक़त हज़ारों के बाज़ू उठा देगी। ईमानदार के ख़ून की एक बूंद में तूफ़ान छिपा होता है मियां, बूंद गिरने तो दो !'

□ □

दुमंज़िले के आगे से क़नात-शामियाने उखड़वाकर, सरफ़ू जैसे दो-चार गधों पर लादकर अलीजान न जाने किस वक़्त रौनक़महल ले गया था और महल के बाहर शामियाना तानकर, जाजिम की जगह फटी-टूटी क़नात की बिछात बिछा-कर सब काम उसने एकदम टंच कर दिया था।

कहारों के कांधों ही कांधों चढ़कर बेगम का डोला रौनक़महल के शामियाने में उतरा। उतरते ही ऐशबेगम ने दरियादिली से पुकारा, 'ख़ैरात करो !'—पहिली मुट्ठी रौनक़ बेगम के हाथ से फिंकवाई गई।

अमीना की उधार दी हुई रक़म का जो कुछ बाक़ी था, अमीरअली सौदागर

ने भाई के बच्चे की कब्र पर खड़े होकर अपने बच्चे की खैर के लिये खैरात में फेंकना शुरू किया। तरह-तरह के भेस और जाने-अनजाने देश के फ़क़ीर-फ़ुक़रे कुछ पाने-खाने की उम्मीद में महल के आगे जमा हो गये थे। बखेर की पाई-पाई फ़क़ीरों ने झपट ली। एक फूटी कौड़ी सौदागर की जेब में नहीं बची।

यह कैसा संयोग है कि जिस तरह खाली जेब, ाली हाथ, बारह कोस का फेरा मारकर यह मेमार पहिले दिन पीरा के साथ इस दरियाशाह के तकिये पर आया था, उसी तरह आज आख़िरी दिन भी यहीं आकर खाली खुख्खल हो गया।

बेगम रौनक़ाबाद उर्फ़ बगदार का बरकती क़दम महल में रखवाने के लिये, उन्हें डोले से उतारकर ऐशबेगम ने चारों तरफ़ नज़र घुमाई।

तभी उनका माथा ठनका।

भम्भड़ में किसी का ख़याल ही नहीं गया था कि मनहूस शक्ल-सूरत का एक हैवान-सा इंसान, महल के सदर दरवाज़े की मरमरी सीढ़ियों के ठीक बीचों-बीच बैठा हुआ है। तन के कपड़े तार-तार हैं, सर के बाल घोंसले की तरह उलझे हुए हैं। दाढ़ी न लम्बाई में फैली मालूम होती है न चौड़ाई में। भट्टे-सी आंखें फाड़े हुए अजीब वहशतनाक नज़र से वह डोले की तरफ़ ताके चला जा रहा है।

घबराकर ऐशबेगम ने कहा, 'ऐ ये कौन ग़मज़दा बैठा है ? ऐ कोई देखो यह कौन है !'

सारी की सारी औरतें ऐशबेगम के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो गईं, 'अल्ला ये कौन है मुआ भूत !'

ऐशबेगम चिल्लाईं, 'ऐ कोई हटाओ इसे जल्दी से।'

अल्लाबंदे ने कहा, 'अजी तुम अपना काम करो, कोई होगा फ़क़ीर-फ़ुक़रा।'

बेटी के ऊपर अपने आंचल का साया करके ऐशबेगम बोलीं, 'ऐ कोई मुआ जादू-टोना कर देगा मेरी बिटिया पर, पहिली औलाद का मुंह देखा है मेरी मुनिया ने !—ज़रा बढ़ो न सौदागर बच्चे, कुछ दे दिलाकर टालो इस मरदूद को !'

देने को तो अब था ही क्या, पर हुक्म के साथ सौदागर बच्चा आगे बढ़ा। लेकिन न जाने क्या हुआ कि उस मरदूद के पास पहुंचते ही झटका-सा खा वह यकलख़्त पीछे हटा। पीछे खड़ी हुई सब आपायें एक साथ बोल उठीं, 'या अल्ला !'

सारी भीड़ की नज़रें दरवाजे की तरफ़ उठ गईं।

सरफ़ू, अल्लाबंदा और सबरंग लपककर उस मनहूस की तरफ़ बढ़े। सबरंग ने पूछा, 'कौन हो मियां तुम ?'

मनहूस ख़ामोश आंखें फाड़े उसकी तरफ़ देखता रहा। सबरंग ने झपटकर कहा, 'बहरे हो क्या ? हमने पूछा कि कौन हो तुम ?'

आख़िर मनहूस बोला, 'पैछाना नईं ? हम चौकीदार हैं यां के !'

पागल समझकर ताज्जुब से सबरंग ने कहा, 'ऐ लो, इमान से वाह !—किसने

दी है तुम्हें यहां की चौकीदारी ?'

मनहूस के चेहरे हर वहशत आई। सख़्त पकड़कर बोला, 'जिसकी जगँ है उसने दी है।'

पीछे से अलीजान चिल्लाया, 'म्यां ये तो सौदागड़ का भाई है।'

भीड़ में एक हिलोर-सी उठी, 'पीरा, पीरा, पीरा, पीरा !'

सबरंग ने झल्लाकर सौदागर से कहा, 'भाईजान ये तुम्हारा भाई है, राज़ी-ख़ुशी उठा दो इसे यहां से।'

पीरा की ओर पोच की तरह आगे को सरकता और सबरंग की ओर दायें को हटता हुआ मीरा पुटपुटाया, 'खबर नईं कां से आया है इत्ते दिन में—चल हट जा इस बखत यां से।'

लेकिन आज वह पीरा नहीं है जो था। जाने कहां-कहां से भटकता हुआ भूखा-प्यासा, हाल-बेहाल फ़क़ीर को ढूंढने में नाकाम होकर लौटा है। या कौन जाने सौदागर का महल पूरा होने की ख़बर सुनकर कर्मभूमि में लौटा है। सचाई सगे भाई से ही न हार जाय इसलिये लौटा है। गढ़ों में धंसी हुई आंखें भाई की आंखों में सूए की तरह कोंचकर पीरा ने कहा, 'सौदागर, ये ठीक कैता है मैं तेरा भाई हूं। भैरा हो गया हो तो अच्छी तरैं सुन ले। मैं तेरा भाई हूं इसलिए यां से हरजिग्ग उठने वाला नईं हूं।'

बड़बड़ाकर मीरा ने मुंह फेर लिया, 'हमारा कैना तो कबी माना ई नईं इन्नै, हम क्या करें !'

मीरा के मुंह फेरने से सबरंग को ताव आ गया। बग़लें चौड़ाकर पीरा के सामने ख़म ठोककर बोला, 'हट जाओ रास्ते से, वर्ना इमान से हम हाथ छोड़ बैठेंगे, यह मौक़ा और है।'

पीरा ने कहा, 'तू हात छोड़ चाय टांग छोड़, हम आज यां से हटने वाले नईं हैं। तेरी भैन का मर्द झूटमूंट को मालिक बनता है और हम सच्च-मच्च के चौकीदार हैं, ये मौका और है।'

ऐशबेगम के लिये पल-पल भारी हो रहा था। गला फाड़कर चिल्लाईं, 'अरे हटा क्यों नहीं देते गरदनियां देके, दिल्लगीबाज़ी की क्या पड़ी है ऐसे में !'

पलक मारते न मारते अल्लाबंदा, अलीजान, सबरंग और सरफ़ू, चारों ने लपककर पीरा को चारों तरफ़ से पकड़कर अधर उठा लिया। पीरा छूटने के लिए छटपटाने लगा। बुंदू मियां इस छटपटाहट को नहीं देख सके। मामला तंग होने के अंदेशे से भीड़ में से कूदकर आगे बढ़े तो दो-चार और भी उनके पीछे बढ़े। चारों के हाथों से पीरा को छुड़ाकर बुंदू ने उससे कहा, 'रैन दे पीरा अब रैन दे !'

अकड़कर पीरा बोला, 'रैन कैसे दें, ये हैं कौन जगँ अपनी बताने वाले ?'

बुंदू ने कहा, 'अरे तो तुजे ई क्या पड़ी है, जगँ तेरी बी तो नईं है।'

'हम चौकीदार हैं जगै वाले के। हम कैसे किसी को भीतर घुस जाने देंगे ?'

'अब तेरी-हमारी क्या चलने वाली है पीरा, अब तो जगै पे जिसका महल खड़ा है वो जो कहै सोई ठीक है।'

पीरा चिल्लाया, 'चोर का म्हैल साह की धरती पै ? चोर की बात सच चौकीदार की झूंटी ?—हमारी जान चली जाय तो बी हम यां से डिगने वाले नईं हैं।'

कई आदमी एक साथ बोल पड़े, 'हट जा पीरा, झगड़ा हो जायगा। किसी की ल्हास हो जायगी।'

बुंदू ने समझाया, 'अरे जो जैसा करेगा वैसा भरेगा, अल्ला सब देखता है।'

अल्ला ? क्या देखता है अल्ला ? अल्ला होता क्या है ? कहां रहता है ? अल्ला की आंखें हैं या अंधा है ? अल्ला के कान हैं या बहरा है ? पीरा के लिये अल्ला सिर्फ़ मुहावरों में सुनी जाने वाली कोई बात है। इतनी अनजानी हस्ती पर वह अपनी ज़िम्मेदारियां छोड़ने के लिए क़तई तैयार नहीं है। चीख़कर बोला, 'अरे अल्ला की बात अल्ला जाने, मैं सिरफ अपनी जानता ऊं !'

सबके बीच से उछट्टी मारकर फिर दरवाज़े की तरफ़ झटका तो ऐशबेगम की चीख़ सुनाई पड़ी, 'ऐ मारो न मुए नामुराद को लठिया से।'

लठिया की बजाय तराज़ू की डंडी मारना ज़्यादा नफ़े का काम था। अलीजान चुपचाप भीड़ से खिसक गया। पागल कुत्ते को घेरकर जैसे चारों तरफ़ से लाठियां पटकाई जाती हैं, वैसे ही चारों तरफ़ से पीरा पर लाठियां पटकने लगीं। कौन-कौन था ? अल्लाबंदा, सबरंग, और कौन ? सरफ़ू—हां सरफ़ू। कमअसल औलाद सरफ़ू मेमार !

पीरा का सिर फट गया। खून की पिचकारी छूटकर मीरा के मुंह पर पड़ी। भाई के खून के छींटों से कोढ़ी-सा मुंह हाथों में छिपाकर मीरा धरती पर ढह पड़ा।

ईमान ठंडा सही, पर जब इसमें आग लगती है तब धरती और आसमान तक को जला कर राख कर देती है। बगदारियों की भवों में बल पड़ गये।

लहू-लुहान, बेहोश पीरा को बुंदू मियां एक पेड़ तले खींचकर ले गये।

इंसान का खून हैवान के मुंह लगता सुना है, पर इंसान को भी इंसान का खून मुंह लगता है। यह जब औरत के मुंह लगता है तब दूध शर्मिंदा होता है, पर दूध के शर्मिंदा होने की घड़ी आने तक औरत की आंखों की शर्म मर चुकी होती है। रास्ता साफ़ देखा तो मीरा को घुटनों में मुंह डाले बैठा देख तेज़ी से ऐशबेगम उसके पास आईं और बांह पकड़ उसे उठाती हुई बोलीं, 'ऐ इस घड़ी किस मुए का मातम कर रहे हो, उठके चलते क्यों नहीं अंदर, साइत निकली जा रही है सुभ की !'

डर से थर-थर कांपती हुई रौनक़ का हाथ मीरा के हाथ में बिलकुल विलायती तरीक़े से थमाकर, मुर्दों की हाथगाड़ी की तरह धकेलती हुई ऐशबेगम महल के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ीं। चौखट के अंदर क़दम रखवाया ही जाने वाला था

कि क़यामत आ गयी।

काले-सफ़ेद, मैले-कुचैले बुर्क़े ओढ़ी हुई चारों बीवियों और कई ज़नख़ों के आगे-आगे नौ ऊपर सौ बरस के हकीम लुक़मान हांफते हुए अचानक वहां बला की तरह नाज़िल हुए और तलवार की नोंक की तरह सबरंग की तरफ़ छड़ी तानकर चिल्लाये, 'यह रहा वो शख़्स जो अलीजन की दुकान से ज़िद करके हमारा सामान लेकर घर गया और हमारी बच्ची की खुशी में नाचा। यह सब ज़नखे गवाह हैं।'

बुर्क़े में से तीन बीवियों के सुबकने और चौथी के चीख़ने की आवाज़ आई, 'यही है लोगो यही है। मैं ज़रा-सी उठके गई कि ये मुआ ले उड़ा मेरी बच्ची को!'

कमाल हो गया! यह बेगम की गोद का बच्चा हकीमजी का है? ज़नमुरीद (स्त्री-भक्त) मीरा ने टूटी-सी गर्दन घुमाकर रौनक़ की तरफ़ देखा।

तेवर ताने खड़ी हुई बगदारियों की भीड़ आगे को अर्राई।

तौबा, तौबा, अल्ला, अल्ला!

इस तौबा-तिल्ला के बीच में ही ज़नख़े एक मर्दानी हरकत कर बैठे। बिजली की तरह लपककर आगे बढ़े और रौनक़ की गोद से बच्चा झपटकर उन्होंने हकीमजी की बीवी को पकड़ा दिया। धारोंधार रोती हुई मां ने बेलिहाज़ी से बुर्क़ा हटाकर बिलखते हुए बच्चे के मुंह में दूध दे दिया।

चूने के पानी से पीरा का ख़ून धोता हुआ बुंदू पेड़ तले से पुकारा, 'ये मौका है बे, पूछ लो इस चुड़ैल से पीरा का लौंडा कहां है!'

ताक़त का तूफ़ान! ईमान का बड़वानल! अन्याय की प्रतिक्रिया! चार हाथ ऊंचा जीवित प्राणियों का बौखलाया हुआ बवंडर भृकुटि तानकर आगे बढ़ा तो रौनक़ के रोऐं-रोऐं से पसीना चुच्चा पड़ा। औसान छोड़कर पीछे को हटती हुई बोली, 'बुनियाद में गिरा दिया। सबरंग भाई ने मिट्टी डाली थी।'

इस क़यामती जुमे के दिन परदेसी मेमारों से किये हुए वायदे की वजह से अमीना इसी वक़्त तकिये पर आई थी। सुना तो रमज़ानी के मक़बरे पर पछाड़ खाकर बेहोश हो गई।

करीमन वग़ैरा ने उसे उठाकर पीरा की बग़ल में लाकर लिटाया तो नौ कम सौ बरस के पुराने अलाव से ज्वालामुखी फूट पड़ा। बुंदू छाती फाड़कर चीख़ा, 'बेईमानों को जीता छोड़े सो हरामी!'

बस, फिर क्या था? ईमान के पुतले पागल पीरा के सर से फूटकर निकले हुए और ज़मीन में दफ़नाये हुए ख़ून ने कुलबुलाकर तकिया हिला दिया। पिपलिया नीम की खखोड़लों से हज़ारों-हज़ार कौवे-कबूतर आक्रोश करते निकल पड़े। बच्चे-बच्चे ने पत्थर उठा लिये। लाठियां तन गईं, कुदाल-फावड़े उठ गये और तामीर की तरह किर्दगार को पुकारकर बगदारियों ने बेईमानों पर बिज़न बोल दिया।

भगदड़ पड़ गई। रौनक़ और ऐशबेगम समेत महजबीनों का रेवड़ घुंघरू

बजाता हुआ भागा। घुंघरू बांधकर ठुमका तो लगाया जा सकता है, भागा नहीं जा सकता। साज़िंदे, अल्लाबंदा, सबरंग और सरफ़ू के पीछे सर पर पांव रखकर बगदार से उल्टी दिशा को दौड़ पड़े। पेट से तबला-सारंगी बांधकर खमाच-कहरवे का लहरा-ठेका तो लग जाता है पर दौड़ना सम्भव नहीं है। फिर भी जान बड़ी प्यारी चीज़ है। जंगली सूअरों ने हांके के घेरे में घिरकर ऐसी सरपट दौड़ लगाई कि भूड़ी धरती से धूल का झक्कड़ उठ खड़ा हुआ। पर झक्कड़-बवंडर इंसान की रचना को ढहा सकते हैं, ईमान की आंखें नहीं फोड़ सकते। ईमानदार बगदारियों के भूखे कुत्ते तक धूल का झक्कड़ चीरकर बंद जानवरों के शिकार पर अर्रा पड़े। पिपलिया नीम के कौवे-कबूतरों के साथ-साथ, गद्दर गोश्त का नमकीन स्वाद चखने के लिये आसमान से चील और गिद्ध तक ज़ुल्फ़ों की नीचाई तक उतर आये।—पर शायद यह सद्गति भी इनके भाग्य में न हो! हो सकता है कि सरापा ईमान पीरअली मेमार के गांव के कुत्ते-कौवे भी इन बेईमानों के बदबूदार गोश्त में मुंह न मारें!—देखना चाहिये क्या हो! बक़ौल दरियाशाह यह एक ईमान वाले के खून की बूंद से उठा हुआ तूफ़ान है।

जीर्णोद्धार किये हुए देवालय के गर्भगृह में शंखघोष की तरह बहुत दिन बाद बहुत ज़ोर से दरियाशाह ने पुकारा, 'अलख अल्लाह!'

बुंदू मियां के साफ़े की कत्तरों से बंधे हुए सर में हरकत हुई। पीरा ने आंखें खोल दीं। करीमन के भीगे पल्ले से ताज़गी पाकर अमीना कुलबुलाई। पीरा ने आंखें मिचमिचाकर उसकी ओर देखा। कुछ समझ पाने से पहले ही फिर पुकार आई, 'अलख अल्लाह!'

पीरा हड़बड़ाकर उठा। बुंदू ने उसे पकड़कर बिठाने की कोशिश की, लेकिन जिस आक़ा की तलाश में यह ग़ुलाम ज़माने की धूल फांकता फिर रहा था उसकी आवाज़ सुनकर अपने फटे हुए सर या मरती हुई औरत के लिये कराहता हुआ कैसे बैठा रह जाता?—लड़खड़ाता हुआ दो-चार कदम चलकर दरवाज़े के पास खड़े हुए दरियाशाह की ओर मुंह करके पुकार उठा, 'अरे तेरा भला हो जाय बाबा, तू कहां चला गया था हमें छोड़के?'

वहीं से दरियाशाह ने कहा, 'पीरशाह मैं तो कहीं भी नहीं गया। मैं तो तुम्हारे पास, तुम्हारे घर में ही टिका हुआ था।'

पीरा हँसा। बहुत दिन बाद हँसा। शायद यही वह फ़क़ीराना हँसी है जो अमीरों को दस्तयाब नहीं है। शायद यही वह अमीराना हँसी है जिससे सिर्फ़ फ़क़ीर हँसते हैं। यही वह रोना है जिसका मज़ा दुनिया नहीं जानती।

यों ही रोते-हंसते पीरा ने कहा, 'अरे तो बैरूपिये, डाढ़ी-कन्नी-बसूली में हम तुजे पैछानते बी कैसे—हम जाने कां-कां ढूंढते फिरे तुजे।'

दरियाशाह ने कहा, 'तुमसे तो चलते वक़्त भी कहा था कि कहीं न जाओ,

यहीं मिल जायगा जिसे मिलना होगा।'—हँसकर बोले, 'पर तुम्हें तो सैर करनी ही थी शायद !'

पीरा भी हँस पड़ा, 'सैल-सपट्टा तो बेफजूल ई गया ना सारा; पर खैर तू आ ई गया तो देखले आपी, जोर-जबरी से तेरा ठीया छीन ले रये हैं लोग। तू जाने तेरा काम जाने, अब मैं जुम्मेवर नई ऊं। मैं जरा ठैर के बात करूंगा तुस्से, अमीना का जी राजी नई है। चला मत जइयो कई। मैं देख रया ऊं वां से।'

इस तरह उत्तरदायित्व से मुक्त होकर, लक्ष्य को दृष्टि के बंधन में बांधकर वह कर्त्तव्यनिष्ठ संसारी अपनी प्रिय पत्नी पर प्यार का हाथ फेरने के लिये फिर पेड़ के नीचे जा बैठा।

दरियाशाह ने क़तराशाह से पूछा, 'बस शहजादे ? सब देख लिया ? समझ लिया ? या और कुछ बाकी है ?'

गुरु कृपा से जब कुतर्क नष्ट हो जाते हैं तो प्रज्ञा निर्मल हो जाती है। प्रज्ञा निर्मल होते ही ज्ञान शेष रह जाता है और ज्ञानी तो विनम्र होता ही है। सर झुकाकर क़तराशाह ने कहा, 'बस पीरो मुर्शिद, देख चुका, समझ चुका, अब सिर्फ़ शुक्र करना बाक़ी है।'

दरियाशाह ने कहा, 'इंसान के लिये यह काम हमेशा बाक़ी ही रहेगा शहज़ादे, इसका अख़ीर मैं तुम्हें नहीं दिखला सकूंगा—चलें अंदर ?'

'जैसी इजाज़त हो।'

दरियाशाह ने दरवाज़े की तरफ़ क़दम उठाया ही था कि पीछे से आवाज़ आई, 'मैं देख रया ऊं, फिर इधर-उधर हुआ जा रया है तू ?'

दरियाशाह मुस्कुराकर रुक गये तो पीरा आगे आया और अंटी में से वह बची-खुची पोटली निकालकर बोला, 'ले ये लेता जा अपनी पोटली, इन्ने बड़ा खून पिया है हमारा।'

दरियाशाह ने कहा, 'इसे तो अब तुम्हीं रक्खो पीरशाह।'

घबराकर पीरा बोला, 'ब माफ ई कर हमें तो।'

'भई यह तो तुम्हारी मज़दूरी की है।'

'मजूरी ?—काय की मजूरी ?'

'भई उस काम की जो तुमने रातों की नींद ख़राब करके किया था।'

पीरा बहुत ज़ोर से हिनहिनाकर हँसता हुआ बोला, 'वोऽऽऽ !'

'हां वही।'

'पर उस काम की तो अठन्नी रोज ले ली मैंने !'

'अजी वह बहुत महीन काम था पीरशाह, उसकी तो असल में अठगुनी मज़दूरी होनी चाहिये।'

'अच्छा तो तेरी मर्जी, मुझे क्या है ! दिये देता ऊं अमीना को।'

अमीना के पास जाकर हँसता हुआ बोला, 'ले री, तैंने भौत आखरी उठा रक्खी थी पोटली के वास्ते ।'

यह पोटली ही तो है जिसने उसका मियां से बिछोड़ा कराया था। यह पोटली ही तो है जिसके कारण उसका आदमी दर-दर की धूल फांकता फिरा है। यही पोटली ही तो है जिसने उसे औलाद की क़स्म खिला दी थी। यह कम्बख़्त पोटल न होती तो रमज़ानी पर क़ज़ा टूटकर न गिरती। बिलबिलाकर बोली, 'गोद तो उजड़ गई, अब ये पोटली क्या उसकी जगह कोख में धरूंगी दाता गंजबकस ?'

दरियाशाह महल के दरवाज़े से चलकर पेड़ के नीचे आये। अमीना के आंसुओं के पार, उसकी पुतलियों में पुतलियां डालकर मीठे-मीठे से बोले, 'बीबी, मस्लेहत से ही छीना जाता है और मस्लेहत से ही दिया जाता है। जो छीना गया है उसका रंज न कर, जो दुबारा दिया गया है उसका शुक्र कर !'

क्या दिया गया है इस दुखिया को ? इससे तो सब कुछ छीना ही गया। कोई कुछ नहीं समझा, पर अचानक ही अमीना ने दोनों हाथों से अपना पेट ढंक लिया। शर्म से दोहरी होकर उसने फटी ओढ़नी में चेहरा छिपा लिया।

नारी के लिये जो लज्जा की बात है वही आत्मसंतोष की है।

दरियाशाह चले तो पीरा बोला, 'औघड़ तू हमें एक बात तो बता।'

रुककर कहा, 'क्या ?'

'जब ये बेगम की तकिया तुजे आपी बनाना था तो हमें हलकान करने की क्या पड़ रई थी तुजे ?'

अट्टहास करके दरियाशाह बोले, 'सुबहान अल्लाह पीरशाह, तुमने बहुत अच्छ नाम रख दिया इस जगह का। तुम्हारे-हमारे नाम से न सही, कमज़कम बेगम के नाम से तो इस तकिये की कहानी में दुनिया की दिलचस्पी होगी ही। पर हमने कहां बनाया है, ये तो अमीरअली सौदागर ने बनाया है !'

धूल में औंधा पड़ा हुआ मीरा हड़बड़ाकर उठा और अपने पांव की जूती से तड़ातड़ अपना मुंह पीटकर धाड़ें मारकर रोता हुआ बोला, 'सब दरिया बाबा का है, सब दरिया बाबा का है, सब दरिया बाबा का है, सब दरिया बाबा का है !'

तस्बीह (माला) के इस जाप से तंग होकर पीरा बोला, 'ये उल्लू जने क्या क़ै रया है, तू जने क्या क़ै रया है, हम कुछ और ई कै रये हैं !'

क़तराशाह ने दरियाशाह को समझाया, 'हुज़ूर, पीरशाह शायद काम मांग रहे हैं !'

दरियाशाह ने कहा, 'मांग रहे हैं तो फिर देना ही पड़ेगा।—आ जाओ तो क़लंदर, इस मकान के सारे दरवाज़े तोड़ डालो ताकि यह कभी किसी पनाहगीर को किसी वक़्त बंद न मिले। यह बड़ा काम है, सौगुनी मज़दूरी मिलेगी।'

पीरा ने कहा, 'अरे ये इत्ता-सा काम तो मैं बिना ई मजूरी कर दूंगा। तेरा

क्या है, तू तो मलंग है, दोनों हात लुटाने वाला।'

न जाने क्यों, आंखे मूंदकर दरियाशाह आप ही 'वाह वा, वाह वा' कर उठे।

पीरा ने कहा, 'अरे वाव्वा तो ठीक है पर औजार तो हैं ई नईं मेरे पास, करूंगा काय से?'

दरियाशाह ने क़तराशाह से कहा, 'पीरशाह के औज़ार दे दो शहज़ादे, ताकि रक्खे-रक्खे कारीगर के औज़ारों की धार न मारी जाय।'

घूंघट में छुपाया हुआ सिर नीचे को झुकाकर अमीना बोली, 'बड़े जी, औजार मत दो जामिन के। सौदागर जंजाल में फंस गये, रुपये, नईं लौटा सकी ऊं। तुमारी अमानत के बल्दे जिनगानी भर अपने सिर के बालों से तुमारा तकिया बुहार-बुहार के देनदारी चुका दूंगी।'

ईमान के हिंडोले में बेगम का तकिया झोटे खाने लगा। रौनक़ की तरह बेईमान की पेंग बढ़कर अपने साथ अपनों को भी दोज़ख की आग में झोंक देती है, अमीना की तरह ईमानदार की पेंग अपनों को जन्नत के जलवे करा देती है।

दरियाशाह ने कहा, 'बीबी, हमारी अमानत तो तुम्हारे देने से पहिले ही लौटकर तकिये में आ लगी। बची-खुची सौदागर की ख़ैरात के ज़रिये वसूल पाई। तुम्हारा-हमारा हिसाब चुकता हो गया।'

दबी ज़ुबान कतराशाह ने कहा, 'कुछ रक़म छीज गई तवंगर !' (महात्मा)

मुस्कुराकर तवंगर ने कहा, 'बड़े हिसाबी आदमी हो क़तराशाह !— मगर बेहतर है हिसाब रखना। यक़ीन रखो कि अपने-अपने वक़्त पर हक की कौड़ी-कौड़ी लौटकर आयेगी, ज़ुरूर आयेगी। हक़ की न होगी तो हरगिज़ नहीं आयेगी। आ गई तो सूद दर सूद में जान तक निकालकर ले जायेगी।'

औज़ारों का थैला क़तराशाह ने पीरा को लौटा दिया। पीरा ने फटा हुआ सर कसकर बांधा और बिना मज़दूरी के ही सौगुनी मज़दूरी के महत्त्वपूर्ण कार्य में तत्काल जुट गया।

दरियाशाह ने 'अलख अल्लाह' की पुकार लगाई।

पागल पीरा ने दरवाज़े पर खटाखट चोटें मारनी शुरू कीं।

तरंग में आकर नौ कम सौ के बुंदू मियां एक फूटा हुआ कनस्तर बजाकर, खटाखट-भदाभद की बेताल-सी ताल पर बेतुके से बोल गा-गाकर प्रगतिशील दुनिया की टंगड़ी घसीटने लगे—

सबर तोसक (तोशक) तकिया तकदीरी,
सुकर दौलत, ईमान अमीरी,
जो सुने उसे अकसीरी,
प्यारे मेरी बात अखीरी—
प्यारे मेरी बात अखीरी।